CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

17.3

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ अर्हं नमः

श्री नेमि-विज्ञान-ग्रन्थमाला-रत्न-१.

श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला.

पुस्तक सं० १११५
दिनांक........

प्रणेता

विश्वविख्यात-स्वपरसमयपारावारपारीण-सूरिसम्राट्-जगद्गुरु
तीर्थोद्धारक-भट्टारकाचार्यश्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वर-
पट्टालङ्कार-परमपूज्य-समयज्ञ-शान्तमूर्ति-श्रीमदा-
चार्यवर्य श्री विजयविज्ञानसूरीश-पट्टधर-
आचार्य श्री विजयकस्तूरसूरिः

卐

: संपादक :

पंन्यास श्री चंद्रोदयविजयजी गणि

तृतीयावृत्तिः

: प्रकाशक :

जसवंतलाल गिरधरलाल शाह
१४७, तंबोलीनो खांचो, दोशीवाडानी पोळ, अहमदाबाद-१

श्री. वी. नि. सं. २४८९ वि. सं. २०१९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक प्राप्तिस्थान

१ श्री विजय नेमि–विज्ञान–कस्तूरसूरि ज्ञानमंदिर
गोपीपुरा—सूरत.

२ श्री जैन प्रकाशन मंदिर
३०९/४ दोशीवाडानी पोळ. खत्रीनी खडकी—अहमदाबाद–१.

३ सरस्वती पुस्तक भंडार
रतनपोळ हाथीखाना—अहमदाबाद–१.

४ श्री मेघराज जैन पुस्तक भंडार
ठे० गोडीजीनी चाल, पेला माळे, कीकास्ट्रीट,—मुंबई–२

५ श्री सोमचंद डी. शाह
ठे० जीवन निवास सामे, पालीताणा (सौराष्ट्र)

: मुद्रक :
मणिलाल छगनलाल शाह, धी नवप्रभात
प्रि. प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११२५
पं० अमृतलाल जी जैन
अध्यापक प्रा० हि० जै० वि०
श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
वाराणसी द्वारा भेंट
5.129

तृतीय आवृत्ति अंगे

प्रकाशकीय कांईक

आ 'प्राकृत विज्ञान पाठमालानी' त्रीजी आवृत्ति प्रगट करवानो लाभ अमने मळ्यो छे ते अमारुं एक सद्‌भाग्य छे. आ ग्रंथ प्राकृतभाषाना अभ्यासी माटे एक आर्शिवाद छे, ते आ पुस्तकने अवलोकनार कोई पण विद्वानथी अजाण्युं नथी. प्राकृतभाषाना अभ्यास माटे बीजी पण अनेक पुस्तिकाओ प्रसिद्ध थई छे पण ते सर्वमां आ सर्वोत्कृष्ट छे. आ सर्वोत्तम छे, तेमां विशिष्टताओ नीचे प्रमाणे छे. एक तो आमां श्रीसिद्धहेमचंद्र शब्दानुशासन अष्टमाध्यायना प्राकृत विभागनो लगभग सर्व विषय गुंथी लीधो छे. बीजुं एक पछी एक क्रमरचना एवी छे के—जेनी जिज्ञासा अभ्यास करनारने जागृत करे. त्रीजुं वाक्यो ग्रंथकारे पोताना विशाल वाचनना अनुभवे प्राचीन साहित्यमांथी तारवीने योज्या छे. वाक्योमां पण जीवनमां निर्मल बोध अने संस्कारोनी पूरवणी थाय ए माटे खास लक्ष्य राखवामां आव्युं छे. केटलाक लेखको आवा पाठय-पुस्तकोमां वाक्यो द्वारा पोताना अंगत विचारो रजु करे छे जे जरा पण इच्छनीय नथी. एवुं आमां करवामां आव्युं नथी. चोथुं पाछळ शब्दकोष अने प्राकृत गद्यपद्य-माला आपवामां आव्या छे. जे व्युत्पत्ति माटे खास अगत्यना छे. पांचमुं पाठमाळाना अंते अभ्यासी केटलाक मुनिवरो तथा विद्यार्थीओ द्वारा पूछायेला प्रश्नो अंगे यथायोग्य उत्तरोने अनुलक्षीने एक परिशिष्ट मूकवामां आव्युं छे जे धातुना रूपो माटे सारुं मार्गदर्शन आपे तेम छे.

आ पुस्तकने प्रथम **प्रो. अभ्यंकर** साहेबे सत्कार्युं हतुं. बीजी वखते **प्रो. हिरालाल र. कापडीआ** साहेबे अने **पं. लालचंद भ. गांधीए** सत्कार्युं छे. ते अंगे अमे तेमना आभारी छीए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथकर्ता **पूज्य आचार्य श्री विजयकस्तूरसूरिजी महाराजनो** उपकार तो अमारे मानवो जोईए ते करतां सर्व कोई जे आ पुस्तकथी लाभ ले तेमणे विशेष मानवानो छे. ग्रंथकार विद्वान्–सुशील अने क्रिया–संपन्न आचार्य छे ए तेमना परिचयमां आवता सहु कोईने विदित छे. अमे तेमना संबंधमां अधिक शुं कहीए.

आ ग्रंथना प्रकाशनमां अमारी आर्थिक मुश्केली **पंन्यासजी चंद्रोदयविजयजी गणिए** उपदेश आपी अनेक भाविकोने लाभ अपावी टाळी छे. ते माटे अमे तेमना पण ऋणी छीअे.

पू. मुनिमहाराज श्रीजयचंद्रविजयजी म. तथा **पू. मुनि महाराज श्री प्रबोधचंद्रविजयजी महाराजे** प्रुफसंशोधनमां सारी सहाय आपी छे. ते माटे अमे तेमनो आभार मानीए छीए. छेवटे अमे खास आभार मानीशुं आ पुस्तकनो अभ्यास करनाराओनो के जेमना उपयोग वगर आवा सुंदर पुस्तकोनो पण प्रचार रोकाई जाय. जेम तेओ विशेष उपयोग करे तेम अमारो उत्साह पण वधतो रहे. एटले जिज्ञासुओ आ पुस्तकने आवकारे एटली आशा साथे विरमीए छीअे अेज.

ली०

—**प्रकाशक**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५-१६१

संस्थान
क्रमांक ....१११५....
दिनांक ....
(का. हि. वि. ...)

समर्पणम्

आ प्राकृत विज्ञान पाठमाळा

परमपूज्य समयज्ञ वात्सल्यवारिधि आचार्यदेव श्रीमद् विजय **विज्ञानसूरीश्वरजी** महाराज साहेब तथा परमपूज्य सिद्धान्तमहोदधि प्राकृत विशारद आचार्यदेव श्रीमद् विजय **कस्तूरसूरीश्वजी** महाराज साहेबनी परम तारक निश्रमां तेओ पूज्यश्रीना रत्नत्रयीना आराधक बाल-युवान-वृद्ध शिष्यवृंदमांथी पूज्य पंन्यासश्री **चंद्रोदयविजयजी** गणि, पू. मुनिश्री **रिद्धि-चंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **अशोकचंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **अजयचंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **अभयचंद्र विजयजी** म. पू. मुनिश्री **प्रबोधचंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **अजितचंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **देवचंद्रविजयजी** म. पू. मुनिश्री **नयचंद्रविजयजी** म. साहेबादिए करेल वरसीतप जेवी महातपश्चर्यांनी निर्विघ्न आराधनानी पूर्ति निमित्ते रत्नत्रयी साधक प्रत्यूषाभिसंस्मरणीय पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंतोने तथा प्राकृतभाषाना अभ्यासीओने सादर समर्पण।

ली० प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व प्रकाशित बे मुख्य ग्रन्थ

१ अभिधान चिन्तामणि शब्दकोष

चंद्रोदय गुर्जर टीका युक्त

आ कोषना त्रण चार पूर्व प्रकाशनो करतां अनेक परिशिष्टो अभिधान बीजक, शेष, शिलोंछ—पंचवर्गपरिहार नाममालादि तेमज विस्तृत अनुक्रमणिकादि विविध सामग्रीयुक्त आ प्रकाशन अभ्यासीओए वसाववा जेवुं छे. [कि. रु. १०]

२ पाइअ विन्नाणकहा

आ कथा-संदोह प्राकृतना प्राथमिक अभ्यासीओने प्राकृत-वांचन माटे तेमज व्याख्यानादि प्रसंगे बोधप्रद शैलीथी बोध करवा माटे सुंदर शैलीथी गुंथायेलो छे, प्रथम वांचन वखते ज आनी वास्तविकतानो ख्याल आव्या विना रहे तेम नथी. [कि. रु. ३]

३ उसह चरियं

वीसमी सदीना पण प्राकृतना प्रकांड विद्वाननी वर्षोनी महेनत बाद जे प्राचीन शैलीनुं अनुकरण करती अनोखी छटाथी रचायेल आ चरियना वांचन माटे थोडा समयनी प्रतीक्षा करवा जेवी छे. जेनी [कि. रु. ५] राखवामां आवशे.

उपरोक्त त्रणेना रचयिता प. पू. आचार्यदेव श्रीविजयकस्तूरसूरीश्वरजी म. साहेब छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री विविध पूजासंग्रह

भाग १ थी १०

पं. श्री वीरविजयजी, श्री देवपाळजी, कविश्री देवचंद्रजी पं. रूपविजयजी तथा श्री क्षमालाभजीकृत स्नात्रपूजाओ. ज्ञानविमलसूरिकृत कळश. **पंडित श्री वीरविजयजी कृत** पंचकल्याणकनी पूजा, अष्टप्रकारी, नवाणुंप्रकारी, बारव्रतनी, पीस्तालीश आगमनी चोसठप्रकारी पूजा, **पंडित रूपविजयजी कृत** पंचकल्याणकनी पूजा, पंचज्ञाननी, वीशस्थानक तपनी, पीस्तालीश आगमनी, **श्री देवविजयजी कृत** अष्टप्रकारी पूजा, **श्री विजयलक्ष्मीसूरी कृत** वीशस्थानकनी पूजा, श्री **सकळचंदजी उपाध्याय कृत** एकवीशप्रकारी पूजा, सत्तरभेदी पूजा, श्री मेघराजमुनिकृत सत्तरभेदी पूजा, **उ. श्री यशोविजयजी कृत** नवपद पूजा, **पं. श्री पद्मविजयजी कृत** नवपद पूजा अने नवाणुं अभिषेकनी पूजा, श्रीधर्मचंद्रजी कृत नंदीश्वरद्वीपनी पूजा, श्री दीपविजयजी कृत अष्टापदजीनी पूजा, श्री आत्मारामजी कृत सत्तरभेदी पूजा, श्री बुद्धिसागरसूरि कृत वास्तुकपूजा, दादा साहेबनी पूजा, श्री माणेकसिंहसूरी कृत महावीर पंचकल्याणक पूजा, श्री वास्तुक पूजा, तथा श्री वल्लभसूरिजी कृत चारित्र, पंचतीर्थ परमेष्ठि पूजाओ सहित. सुंदर भाववाही जेकेट साथे. **कीं. रु. ७=००**

लखोः—जैन प्रकाशन मंदिर

३०९/४, दोशीवाडानी पोळ, **अमदावाद.**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमारां नूतन प्रकाशनो

			मूल्य
१	विविध पूजा संग्रह भा. १ थी ६ जेमां प्राचीन पूर्वाचार्य विरचित पूजाओनो संग्रह छे.		३-५०
२	विविध पूजा संग्रह भा. १ थी ९		५-००
३	विविध पूजा संग्रह भा. १ थी ११		६-००
४	नित्य स्वाध्याय स्तोत्रादि संग्रह		४-५०
५	जैन सज्झायमाळा (सचित्र)		३-००
६	देववंदनमाळा (कथाओ सहित)		३-५०
७	पंचप्रतिक्रमण विधि सहित		२-५०
८	बे प्रतिक्रमण विधि सहित		१-२५
९	जिनेन्द्रदर्शन चोवीशी (परिकरयुक्त)		१-५०
१०	नवस्मरण (सचित्र)		१-००
११	नवस्मरण (पोकेट)		१-००
१२	स्नात्रपूजा		०-२५
१	सामायिक सूत्र	(हिन्दी भाषामां)	०-२६
२	सामायिक सूत्र (सचित्र)	,,	०-४०
३	देवसिराई	,,	०-७५
४	बे प्रतिक्रमण विधि सहित	,,	१-५०
५	पंच प्रतिक्रमण विधि सहित	,,	३-००
६	विविध पूजा संग्रह भा. १ थी ७	,,	५-००
७	विविध पूजा संग्रह भा. १ थी १०	,,	७-००
८	पंच प्रतिक्रमण मूळ	,,	१-५०

ते सिवाय जैनधर्मनां तमाम प्रकारनां पुस्तको, प्रतो वगेरे मळशे.

वधु माटे सूचिपत्र मंगावो.

जशवंतलाल गिरधरलाल शाह

ठे. जैन प्रकाशन मंदिर, ३०९/४ दोशीवाडानी पोळ, अमदावाद-१.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहायकोनी नामावलि (मुंबई)

नकल

१०० शेठ कान्तिलाल ईश्वरलाल (वालकेश्वर)

१०० शेठ सुमतिलाल केवलदास

१०० कोट श्री शान्तिनाथ जैन देरासर

१०० ताराबेन छगनलाल पुनावाळा हा. शेठ सुवर्णकुमार अंबालाल

१०० चोपाटी श्रीसंघ पू. मुनिश्री जयचंद्र वि. जी. म. तथा पू. मुनिश्री अभयचंद्र वि. जीना सदुपदेशथी

१०० श्री आदीश्वर जैन धर्मशाळा पू. मुनिश्री अशोकचंद्र वि. जी. म. तथा पू. मुनिश्री अजितचंद्र वि. जी. ना सदुपदेशथी

—प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

FOREWORD

It is a matter of great pleasure to me to write a foreword to this book of Vijaya Kastura Suriji highly esteemed for his erudition and saintly character. This is the Second edition, and as such it is a great improvement on the First, regarding both the Gujarati language and matter.

This book mainly deals with Marahatthi (मरहट्ठी) and notes some of the Addhamagahi (अद्धमागही) Peculiarities, which a student is ordinarily expected to know. The learned introduction of Pt. L. B. Gandhi, who has rightly emphasized the necessity of studying Prakrit and shown the great importance of its study, enhances the value of this book. The two glossaries along with aphorisms from **Siddha Hemachandra** (VIII) and their explanation, make this book worth recommending to High School students.

I congratulate the learned author for the splendid service he has done and request him to prepare a similar book for the study of "Apabhrams'a" (अपभ्रंश) of which the Gujarati language is one of the well-known daughters.

M. T. B. College, **Surat.**
1st. September 1948

Hiralal R. Kapadia
M. A.
Professor of Ardha-magadhi.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Foreword

(First Edition)

It gives me much pleasure to recommend this handy volume of Prakrita Vijnanapathamala, so ably prepared by Acharya Shri Kasturvijayaji. It is a matter highly creditable to the Acharya Shri to have known the needs and tastes of the present–day students of Ardhamagadhi, studying in secondary schools as well as in Arts Colleges. Acharya Shri (Kasturvijayaji, is a learned saint, enjoying the privilege of being the pupil of Acharya Vijaya Vijnansuri, one of the chief disciples of the wellknown great Jain Acharya Vijaya Nemisuriswarji, and his deep knowledge and scholarship of the Agama and Prakrit Literature are well reflected in the present book.

The study of the present volume is expected to give a double advantage. Not only it introduces the student to the field of Ardha-magadhi Literature, but it makes him also familiar with the beautiful passages of the Agama Literature. **I have seen about a dozen elementary books of this type, but I am glad to note that the present book sur-**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

passes all these books in as much as it presents techniques of grammar in a very lucid and clear manner. The passages at the end styled Paiagajjapajjamala are choice passages arranged in the order of chronology, and they are intended to create a genuine taste for Prakrit in the minds of the students.

The undersigned desires that the student world would take with pleasure to the study of the present volume and give encouragement to the author in making further attempts in this direction for the advancement of Ardha-magadhi study.

Gujarat College.
March, 1943.

K. V. Abhyankar,
Professor of Sanskrit
and Ardha-magadhi.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

प्रस्तुत प्राकृत-विज्ञान-पाठमालानी प्रकाशित थती आ बीजी आवृत्तिना प्रसंगे मारे कांइ लखवुं-अे प्रेरणाथी अहिं थोडुं लखवा प्रवृत्त थयो छुं.

प्राकृतभाषानुं विज्ञान आपनारी आ पाठमालानी रचना जैन समाजमां सुप्रसिद्ध आचार्य **श्रीविजयनेमिसूरीश्वरजी**ना प्रशिष्य, आचार्य **श्रीविजयविज्ञानसूरिजी**ना सुशिष्यरत्न पं. **श्रीकस्तुरविजयजी** गणीअे सं. १९९५ मां करी हती. आ पाठ्य ग्रन्थनी पहेली आवृत्ति सं. १९९६ मां **नेमिविज्ञान**-ग्रन्थमालाना प्रथमरत्न तरीके प्रकट थया पछी, **स्तंभनपार्श्वनाथ**-माहात्म्य, **आरामसोहाकहा, धणवालकहा, करुणरसकदंब** जेवां बीजां रत्नोने प्रकाशमां मूक्या पछी, गुरुजीअे तेमनी योग्यता जोइ विचारी, तेमनी गुरु-भक्तिथी प्रसन्न थइ तेमने आचार्य पदवीथी विभूषित कर्या छे; अेथी हवे तेओ **श्रीविजयकस्तुरसूरिजी** अेवा नामथी प्रख्यात थया छे. अे जाणीने पाठको प्रमोद पामशे. आ ग्रंथना नाममां शब्द-श्लेषथी जोडेलुं **विज्ञानपद,** अे ग्रंथकारे करेलुं गुरुजीनुं चिरस्मारक अने तेमनी कृतज्ञतानुं द्योतक चिह्न छे. अे बुद्धिशाली वाचको सहज समजी शके तेम छे.

आ पाठ्य पुस्तिका छेल्ला केटलाक समयथी दुष्प्राप्य-अप्राप्य थइ पडी हती, अने ते माटे पाठको तरफथी मागणी चालु हती. अेथी हालमां केटलीक अनुकूलता थतां, तेनी आ बीजी आवृत्ति थोडा सुधारा-वधारा साथे प्रकाशमां आवे छे. सातेक वर्षना अंतरे आवी रीते आनी पुनरावृत्ति थवी-अे आ पाठ्य पुस्तकनी प्रियताने प्रदर्शित करे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुप्रसिद्ध **आचार्य श्रीहेमचंद्रे सिद्धहेमचंद्र** शब्दानुशासनना आठमा अध्यायमां संस्कृतभाषा द्वारा प्राकृत व्याकरणनुं जे शिक्षण आप्युं छे, तेना मुख्य आधारे, आधुनिक शैलीथी आनी संकलना करवामां आवी छे. संस्कृत भाषामां पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंगमां वपराता स्वरांत, व्यजनान्त, सर्वनाम-गण अने संख्यावाची शब्दो-नामोनां रूपो अने धातुओनां वर्तमान, भूत अने भविषकाळनां रूपो, प्राकृतभाषामां केवा फेरफारो साथे वपराय छे ? तेमां संधि, समास, कारक, कृदन्त, तद्धित, प्रत्ययो, अव्ययो वगेरेनी व्यवस्था केवा प्रकारनी होय छे ? अे समजाववा आमां विवेकपूर्वक २५ पाठोनी वहेंचणी करवामां आवी छे. प्राकृत-व्युत्पत्ति-नियमो साथे प्राकृत-गुजराती अने गुजराती-प्राकृत शब्दकोश, तथा वाक्यो, प्राचीन-अर्वाचीन प्राकृत साहित्यना पाठ्य गद्य-पद्यना बोधक रसिक नमूनाओ पण आमां आपवामां आव्या छे. आथी मातृभाषा-गूजराती द्वारा प्राकृत भाषानुं विज्ञान मेळववा इच्छता अभ्यासी विद्यार्थी-विद्यार्थिनीओने, साधु-साध्वीओने अने अन्य पाठकोने पण आ पाठमाला मार्गदर्शिका किंवा मार्गोपदेशिका जेवी उपयोगी थइ हती अने थशे; तेमज प्राकृत साहित्यमां प्रवेशिका सहायिका शिक्षिका थशे तेम धारुं छुं.

प्राकृतभाषा अे तो आपणी सहज स्वाभाविक भाषा, आपणी मातृभाषा, आपणी लोकभाषा, आपणी देशभाषा, किंवा आपणी राष्ट्रभाषा कही शकाय. भारतवर्षनी-प्राचीन आर्यावर्तनी, सर्व-साधारण जनपदनी अे भाषा, विशाल भारतना भिन्न भिन्न देशोमां वसता आपणा पूर्वजो जे भाषा द्वारा पोतानो परस्परनो व्यवहार चलावता, अन्योन्यना कथनने समजी जता, बोल-चालनी भाषा तरीके जेनो उपयोग करता, आपणी बहेनो अने बालिकाओ, राजरमणीओ-राणी-महाराणीओ, तथा स्त्रीओ, श्रेष्ठीओ, सार्थवाहो, वेपारीओ विगेरे सद्गृहस्थोनी महिलाओ, परिव्राजिकाओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिकाओ, नर्तिकाओ तथा परिचारिकाओ-चेटी-दासीओ वगेरे जे भाषाने बोलती-समजती हती, बाल-गोपालमां जे भाषा जाणीती हती, व्याकरणना विशेष प्रयास विना अनायासे जे भाषा आपणने सहजमां समजाती अने बोलतां आवडती हती-ए आपणी प्राचीन प्राकृतभाषा, सहस्रमुखथी उच्चाराती कालक्रमथी रुपांतर पामी अर्वाचीन काळमां आपणने अजाणी जेवी लागे छे; एथी ए भाषा समजवा माटे आपणे प्रयत्न करवो जोइए-हालनी प्राकृत-गूजराती, हिंदी, मारवाडी, मेवाडी, माळवी, मराठी, बंगाळी वगेरे विविध देशी भाषाओनो तुलनात्मक पद्धतिए तलस्पर्शी अभ्यास करवो होय तो प्राकृतभाषानो अभ्यास अत्यावश्यक छे. प्राचीन संस्कृत नाटकोमां अने प्रकरणादि रूपकोमां वपराएली विदूषकोनी हास्यरसमय विनोदभरी प्राकृतभाषा अने मुख्यनायिका, तेनी सखीओ, चेटीओ, गणिकाओ अने बीजां केटलांय पात्रोनी वपरायेली संस्कृत सिवायनी बीजी प्राकृतभाषाना यथार्थ उच्चार अने आशयने समजवा माटे, तेमज प्राचीन संस्कृत अलंकार-शास्त्रोमां उदाहरण तरीके दर्शावेलां प्राचीन प्राकृत पद्योनो अने बीजां काव्योना वास्तविकभाव समजवा माटे पण प्राकृतभाषानुं ज्ञान जरूरी छे.

आजथी अढी हजार वर्षो पूर्वे थइ गएला, समस्त जगतना शुभेच्छक, विश्वमां सर्वत्र मैत्री अने शांतिने विस्तारनारा, समस्त विश्वनुं कल्याण थाय-तेवो सन्मार्ग दर्शावनारा परमपूज्य सर्वज्ञ भगवान् महावीरे, अने तेमनी पहेलां थएला बीजा तीर्थंकरोए पण असंख्य देवो अने मानवोनी पर्षदामां तेमने उद्देशी जे धर्म-प्रवचनो आप्यां, भिन्न भिन्न देशोमां विचरीने अहिंसा. सत्य आदिना उत्तम संदेशो आप्या; ते पण विशिष्ट आर्ष प्राकृत भाषा-**अर्धमागधी** द्वारा आप्या हता. सर्व देशना सर्व वर्गना सर्व कोइ समजी शके तेवी भाषामां तेमना तथ्य पथ्य मधुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मोपदेश थतो हतो. एवा परिपूर्ण ज्ञानी महापुरुषोए धर्म-देशनामां साधन तरीके पसंद करेली–वापरेली ए भाषा हती, राजा अने रंक, ज्ञानी अने अज्ञानी सर्व लोको पर महान उपकार ए भाषा द्वारा कर्यो हतो. तेमना अतिशयज्ञानी सुज्ञ गणधरोए–पट्टधरोए पण तेमना अर्थ–भावने झीली लई, तेमनी पासेथी त्रिपदी मेळवीने गंभीर तत्त्वज्ञानमय सदाचारमय, सदुपदेशना खजानारूप जे सूत्र–सिद्धांतनी–आगमशास्त्रनी सुंदर रचना करी, ते पण ते ज भाषा द्वारा करेली छे, अने एमना अनुयायीओए, विशालज्ञानो सुयोग्य उत्तराधिकारीओए, पण ए सूत्रोनी निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, वृत्ति नामथी ओळखाती विशिष्ट व्याख्याओ अने बीजी अनेक प्रकारनी रचनाओ पण ए ज भाषा द्वारा रची ए भाषानी महत्ता अने उपयोगिता आपणने समजावी छे. सर्व भाषाओमां ए भाषानी विशेषता–श्रेष्ठता दर्शावी छे देवो पण ए भाषामां बोलता होई वास्तविक रीते देव–भाषा एने कही शकाय.

महापुरुषोना मुखोमांथी नीकळेलां अमृत झरतां सरस सुवचनोने झींलनारी प्राकृतभाषा प्रकृतिमधुर–स्वाभाविक मनोहर होवाथी बोलवामां सरळ अने समजवामां सुगम होवाथी, सुकोमळ, ललित सुभाषित–सूक्ति-रत्नोथी भरपूर होवाथी विद्वज्जनोने पण हृदयंगम थई हती. एवी रीते लोकप्रिय थयेली ए प्राकृतभाषा अने प्राकृतकाव्यो संबंधमां वास्तविक प्रशंसाना हार्दिक उद्गारो अनेक गुणज्ञ सुज्ञ सज्जनोए उच्चार्या हता. आ संबंधमां प्राचीन प्रामाणिक उल्लेखो में आजथी वीशेक वर्षो पहेलां अपभ्रंश–काव्यत्रयी (गायकवाड प्राच्य ग्रंथमाला नं. ३७ सं. १९८३मां प्रकाशित) नी संस्कृत प्रस्तावनामां, अने '**प्राकृतभाषानी** उपयोगिता' (भावनगरनी जैनधर्मप्रसारक सभा द्वारा सं. १९८८ मां प्रकाशित) नामना गुजराती निबंधमां दर्शाव्या होवाथी, तथा तेनो सारांश, आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत–विज्ञान–पाठमालानी पहेली आवृत्तिमां, प्रासंगिकमां प्रकट थई गएल होवाथी अहिं पुनरुक्तिनी अपेक्षा रहेती नथी.

आपणा देशना–भारतवर्षना बहुबुद्धिशाली विद्वद्रत्नोए, निःस्वार्थ परोपकार करनार संतोए आपणा सौना भला माटे पोताना अमूल्य समय अने शक्तिनो सदुपयोग करी विविध प्रकारनी रचना ए भाषामां करी छे. रत्नोनी खाण जेवी ए महापुरुषोनी वाणीनुं, विशाल ज्ञानथी भरेला अमूल्य वारसारूप ए खजानानुं रहस्य उकेलवा–आपणे प्रयत्न करवो जोइए. एनो लाभ आपणे लेवो जोइए अने बीजाओने आपवो जोइए. ए क्यारे बनी शके ? ए माटे ए भाषाना विज्ञाननी प्रथम आवश्यकता छे, ए भाषामां रचायेल गद्य अने पद्य, प्रसिद्ध अने अप्रसिद्ध विशाल साहित्यनुं पठन–पाठन, तथा प्रकाशन–प्रचारादि कर्तव्य ए पछी करी शकाशे. प्रौढ भाषा–ज्ञान थवाथी अर्थनो निर्णय सुकर थशे, अनर्थोनो प्रचार अटकावी शकाशे. धर्म–कर्मना मर्म उकेलवामां सुगमता थशे, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बंध अने मोक्ष आदि तत्त्वोना सूक्ष्म विचारो समजवामां सहायता थशे, अहिंसा, संयम अने तपोमय धर्मनो आदर्श समजी शकाशे. सुदेव, सुगुरु अने सुधर्मनुं स्वरूप समजाशे. सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूप मोक्षना मार्गनुं ज्ञान मेळवी शकाशे. देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी गतिनां सुख–दुःखनो ख्याल करी शकाशे. दान, शील, तप, भावनारूप धर्मने लक्ष्यमां लई शकाशे. सद्गृहस्थो–सुश्रावको अने सुश्राविकाओनी नीति–रीति, सुसाधुओ अने सुसाध्वीओनी सदाचारमय रहेणी करणी केवी हती ? अने होवी जोइए ? मिथ्यात्व अने सम्यक्त्व शुं छे ? अणुव्रतो अने महाव्रतो केवा प्रकारनां होय छे ? ए वगेरे समजवामां अनुकूलता थशे. राग–द्वेषादि आंतरिक शत्रु पर विजय, कषायो परनो विजय, इंद्रियदमन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्त-दमन आदि अनेक प्रकारना आध्यात्मिक धार्मिक सद्बोधो मूळभाषाना-ज्ञानद्वारा सहज समजी शकाशे.

अे साथे विविध दृष्टिथी, शुभ आशयथी शोधखोळ करनाराओने, तुलनात्मक पद्धतिथी अभ्यास करनाराओने आ प्राकृत साहित्यमांथी विविध प्रकारनुं जाणवानुं, शीखवा-समजवानुं मळी शके तेम छे. प्राकृतभाषामय उपदेशोमांथी अने प्राचीन काव्य कथा-चरित्रोमांथीं पण घणुं शिक्षण मेळवी शकाय तेम छे. जूदा जूदा देशोना, जूदा जूदा लोकोना आचार-विचारो, सामाजिक रीत-रिवाजो, विविध कळा-कौशल्यो, प्रासंगिक बुद्धि चातुर्यो, अनुभवो, सामान्य नीती, राजनीती, व्यवहार-विज्ञानो अेमां ओतप्रोत थयेलां छे.

भारतवर्षना प्राचीन इतिहासनी शोधखोळ माटे प्राकृतभाषानुं साहित्य बहु उपयोगी थई शके तेवुं छे. पूर्वे थई गयेला महापुरुषो-तीर्थंकरो चक्रवर्तीओ, बळदेवो, वासुदेवो अने बीजा अनेक राजा-महाराजाओ, राजर्षिओ, प्रत्येकबुद्धो तथा बीजा प्रभावशाली सत्पुरूषोनां जणावेलां जीवन-चरित्रोमांथी घणुं घणुं जाणवानुं मळी शके तेम छे. आवी रीते पहेलां थई गयेला बुद्धिशाली महामंत्रीओ, उदार श्रीमंत श्रेष्ठीओ, धर्म-निष्ठ सज्जन सार्थवाहो, पुरोहितो अने सेनापतिओ, देवो, मानवो अने विद्याधरोनां वर्णन-वृत्तांतोमांथी पण समजवा जेवुं घणुं मळी शके तेम छे. अेवी ज रीते विशाळ भारतने उज्ज्वळ बनावी गयेली सुशील सन्नारीओनां-सद्धर्मनिष्ठ सती-महासतीओनां सच्चरित्रोमांथी पण अनेक सद्बोधो मळी शके तेवी सामग्री छे. प्राचीन नवलकथाओ अने नवलिकाओ केवी सरस अने सुंदर शैली पर रचायेली होय छे? अेनो ख्याल अे वांचवा-विचारवाथी आवी शके. शांतरस तरफ प्रेरनारां नवरसमय वर्णनो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवा प्रकारनां होय छे? अे अेना अवगाहनथी समजी शकाय. लोक–साहित्य, लोक–वृत्तांत, लोक–वार्ता, लोक–स्थिति, लोक–कहेवतो, अवसरोचित सुभाषितो वगेरेनो ऊंडो अभ्यास करवा माटे प्राकृत साहित्य अे सुविस्तृत क्षेत्र छे.

संस्कृत साहित्यमां मळतां वर्णनो जेनी आगळ तुच्छ गणाय, एवां प्राकृत साहित्यमां आवतां, सरस शैलीथी प्रतिपादन करेलां अनेक देशोनां तथा नगर–नगरीओनां वर्णनो, नायक–नायिकानां, राजा–महाराजानां अने राणी–महाराणीओनां वर्णनो, तेमना पहेरवेषो, अलंकार–आभूषणो, व्यायाम, तेलमर्दन, स्नानादिक नित्यकर्म, प्राचीन ऋद्धि–समृद्ध, वैभव–विलासोनां, विविध ऋतुओनां, उद्यानोनां, महासागरोनां, सरिताओ, सरोवरो, पुष्करिणी–वावडीओ वगेरे जळाशयोनां, जल–क्रीडा–जळ–विहारोनां वर्णनो, जलचर, स्थलचर, खेचर आदिनां, सचराचर सृष्टिनां वर्णनो, चतुरंगी सेनानां वर्णनो, सागरयात्रानां अने आकाश–गमननां वर्णनो, देवप्रासादो, राजसभाओनां वर्णनो. नाटक–प्रेक्षकोनां वर्णनो, पर्वतो, गुफाओ, अटवीओ आदिनां वर्णनो, आपणा चित्तनुं आकर्षण करे तेवां रसिक अने विशाळ ज्ञान आपे तेवां छे. संगीतकळा, नृत्यकळा, नाट्यकळा, चित्रकळा, शिल्प-कळा, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, सामुद्रिक, निमित्तज्ञान, अंगविद्या, ज्योतिष वैद्यक वगेरे विषयोना प्रासंगिक जाणवा योग्य उल्लेखो पण अन्वेषण करनारने आमांथी मळी आवे तेम छे. आर्यो साथे अनार्योना, सज्जनो साथे दुर्जनोना, शिष्टो साथे दुष्टोना विरुद्ध स्वभावनो अने सत्कर्तव्यो साथे दुष्टोनां कर्तव्योनो परिचय पण ए साहित्यना परिशीलनथी थाय छे. विवेकथी तजवा योग्यने त्याग करवा माटे, जाणवा योग्यने जाणवा माटे, ग्रहण करवा योग्यने ग्रहण करवा माटे प्राकृत भाषामय अे साहित्य–सागरनुं ऊंडुं अवगाहन करवुं जोईए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ए भाषामां प्रथम प्रवेश करनार अभ्यासीओने प्राकृत-विज्ञान पाठमाळानी आ पुस्तिका अनेक प्रकारे उपयोगी थवा संभव छे. आशा छे के प्रजा-स्वातंत्र्यना आ वर्तमान युगमां प्रजानी आ प्राचीन भाषाना पटन-पाठनादि माटे सर्वत्र सुयोग्य प्रबंध थइ प्राकृत साहित्यनो अमृतमय रसास्वाद अनुभववा सज्जनो भाग्यशाळी थाय एवी शुभेच्छा साथे विरमुं छुं.

वडोदरा.
सं. २००४ श्रावणी
पूर्णिमा

पं. लालचंद्र भगवान गांधी
[वडोदरा-प्राच्यविद्यामंदिरना
जैनपंडित, मुंबाइ युनिवर्सिटीना
अर्धमागधीना पोस्टग्रेज्युअेट
अध्यापक]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ॐ अर्हं नमः ॥

प्रासंगिक.

आ "प्राकृत विज्ञान पाठमाळा" हस्तगत थतां मतिमान मानवीना मनमां स्वाभाविक एवी जिज्ञासा उद्‌भवे के–प्राकृत एटले शुं ? तेनो साहित्य-क्षेत्रमां केटलो हिस्सो ? इतरभाषा साथे केवो संबंध ? अने तेनी केटली विशिष्टता इत्यादि. आ बाबतमां निवेदन रूपे प्रसंगोचित बे बोल बालीए ता ते, स्थाने ज लेखाशे.

प्राकृत एटले शुं ?

प्रकृतिसिद्ध जे कोइ वस्तु होय ते सर्व प्राकृत कहेवाय छे. प्राकृत शब्दनो आवो विस्तृत अर्थ होवा छतां, अहीं भाषाप्रकरणने अंगे भाषानी साथे संबंध धरावनार प्राकृत शब्द लेवानो छे; माटे तेने नियमित अर्थना वर्तुलमां मुकवो पडशे. अर्थात्–**प्रकृतिसिद्ध जे भाषा ते प्राकृत कहेवाय.** हवे प्रकृति एटले शुं ? ए जणाववुं बाकी रहे छे. आ विषयमां महापुरुषोने अनुमत अर्थ नीचे प्रमाणे छे.

दुनियाना प्राणीमात्रनो व्याकरणादिथी संस्कार नहि पामेलो सहज जे वचनव्यापार ते प्रकृति कहेवाय छे. अर्थात्–व्याकरणादिना संस्कार रहित प्राणीनो जे स्वाभाविक वचन व्यापार ते प्रकृति, तेमां रहेली अथवा ते ज जे भाषा, तेनुं नाम प्राकृत कहेवाय. आनो अर्थ एवो नथी लेवानो के–व्याकरणादिना संस्कार रहित प्राणीओनो हरकोइ वचनव्यापार ते प्राकृत कहेवाय; परन्तु प्राकृतभाषाना शब्दो संस्कार आप्या सिवाय पण आबाल-गोपाल बोली शकाय छे, तेम समजवानुं छे. जेमके कोई बाळकने कहीए के 'सच्चं वद', एटले ते तुरत तेमज बोली शकाशे, तेने कदाच 'सत्यं वद' एम कहेवा जईशुं तो पण ते 'सच्चं वद' एम सहज बोली जशे.

आ प्राकृतनी व्युत्पत्तिओ, अनेक रीते विद्वानो करी गया छे. छतां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपर्युक्त अर्थने तेओ सहमत रहे छे. यद्यपि कोइ कोइ स्थळे प्रकृतिनो अर्थ संस्कृत करेल छे, छतां पण उपर्युक्त अर्थने ते बाधक नथी, कारणके ते ते स्थळमां संस्कृत परथी प्राकृत शिखववानुं होवाथी, तेवो अर्थ लेवानो छे. अर्थात्–संस्कृतमां अमुक अमुक प्रकारनो फेरफार करवाथी, एटले के संस्कार खेंची लेवाथी प्राकृत प्रकाश जोई शकाय छे.

प्राकृतनी व्युत्पत्तिओ—कवि रुद्रटकृत (वर्ष) काव्यालंकार उपर श्रीनमिसाधुविरचित टिप्पन (पृष्ठ–११२) मां प्राकृतनी बे प्रकारे व्युत्त्पति करेल छे. जुओ, आ रह्यां ते वचनो—

"सकलजगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहृ (हि)त संस्कारः सहजो वचनव्यापारः प्रकृतिः, तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्।" व्याकरण वगेरेथी संस्कारने नहि पामेलो, जगतना सकळ जन्तुओनो जे स्वाभाविक वचनव्यापार ते प्रकृति कहेवाय, अने आवा प्रकारनी प्रकृतिमां होय, ते प्राकृत कहेवाय, अथवा तो ते पोते ज प्राकृत कहेवाय. आ प्राकृतनी एक प्रकारनी व्युत्पति थइ. बीजी आ प्रमाणे—**"आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी–इत्यादिवचनाद्वा प्राक्–पूर्वं कृतं प्राक्तम्"** आर्षवचनमां सिद्ध देवोनी अर्धमागधी भाषा होय छे, वगेरे वचनने आधारे **'प्राक्+कृत'** प्राक्–पूर्वे करेलुं होय ते प्राक्कृत कहेवाय छे.

प्राकृतनी, अन्य एवी पण प्यत्पत्तिओ मळे छे के—

"प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्, अथवा प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्" अर्थः–प्रकृतिथी–स्वभावथी सिद्ध जे होय ते प्राकृत कहेवाय छे, अथवा प्रकृति एटले साधारण जन,–संबंधी जे आ (भाषा), प्राकृत कहेवाय छे.

प्राकृत साहित्यनी बहुलता.

प्राकृतमां जिनागम—जैनोनां परमपवित्र आगमोनी (जेवां के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तराध्ययनादि कालिकश्रुत, दशवैकालिक प्रमुख उत्कालिकश्रुत अने आचारांग आदि अग्यार अंग) रचनामां पण प्राकृतभाषानी पसंदगी करवामां आवी छे. आ पसंदगी पण विशेष लाभनी दृष्टिए योजाएली छे. जुओ आगमोक्त आप्तवचन—

"मुत्तूण दिट्ठिवायं, कालिय-उक्कालियंगसिद्धंतं ।
थी-बालवायणत्थं, पाइयमुइयं जिणवरेहिं ॥१॥"

भावार्थ :—स्त्रीजाति अने क्षुल्लकवर्ग, सहेलाईथी वाचननो लाभ मेळवी शके एवा हेतुथी, दृष्टिवाद सिवायना-कालिक उत्कालिक अंग-रूप सिद्धांतने जिनेश्वरोए प्राकृतमां कहेलो छे. यद्यपि,—

"अद्धमागहाए भासाए भासति अरिहा" [औपपातिकसूत्र-५६७७] 'अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं" [आवश्यकसूत्र, पृ. ६८]

"पोराणमद्धमागह-भासानिययं हवइ सुतं" इत्यादि आगमवचनो होवाथी जिनेश्वरदेवो अर्धमागधी भाषामां आगमार्थ कहे छे, अने गणधरो तेमां गुंथे छे, छतां पण तेनी प्राकृतता अबाधित ज रहे छे. कारणके अर्धमागधीभाषाने आर्ष प्राकृतमां गणवामां आवी छे, जुओ— कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरि महाराजनां वचनो—

"अत एत् सौ पुंसि मागध्याम्" (८. ४, २८७).

यदपि 'पोरामणद्ध मागह-भासा-निययं हवइ सुत्तं' इत्यादिनार्षस्य अर्द्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानान्न वक्ष्यमाणलक्षणस्य ॥

उपर्युक्त वचनोथी स्पष्ट थाय छे के-अर्धमागधी ए आर्षप्राकृत छे. आर्ष एटले **'ऋषीणामिदमार्षम्'** एटले के-ऋषिओ संबंधी-गणधर वगेरे महापुरुषो संबंधी जे आ (वचनो) ते आर्ष कहेवाय छे.

प्राकृतमां विवेचन साहित्य ग्रंथो—जिनागम उपरनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्युक्ति, भाष्य अने चूर्णि वगेरे विवेचनना ग्रंथो पण प्राकृतभाषामां रचायेला छे, जेनुं जिनागमना विवेचनना ग्रंथोमां अग्रस्थान छे, एटलुं ज नहिं किंतु आगमग्रंथ जेटलुं महत्त्व तेने अपायेल छे.

प्राकृतमां विविध जैन ग्रंथो–जैनोना विविध ग्रंथोए प्राकृत-क्षेत्रमां अनोखुं स्थान मेळव्युं छे. जेवा के–प्रकरणो, कुलको, कथानको या चरित्रग्रंथो, प्रकीर्णको–जुदा जुदा विषयना संग्रहरूप ग्रंथो, वैद्यक अष्टांगनिमित्त, ज्योतिष वगेरे.

जैन दर्शननी श्रुतसर्वस्वमयी द्वादशांगीना बीजकरूप जे त्रण वचनो, श्रीतीर्थंकरदेवोए लब्धिवन्त गणधर भगवन्तोने समर्प्यां हतां अने जेनाथी गुणवंत गणधरोए द्वादशांगीनी रचना करी हती, अने जे **'त्रिपदी'** नामथी जगतमां ओळखाय छे, तेनी भाषा पण प्राकृत ज पसंद करवामां आवी छे. जुओ. आ रही ते त्रिपदी. **"उप्पज्जेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा."**

वधारे शुं कहीए. प्राकृत भाषामां गद्य अने पद्यमय एटला बधा ग्रंथो छे के–जेनी सूचि आपवा जइए तो तेनुं एक स्वतंत्र विस्तृत पुस्तक बनी जाय, छतां पण तेनो आछो ख्याल आवे ते खातर केटलांक नामो आपवामां आवे छे जेवां के—

महावीरचरिय.	(श्री गुणचंद्रगणिकृत	पद्य	ग्रंथप्रमाण–१२०००)
पउमचरिय.	(श्री विमलसूरिकृत,	,,	,, १००००)
समराइच्चकहा.	(श्री हरिभद्रसूरिकृत	गद्य	,, ,,)
सुरसुंदरीचरिय	(श्री धनेश्वरसाधुकृत	पद्य	,, ४०००)
सुपासनाहचरिय	(लक्ष्मणगणिकृत	,,	,, १००००)
कुमारपालप्रतिबोध	(श्री सोमप्रभाचार्यकृत,		गद्यप्राय: ८८००)

आ उपरांत श्री संघदासगणिकृत गद्यमय विस्तीर्णग्रंथ **'वसुदेवहिंडी'** कुमारपालचरित, सिरिसिरिवालकहा इत्यादि उपलब्ध अनेक जैन प्राकृत ग्रंथो प्राकृतभाषानी महत्ता प्रदर्शित करी रह्या छे.

जैनेतर काव्यग्रंथोमां प्राकृतनुं स्थान—कविवत्सलहाल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृता–गाथासप्तशती, प्रवरसेनकृत–सेतुबंध (रावणवहो), वाकपतिराजकृत–गउडवहो तथा महुमहविियय, राजशेखरकृत–कर्पूरमंजरीसट्टक, आनंदवर्धनकृता –विषमबाळलीला, भूषणभट्टपुत्रकृता लीलावतीकथा. वगेरे जैनेतर विद्वानोना अनेक काव्यो प्राकृतमां अस्तित्व धरावे छे.

प्राकृतभाषाना व्याकरण ग्रंथो—

जैन	अजैन
चंडकृत–प्राकृतलक्षण.	पाणिनिकृत–प्राकृतलक्षण×
त्रिविक्रमदेवकृत–प्राकृतानुशासन.	वररुचिकृत- प्राकृत–प्रकाश
श्रीहेमचंद्रसूरिकृत–प्राकृतव्याकरण. (आ व्याकरण, गुर्जरेश्वर सिद्धराज जयसिंहनी विनंतिथी कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्रसूरि महाराजे रचेला 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' नामना व्याकरणना आठमा अध्याय तरीके रचायेल छे. जेमां प्राकृत आदि छ भाषानु विज्ञान कराव्युं छे.	हृषीकेशकृत–प्राकृतव्याकरण
	मार्कंडेयकृत–प्राकृतसर्वस्व
	क्रमदीश्वरकृत–संक्षिप्तसार प्राकृत–व्याकरण
	लक्ष्मीधरकृत–षड्भाषाचन्द्रिका.

वगेरे अनेक जैन तेमज अजैन व्याकरण ग्रंथो प्राकृतभाषानुं विज्ञान मेळववा माटे मोजुद छे

प्राकृतकोशो—जाते ब्राह्मण छतां समजणपूर्वक जैनधर्म स्वीकारनार परमार्हत महाकवि धनपालविरचित '**पाइअलच्छी नाममाला**' तथा कलिकालसर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्राचार्यकृत '**देशी नाममाला**' वगेरे प्राकृतशब्दोनो सुंदरबोध आपवा माटे प्राकृतकोषो पण अस्तित्व धरावे छे.

×पाणिनिकृत 'प्राकृतलक्षण' हजु सुधी आपणने उपलब्ध थयुं नथी, छतां, पण श्री मलयगिरि महाराज, श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराज तथा केदारभट्ट वगेरेना उल्लेखो द्वारा, तेनुं एक समयनुं अस्तित्व मनाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृतछंदोना ग्रंथो—गाथालक्षण, नंदिताढय, सअंभूछंद, प्राकृतपिंगल, विरहांककविकृत-(प्राकृत) छंदोविचित-(जे 'कइसिट्ठ वित्त-जाइसमुच्चय' एवा नामथी ओळखाय छे, तथा श्री हेमचन्द्राचार्यकृत **छंदोनुशासन**-वगेरे.

उपर करावेला दिग्दर्शन उपरथी समजी शकाशे के प्राकृत-साहित्यनी केटली बहुलता छे.

प्राकृतमांथी अन्यभाषाओनो जन्म या इतरभाषारुपे प्राकृतनुं परिणमन.

जेम एकज वर्षादनु जल, स्थानभेदथी विविधभेदवाळुं बने छे तेम एकज प्राकृतभाषा स्थानभेदथी अनेक संस्कृत आदि विविध भाषाभेदने पामे छे. जुओ श्री नमिसाधूनां वचनो—

'मेघनिर्मुक्तजलमिवैकस्वरूपं तदेव च देशविशेषात् संस्कारकरणाच्चसमासादितविशेषं सत् संस्कृताद्युत्तरविभेदानाप्नोति। अत एव शास्त्रकृता प्राकृतमादौ निर्दिष्टम्, तदनु संस्कृतादीनि। पाणिन्यादिव्याकरणोदितशब्दलक्षणेन संस्करणात् संस्कृतमुच्यते। तथा प्राकृतभाषैव किञ्चिद्विशेषलक्षणान्मागधिका भण्यते। तथा प्राकृतमेव किञ्चिद्विशेषात् पैशाचिकम्। सू(शौ)रसेन्यपि प्राकृतभाषैव। तथा प्राकृतमेवापभ्रंशः॥"

(कवि रुद्रटकृत काव्यालंकार पर नमिसाधुकृत टिप्पन पृ. २१२)

भावार्थ--एक स्वरुपवाळा मेघनिर्मुक्त जळनी जेम, ते एक ज प्राकृत, स्थान विशेष अने संस्कार विशेषथी विशेषता पामी, संस्कृत आदि उत्तर भेदोने पामे छे. अर्थात् तेनुं ते ज प्राकृत, संस्कृतादि स्वरूप बनी जाय छे. आटला ज कारणथी, एटले के प्राकृत ए सर्वनुं मूळ होवाथी ग्रंथकार रुद्रटे व्याकरणनी शरुआतमां प्रथम प्राकृत ज बतावेल छे. पाणिनि वगेरेनां व्याकरणमां कहेल जे सूत्रो, तेना संस्कार आपवाथी, ते प्राकृत संस्कृत बनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाय छे. ते रीते ते ज प्राकृत, विशेष संस्कारो आपवाथी मागधी पैशाचिकी सौरशेनी अने अपभ्रंश थाय छे.

आ बाबतमां, कविराज वाक्पतिराज, गउडवहो नामना प्राकृतकाव्यमां स्पष्ट जणाय छे के--

"सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।
एन्ति समुद्दं चिय णेन्ति सायराओ च्चिय जलाइं ॥"

भावार्थ—सघळां पाणी जेम समुद्रमां पेसे छे अने समुद्रमांथी नीकळे छे, तेम सघळी वाणी (सकळ भाषाओ), प्राकृतमां पेसे छे अने प्राकृतमांथी नीकळे छे,

"**यद् योनिः किल संस्कृतस्य**" आ वचनो उच्चारी, कवि राजशेखर पण जणावे छे के–हुं खात्रीपूर्वक कहुं छुं के प्राकृत ए संस्कृतनुं उत्पत्ति स्थान छे.

कालिकालसर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्रसूरि महाराज जेवा पण स्वोपज्ञ काव्यानुशासनमां जैनी वाणीनी स्तुति करतां जणावे छे के—

"**सर्वभाषापरिणतां जैनीं वाचमुपास्महे**" एटले के–सकल–भाषाओमां परिणाम पामनारी जैनी वाणी (के जे अर्धमागधी होय छे अने आर्ष प्राकृत कहेवाय छे,) तेनी अमो उपासना करीए छीए.

उपर्युक्त प्रमाणोथी सिद्ध थाय छे, के–प्राकृत, संस्कार विशेष पामवाथी संस्कृत वगेरे अन्य भाषाओ रूपे परिणमे छे.

प्राकृतनिधानमां रहेलां अपूर्व झवेरातो.

अकृत्रिमता–स्वादुता–अकृत्रिमस्वादुता–सरलता–कोमलता–ललितता–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महिलामनोवल्लभता-राजप्रियता-सूक्तिसागरता-लाटप्रियता-मनोहरता प्रमुख अपूव झवेरातोनो खजानो कोई पण होय तो प्राकृत भाषा छे.

अकृत्रिमता=व्याकरण वगेरेना संस्कारथी निरपेक्ष स्वभावसिद्धता.

स्वादुता=श्रोतृवर्गना कर्णयुगलमां मधुररसोत्पादकता.

अकृत्रिमस्वादुता=प्रकृतिसिद्ध मधुरता या नैसर्गिक मधुररस-पोषकता.

आ विषयने पूरवार करतां आप्तसुभाषितो—

"अकृत्रिमस्वादुपदां, परमार्थाभिधायिनीम् ।
सर्वभाषापरिणतां, जैनीं वाचमुपास्महे ॥१॥"

भावार्थ—कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचंद्रसूरि महाराज, स्वोपज्ञ काव्यानुशासनमां श्री जिनवाणीनी स्तुति करतां बोल्या छे के-अकृत्रिम=कृत्रिमताने नहि पामेल, स्वाभाविक पदे पदे मधुरताने धारण करनारी, परम अर्थने प्रतिपादन करनारी अने सकल भाषाओमां परिणाम पामेली, अेवी जैनी वाणीनी अमे उपासना करीअे छीअे.

यायावरीय कवि राजशेखर बालरामायणमां प्राकृतने प्रकृतिमधुर तरीके वर्णवे छे—**"गिरः श्रव्या दिव्याः प्रकृतिमधुराः प्राकृतधुराः"** सांभळवा लायक दिव्य अने प्रकृतिमधुर, अेवी प्राकृत आदि वाणी छे.

महाराजा कविवत्सल हाळ, प्राकृतकाव्यना माधुर्य माटे पोतानी गाथासप्तशतीमां जणावे छे के—

"अमयं पाइयकव्वं, पढिउ सोउं च जे न जाणन्ति ।
कामस्स तत्ततत्ति, कुर्णति ते कह न लज्जंति ॥"

(गाथा सप्तशती. गा-२)

भावार्थ—जेओ अमृत जेवा मधुर प्राकृत काव्यने भणता या सांभळता नथी अने कामतत्त्वनी चिंतना कर्या करे छे, तेओ लज्जाने केम पामता नथी ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरलता=प्राकृतमां रहेल सुबोधता–सुखग्राह्यता–बालादिबोधकारिता या सुकरता, कया मानसने आकर्षती नथी ?

प्राकृतनी बालादिबोधकारिता माटे जुओ विद्वद्वर्य सिद्धर्षिगणिनां सुभाषितो—

"बालानामपि सद्बोध–कारिणी कर्णपेशला ।
तथापि प्राकृता भाषा, न तेषामपि भासते ॥"

(उपमितिभवप्रपंचकथा पीटबंध–श्लोक ५१).

भावार्थ :—बाळजीवोने पण सुंदर सद्बोध करावनारी अने कानने रुचे तेवी प्राकृत भाषा छे, छतां पण दुर्विदग्धोने ते रुचती नथी.

हवे प्राकृतनी सुबोधता माटे श्रीमहेश्वरसूरि महाराजनां वचनो जोईए—

"सक्कयकव्वसत्थं जेण न याणंति मंदबुद्धिया ।
सव्वाण वि सुहबोहं तेणेमं पाइयं रइयं ॥"

(पंचमी महात्म्य)

भावार्थ :—श्री महेश्वरसूरि महाराज पंचमी माहात्म्यनी कथाने प्राकृतमां रचवानो मुद्दो जणावतां कहे छे के—मंदबुद्धिवाळा मनुष्यो संस्कृत काव्यना अर्थने जाणी शकता नथी. अर्थात् अल्पबुद्धिवाळा जीवोने संस्कृतमां रचेल काव्योना अर्थो लगाडवा घणा कठिन पडे छे अने प्राकृत काव्यमां तेवुं नथी, माटे अल्पमति स्त्री बाल बालिकादि सर्वने पण सुखेथी बोध करी शके तेवुं सहेलाइथी समजाय तेवुं आ प्राकृत रच्युं छे.

कोमलता=प्राकृतकाव्यमां रहेली सुकोमळता–मृदुता कमलदलनुं भान करावे तेवी छे. यायावरीय कवि राजशेखर, कर्पूरमंजरी सट्टकमां प्राकृतरचनानी सुकोमलताना संबंधमां जणावे छे के—

"परुसो सक्कअबंधो, पाइअबंधो वि होइ सुउमारो ।
पुरिसाणं महिलाणं, जेत्तियमिहंतरं तेत्तियमिमाणं ॥"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—संस्कृत रचना ज्यारे कठोर होय छे, त्यारे प्राकृत रचना सुकुमार याने कोमळ होय छे. कठोरता अने सुकुमारतामां जेटलुं अन्तर पुरुष अने स्त्री वच्चेनुं छे, तेटलुं ज अन्तर आ बे भाषाना सम्बन्धमां पण समजवुं.

वज्जालग्ग नामना प्राकृत सुभाषित संग्रहमां एक कवि तो त्यां सुधी जणावे छे के—

"पाइयकव्वुल्लावे, पडिवयणं सक्कएण जो देइ ।
सो कुसुमसत्थरं पत्थरेण अवुहो विणासेइ ॥१॥"

भावार्थः—प्राकृतकाव्यना उल्लाप प्रसंगे, जे कोइ संस्कृतथी प्रत्युत्तर आपे छे, ते मूर्ख खरेखर कुसुमनी कोमळ शय्याने पत्थरथी छुंदी नाखवा जेवुं कृत्य करे छे.

ललितता=प्राकृतमां रहेल लालित्य—सौन्दर्य कया मानसने रञ्जित नथी करतुं. ?

"ललिए महुरक्खरए जुवईयणवल्लहे ससिंगारे ।
सन्ते पाइयकव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउं ? ॥"

(वज्जालग्ग नामनो प्राकृत पद्यसंग्रह)

भावार्थः—ललित, अक्षरोना माधुर्यवाळुं, युवतिवर्गने वहालुं तेमज शृंगारवाळुं प्राकृतकाव्य ज्यां मोजुद छे, त्यां संस्कृत भणवानी कोण इच्छा करे ?

महिलामनोवल्लभता=प्राकृतमां स्त्रीहृदयनी प्रेमाळुता रहेली छे, जेने अंगे कविजनोए **'जुवईयणवल्लह'** विशेषण वापरी स्पष्ट करेल छे के—प्रायः प्राकृतकाव्य स्त्रीवर्गने बहु प्रिय होय छे. कवि राजशेखर पण जणावे छे के—

"यद्योनिः किल संस्कृतस्य सुदृशां जिह्वासु यन्मोदते"

एटले, प्राकृत ए संस्कृतनुं उत्पत्तिस्थान छे, अने स्त्रीओनी जिह्वामां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनन्दने पामे छे; तथा **'स्त्रीणां तु प्राकृतं प्रायः'** ए वचन पण महिलामनोवल्लभता प्रदर्शित करे छे.

राजप्रियता=स्वतन्त्र विचारश्रेणीवाळा राजाओनो पण प्राकृत ऊपर असीम प्रेम हतो. राजकवि यायावरीय–राजशेखर, काव्यमीमांसामां प्राकृत तरफथी नृपमान्यताने नीचे प्रमाणे प्रदर्शित करे छे.

"श्रूयते च सूरसेनेषु कुविन्दो नाम राजा, तेन परुष-संयोगाक्षरवर्जमन्तःपुर एवेति समानं पूर्वेण ।

(काव्यमीमांसा पृ. ५०)

श्रूयते च कुन्तलेषु सातवाहनो नाम राजा । तेन प्राकृतभाषात्मकमन्तःपुर एवेति समानं पूर्वेण ।

(काव्यमीमांसा पृ. ५०)

भावार्थः—संभळाय छे के–सूरसेनदेशमां कुविंद नामनो राजा हतो. तेणे परुषाक्षरो अने संयुक्ताक्षरो सिवायना अक्षरो द्वारा पोताना अन्तेउरमां भाषानियम प्रवर्ताव्यो हतो.

वळी संभळाय छ के–कुंतलदेशमां सातवाहन नामनो राजा थयो हतो. तेणे पोताना अन्तेउरमां प्राकृतभाषात्मक नियम प्रवर्त्ताव्यो हतो.

दक्षिण महाराष्ट्रना सार्वभौम प्रतापी कविवत्सल हाल महाराजाए, हार तथा वेणीदण्ड वगेरेना वर्णनवाळी चार गाथाओने दश क्रोडथी अने अन्य चार गाथाओने नव क्रोडथी, गाथासप्तशतीमां संग्रहीत करी हती.

कविवत्सल हालथी बहुमानने पामेला श्री पादलिप्तसूरि महाराजे, रसिक मनोहर तेमज विस्तारवाळी **'तरङ्गवती'** नामनी जे कथा रची हती, ते कथा ते ज राजाना राजदरबारमां विद्वानोनी मेदनी समक्ष (वांची) संभळावी हती, अने जेनी अनेक महाकविओए मुक्तकंठे प्रशंसा पण करी हती.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवरसेन निमित्ते राजा विक्रमनी आज्ञाथी 'सेतुबन्ध' नामनुं प्राकृत महाकाव्य कवि कालिदासे रच्युं हतुं.

राजा महेंद्रपालादिना राजगुरु कवि राजशेखरे 'प्राकृतसट्टक' आदिनी रचना करी हती, अने राजा तरफथी सारा सन्मानने पाम्या हता.

महाराजा भोजदेवना सरस्वतीकंठाभरणमां एवुं सूचन छे के– **'केऽभूवन् नाढ्यराजस्य राज्ये प्राकृतभाषिणः'** एटले आढ्यराजना राज्यमां कोण प्राकृत बोलनार न हतुं ? अर्थात् तेना राज्यमां प्राकृतभाषाना बोलनारा सर्वे हता.

महाराजा यशोवर्मा पासे स्वाश्रित वाक्पतिराज नामनो सामन्त हतो, जे कविराजनी ख्याति पाम्यो हतो, तेणे पोताना स्वामीनी कीर्तिरूप 'गौडवहो' नामनुं प्राकृत महाकाव्य रच्युं हतुं.

उपर्युक्त प्रमाणो उपरथी स्पष्ट समजी शकाय तेम छे के– प्राचीन काळना राजा महाराजाओने प्राकृत भाषा तरफ केवो प्रेम हतो.

सूक्ति सागरता=प्राकृतभाषा, ए सूक्तिओनो अर्थात् सुभाषितोनो महासागर छे. आ बाबतमां प्राचीन कविओए प्रकट रीते उच्चार्युं छे के–

"महाराष्ट्राश्रयां भाषां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्ति–रत्नानां, सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥

(कविदंडीकृत–काव्यादर्श)

भावार्थः–महाराष्ट्रना आश्रयने पामेली भाषाने, विद्वानो प्रकृष्ट प्राकृत कहे छे, के जे सूक्तिरूप–सुभाषितोरूप रत्नोनो सागर छे अने जे प्राकृतभाषामां सेतुबन्ध वगेरे काव्यो रचायां छे.

लाटप्रियता=लाटदेशना लोकोनो प्राकृतभाषा उपर अपूर्व प्रेम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हतो. जुओ, आ विषयने प्रतिपादन करतां यायावरीय कवि राजशेखरनां बालरामायणस्थ वचनो—

“यद् योनिः किल संस्कृतस्य सुदृशां, जिह्वासु यन्मोदते ।
यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटु-र्भाषाक्षराणां रसः ॥

गद्यं चूर्णपदं पदं रतिपते-स्तत्-प्राकृतं यद्वच-
स्ताँल्लाटाँल्ललिताङ्गि ! पश्य नुदती दृष्टेर्निमेषव्रतम् ॥”

[कवि राजशेखरना बालरामायणमां. (१, ११; पृ० ४९)]

भावार्थः—जे (प्राकृत) संस्कृतनु उत्पत्तिस्थान छे, जे सुन्दर नयनवाळी सुन्दरीओनी जिह्वामां हर्ष पामे छे, जे श्रवणगोचर थतां अन्य भाषाना अक्षरोनो रस कर्णकटु लागे छे, तेमज गद्य अने चूर्णपदमय जे प्राकृत रतिपतिनु स्थान छे, तेवा प्राकृतने बोलनारा लाटदेशवासी लोकोने, हे ललित अंगोवाळी सुन्दरी ? तु तारा अनिमे नयने निहाळ.

आ बाबतमां पुनः ते ज यायावरीय कवि राजशेखर, काव्यादर्शमां जणावे छे के—

“पठन्ति लटभं लाटाः. प्राकृतं संस्कृतद्विषः ।
जिह्वया ललितोल्लाप-लब्धसौन्दर्यमुद्रया ॥”

भावार्थः-संस्कृतद्वेषी लाटदेशवासी लोको, ललितउल्लाप करवामां ‘सौन्दय’ बिरुदने पामेली जीभवडे, सुन्दर प्राकृत बोले छे.

आ उपरथी ए सिद्ध थाय छे के, एक समये लाटदेशनी विशिष्ट भाषा प्राकृत ज हती.

मनोहरता—प्राकृतकाव्यनी मनोहरता याने सुन्दरताने अंगे वररुचिना प्राकृतप्रकाश पर पद्यवृत्ति रचनार विद्वान् जणावे छे के—

“अहो तत् प्राकृतं हारि, प्रियावक्त्रेन्दुसुन्दरम् ।
सूक्तयो यत्र राजन्ते, सुधानिःष्यन्दनिर्भराः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ :—अहो ! प्रियाना मुखरूप चंद्रना जेवुं सुंदर ते प्राकृत मनोहर छे एटलुं ज नहि किंतु तेमां अमृत जेवी रसभरपूर सूक्तिओ शोभी रही छे.

दिग्दर्शनरूपे उपर दर्शावेला झवेरातो उपरथी स्पष्ट समजाय छे के प्राकृत ए अपूर्व दिव्य झवेरातोनी अनोखी खाण छे.

प्राकृतनी महत्तानो उपसंहार

उपर्युक्त प्रमाणो उपरथी, सुज्ञ वाचक महाशय समजी शक्या हशे के–सकलजनवल्लभ, अकृत्रिम, प्रकृतिवत्सल, स्वादु तेमज आबालगोपाल सुबोधकारिणी भाषा कोई पण होय तो, प्राकृतभाषा ज छे.

यद्यपि आपणा परमपवित्र आर्यावर्तनी प्राचीनमां प्राचीन बे भाषाओ छे. एक प्राकृत अने बीजी संस्कृत. आ बे भाषाओ भारतवर्षनुं निर्मळ नयनयुगल छे. बन्नेनो साहित्यक्षेत्रमां बहोळो फाळो छे, छतां पण प्राचीन आर्यसंस्कृति समजवा माटे जेटली जरुरियात संस्कृतनी छे. तेटलीज बल्के तेथी अधिक आवश्यकता प्राकृतनी छे.

बाळक होय के बाळिका होय, स्त्री होय के पुरुष होय, राजा होय के रंक होय, मूर्ख होय के पंडित होय, तमाम आलमने मानीती विश्ववल्लभ, तेमज विशाळ समुदाय उपर उपकार करनारी भाषा कोई पण होय, तो ते प्राकृतभाषा छे.

प्राकृत (भाषा)नी विशिष्टताओ तथा उपयोगितानुं दिग्दर्शन करी आव्या. हवे, आपणे प्रस्तुत "प्राकृतविज्ञान पाठमाळा"नी आवश्यकता तथा उपयोगिता वगेरे विचारीए—

प्रस्तुत ग्रंथनी आवश्यकता

समय परिवर्तनशील होवाथी, वचला अमुक गाळामां, प्राकृतभाषानां साधनोनी छिन्नभिन्न दशाने अंगे, अर्थात् तथा प्रकारनी साधन–सामग्रीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभावने लईने प्राकृत (भाषा)नुं पठन पाटन बहु मंद पडी गयुं हतुं; अने संस्कृत (भाषा) माटेनी साधन सामग्रीओना सद्भावे संस्कृतना पठनपाठने विश्वपर सारुं साम्राज्य जमाव्युं हतुं.

परंतु हमणां हमणां साधुवर्गमां तो शुं किंतु हाईस्कूलोमां अने कॉलेजोमां सेकंड लेंग्वेज (बीजी भाषा) तरीके प्राकृतनुं पठनपाटन सारा प्रमाणमां चालु थयुं छे. जेथी गृहस्थवर्गमां पण प्राकृतनो सारो प्रचार थई रह्यो छे. ए कांई ओछा आनंदनी वात नथी. हवे आ प्रचारने अधिकाधिक वधारवानी खातर, तेमज विद्यार्थीवर्गने सरळताथी बोध थई शके तेवा मार्गोपदेशिकारूप अभिनव पद्धतिना एकाद पुस्तकनी आवश्यकता तो हती ज, तेमां परमपूज्य पूज्यपाद परमोपकारी समयज्ञ श्रीमद् गुरुराज **(विजय-विज्ञानसूरीश्वरजी महाराज)**श्रीनी प्रेरणा थवाथी में ते कार्य हाथ धर्युं अने तेओश्रीनी असीम कृपा–प्रसादरूप आ "**प्राकृत विज्ञान–पाठमाला**" तैयार थई ते माटे तेओश्रीनो सदा ऋणी छुं. हवे आ "प्राकृत विज्ञानपाठमाळा" द्वारा भव्य आत्माओ, प्राकृत विज्ञानना अधिका-धिक प्रेमाळु बनी, प्राकृत भाषानो सरळताथी बोध पामी, तेनो बहोळो प्रचार करे अने मारो आ प्रयास सफळ थाय एटलुं इच्छी आ प्रासंगिक वक्तव्य समाप्त करुं छुं. आ प्रासंगिकमां पं० लालचंद्र भगवानदास गांधीनी 'प्राकृतभाषानी उपयोगिता' नामनी पुस्तिकानो पण उपयोग करवामां आव्यो छे. इत्यलं प्रसंगेन

॥ शुभं भवतु ॥

प्रणेता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'विषय स्फोट'

१ आ पाठमालानी अन्दर प्राकृत–धातुओ प्राकृत शब्दो प्रत्ययो अने तेनां विस्तृत रूपो तेमज धातुओ अने शब्दोनी साथे संस्कृतपर्यायो पण आपेला छे.

२ आर्ष–प्राकृतनो पण अभ्यास थई शके तेने माटे प्रसंगे प्रसंगे आर्ष प्रत्ययो अने रूपो पण मुकेलां छे.

३ संस्कृतना अभ्यासीओने संस्कृतद्वारा प्राकृतनुं ज्ञान थइ शके तेटला माटे वर्ण विकारना मुख्य नियमो टिप्पणमां लीधेला छे, तेमज छेवटे सन्धि आदिना क्रमपूर्वक सर्वनियमो आपवामां आवेला छे.

४ कृदन्तोनो पाठ अलग करवामां आव्यो छे, अने तेमां आर्षकृदन्तो पण साथे सूचवेलां छे.

५ प्रेरकभेदनां रूपो विस्तारथी देखाडवामां आव्यां छे.

६ समास, सर्वनाम, तथा संख्यावाचक शब्दोना अलग अलग पाठो करवामां आवेला छे.

७ प्राकृतवाक्यो पण विद्यार्थीओनी अनुकूलता ध्यानमां राखी घणाखरां प्राकृत साहित्यमांथी ज लीधेलां छे.

८ पाछळ शब्दकोष अव्ययकोष अने धातुकोष एक साथे आपवामां आवेलो छे.

९ प्राकृत गद्यपद्यमालामां सूत्रो अने प्राकृतचरित्रमांथी सरल गद्यपद्य लईने मुकवामां आवेल छे तथा कठिन शब्दोनो अर्थ संस्कृत पर्याय सहित मूकवामां आवेलो छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मंगल	१
वर्णविज्ञान	२
पाठ १ वर्तमानकाल प्रथमपुरुषना प्रत्ययो...	१०
,, २ ,, बीजा ,, ...	१२
,, ३ ,, त्रीजा ,, ...	१६
,, ४ उपयोगी सर्वनाम अने संख्यावाचकनां रूपो... ...	१९
,, ५ स्वरांत धातुओनां रूपो	२३
,, ६ ज्ज–ज्जानां रूपाख्यानो तथा उपसर्ग	२६
,, ७ अकारान्त पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग नामो **पढमा–बीया** विभक्ति	३७
,, ८ **तइआ–चउत्थी** ,, ...	४४
,, ९ **पंचमी–छट्ठी** ,, ...	५२
,, १० **सत्तमी** अने **संबोहण** तेमज संपूर्ण रूपो... ...	६०
,, ११ **इ** कारांत अने **उ** कारांत पुल्लिंग तथा नपुंसक ... नामो **पढमा–बीया** अने **तइआ** विभक्ति ...	७०
,, १२ **चउत्थी–पंचमी** अने **छट्ठी** विभक्ति	७६
,, १३ **सत्तमी** अने **संबोहण**	८२
,, १४ भूतकाल	८९
,, १५ आज्ञार्थ अने विध्यर्थ	९६
,, १६ **आ**कारांत अने ह्रस्व तथा दीर्घ **इ–ई**कारांत ... अने **उ–ऊ**कारांत स्त्रीलिंग नामो...	१०६
,, १७ भविष्यकाळ...	१२०
,, १८ ,, अने क्रियातिपत्त्यर्थ तेमज **ऋ** कारांत ... पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग नामो	१३०
,, १९ कर्मणिरूप अने भावेरूप	१४८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

,, २० कृदंत १६२

,, २१ व्यंजनान्त नाम अने तद्धित प्रत्ययो तथा शब्दो ... १७७

,, २२ प्रेरकभेद १९८

,, २३ समास २२७

,, २४ सर्वनामनां रूपो २४३

,, २५ संख्यावाचक शब्दो २६३

पाइअसद्दकोसो २८४

गुजराती प्राकृत शब्दकोष ३३१

,, १ परिशिष्ट–नियमोनुं ३४७

,, २ ,, –धातुओनां विशिष्ट रूपोनुं ३७७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरिपाइअगज्जपज्जनी अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
१	पंचनमुक्कारमहामंतो–चत्तारि मंगलं	३७७
	चत्तारि लोगुत्तमा–चत्तारि सरणं	,,
२	सीयावण्णणं	३७८
३	इंदियविसयभावणा	३७९
४	निम्ममो भिक्खू चरे	३८०
५	पुक्खरिणीवण्णणं	,,
६	नमिपव्वज्जा	३८१
७	वयछक्कं	३८५
८	रावणस्स पच्छायावो	३८६
९	दयावीरमेहनरिंदो	३८८
१०	महेसरदत्तकहा	३९०
११	गामेयगोदाहरणं	३९२
१२	सिसुवालकहा...	३९४
१३	कमलामेला	३९५
१४	वुड्ढा तरुणा य मंतिणो...	३९८
१५	विणओ सव्वगुणाणं मूलं	३९९
१६	कुमारवालभूवालस्स जीवहिंसाइचाओ	४००
१७	पाइअसुमासिअ–पज्जाणि	४०२
	प्राकृतगद्यपद्यमालामां आवेला कठिन शब्दोना अर्थ ...	४११
	पसत्थी	४२०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हँ

॥ ॐ नमः श्रीसिद्धचक्राय ॥

॥ परमगुरु-आचार्य-महाराज-श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वर-भगवद्भ्यो नमः ॥

सूरिचक्रचक्रवर्ति-जगद्गुरु-शासनसम्राट्-भट्टारकाचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कार-परमपूज्य-परमोपकारि-पूज्यपाद-आचार्यमहाराजश्रीविजयविज्ञानसूरीश्वर-पट्टधराचार्यश्रीविजयकस्तूरसूरि-प्रणीता

॥ श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला ॥

दिव्वपहावो दीसइ, कलियाले जस्स अमियझरणाओ ।
सत्तफणंचिअसीसो, स जयउ "सेरीसपासजिणो" ॥१॥
पयडिअसमत्तभावं, भविअन्नाणंधयारपयरहरं ।
सूरुव्व जस्स नाणं, स पहू वीरो कुणउ भद्दं ॥२॥
एक्कारस गणवइणो, गोयमपमुहा जयन्ति सुयनिहिणो ।
स वि हेमचंद्रसूरी जाओ कलियालसव्वण्णू ॥३॥
सिरिविजयनेमिसूरी, जुगप्पहाणो महं पसीएज्जा ।
जस्स सुहादिट्ठीए, असज्झकज्जाणि सिज्झन्ति ॥४॥
विन्नाणसूरिं सगुरुं च नच्चा, सुअं च सव्वण्णुपणीअतत्तं ।
पाइअविन्नाणसुपाढमालं, रएमि हं सीससुहंकरट्ठं ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्णविज्ञान

*स्वर.

ह्रस्व—अ, इ, उ,
दीर्घ—आ, ई, ऊ, ए, ओ, ंअनुस्वार.

÷व्यंजन.

		स्थान
क वर्ग	क् ख् ग् घ् ङ्	कंठ्य.

---

* १ प्राकृतमां 'ऋ' स्वरनो विकार 'अ' थाय, तेमज कोई स्थाने 'इ–उ' अने 'रि' पण थाय छे जेमके **घयं** (घृतम्), **मओ** (मृगः), **किवा** (कृपा), **पुट्ठो** (स्पृष्टः), **रिद्धी** (ऋद्धिः).

२ 'ऌ' स्वरनो विकार 'इलि' थाय छे. **किलिन्नं** (क्लृन्नम्), **किलित्तं** (क्लृप्तम्).

३ 'ऐ' अने औ नो विकार अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे, तेमज कोई स्थाने 'अइ' अने 'अउ' पण थाय छे. **सेन्नं–सइन्नं** (सैन्यम्), **तेलुक्कं** (त्रैलोक्यम्), **कोमुई–पउरो** (कौमुदी–पौरः). **कैयवं–ऐ कौरवा** (कैतवम्–अयि कौरवाः). एवा केटलाएक शब्दोमां **ऐ–औ** नो प्रयोग पण आवे छे.

४ विसर्गनो प्रयोग थतो नथी पण 'अ' नी पछी विसर्ग होय तो अ सहित विसर्गनो 'ओ' थाय छे.

सव्वओ (सर्वतः), **पुरओ** (पुरतः), **जओ** (यतः).

÷ १ ङ्–ञ् आ बे व्यंजनो स्वतन्त्र प्राकृतमां आवता नथी, पण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		तालव्य.
ट ,,	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्		मूर्धन्य.
त ,,	त्	थ्	द्	ध्	न्		दंत्य.
प ,,	प्	फ्	ब्	भ्	म्		ओष्ठ्य.
अर्धस्वर						य्	तालव्य.
						र्	मूर्धन्य.
						ल्	दंत्य.
						व्	दंतौष्ठ्य.
			स्				दन्त्य.
			ह्				कंठ्य.

स्ववर्गनी साथे संयुक्त आवे छे. **सङ्खो** (शङ्खः), **लञ्छणं** (लाञ्छनम्).

२ 'श' अने 'ष' नो **स** थाय छे. **विसेसो** (विशेषः), **सद्दो** (शब्दः).

३ स्वररहित केवल व्यंजननो प्रयोग थतो नथी. **राय** (राजन्), **सरिया** (सरित्), **तमो** (तमस्).

४ प्राकृतमां विजातीय संयुक्त व्यंजनो आवता नथी. पण नियमानुसार बेमांथी एकनो लोप थइ स्वजातीय संयुक्त व्यंजन थाय छे. **पक्क** (पक्व), **अच्चण** (अर्चन), **इट्ठ** (इष्ट), **अण्णव,** (अर्णव), **सुत्त** (सूत्र–सुप्त), **सप्प** (सर्प), **कव्व** (काव्य) वगेरे.

अपवाद—**म्ह–ण्ह–ल्ह–य्ह–द्र** आ संयुक्त व्यंजननो प्रयोग प्राकृतमां देखाय छे. **गिम्हो** (ग्रीष्मः), **पण्हो** (प्रश्नः), **पल्हाओ** (प्रह्लाद;), **गुय्हो** (गुह्यः), **चंदो चंद्रो** (चन्द्रः) वगेरे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृतमां संयुक्त व्यंजनना फेरफार नीचे प्रमाणे थाय छे.

क्त=क्क–मुक्त=मुक्क
क्य=क्क–वाक्य=वक्क
क्र=क्क–चक्र=चक्क
क्ल=क्क–विक्लव=विक्कव
क्व=क्क–पक्व=पक्क
त्क=क्क–उत्कण्ठा=उक्कंठा
र्क=क्क–अर्क–अक्क
ल्क=क्क–उल्का=उक्का
दुःख=क्ख–दुःख=दुक्ख
क्ष=क्ख–लक्षण=लक्खण
ख्य=क्ख–व्याख्यान–वक्खाण
क्ष्य=क्ख–लक्ष्य–लक्ख
त्क्ष=क्ख–उत्क्षिप्त=उक्खित्त
त्ख=क्ख–उत्खात=उक्खाय
ष्क=क्ख–निष्क्रमण=निक्खमण
स्क=क्ख–प्रस्कन्दन=पक्खंदण
स्ख=क्ख–प्रस्खलित=पक्खलिअ
ग्न=ग्ग–नग्न=नग्ग
ग्म=ग्ग–युग्म=जुग्ग
ग्य–ग्ग–योग्य=जोग्ग
ग्र=ग्ग–अग्र=अग्ग
ड्ग=ग्ग–खड्ग=खग्ग
द्ग=ग्ग–मुद्ग=मुग्ग
र्ग=ग्ग–वर्ग=वग्ग
ल्ग=ग्ग–वल्ग=वग्ग
घ्न=ग्घ–विघ्न=विग्घ
घ्र=ग्घ व्याघ्र=वग्घ
द्घ=ग्घ–उद्घाटित–उग्घाडिअ
र्घ=ग्घ–अर्घ=अग्घ
च्य=च्च–अच्युत=अच्चुअ
त्य=च्च–सत्य=सच्च
त्व=च्च–ज्ञात्वा=णच्चा
थ्य=च्च–तथ्य=तच्च
र्च=च्च–अर्चना=अच्चणा
क्ष=च्छ–दक्ष=दच्छ
क्ष्म=च्छ–लक्ष्मी=लच्छी
छ्=च्छ–वृच्छ्=विच्छ
त्स=च्छ–वत्स–वच्छ
त्स्य=च्छ–मत्स्य=मच्छ
थ्य=च्छ–मिथ्या=मिच्छा
प्स=च्छ–लिप्सा=लिच्छा
र्छ=च्छ मूर्छा=मुच्छा
श्च=च्छ–पश्चात्–पच्छा
स्त=च्छ–विस्तीर्ण=विच्छिन्न
ज्य=ज्ज–आज्य=अज्ज
इज्या=इज्जा
ज्र=ज्ज–वज्र=वज्ज
ज्व=ज्ज–प्रज्वलन=पज्जलण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञ=ज्ज–सर्वज्ञ=सव्वज्ज

द्य=ज्ज–अद्य=अज्ज

ब्ज=ज्ज–अब्ज=अज्ज

य्य=ज्ज–शय्या=सेज्जा

र्य=ज्ज–आर्या=अज्जा

र्ज=ज्ज–वर्जन=वज्जण

र्ज्य=ज्ज–वर्ज्य=वज्ज

ध्य=ज्झ–मध्य=मज्झ

ध्व=ज्झ–बुद्ध्वा=बुज्झा

ह्य=ज्झ–बाह्य=वज्झ

त्त=ट्ट–पत्तन=पट्टण

र्त्त=ट्ट–नर्त्तकी=नट्टई

ष्ट=ट्ठ–कष्ट=कट्ठ

ष्ठ=ट्ठ–निष्ठुर=निट्ठुर

र्थ=ट्ठ–अर्थ=अट्ठ

र्त=ड्ड–गर्ता=गड्डा

र्द=ड्ड–विच्छर्द=विच्छड्ड

ढ्य=ड्ढ–आढ्य=अड्ढ

द्ध=ड्ढ–ऋद्धि=रिड्ढि

र्ध=ड्ढ–वर्धमान=वड्ढमाण

ज्ञ=ण्ण–प्राज्ञ=पण्ण

ण्य=ण्ण–पुण्य=पुण्ण

ण्व=ण्ण–कण्व=कण्ण

न्य=ण्ण–अन्य=अण्ण

न्व=ण्ण–अन्वर्थ=अण्णत्थ

म्न=ण्ण–प्रद्युम्न=पज्जुण्ण

र्ण=ण्ण–वर्ण=वण्ण

क्ष्ण=ण्ह–तीक्ष्ण=तिण्ह

श्न=ण्ह–प्रश्न=पण्ह

ष्ण=ण्ह–उष्ण=उण्ह

स्न=ण्ह–स्नाति=ण्हाइ

ह्ण=ण्ह–पूर्वाह्ण=पुव्वण्ह

ह्न=ण्ह–मध्याह्न=मज्झण्ह

क्त=त्त–मुक्त=मुत्त

त्न=त्त–यत्न=जत्त

त्म=त्त–आत्मा=अत्ता

त्र=त्त–पात्र=पत्त

त्व=त्त–सत्त्व=सत्त

प्त=त्त–प्राप्त=पत्त

र्त=त्त–वार्ता=वत्ता

क्थ=त्थ–सिक्थ=सित्थ

त्र=त्थ–यत्र=जत्थ

र्थ=त्थ–अर्थ=अत्थ

स्त=त्थ–हस्त=हत्थ

स्थ=त्थ–प्रस्थ=पत्थ

द्र=द्द–रुद्र=रुद्द

द्व=द्द–प्रद्वेष=प्रद्देस

ब्द=द्द–अब्द=अद्द

र्द=द्द–मर्दन=मद्दण

ग्ध=द्ध–दग्ध=दद्ध

ध्व=द्ध–अध्वन्=अद्ध

ब्ध=द्ध–अब्धि=अद्धि

र्ध=द्ध वर्धमान=वद्धमाण

क्म=प्प–रुक्मिणी=रुप्पिणी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्प=प्प–उत्पल=उप्पल
त्म=प्प–आत्मन्=अप्प
प्य=प्प–प्राप्य=पप्प
प्र=प्प–वप्र=वाप
प्ल=प–विप्लव=विप्पव
र्प=प्प–अर्पण=अप्पण
ल्प=प्प–अल्प=अप्प
त्फ=प्फ–उत्फुल्ल=उप्फुल्ल
ष्प=फ–पुष्प=पुप्फ
ष्फ=प्फ–निष्फल=निप्फल
स्प=प्फ–प्रस्पन्दन=पप्फंदण
स्फ=प्फ–प्रस्फोटित=पप्फोडिअ
द्ब=ब्ब–उद्बद्ध=उब्बद्ध
र्ब=ब्ब–निर्बल=निब्बल
,, ,, अर्बुद=अब्बुअ
ब्र=ब्ब–अब्रह्म=अब्बंभ
ग्भ=ब्भ–प्राग्भार=पब्भार
द्भ=ब्भ–सद्भाव=सब्भाव
भ्य=ब्भ–अभ्यास=अब्भास
भ्र=ब्भ–अभ्र=अब्भ
र्भ=ब्भ–गर्भ=गब्भ
ह्व=ब्भ–जिह्वा=जिब्भा
न्म=म्म–जन्मन्=जम्म
म्य=म्म–वाम्य=वम्म
र्म=म्म–कर्मन्=कम्म
ल्म=म्म–गुल्म=गुम्म
द्म=म्म–पद्म=पोम्म

क्ष्म=म्ह–पक्ष्मन्=पम्ह
ष्म=म्ह–ग्रीष्म=गिम्ह
स्म=म्ह–विस्मय=विम्हय
ह्म=म्ह–ब्राह्मण=बम्हण
ह्य=य्ह–गुह्य=गुय्ह
र्य=ल्ल–पर्यस्त=पल्लत्थ
र्ल=ल्ल–निर्लज्ज=निल्लज्ज
ल्य=ल्ल–कल्याण=कल्लाण
ल्व=ल्ल–पल्वल=पल्लल
ह्ल=ल्ल–प्रह्लाद–पल्हाअ
द्व=व्व–उद्वर्तन=उव्वट्टण
र्व=व्व–उर्वी=उव्वी
व्य=व्य–काव्य=कव्व
व्र=व्व–प्रव्रज्या=पव्वज्जा
र्ष=स्स–ईर्षा=इस्सा
श्म=स्स–रश्मि=रस्सि
श्य=स्स–पश्यति=पस्सइ
,, ,, लेश्या=लेस्सा
श्र=स्स–विश्राम=विस्साम
श्व=स्स–ईश्वर=इस्सर
ष्य=स्स–शुष्यति=सुस्सइ
ष्व=स्स–इष्वास=इस्सास
स्य=स्स–कस्य=कस्स
स्र=स्स–सहस्र=सहस्स
स्व=स्स–तेजस्विन्=तेअस्सि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दनी अंदर स्वरनी पछी असंयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो प्राय: नीचे प्रमाणे थाय छे.

सं. प्रा.

क=*लुक्-लोक=लोअ
क=ग-लोक=लोग
क=य-कनक=कणय
ख=ह-मुख=मुह
ग=लुक्-योग=जोअ
ग=य-नगर=नयर
घ=ह-मेघ=मेह
च=लुक् शची=सई
च=य-वचन=वयण
ज=लुक्· राजीव=राईव
ज=य-रजत=रयय
ट=ड-नट=नड
ठ=ढ-मठ=मढ
ड=ल-क्रीडति=कीलइ
त=लुक्-पति=पइ
त=य-पात=पाय
थ=ह-कथा=कहा
द=लुक्-विदेश=विएस
द=य-गदा=गया
ध=ह-साधु=साहु

सं. प्रा.

न=ण-धन=धण
आदिमां न नो ण विकल्पे थाय.

नर=नर }
णर }

प=लुक्-रिपु=रिउ
प=व-पाप=पाव
फ=भ-सफल=सभल
फ=ह-सफल=सहल
ब=व-सबल=सवल
भ=ह-सभा=सहा
य=लुक्-वियोग=विओग
आदिमां य नो ज थाय.
य=ज-यम=जम
याति=जाइ
कोइ ठेकाणे र नो ल थाय.
र=ल-दरिद्र=दलिद्द
व=लुक्-कवि=कइ
व=य-लावण्य=लायण्ण
श } =स-शेष=सेस
ष } शब्द=सद्द

* आ शब्दनो अर्थ लोप थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूचना.

१ आ '**प्राकृत विज्ञान पाठमाला**' मां आपेला धातुओनां तथा शब्दोनां रूपाख्यानो तथा तेना नियमो कलिकाल सर्वज्ञ भगवान् **श्रीहेमचन्द्राचार्य** विरचित प्राकृत (सिद्धहेम व्याकरणना अष्टम अध्यायरूप) व्याकरणना अनुसारे जाणवां.

२ संस्कृतमां जेम दश गणो अने तेमां परस्मैपदी–आत्मनेपदी अने उभयपदी धातुओ तथा तेना जुदा जुदा प्रत्ययो आवे छे, तेम प्राकृतमां नथी.

३ प्राकृतमां **१ वर्तमानकाल, २ भूतकाल,** (ह्यस्तन–परोक्ष–अद्यतन भूतना स्थाने) **३ आज्ञार्थ–विध्यर्थ** अने **४ भविष्यकाल** (श्वस्तन भविष्य अने सामान्य भविष्यना स्थाने) तेमज **५ क्रियातिपत्त्यर्थ** एटला काळो वपराय छे.

४ प्राकृतमां द्विवचनने बदले बहुवचन वपराय छे. ज्यारे तेनो प्रयोग करवामां आवे छे त्यारे द्वित्व अर्थ जणाववाने माटे बहुवचनांत नामनी साथे विभक्त्यंत–'**द्वि**' शब्दनो प्रयोग थाय छे, जेम **दोण्णि पुरिसा गच्छन्ति**=बे पुरुषो जाय छे.

५ प्राकृतमां चतुर्थी विभक्तिना स्थाने छट्ठी विभक्ति वपराय छे, पण तादर्थ्य (तेने माटे) मां संस्कृतनी जेम चतुर्थीनुं एकवचन वपराय छे. जेम–**आहाराय नयरं अडइ,** (आहाराय नगरमटति)

६ प्राकृत भाषामां धातुओ अने शब्दो त्रण विभागमां वहेंचायेला छे.
१ ***देश्य**=महाराष्ट्र–विदर्भ–मगध आदि देशोमां वपराती भाषा.

---

* कलिकाल सर्वज्ञ भगवान् **श्री हेमचन्द्रसूरिजीए** देशीनाममालामां देश्य शब्दनो संग्रह करेलो छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ **तद्भव**=संस्कृत उपरथी प्राकृत नियमानुसारे सिद्ध थयेल.

३ **तत्सम**=संस्कृत समानज होय ते.

देश्यधातु=**फुम**=फूंकवुं, **फुम्फुल्ल**=उपाडवुं. **अवयास**=भेटवुं, आलिंगन करवुं. **पिप्पड**=बकवुं, बबडवुं. वगेरे धातुओ, तेमज आदेश धातुओ.

देश्यशब्द=**अत्थग्घ**=मध्यवर्ती, वचमां रहेल. **थह**=आश्रय, स्थान. **लल्लक्क**=भयंकर. **चवल**=चोखा, चावल. **खउर**=कलुषित. **आहित्थ**=गयेलुं. **विड्डिर**—आडम्बर. वगेरे शब्दो.

तद्भवधातु=**कह्** (कथ्), **पड्** (पत्), **भम्** (भ्रम्), **वाह्** (बाध्), **हण्** (हन्), **अप्प्** (अर्प्), **अच्च्** (अर्च्), वगेरे.

तद्भवशब्द=**मयण** (मदन) **ओसढ** (औषध) **भत्त** (भक्त) **विण्हु** (विष्णु) **पहु** (प्रभु) वगेरे.

तत्समधातु=**भण्–चल्–वंद्–वस्–हस् लज्ज्–रम्** इत्यादि.

तत्समशब्द=**सिद्ध–कमल–बुद्धि–माला–विमल–वीर** वगेरे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १ लो.

वर्तमान काल

पहेला पुरुषना एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो.

एकवचन.	[1]बहुवचन.
मि (मि)[2]	मि, मु, म, (मस्, म्हे)

धातुओ

कह् (कथ्) कहेवु.
गच्छ् (गम्-गच्छ्) गमन करवुं, जवुं.
चल् (चल्) चालवुं.
जाण्, मुण् (ज्ञा) जाणवुं.
जेम्, भुंज् (भुंज) जमवुं. खावुं.
देक्ख् (दृश्) देखवुं. जोवुं.
नम्, नव् (नम्) नमवुं, नमस्कार करवो
पड् (पत्) पडवुं, पतित थवुं.
पिव्, पिज्ज (पा-पिव्) पीवुं. पान करवुं.
पीड, पील् (पीड्) पीडवुं दुःख देवुं. कनडवुं.
पुच्छ् (प्रच्छ्-पृच्छ्) पूछवुं.
बीह् (भी, बीवुं, भय पामवुं.
बोल्ल् (कथ्) बोलवुं.
बोह् (बोध्) बोध थवो, जाणवुं.
भण् (भण्) भणवुं.
भम् (भ्रम्) भमवुं.
रुव्, रोव् (रुद्) रोवुं, रुदन करवुं.
वस् (वस्) वसवुं.
हस् (हस्) हसवुं.

---

१ प्राकृतमां द्विवचन होतु नथी. तेने स्थाने बहुवचन वपराय छे आ प्रयोग करती वखते दु (द्वि) शब्दनो प्रयोग थाय छे.
जेम-अम्हे दोण्णि बोल्लिमो.

२ एकवचनमां 'म्हि' अने बहुवचनमां 'म्ह' प्रत्यय कोईस्थाने प्राकृत साहित्यमां वपरायेला देखाय छे.
जेम-भगवइ! महापसाओ, ता पहि गच्छम्ह.
(समराइच्च ८-मो भव.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ व्यंजनान्त धातुओने पुरुषबोधक प्रत्ययोनी पूर्वे 'अ' प्रत्यय लगाडवामां आवे छे. **बोल्ल्+अ+मि=**

२ पहेला पुरुषना **मि** प्रत्ययनी पूर्वे 'अ'नो **'आ'** विकल्पे थाय छे. **बोल्लामि, बोल्लमि.**

३ **मो, मु म,** प्रत्ययोनी पूर्वे 'अ'नो **'आ'** तथा 'इ' विकल्पे थाय छे.

बोल्लामो, बोल्लिमो, बोल्लमो

४ वर्तमान काळना आगळ कहेवाता बीजा अने त्रीजा पुरुषना **'से-ए'** प्रत्यय सिवाय सर्व पुरुष बोधक प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना अ नो **'ए'** थाय छे.

बोल्लेमि, बोल्लेमो, बोल्लेमु, बोल्लेम

अथवा **बोल्लामि, बोल्लामु** इत्यादि.

पहेला पुरुषनां रूपो.

एकव०	बहु०
भणामि	भणिमो, भणिमु, भणिम,
भणमि,	भणामो, भणामु, भणाम,
भणेमि	भणमो, भणमु, भणम,
	भणेमो, भणेमु, भणेम.

प्राकृत वाक्यो.

कहामि	जाणमो	मुणेमु	बोल्लेमि
हसामु	जेमामि	भुंजामो	बीहेमि
गच्छेमि	देक्खेमो	नवामु	पुच्छामि
वसामो	भणमु	पडेमो	पीडेमु
चलेम	नमामि	रोवेमु	बोल्लिमु
रोवामि	भणामि	बोहामि	पिवामो
पीलेमि	वसेम	नमेमि	रुविमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

(हुं) पूछुं छुं.	(अमे) जमीए छीए.
(हुं) पीडुं छुं.	(हुं) जाणुं छुं.
(अमे) भय पामीए छीए.	(अमे) रुदन करीए छीए.
(हुं) पीवुं छुं.	(हुं) रहुं छुं
(अमे) बोध पामीए छीए.	(अमे) चालीए छीए.
(हुं) पडुं छुं	(अमे) जइए छीए.
(हु) भणु छुं.	(हुं) हसुं छुं.
(अमे) नमीए छीए.	(अमे) कहीए छीए.
(हुं) भमु छु.	(अमे) बोलीए छीए.
(हुं) देखुं छुं.	(अमे) रहीए छीए.

पाठ २ जो.

बीजा पुरुषना एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो.

एकव०	बहुव०
सि, से, (से-सि)	ह, इत्था, (थस्-थ)

धातुओ.

इच्छ (इच्छ्) इच्छवुं.	निंद् (निन्द्) निंदा करवी.
कंप् (कम्प्) कंपवु, ध्रूजवुं.	पास् (दश्) देखवुं. जोवुं.
कर् (कृ) करवुं.	भव्, हव्, हुव् } (भू-भव्) होवुं, थवुं.
चर् (चर्) चरवुं, चालवुं.	
चिंत् (चिन्त्) चिंतवन करवुं. विचार करवो.	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[3]**बुज्झ्** (बुध्–बुध्य) बोध थवो, ज्ञान मेळववुं, जागवुं, समजवुं.
मुज्झ् (मुह्–मुह्य) मुझावुं, मोह पामवो, घेला थवुं.
रक्ख् (रक्ष्) रक्षण करवुं.
रम् (रम्) रमवुं.
लज्ज् (लज्ज्) लज्जा पामवी, शरमावुं.
[4]**वंद्** (वन्द्) वंदन करवुं, नमवुं.

हण् (हन्) हणवु, मारवुं.
[5]**रूस्** (रुष्) रोष करवो.
तूस् (तुष) खुशी थवुं, संतोष पामवो.
दूस् (दुष्) दोषित करवुं.
पूस् (पुष्) पोषण करवु.
सीस् (शिष्) भेद पाडवो.
सीस् (कथ्) कहेवुं.
सूस् (शुष्) सुकाइ जवुं, सुकावुं.

---

३ शब्दनी अंदर स्वरनी पछी **'ध्य'** अने **'ह्य'** होय तो **'ज्झ'** थाय छे अने प्रारंभमां होय तो **'झ'** थाय छे.

वुज्झइ (बुध्यति)	**सज्झाओ** (स्वाध्याय)	**मुज्झइ** (मुह्यति)
सिज्झइ (सिध्यति)	**संझा** (सन्ध्या)	**नज्झइ** (नह्यति)
जुज्झइ (युध्यते)	**झाणं** (ध्यानम्)	**गुज्झं** (गुह्यम्)
विज्झइ (विध्यति)	**झायइ** (ध्यायति)	**सज्झ** (सह्यम्)

विशेष–ह्यनो **'य्ह'** पण विकल्पे थाय छे.

गुय्हं (गुह्यम्), **सय्हं** (सह्यम्)

४ आर्ष प्राकृतमां **'वन्द्'** धातुनुं प० पु० एकवचनमां **वंदे** एवुं रूप संस्कृत पेठे सिद्ध थाय छे.

जेम–**उसभमजिअं च वंदे**=ऋषभदेव अने अजितानाथने हुं वंदन करुं छुं. **भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं**—श्री वर्धमान स्वामिने भक्तिवडे वांदु छुं.

५ **रुष्** वगेरे धातुओनो स्वर प्राकृतमां दीर्घ थाय छे. तेमज **रुष्य–तुष्य** आदि संस्कृत अंगने प्राकृतनियमानुसार **'य'** नो लोप थवाथी **रुस्स्–तुस्स्–दुस्स्–पुस्स्–सिस्स्–सुस्स्** आदि धातुओ पण सिद्ध थाय छे. जेम–**रुस्सइ तुस्सइ** वगेरे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ 'से' प्रत्यय जे धातुने छेडे 'अ' होय तेनेज लगाडवामां आवे छे.

जेम भण्+अ=भण+सि=भणसि, भणसे.

२ स्वर पर छतां पूर्वना स्वरनो प्रायः लोप थाय छे.

भण्+अ+इत्था=भणित्था.

जिण+इंदो=जिणिंदो.

बीजा पुरुषनां रूपो,

एकव०	बहु०
भणसि, भणसे,	भणह, भणित्था,
भणेसि,	भणेह, भणेइत्था,
	भणइत्था,
	भणेत्था.

---

६ एकज पदमां बे स्वरो साथे आवे तो संधि थती नथी.

जेम हसइ, हसइत्था, देवाओ, आ नियम कोइ ठेकाणे लागु पडतो नथी, अर्थात् एक पदमां पण संधि थाय छे.

जेम–होहिइ=होही. बिइओ=बीओ.

प्राकृतमां ज्यां संधि थाय छे त्यां संस्कृतना नियम प्रमाणे संधि करवी. एटले सजातीय स्वर साथे आवे तो बंने स्वरो मळी जइ दीर्घ स्वर थाय छे. जेम—

अ के आ पछी अ–आ=आ, इ के ई पछी इ–ई=ई, उ–ऊ पछी उ–ऊ=ऊ, विसम+आयवो=विसमायवो, (विषमातपः) मुणि+ईसरो=मुणीसरो (मुनीश्वरः), साउ+उअयं=साऊअयं, (स्वादूदकम्).

तेमज अ के आ पछी ह्रस्व के दीर्घ इ के उ आवे तो बे स्वरोने बदले पछीना स्वरनो गुण मूकाय छे. अ के आ पछी इ–ई=ए, अ के आ पछी उ–ऊ=ओ, हस+इत्था=हसेत्था, तित्थ+ईसरो =तित्थेसरो (तीर्थेश्वरः), गूढ+उअरं=गूढोअरं (गूढोदरम्).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाक्यो

इच्छित्था	रमेह	कहित्था	पुच्छेइत्था
करेसि	वंदेइत्था	चलसे	बोल्लह
चिंतसे	रूसेसि	जेमेह	भणेह
पासेइत्था	दूसेह	नमह	रोवसे
मुज्झह	सीसित्था	पिज्जसि	हसित्था
गच्छेसि	दूसेसि	पासह	भणित्था
मुणह	रूसेइत्था	करित्था	मुज्झेह
देक्खेइत्था	वंदसे	पासित्था	करसे
पडेह	रमित्था	नमेइत्था	देक्खह
सीससे	मुज्झसे	वंदह	दूसित्था

(तु) कंपे छे.	(तुं) पूछे छे.	(तमो) भणोछो.
(तुं) कहे छे.	(तुं) बोले छे.	(तुं) देखे छे.
(तुं) चाले छे.	(तुं) वांदे छे.	(तुं) भमे छे.
(तमे) चालो छो.	(तुं) भणे छे.	(तमे) रहो छो.
(तमे) निंदो छो.	(तमो) क्रोध करो छो.	(तुं) इच्छे छे.
(तुं) जमे छे.	(तमो) रुदन करो छो.	(तमे) कंपो छो.
(तुं) नमन करे छे.	(तुं) निंदे छे.	(तमे) बोलो छो.
(तुं) मुंझाय छे.	(तुं) हसे छे.	(तुं) पीडे छे.
(तमे) पीओ छो.	(तमे) पीडो छो.	(तमे) हसो छो.
(तुं) रमे छे.	(तुं) वीवे छे.	(तुं) पडे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ३ जो

त्रीजा पुरुषना प्रत्ययो

एकवचन	बहुवचन
इ, ए, [७]ति–ते–(ति–ते)	[८]न्ति, न्ते, इरे, (न्ति–न्ते)

धातुओ

आदर् (आ+दृ) आदर करवो.
किण् (क्री) खरीदवुं.
जम्म् (जन्) उत्पन्न थवुं.
धुव् (धू) धुजाववुं, हलाववुं.
निज्झर् (क्षि) क्षय पामवुं.
फास् } (स्पृश्–स्पर्श) स्पर्श
फरिस् } करवो, अडकवुं.
[९] **बव्** } (ब्रू) बोलवुं.
बुव् }
रव् (रु) शब्द करवो,
अवाज करवो.
वड्ढ् (वृध्–वर्ध) वधवुं.

सुमर् } (स्मृ–स्मर्) स्मरण
सर् } करवुं, संभाळवुं.
हक्क् (नि+सिध्) निषेध करवो.
[१०] **चिण्** (चि) एकठुं करवुं.
जिण् (जि) जितवुं.
थुण् (स्तु) स्तुति करवी.
धुण् (धू) धुजाववुं.
पुण् (पू) पवित्र करवुं.
लुण् (लू) कापवुं.
सुण् (श्रु) सांभळवुं.
हुण् (हु) होम करवो.

---

७ आ प्रत्ययोना प्रयोग प्राचीन कथाओ अने चूर्णी आदिमां घणे स्थळे वपरायेला छे.

८ पदनी अंदर रहेला **ङ्–ञ्–ण्–न्** अने **म्** नो विकल्पे पूर्वना अक्षर उपर अनुस्वार मूकाय छे. अनुस्वार न थाय त्यारे, पछीना व्यंजनना वर्गनो अनुनासिक थाय छे, जेमके–**हसंति–हसन्ति** (हसन्ति), **पंको–पङ्को**–(पङ्कः), **संझा–सञ्झा** (सन्ध्या), **संढो–सण्ढो** (षण्ढः), **चंदो–चन्दो** (चन्द्रः), **कंपइ–कम्पइ** (कम्पते).

९ आर्षमां **बुव्ना बेमि, बेइ, बिंति, बुम** वगेरे रूपो थाय छे.

१० **'चि'** वगेरे धातुओने प्राकृतमां पुरुष बोधक प्रत्ययोनी पूर्वे **'ण्'** उमेराय छे. जेम–**चिणइ** (चिनोति) कोइ ठेकाणे आ **'ण्'** विकल्पे आवे छे. जेम–**जयइ, जिणइ,** (जयति).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ए' प्रत्यय जे धातुने छेडे 'अ' होय तेनेज लगाडवामां आवे छे.

जेम—भण्+अ=भण+ए=भणए, भणइ, भणेइ.

त्रीजा पुरुषनां रूपो.

एकव०	बहुव०
भणइ,	भणन्ति, भणन्ते, भणिरे,
भणेइ,	भणेन्ति, भणेन्ते, भणेइरे,
भणए.	११ भणिन्ति, भणिन्ते, भणइरे.

---

११ संयुक्त व्यंजननी पूर्वे दीर्घस्वर होय तो प्रयोगानुसार प्रायः ह्रस्व थाय छे. जेम—भण्+ए=भणे+न्ति=भणिन्ति ए प्रमाणे भणिन्ते पण जाणवुं.

शब्दनी अंदर पण संयुक्त व्यंजननी पूर्वनो स्वर ह्रस्व थाय छे. जेम—

अंबं (आम्रम्)	मुणिंदो (मुनीन्द्रः)	निलुप्पलं (नीलोत्पलम्)
अस्सं (आस्यम्)	नरिंदो (नरेन्द्रः)	
तित्थं (तीर्थम्)	चुण्णो (चूर्णः)	पुज्जं (पूज्यम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाकृत वाक्यो.

आदरेइ	धुणेइ	देक्खेइरे	लज्जन्ते
जम्मंति	फरिसिरे	पीडेइ	हणए
निज्झरए	रवेइ	वीहए	तूसेइ
बविरे	सुमरेन्ति	भणए	रूसन्ते
वड्ढिरे	चिणए	वसन्ते	थुणइ
हक्कन्ते	थुणेइरे	इच्छन्ति	रोविमो
जिणेह	पुणेइ	करिरे	जिणसे
धुणन्ते	सुणंति	चिंतइ	थुणित्था
सरित्था	वुवेइ	हवइ	बवेमि
लुणिरे	कहेन्ति	बुज्झए	धुणेमि
हुणन्ति	जाणन्ते	रक्खेन्ति	जिणेमि

गुजराती वाक्यो.

(ते) खरीदे छे.	(तेओ) क्षय पामे छे.	(ते) नमे छे.
(तेओ) हलावे छे.	(ते) बोले छे.	(तेओ) पूछे छे.
(ते) अडके छे.	(ते) वधे छे.	(तेओ) भणे छे.
(तेओ) शब्द करे छे.	(ते) निषेध करे छे.	(तेओ) वांदे छे.
(ते) स्मरण करे छे.	(तेओ) जिते छे.	(ते) रुवे छे.
(तेओ) एकठुं करे छे.	(ते) हलावे छे.	(तेओ) हसे छे.
(ते) स्तुति करे छे.	(ते) कंपे छे.	(तेओ) कंपे छे.
(तेओ) पवित्र करे छे.	(ते) रमे छे.	(ते) चरे छे.
(ते) सांभळे छे.	(ते) होम करे छे.	(ते) निंदे छे.
(तेओ) आदर करे छे.	(ते) जाय छे.	(तेओ) मुंझाय छे.
(ते) उत्पन्न थाय छे.	(ते) खाय छे.	(ते) पोषण करे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ४ थो.

सर्वनाम.

उपयोगी युष्मदादि सर्वनामनां तैयार रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प० पु०–	हं, अहं, (अहम्) हुं.	अम्ह, अम्हे, अम्हो, (वयम्) अमे.
बी०पु०–	तुं, तं, तुमं, (त्वम्) तुं	तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, (यूयम्) तमे.
त्री०पु०–	स, सो, (सः) ते.	ते (ते) तेओ.

द्वि संख्यावाचक शब्दनां उपयोगी तैयार रूपो.

प्र० द्वि० विभ० } दुवे, दोण्णि, दुण्णि.
बहुव० } वेण्णि, विण्णि, दो, वे–बे. (द्वि–द्वौ) बे.

जाण् धातुनां संपूर्ण रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन		
प० पु०	जाणमि,	जाणमो,	जाणमु,	जाणम,
	जाणामि,	जाणामो,	जाणामु,	जाणाम,
		जाणिमो.	जाणिमु,	जाणिम,
	जाणेमि.	जाणेमो,	जाणेमु,	जाणेम.
बी० पु०	जाणसि,	जाणह,	जाणित्था,	
	जाणेसि,	जाणेह,	जाणेत्था,	
	जाणसे.		जाणइत्था,	
			जाणेइत्था.	
त्री० पु०	जाणइ,	जाणन्ति,	जाणन्ते,	जाणिरे,
	जाणेइ,	जाणेन्ति,	जाणेन्ते,	जाणेरे,
	जाणए,	जाणिन्ति,	जाणिन्ते,	जाणइरे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातुओ

अस् (अस्) होवुं, थवुं.

अप्प् (अर्प्) अर्पण करवुं, भेट करवुं.

अच्छ् (आस्) बेसवुं.

उज्झ् (उज्झ्) त्याग करवो, छोडवुं.

कुप्प् (कुप्य्) कोपवुं, क्रोध करवो.

चय् (त्यज्) त्याग करवो, तजवुं.

चट्ठ्, **थक्क्** (स्था–तिष्ठ्) उभा रहेवुं.

चोप्पड् (म्रक्ष्) चोपडवुं, स्निग्ध करवुं.

बंध् (बन्ध्) बंधन करवुं, बांधवुं.

बाह् (बाध्) पीडवुं, कनडवुं.

भुल्ल्, **चुक्क्** (भ्रंश्) भ्रष्ट थवुं, भूल करवी, चूकवुं, पडवुं.

रंज् (रञ्ज्) रंगवुं, आसक्त थवुं.

वंच् (वञ्च्) ठगवुं, छेतरवुं.

वच्च् (व्रज्) जवुं.

वट्ट् (वृत्–वर्त्) वर्तवुं, होवुं.

वंछ् (वाञ्छ्) इच्छवुं, वांछा करवी.

वोसिर् (व्युत्सृज्) त्याग करवो, छोडवुं.

सन्नाम् (आ+दृ) आदर करवो.

सलह्–सिलाह् (श्लाघ्) श्लाघा करवी, प्रशंसा करवी.

सह् (सह्) सहन करवुं.

साह् (कथ्) कहेवुं.

साह् (साध्) साधवुं.

सिव्व् (सिव्य्) सीववुं.

वर्तमान काळमां **अस्** धातुनुं रूप सववर्चन अने सर्व पुरुषोमां "**अत्थि**" एवुं थाय छे.

विशेष–**सि** प्रत्ययनी साथे **सि** एवुं रूप सिद्ध थाय छे, तथा **मि, मो, म,** प्रत्ययोनी साथे **म्हि, म्हो, म्ह,** रूपो थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२अस् धातुनां रूपो.

	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	म्हि, अत्थि.	म्हो, म्ह, अत्थि.
बी० पु०	सि, ,,	अत्थि.
त्री० पु०	अत्थि.	अत्थि.

आर्षप्राकृतमां अस् धातुनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प० पु०	मि, अंसि.	मो.
बी० पु०	सि.	ह.
त्री० पु०	अत्थि.	संति.

प्राकृत वाक्यो.

अहं वन्देमि।	ते नमिरे।	अम्हे अच्छामो।
तुम्हे दोण्णि वट्टित्था।	अम्हें वन्दिमो।	तुम्हे दु रुवेह।
ते कुप्पेन्ति।	तुज्झे वन्देइत्था।	अम्हो फासामो।
सो पडए।	तं वंछसे।	तुज्झे चुक्केइत्था।
ते पिबिरे।	सो इच्छइ।	ते दो फासेइरे।
तुम्हे कहेइत्था।	अम्हे बीहेमु।	हं चिट्ठेमि।
	ते चरेन्ति।	अम्हे दुवे चयामो।

१२ अस् धातुनां संस्कृत तैयार रूपोने प्राकृत नियमानुसार फेरफार करी रूपो थाय छे. जेमके—

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
अस्मि—	अम्हि.	अस्ति—	अत्थि.
असि—	असि.	सन्ति—	संति इत्यादि रूपो थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुब्भे बीहेह ।
तुं भणेसि ।
स अप्पेइ ।
१३अम्हो अत्थि ।
अम्हे थक्किमु ।
स वट्टइ ।
हं वोसिरामि ।

तं उज्झसे ।
ते दो किणेइरे ।
हं म्हि ।
ते दुण्णि रक्खंति ।
तुम्हे वे अत्थि ।
तुं सलहेसि ।

ते तूसंति ।
अम्ह चिट्ठेमु ।
तुम्हे वंछेह ।
तुम्हे पूसेह ।
ते साहिन्ति ।

गुजराती वाक्यो.

तमे यांछा करो छो.
अमे जोइए छीए.
ते सहन करे छे.
तमे साधो छो.
अमे बे रक्षण-
करीए छीए.
तमे आपो छो.
अमे त्याग करीए छीए.
तमे बे विचार-
करो छो.
तेओ बे कहे छे.
तमे बेसो छो.
तमे उभा रहो छो.

अमे हसीए छीए
तेओ चोपडे छे.
हुं जमुं छुं.
तमे बे पीवो छो.
तमे नमस्कार-
करो छो.
तुं सीवे छे.
अमे बे छीए.
हुं त्याग करुं छुं.
ते देखे छे.
तुं छे.
तेओ वखाणे छे.

तमे भटको छो.
तेओ रोष करे छे.
तेओ निंदे छे.
तमो बोध पामोछो.
तमे बे कनडो छो.
तमे बे छो.
ते चोपडे छे.
अमे भोजन करीए-
छीए.
तमे बांधो छो.
तुं क्षय पामे छे.
तेओ बे कंपे छे.
तुं पीडे छे.

---

१३ ए अने ओ पछी कोइ पण स्वर आवे तो संधि थती नथी. आलक्खिमो एण्हि (आलक्ष्याम इदानीम्) नहुल्लिहणे आबंधंतीइ (नखोल्लेखने आबध्नन्त्याः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ५ मो.

धातुओ.

खा, खाय् } (खाद्) खावुं, जमवुं.
गा (गै) गावुं.
गिला (ग्लै) ग्लानि पामवुं, खिन्न थवुं, करमावुं.
जा (जन्) उत्पन्न थवुं.
जा (या) जवुं, गमन करवुं.
झा (ध्यै) ध्यान करवुं.
ठा (स्था) उभा रहेवुं.
ण्हा (स्ना) स्नान करवुं, न्हावुं.

[14]दा (दा) दान आपवुं, देवुं.
धा (धा) धारण करवुं.
भा (भा) दीपवुं, प्रकाशवुं.
पा (पा) पीवुं, पान करवुं.
मिला (म्लै) ग्लानि पामवुं, खिन्न थवुं, करमावुं.
हो (भू) होवुं, थवुं.
[15]जे (जि) जीतवुं, जय पामवो.
डे (डी) उडवुं.
उड्डे (उद्+डी) उडवुं.
ने (नी) लइजवुं, दोरवुं.

---

१४ दा धातुने पुरुष बोधक प्रत्यय लगाडतां अन्त्य आ नो कोइ स्थळे ए थाय छे, जेमके—

देइ, देन्ति, दिंति, देसि, देमि, देमु, इत्यादि रूपो पण थाय छे.

१५ संस्कृतमां जे धातुओने अन्ते इ, उ, के ऋ स्वर होय तो ते धातुना अन्त्य इ नो ए, अने कोइ ठेकाणे अय् तथा उ नो अव् अने ऋ नो अर् थाय छे. जेमके—

इ नो ए.	उ नो अव्.	ऋ नो अर्.
ने (नी)	ण्हव् (ह्नु)	कर् (कृ)
डे (डी)	चव् (च्यु)	धर् (धृ)
जे, जय् } (जि)	रव् (रु)	सर् (सृ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चव् (च्यु) चववुं, पडवुं.	तर् (तृ) तरवुं
ण्हव् (ह्नु) संताडवुं.	धर् (धृ) धारण करवुं
सव् (सृ) जन्म आपवो.	वर् (वृ-वॄ) वरवुं, पसंद करवुं.
हुव् (हु) होम करवो.	सर् (सृ) सरकवुं, खसवुं, [जवुं.
जर् (जॄ) जीर्ण थवुं, घरडा थवुं.	हर् (हृ) हरण करवुं, लइ–

१. स्वरान्त धातुओने पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां प्रत्ययोनी पूर्वे अ प्रत्यय विकल्पे मुकवामां आवे छे.

हो धातुनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प० पु०	होमि,	होमो, होमु, होम.
बी० पु०	होसि,	होह, होइत्था.
ती० पु०	होइ,	[16]होन्ति, होन्ते, होइरे.

'अ' प्रत्यय लगाडवाथी "होअ" अंगनां थतां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र० पु०	होअमि,	होअमो, होअमु, होअम,
	होआमि,	होआमो, होआमु, होआम,
	होएमि.	होइमो, होइमु, होइम,
		होएमो, होएमु, होएम.

---

१६. नियम ११मा प्रमाणे संयुक्त व्यंजननी पूर्वनो स्वर ह्रस्व थाय त्यारे हो+न्ति=हुन्ति. जा+न्ति=जन्ति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बी० पु०	होअसि,	होअह, होइत्था,
	होएसि,	होएह, होएत्था,
	होअसे.	होअइत्था,
		होएइत्था.
त्री० पु०	होअइ,	होअन्ति, होअन्ते, होइरे,
	होएइ,	होएन्ति, होएन्ते, होएइरे,
	होअए.	होइन्ति, होइन्ते, होअइरे.

प्राकृत वाक्यो.

अम्हे दोण्णि ठाएमो।	तुम्हे दुण्णिं झाएइत्था।	हं जरेमि।
अम्हो जेएमु।	ते होइरे।	अहं गामि।
हं ठामि।	ते पान्ति।	अम्हे वे ण्हाम।
अम्हे होएमो।	तुं झासि।	सो ण्हवेइ।
अम्हे दुवे झामु।	हं ण्हाअमि।	अम्ह हवेमो।
हं होमि।	तुज्झे ठाएइत्था।	तुम्हे हरेह।
हं पामि।	तुम्हे विण्णि नेइत्था।	स ण्हाएइ।
अहं झाएमि।	तुं पाअसे।	हं जामि।
सो होइ।	ते चवेइरे।	अम्हे वरामो।
		अम्हे वे जाएमो।
		अम्हे दो गाइमु।

गुजराती वाक्यो.

तेओ बे उभा छे.	ते जाय छे.	अमे बे पीए छीए.
तुं जाय छे.	ते गाय छे.	तेओ बे हरे छे.
तेओ बे गाय छे.	हुं करमाउं छुं.	तुं स्नान करे छे.
तेओ खेद पामे छे.	ते लइ जाय छे.	तमे बे पीवो छो.
ते उभो रहे छे.	तेओ बे जाय छे.	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुं खाय छे.
तेओ आपे छे.
अमे बे धारण करीए छीअे.
तमे बे आपो छो.
अमे चवीए छीए.
तमे बे सरको छो.
तुं थाय छे.

तमो स्नान करो छो.
अमो ग्लानि-पामीए छीए.
तेओ ध्यान धरे छे.
अमे बे प्रकाशीए छीए.
तमे थाओ छो.
तमे बे ग्लानि-पामो छो.

तमे संताडो छो.
अमे तरीए छीए.
तमो कोप करो छो.
ते प्रकाशे छे.
तमे उत्पन्न थाअ छो.
हुं उत्पन्न थाउं छुं.

पाठ ६ ट्टो.

ज्ज, ज्जा नां रूपाख्यानो.

१. वर्तमान काळ, भविष्यकाळ अने विध्यर्थ-आज्ञार्थमां धातुओमां सर्व पुरुष बोधक प्रत्ययोने स्थाने ज्ज अथवा ज्जा विकल्पे मुकाय छे.

२. ज्ज अथवा ज्जा प्रत्ययोनी पूर्वे अ होय तो अ नो ए थाय छे.

सर्ववचन अने सर्व पुरुषमां } हस्+अ+ज्ज=*हसेज्ज, हसेज्जा. हो+ज्ज=होज्ज, होज्जा.

अथवा हसइ, हसेन्ति, इत्यादि, होइ, होन्ति, इत्यादि.

३. वर्तमानकाळ, भविष्यकाळ, विध्यर्थ अने आज्ञार्थमां स्वरान्त धातुओने पुरुष बोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां ज्ज अथवा ज्जा विकल्पे लागे छे. उदा० हो+इ=होज्जइ, होज्जाइ.

---

* पूर्वोक्त नियम ११ प्रमाणे ह्रस्व स्वर थाय त्यारे हुज्ज, हुज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होज्ज-होज्जा अंगनां थतां रूपो.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	होज्जमि,	होज्जमो, होज्जमु, होज्जम
	होज्जमि,	होज्जामो, होज्जामु, होज्जाम,
	होज्जेमि,	होज्जिमो, होज्जिमु, होज्जिम,
	होज्ज,	होज्जेमो, होज्जेमु, होज्जेम,
	होज्जा.	होज्ज,
		होज्जा.
बी० पु०	होज्जसि,	होज्जह, होज्जित्था,
	होज्जासि,	होज्जाह, होज्जेत्था,
	होज्जेसि,	होज्जेह, होज्जइत्था,
	होज्जसे,	होज्जेइत्था,
		होज्जाइत्था,
	होज्ज,	होज्ज,
	होज्जा.	होज्जा.
त्री० पु०	होज्जइ,	होज्जन्ति, होज्जन्ते, होज्जइरे,
	होज्जाइ,	होज्जान्ति, होज्जान्ते, होज्जाइरे,
	होज्जेइ,	होज्जेन्ति, होज्जेन्ते, होज्जेइरे,
	होज्जए,	होज्जिन्ति, होज्जिन्ते, होज्जिरे,
	होज्ज,	होज्ज,
	होज्जा.	होज्जा.

स्वरान्तधातुओनां पुरुषबोधक प्रत्ययोनी पूर्वे 'अ' प्रत्यय आवे त्यारे थतां रूपो.

होअ+ज्ज=होएज्ज, होअ+ज्जा=होएज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होएज्ज [१७]अने होएज्जा अंगनां रूपो.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	होएज्जमि,	होएज्जमो, होएज्जमु, होएज्जम,
	होएज्जामि,	होएज्जामो, होएज्जामु, होएज्जाम,
	होएज्जेमि,	होएज्जिमो, होएज्जिमु, होएज्जिम,
		होएज्जेमो, होएज्जेमु, होएज्जेम,
	होएज्ज,	होएज्ज,
	होएज्जा.	होएज्जा.
बी० पु०	होएज्जसि,	होएज्जह, होएज्जित्था,
	होएज्जासि,	होएज्जाह, होएज्जेत्था,
	होएज्जेसि,	होएज्जेह, होएज्जइत्था,
	होएज्जसे,	होएज्जेइत्था,
		होएज्जाइत्था,
	होएज्ज,	होएज्ज,
	होएज्जा.	होएज्जा.
त्री० पु०	होएज्जइ,	होएज्जन्ति, होएज्जन्ते, होएज्जइरे,
	होएज्जाइ,	होएज्जान्ति, होएज्जान्ते, होएज्जाइरे,
	होएज्जेइ,	होएज्जेन्ति, होएज्जेन्ते, होएज्जेइरे,
	होएज्जए,	होएज्जिन्ति, होएज्जिन्ते, होएज्जिरे,
	होएज्ज,	होएज्ज,
	होएज्जा.	होएज्जा.

---

१७. आ रूपोनो उपयोग प्राकृतसाहित्यमां बहुज अल्प ठेकाणे देखवामां आवे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव् धातुनां रूपो.

सर्ववचन अने सर्वपुरुषमां	जीवेज्ज, जीवेज्जा.

ज्ज–ज्जा न आवे त्यारे होमि, होअमि, होआमि, होएमि तेमज जीवमि, जीवामि, जीवेमि इत्यादि पूर्वनी माफक रूपो थाय छे.

धातुओ

अच्च् (अर्च्) पूजवुं.
गरिह (गर्ह्) निंदवुं.
छज्ज्, अग्घ्, रेह् } (राज्) शोभवुं, दीपवुं.
जीव् (जीव्) जीववुं.
जुज्झ् (युध्-युध्य) लढवुं.
डह् (दह्) बळवुं, बाळवुं, दाझवुं.
तण्, तड्ड् } (तन्) पाथरवुं, विस्तार करवो.

मेल्ल्, छड्ड्, मुय् } (मुच्-मुञ्च्) मुकवुं, छोडवुं.
नस्स्, नास् } (नश्-नश्य्) नाश-पामवुं.
नच्च् (नृत्-नृत्य[१८]) नाचवुं.
सिंच् (सिञ्च्) छांटवुं, सिंचवुं.
सोल्ल्, पय् } (पच्) रांधवुं, पकाववुं.
सिज्झ् (सिध्-सिध्य) सिद्ध थवुं.
सड् (शद्) नाश पामवुं, सडवुं.

प्राकृत वाक्यो

सो अच्चेज्जा।	हं मिलाएज्जामि।	अम्हे जीवेज्ज।
स पिवेज्ज।	तुम्हे दो मिलाज्ज इत्था।	तु जाएज्जसे।
स चुक्केज्जा।	तं गरिहेसि।	तुज्झे वे मिलाएज्जाइत्था।
तुं चिट्ठेज्जा।		

१८. शब्दनी आदिमां त्य नो च अने अंदर होय तो च्च थाय छे पण चैत्य शब्दमां त्य नो च्च थतो नथी.

नच्चइ (नृत्यति)	चाओ (त्यागः)	सच्चं (सत्यम्)
चयइ (त्यजति)	पच्चओ (प्रत्ययः)	चइत्तं (चैत्यम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अम्हे दो होज्जामो ।
स बुज्झेज्जा ।
अम्हे दुण्णि झाए-ज्जिमो ।
ते दुवे नेएज्जेइरे ।
तुम्हे नेएज्जाह ।
अम्हे सोल्लेज्जा ।

तुज्झे छड्डेज्ज ।
सो पाएज्जइ ।
तुब्भे ठाज्ज ।
अम्हे बे मिला-ज्जेमु
अहं करेज्जा ।
अहं ठाज्जेमि ।
सो पाज्जाइ ।

तुं गाज्जेसि ।
तुम्हे नच्चेज्जा ।
अहं छज्जेज्जा ।
ते नस्सेज्ज ।
तुज्झे पाएज्जाह ।
अम्हे सडेज्जा ।
तुम्हे दुवे डहेह ।

*गुजराती वाक्यो.

ते बे सिद्ध थाय छे.
ते विस्तार करे छे.
अमे पूजा करीए छीए.
तमे बे छांटो छो.
तमे उत्पन्न थाओ छो.
तेओ खाय छे.
तुं खेद पामे छे.
तुं जीवे छे.

तमे बे युद्ध करो छो.
तु बोध पामे छे.
तुं उभो रहे छे.
तमे ध्यान धरो छो.
हुं उत्पन्न थाउं छुं.
ते आपे छे.
हुं चूकुं छुं.
ते ग्लानि पामे छे.
तमो उभा रहो छे.

तमे प्रकाशो छो.
तेओ लइ जाय छे.
तमे हरो छो.
अमे पीए छीए.
तेओ गाय छे.
ते धारण करे छे.
तमे विचार करो छे.
अमे बे ग्लानि-पामीए छीए.

प्रश्नो.

१. प्राकृतमां स्वरो अने व्यंजनो केटला वपराय छे ?
२. ऋ, ऌ ऐ, औ, आ स्वरोना विकारो केवा थाय छे ?
३. प्राकृतमां विसर्गनुं शुं थाय छे ?
४. 'ङ्' अने 'ञ्' नो प्रयोग क्यां थाय छे ?
५. 'मि' अने 'मो' प्रत्ययनी पूर्वना 'अ' मां शो फेरफार थाय छे ?

---

*आ वाकयो ज्ज ने ज्जा ना प्रयोग पूर्वक करवा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. 'से' अने 'ए' प्रत्यय जेने न लागे तेवा केटलाक धातुओनां रूपो आपो.

७. आ रूपो ओळखावो जाणित्था, गच्छेन्ति, गच्छिंति, हसिरे, हुंति, हुज्ज, झंति, गच्छिज्ज, गच्छेज्जा.

८. 'अस्' धातुनां रूपो जणावो.

९. व्यंजनान्त अने स्वरान्त धातुओनां रूपोनी विशेषता बतावो.

१०. पूर्वना स्वरनो लोप क्यारे थाय ते दृष्टान्त सहित जणावो.

११. 'ज्ज' अने 'ज्जा' नी पूर्वना 'अ' नुं शुं थाय?

१२. स्वरान्त अने व्यंजनान्त धातुओमां 'ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग केवी रीते थाय छे, ते दृष्टान्त सहित जणावो.

१३. 'ने' अने पुच्छ् धातुनां संपूर्ण रूप जणावो.

उपसर्गो

(१) उपसर्गो धातुओनी पूर्वे मुकवामां आवे छे, अने तेओ धातुओना मूळ अर्थोमां फेरफार करी कोइ ठेकाणे विशेष अर्थ तथा कोइ ठेकाणे विपरीत अर्थ अने कोइ ठेकाणे जुदो अर्थ बतावे छे.

अइ / अति } (अति) हद बहार, अतिशय; अइ+कम्=अइकमइ ते हद बहार जाय छे, ते उल्लंघन करे छे.

अहि / अधि } (अधि) उपर, अधि, मेळववुं; अहि+चिट्ठ्=अहिचिट्ठइ ते उपर बेसे छे. अहिगच्छ्=अहिगच्छइ ते मेळवे छे.

अणु (अनु) पाछळ, सरखुं, समीप; अणु+गच्छ्= अणुगच्छइ–ते पाछळ जाय छे. अणु+कर्=अणुकरइ–ते अनुकरण करे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभि } (अभि) सन्मुख, पासे; अभि+गच्छ्=अभिगच्छइ–ते
अहि } सन्मुख जाय छे, ते पासे जाय छे.

अव } (अव) नीचे, तिरस्कार; अव+यर्=अवयरइ } ते नीचे
ओ } ओ+यर्=ओयरइ } उतरे छे.
अव+गण्=अवगणेइ ते तिरस्कार करे छे.

आ (आ) उलटुं, विपर्यय, मर्यादा;
आ+गच्छ्=आगच्छेइ ते आवे छे.

अव } (अप) विपरीत, पाछुं, अव+क्कम्=अवक्कमइ } ते पाछो
अप } उलटुं; ओ+क्कम्=ओक्कमइ } फरे छे.
ओ } अप+सर्=अपसरइ } ते पाछो
ओ+सर्=ओसरइ } खसे छे.

[19]उ (उत्) उंचे, उपर; उ+गच्छ्=उग्गच्छइ–ते उपर जाय छे.
उ+ठा=उट्ठाइ–ते उठे छे.

---

१९ उ (अन्त्य व्यंजननो लोप थयेल होवाथी) उपसर्गनी पछी जे व्यंजन आवे ते प्रायः बेवडाय छे. जे व्यंजन बेवडाय छे ते व्यंजन जो वर्गनो बीजो के चोथो अक्षर होय तो (द्वित्वना) प्रथम अक्षरनो ते वर्गनो (बीजानो) पहेलो अने (चोथानो) त्रीजो अनुक्रमे मुकाय छे. (ख्ख नो क्ख, घ्घ नो ग्घ, छ्छ नो च्छ, झ्झ नो ज्झ, ठ्ठ नो ट्ठ, ढ्ढ नो ड्ढ, थ्थ नो त्थ, ध्ध नो द्ध, फ्फ नो प्फ, भ्भ नो ब्भ थाय छे. उदा०

उ+ठाइ=उठ्ठाइ–उट्ठाइ. नि+झरेइ=निझ्झरेइ–निज्झरेइ.
उ+धरइ=उध्धरेइ–उद्धरेइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव, ओ, उ (उप) पासे;
उव+गच्छ्=उवगच्छइ
ओ+गच्छ्=ओगच्छइ
उ+गच्छ्=उगच्छइ — ते पासे जाय छे.

नि, नु (नि) अंदर, नीचे;
नि+मज्ज्=निमज्जइ — ते डूबे छे.
नु+मज्ज्=नुमज्जइ
नि+वड्=निवडइ — ते नीचे पडे छे.

परा, पला (परा) उलटुं, पाछुं;
परा+जय्=पराजयइ–ते हारे छे.
परा+भव्=पराभवइ–ते पराभव पमाडे छे.
पला+अय्=पलायइ–ते भागी जाय छे.

परि, पलि (परि) विशेष, फेरफार थवो, चारे बाजु;
परि+तूस्+परितूसइ–ते विशेष खुशी थाय छे.
परि+वट्ट्=परिवट्टइ–ते परिवर्तन करे छे.
परि+अड्=परिअडइ–ते चारे बाजु भटके छे.

पडि–पति, परि–पइ (प्रति) सामुं, उलटुं;
पडि+भास्=पडिभासइ–ते सामुं बोले छे.
पइ+जाण्=पइजाणइ–ते प्रतिज्ञा करे छे.

प (प्र) आगळ, प्रकर्ष; प+या=पयाइ–ते आगळ जाय छे.
प+यास्=पयासेइ–ते विशेष प्रकाशे छे.

वि (वि) विशेष, निषेध, वि+याण्=वियाणेइ–ते विशेष जाणे छे.

विरोधार्थ;
वि+स्सर्=विस्सरइ, वीसरइ — ते भूले छे.
वि+सिलिस्=विसिलिसइ–ते वियोग पामे छे.

सं (सम्) सारी रीते; सं+गच्छ्=संगच्छइ–ते सारी रीते मळे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० निर्, नि, नी } (निर्) निश्चय, निर्+जिण=निज्जिणेइ–ते निश्चय जिते छे.
आधिक्य, निर्+णे=निण्णेइ–ते निश्चय करे छे.
निषेध; निर्+इक्ख्=निरिक्खेइ–ते तपास करे छे.
ते निरीक्षण करे छे.

२१ दुर्, दु, दू } (दुर्) दुर्+लंघ्=दुल्लंघेइ–ते दुःखे करी उल्लंघे छे,
दुःखता, दुर्+सह्=दुस्सहेइ, दूसहेइ } ते दुःखे सहन करे छे.
दुष्टतार्थे;

दुर्+आयार=दुरायार–दुष्ट आचरण.
दुर्+आलोग=दुरालोग–दुःखे देखाय.

उपसर्ग सहित उपयोगी धातु.

अइ+चर् (अति+चर्) दोष लगाडवो, अतिचार लगाडवो.

अणु+जाण् (अनु+ज्ञा) आज्ञा आपवी.

अणु+सर् (अनु–सृ) अनुसरवुं.

अहि+ज्ज् (अधि–इ) भणवुं.

अहि+लस् (अभि–लस्) अभिलाषा करवी, इच्छा करवी.

---

२० निर्–दुर् आ उपसर्गना रेफनो विकल्पे लोप थाय छे, पण रेफनी पछी स्वर आवे तो लोप थाय नहि, ज्यारे रेफनो लोप थाय नहि त्यारे पछीना व्यंजनमां रेफ मळी जइ ते व्यंजन बेवडाय छे. उदा०—

निर्+णेइ=निण्णेइ. निर्+सहो=निस्सहो, नीसहो, निसहो.
निर्+अंतरं=निरंतरं.

२१ दुर्+सहो=दुस्सहो, दूसहो, दुसहो. दुर्+उत्तरं=दुरुत्तरं.
दुर्+खिओ=दुक्खिओ, दुहिओ, (दुःखितः) नि० २० जुओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ+गच्छ्(आ–गम्–गच्छ) आववुं
आहर (आ–हृ) आहार करवो.
उ+ड्डे (उद्-डी) उडवुं.
नि+ण्हव् (नि–ह्नु) संताडवुं.
प+आव्=पाव(प्र–आप्) पामवुं,
प+विस् (प्र–विश्) प्रवेश करवो.
प+हर् (प्र–हृ) प्रहार करवो,
मारवुं.
परा+वट्ट् (परा–वर्त्) फेरफार
थवो, आवृत्ति करवी.
परि+हर् (परि–हृ) त्याग करवो.
वाहर् (वि–आ–हृ) बोलवुं.
बोलाववुं.

वि+उव्व् (वि–कृ) बनाववुं,
विकुर्ववुं.
वि+यस् वि–कस्) विकास पामवुं.
वि+लव् (वि–लप्) विलाप करवो,
रोवुं.
वि+लस् (वि–लस्) विलास
करवो, मोज करवी.
वि+हर् (वि·हृ) विहार
करवो, आनंद करवो.
सं+गच्छ् [सं–गम्–गच्छ्] मळवुं.
सं+हर् [सं–हृ] संहार करवो.

अम्हे विण्णि अहिलसेज्जा।
सो निण्हवेइ ।
ते दो वाहरेज्ज ।
हं पविसेज्जा ।
अम्हे परावट्टिमो ।
तुज्झे वेण्णि अईयरेह ।
तुं अणुजाणेसि ।

तुम्हे दुण्णि निगच्छेइत्था
तुब्भे दोण्णि विलसेह ।
ते परावट्टिरे ।
ते विउव्वेन्ति ।
हं पावेज्ज ।
ते वे वियसेज्ज ।
तुज्झे अणुसरेह ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

अमे आनंद करीए छीए.
तुं मळे छे.
तमे बे बोलावो छो.
तमे प्रवेश करो छो.
तुं अभ्यास करे छे.
अमे बनावीए छीए.
ते आवृत्ति करे छे.
तेओ बे आज्ञा करे छे.
तमे प्राप्त करो छो.

तेओ बे अतिचार लगाडे छे.
तमे अभिलाषा करो छो.
तेओ आवे छे.
तुं निकळे छे.
अमे बे आज्ञा करीए छीए.
तुं अनुसरे छे.
अमे मळीए छीए.
तमो संताडो छो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ७ मो.

अकारान्त नाम.

[२२]पढमा अने बीया विभक्ति.

प्रत्यय.

	एकवचन.	बहुवचन.
अकारान्त पुंल्लिंग–	प०–ओ [ए][२३]	आ.
	बी०–म्	आ, ए.
अकारान्त नपुंसकलिंग–	प०बी०–म्	इं, इँ, णि, [इ]

१. अकारान्त पुंल्लिंगमां पंचमी विभक्ति सिवायना स्वरादि प्रत्ययो लगाडतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे. जेमके—**जिण+ओ जिणो**.

२. पदान्तमां **म्** होय तो सर्व ठेकाणे पूर्वना अक्षर उपर अनुस्वार मुकाय छे, तेमज ते **म्** नी पछी स्वर आवे तो पूर्वना अक्षर उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे. ज्यारे अनुस्वार न थाय त्यारे **म्** मां पछीनो स्वर मली जाय छे. जेमके-**जिणम्=जिणं, जिणम्+अजियं=जिणं अजियं** अथवा **जिणमजियं, उसभं अजियं च वंदे** अथवा **उसभमजियं च वंदे**.

३. नपुंसक लिंगनां **इं, इँ, णि**, प्रत्ययो लगाडतां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छे. उदा० **फल+इं=फलाइं, फलाइँ, फलाणि**.

---

२२. प्राकृत भाषामां सात विभक्तिओ माटे पढमा (प्रथमा), बीया (द्वितीया), तइया (तृतीया), चउत्थी (चतुर्थी), पंचमी (पञ्चमी), छट्ठी (षष्ठी). सत्तमी (सप्तमी) आ शब्दो वपराय छे.

२३. आ 'ए' प्रत्यय तेमज बीजा पण आवा कांउसमां आपेला प्रत्ययो आर्षमांज वपराय छे. उदा० समणे भयवं महावीरे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपो.

प०	जिणो, जिणे.	जिणा.
बी०	जिणं.	जिणा, जिणे.
प० बी०	नाणं.	नाणाइं, नाणाइँ, नाणाणि.

शब्द. (पुल्लिंग)

आइरिय, आयरिय (आचार्य) आचार्य.
आयव (आतप) तडको.
आस (अश्व) घोडो.
उवज्झाय, ऊज्झाय, ओज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय.
चोर (चौर) चोर.
जण (जन) जन, माणस.
जणय (जनक)[२४] बाप, पिता.

जिण (जिन) रागद्वेषरहित, जिन भगवान.
तव (तपस्) तप.
तित्थयर (तीर्थंकर) तीर्थंकर.
देव (देव) देव.
दीव (दीप) दीवो.
पायव (पादप) झाड.
पाव (पाप) पापी.
पुत्त (पुत्र) पुत्र, दीकरो.

---

२४. शब्दनी अंदर स्वरनी पछी असंयुक्त "क-ग-च-ज-त-द-प-य-व" व्यंजनोनो प्राकृतमां लोप थाय छे, पण अवर्ग पछी 'प' आवे तो 'व' थाय छे. तेमज अवर्णनी पछी अवर्ण होय तो 'अ' नो प्रायः 'य' थाय छे, कोइ ठेकाणे 'क' नो 'ग' पण थाय छे. उदा०—

क-लोओ (लोकः)	ज-त-रययं (रजतम्)	प-रिऊ (रिपुः)
ग-नओ (नगः)	त-जई (यतिः)	य-ग-विओगो (वियोगः)
च-सई (शची)	द-गया (गदा)	व-लायण्णं (लावण्यम्)

प नो व-पावो (पापः)। क नो ग-सावगो (श्रावकः)। लोगो (लोकः)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरिस (पुरुष) पुरुष.
बाल (बाल) बाळक, छोकरुं.
बुह (बुध) पंडित.
मयण (मदन) कामदेव.
मय (मद) अभिमान, मद.
माहण }
बम्हण } (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
मुक्ख |
मुरुक्ख | (मूर्ख) मूर्ख, अज्ञानी.

मोर (मयूर) मोर.
रह (रथ) रथ.
राम (राम) विशेष नाम.
वच्छ (वत्स) वाछरडो, बाळक.
वच्छ (वृक्ष) झाड.
विओग[२५] (वियोग) वियोग.
समण (श्रमण) साधु, श्रमण.
सीस (शिष्य) शिष्य.

शब्द. (नपुंसकलिंग)

अब्भ (अभ्र) मेघ, वादळुं.
कमल (कमल) कमळ.
कल्लाण (कल्याण) कल्याण.
घर (गृह) घर.
जल (जल) जळ, पाणी.
जिणबिंब (जिनबिम्ब) जिनेश्वरनी प्रतिमा.

नयर (नगर) नगर.
नाण (ज्ञान) ज्ञान.
दाण[२६] (दान) दान.
नच्च (नृत्य) नृत्य.
नट्ट (नाट्य) नाच.

---

२५. व्यंजन सहित स्वरमांथी व्यंजननो लोप थवाथी शेष स्वरनी पूर्वना स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके—निसाअरो (निशाचरः) रयणिअरो (रजनिचरः), पयावई (प्रजापतिः)

अपवाद—कोइ ठेकाणे विकल्पे संधि थाय छे. कुंभआरो-कुंभारो (कुम्भकारः), कविईसरो—कवीसरो (कवीश्वरः), सुउरिसो—सूरिसो (सुपुरुषः), लोहआरो, लोहारो (लोहकारः).

२६. शब्दनी अंदर असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे, तेमज आदिमां 'न' होय तो विकल्पे 'ण' थाय छे. उदा०—

दाणं (दानम्) | नाणं }
धणं (धनम्) | णाणं } (ज्ञानम्) | नरो }
णरो } (नरः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नेत्त[२७] (नेत्र) आंख, नेत्र.
पण्ण (पर्ण) पांदडुं.
पवयण (प्रवचन) आगम, सूत्र.
पुत्थय / **पोत्थय** } (पुस्तक) पुस्तक.
फुल्ल (सम.) फुल.
भूसण (भूषण) आभूषण, घरेणुं.
मुह (मुख) मोढुं.
रयय (रजत) रुपुं, चांदी.
वत्थ (वस्त्र) कपडुं.
सिव (शिव) कल्याण, मंगळ, मोक्ष.
सुत्त (सूत्र) सूत्र, शास्त्र.
सुह (सुख) सुख.

सर्वनाम

त[२८] (तत्) ते.
ज[२९] (यत्) जे.
क (किम्) कोण.
एअ-एत (एतत्) आ
इम (इदम्) आ.
सव्व (सर्व) सर्व, बधुं.
अन्न (अन्य) बीजुं.

'त' अने 'एअ' नुं पुल्लिंगमां प्रथमानुं एकवचननुं अनुक्रमे **स, सो** अने **एस-एसो** रुप थाय छे.

सकल सर्वनामोनुं प्रथमानुं बहुवचन 'ए' प्रत्यय लगाडवाथी थाय छे. जेम-**सव्वे, के, एए,** इत्यादि.

---

२७. नेत्त शब्द अने तेना अर्थवाळा शब्दो पुल्लिंगमां पण विकल्पे वपराय छे. उ०-नेत्ता-नेत्ताइं, नयणा-नयणाइं.

२८. प्राकृतमां अन्त्य व्यंजनोनो लोप थाय छे, उदा०—
ताव (तावत्), जाव (यावत्), जय / जग } (जगत्), अप्प (आत्मन्)
जसो (यशस्), तमो (तमस्), कम्म (कर्मन्)

२९. शब्दनी आदिमां **य** होय तो **ज** थाय छे, तथा उपसर्गनी पछी **य** आवे तो कोइ ठेकाणे **ज** थाय छे.

जसो (यशस्), जमो (यमः), जाइ (याति), संजमो-संजोगो (संयमः-संयोगः), अवजसो (अपयशः).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'क' शब्दनुं नपुंसकलिंगमां प्र० ए० अने द्वि० ए० मां 'किं' एवुं रूप थाय छे.

बाकीना सर्व अकारान्त सर्वनामनां पुल्लिंग अने नपुंसकलिंगनां रूपो अकारान्त पुल्लिंग अने नपुंसकलिंग जेवांज थाय छे, केटलांक रूपोमां विशेषता छे ते आगळ कहेवामां आवशे.

अव्यय.

अज्ज (अद्य) आज.

च,[३०] य, अ (च) अने.

वि, पि (अपि) पण.

न (न) नही.

अव्यय—सर्व लिंग, सर्व वचन अने सर्व विभक्तिमां समान रहे छे.

धातुओ

वरिस् (वृष्) [३१]वरसवुं.

करिस् (कृष्) खेडवुं. खेंचवुं. आकर्षण करवुं.

दरिस् (दृश्) देखवुं.

धरिस् (धृष्) सामा थवुं.

मरिस् (मृश्) विचारवुं.

मरिस् (मृष्) सहन करवुं.

हरिस् (हृष्) हर्ष थवो.

उव-दिस् (उप+दिश्) उपदेश आपवो.

गिण्ह् (ग्रह्) ग्रहण करवुं.

नमंस् (नमस्य) नमस्कार करवो.

प-मज्ज् (प्र-मृज्) संमार्जना करवी. साफ करवुं.

प-यास् (प्र+काश्) प्रकाशवुं.

---

३०. जे शब्द छुटा पाडवाना होय ते दरेक शब्दने अंते अथवा सर्व शब्दोने अन्ते आ अव्ययनो प्रयोग थाय छे. उदा०—फलं च पुप्फं च वत्थं च गिण्हइ, अथवा फलं पुप्फं वत्थं च गिण्हइ (अनुस्वारनी पछी 'च' नो अने स्वरनी पछी 'य-अ'नो प्रयोग प्रायः थाय छे.)

३१. वृषादि धातुओना ऋ नो अरि थाय छे. वरिसइ (वर्षति)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो.

देवा वि तं नमंसंति ।
मुरुक्खो बुहं निंदइ ।
देवा तित्थयरं जाणिन्ति ।
समणे नयरं विहरेइ ।
आयरिओ[३२] सीसे उवदिसइ ।
सो तं धरिसेइ ।
अब्भं वरिसेइ ।
मोरो नट्टं कुणेइ ।
पुरिसा जिणे वंदेइरे ।
दाणं तवो य भूसणं ।
तुम्हे पवयणं किं जाणेह ?
घरं धणं रक्खेइ ।
सव्वो जणो कल्लाणमिच्छइ ।
रामो सिवं लहेइ ।
पावा सुहं न पावेन्ति ।
मयणो जणं बाहए ।

पुत्ता फुल्लाणि चिणंति ।
मुक्खो वत्थाइं उज्झेइ ।
पण्णाइं पडेइरे ।
पसो मुहं पमज्जेइ ।
पयासेइ[३३] आइरिओ ।
धणं चोरेइ चोरो ।
आयवो जणे पीडेइ ।
देवा अब्भं विउव्विरे, जलं च सिंचेन्ति ।
रामो पण्णाइं डहेइ ।
स पोत्थयं गिण्हेइ अहं च भूसणं गिण्हेमि ।
अहं पावं निंदेमि ।
रहो चलेइ ।
अम्हे नाणं इच्छामो ।
अम्हे वत्थाणि पमज्जेमो
जाइं जिणबिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।

---

३२. 'य' वर्णनी पूर्वे अथवा पछी 'अ' के 'आ' सिवायनो कोइ पण स्वर आव्यो होय तो 'य' वर्णना स्थानमां प्रायः 'अ' थाय छे. जेमके—(आचार्य) आयरिय+ओ=आयरिओ, (मदः) मय-मओ, (जनकः) जणय-जणओ, (भार्या) भारिया-भारिआ.

३३. इ आदि पुरुषबोधक प्रत्यय पछी स्वर आवे तो संधि थाय नहि. होइ इह (भवति इह).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

मूर्खाओ मूंझाय छे.
ज्ञान प्रकाशे छे.
कमळो शोभे छे.
बे नेत्रो जुए छे.
शिष्यो ज्ञान भणे छे.
बे झाड पडे छे.
घोडाओ जल पीए छे.
देवो तीर्थंकरोने नमे छे.
राम पुस्तकने अडके छे.
बे बाळको घरेणां लइ जाय छे.
उपाध्याय ज्ञाननो उपदेश करे छे.
धन वधे छे.
पंडितो पुस्तकोने चाहे छे अने मूर्खाओ रूपाने इच्छे छे.

ते सिद्ध थाय छे.
पंडित मोक्षने मेळवे छे.
मूर्खाओ लज्जा पामता नथी.
वियोग माणसोने दुःख दे छे.
साधुओ तप करे छे.
बाळक वस्त्रने खेचे छे.
अमे सूत्रनो विचार करीए छीए.
पुत्रो पिताने नमस्कार करे छे.
पाणी सुकाय छे.
बाळक पाणी पीए छे.
राम पापीने मारे छे.
पंडितो रक्षण करे छे.
बाळको भय पामे छे.
अभिमान लोकोने पीडे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ८ मो.

अकारान्त नाम.

तइआ अने चउत्थी—विभक्ति.

प्रत्यय.

	एकवचन.	बहुवचन.
पुल्लिंग त०	ण, णं.	हि, हिं, हिँ
पुल्लिंग च०	य[34] [आए]	०

नपुंसकलिंग } अकारान्त नपुंसक नामोनां रूपों पहेली बे विभक्ति सिवाय बाकीनीं बधी विभक्तिओमां अकारान्त पुल्लिंग नामोनां जेवां ज थाय छे.

१. तृतीयाना एकवचन अने बहुवचनना तथा सप्तमी विभक्तिना बहुवचनना प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना अ नो ए थाय छे.

जिण+ण=जिणेण, जिणेणं.

जिण+हि=जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ.

२. चतुर्थीनो य प्रत्यय लगाडतां पूर्वनो अ दीर्घ थाय छे-

-जिण+य=जिणाय.

जिण (जिन)

त०	जिणेण, जिणेणं.	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ.
च०	जिणाय, [जिणाए.]	

---

३४. य प्रत्यय चतुर्थीना एकवचनमां तादर्थ्य (ते माटे, वास्ते, साठ) तेवा अर्थमां विकल्पे मुकाय छे. ते सिवाय एकवचनमां अने बहुवचनमां छट्ठी विभक्तिना प्रत्ययों मुकाय छे. (प्राकृतमां चतुर्थी विभक्तिने स्थाने छट्ठी विभक्ति मुकाय छे)

वह (वध) शब्दने चतुर्थीना एकवचनमां 'आइ आए' प्रत्यय विकल्पे लागे छे. उदा०—वहाइ, वहाए, वहाय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाण. (ज्ञान)

त० नाणेणं, नाणेण.	नाणेहि, नाणेहिं, नाणेहिँ.
च० नाणाय, [नाणाए.]	

शब्दो. (पुल्लिंग)

अवमाण (अपमान) अपमान, तिरस्कार.
अलोग (अलोक) अलोक.
आयार (आचार) आचार.
उज्जम (उद्यम) उद्यम, महेनत.
उवएस (उपदेश) उपदेश.
कुढार (कुठार) कुहाडो.
कोह[३५] (क्रोध) क्रोध, गुस्सो,

---

३५. शब्दनी अंदर स्वरनी पछी असंयुक्त ख–घ–थ–ध अने भ नो ह थाय छे, तेमज ट नो ड, ठ नो ढ, ड नो ल, प नो व, फ नो भ तथा ह अने ब नो व प्रायः थाय छे, अने श–ष नो स थाय छे.

'ख'–मुहं (मुखम्)
'घ'–मेहो (मेघः)
'थ'–नाहो (नाथः)
'ध'–साहू (साधुः)
'भ'–सहा (सभा)
'ट' घडो (घटः)
'ठ'–मढो (मठः)
'ड'–गरुलो (गरुडः)
'प'–उवमा (उपमा)
'फ'–सभरी–सहरी (सफरी)
'ब'–सवलो (शबलः)
'श' } सेसो (शेषः)
'ष' } विसेसो (विशेषः)

धातुमां–कह्, (कथ्), बोह् (बोध्), सोह् (शोभ्), पील् (पीड्), अड् (अट्), लह् (लभ्), खिव् (क्षिप्).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंद (चन्द्र) चन्द्र.
जिणेसर, जिणीसर (जिनेश्वर) जिनेश्वर
जम्म[३६] (जन्मन्) जन्म.
देह पुं. न. (सम.) शरीर.
धम्म (धर्म) धर्म, फरज.
नाय (न्याय) न्याय, नीति.
नरिंद[३७], नरिन्द (नरेन्द्र) राजा.
निरय, नरय (नरक) नारकी, नरक.
बहिर (बधिर) बहेरो.
बंभण (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
भाव (भाव) भाव.
मणोरह (मनोरथ) मनोरथ.
महिवाल (महिपाल) राजा.
मिग, मअ (मृग) हरण.
मुहर (मुखर) वाचाल.
मुक्ख, मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष.

---

३६. शब्दनी अंदर न्म होय तो म्म थाय अने ग्म नो म्म विकल्पे थाय छे.

जम्मो (जन्मन्)
वम्महो (मन्मथः)
जुम्मं, जुग्गं (युग्मम्)
तिम्मं, तिग्गं (तिग्मम्)

३७. शब्दनी अंदर रहेल अनुस्वार पछी वर्गीय व्यंजन आवे तो अनुस्वारनो ते वर्गनो अनुनासिक विकल्पे थाय छे.

'ङ्'–अंगारो–अङ्गारो (अङ्गारः)
'ङ्'–संघो–सङ्घो (सङ्घः)
'ङ्'–संखो–सङ्खो (शङ्खः)
'ञ्'–कंचुओ–कञ्चुओ–(कञ्चुकः)
'ण'–दंडो–दण्डो (दण्डः)
'न्'–चंदो–चन्दो (चन्द्रः)
'म्'–कंपइ–कम्पइ (कम्पते)
'म्'–बंभणो–बम्भणो (ब्राह्मणः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेह (मेघ) वादलुं.
रोस (रोष) क्रोध.
लोग (लोक) लोक.
वह (वध) वध.
वम्मह (मन्मथ) कामदेव.
वाह (व्याध) शिकारी.
विणय (विनय विनय, विवेक.
वीयराग (वीतराग) राग रहित.
वीर (सम) वीर, पराक्रमी.
संघ (सङ्घ संघ, समुदाय, श्रमणादि चतुर्विध संघ.
सज्जण (सज्जन) सारो माणस.
सढ (शठ) लुच्चो
सयायार (सदाचार) उत्तम-आचार, पवित्र आचरण.
सहाव-(स्वभाव) स्वभाव, प्रकृति.
सर (शर) बाण.
सग्ग (स्वर्ग), देवलोक.
सावग (श्रावक) श्रावक.
सिद्ध (सम) सिद्ध भगवान, सिद्ध पुरुष.
हत्थ (हस्त) हाथ.

नपुसकलिंग.

ओसढ (औषध) औषध, दवा
कज्ज (कार्य) काम काज.
कट्ठ काष्ठ लाकडुं.
गयण (गगन) आकाश.
तत्त (तत्त्व) रहस्य, परमार्थ.
तलाय (तडाग) तलाव, जलाशय
तित्थ / तूह } (तीर्थ.) तीर्थ,पवित्र स्थान
थोत्त (स्तोत्र) स्तोत्र.
दुक्ख / दुह } (दुःख) दुःख.
दुरिय (दुरित) पाप.
पंकय (पङ्कज) कमल.
पाव (पाप) पाप.
पुण्ण (पुण्य) पुण्य, धर्म, पवित्र.
पुप्फ[३८] (पुष्प) फूल.
वक्क (वाक्य) वाक्य.

---

३८. शब्दनी अंदर स्प अने ष्प नो 'प्फ' थाय छे. अने आदिमां होय तो 'फ' थाय छे.

'ष्प'-पुप्फं (पुष्पम्)
'ष्प'-निप्फावो (निष्पापः)
'स्प'-बिहप्फइ (बृहस्पतिः)
'स्प'-फासो (स्पर्शः)
'स्प'-फंदणं (स्पन्दनम्)
'स्प'-फद्धा (स्पर्धा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज्ज (राज्य) राज्य.
सत्थ (शास्त्र) आगम.
सत्थ (शस्त्र) शस्त्र.

सील (शील) शील, उत्तम आचरण.

*विशेषण.

अप्पकेर (आत्मीय) पोतानुं.
[39]**अणेग** (अनेक) एकथी वधारे.
एग–एअ }
एक–एक्क } (एक) एक.
परम (सम). उत्कृष्ट, श्रेष्ठ.

सहल }
सफल } (सफल) सफल, फलवाळुं.
फरुस (परुष) कठण, कर्कश.
रहिअ (रहित) रहित, वर्जित.

अव्यय.

[40]**अपि–अवि** (अपि) पण.
अहि (अभि) तरफ, पासे.
कया (कदा) क्यारे.
कयाइ (कदाचित्) कदी पण.

णाइ }
अण } (न) नही.
पइ (प्रति) तरफ, पासे.

---

*विशेषणने विशेष्यनां ज जाति, वचन अने विभक्ति लागे छे.

३९. निषेध बतावबाने माटे व्यंजनथी शरु थता शब्दना आरंभमां 'अ' अने स्वरथी शरु थता शब्दना आरंभमां 'अण' मुकाय छे.

न लोगो–अलोगो (अलोकः)
न सच्चं–असच्चं (असत्यम्)

न आयारो=अणायारो (अनाचारः)
न एगो=अणेगो (अनेकः)

४०. अपि के अवि अव्यय कोइ पण पदनी पछी आव्या होय तो तेमनो आदिनो अ विकल्पे लोपाय छे. उदा०—

तं अपि–तंपि (तदपि)
किं अपि–किंपि (कमपि)

केणवि }
केण अवि } (केनापि).

ज्यारे लोप न थाय त्यारे विकल्पे संधि थाय छे.

तमवि (तदपि) | किमवि (किमपि) | केणावि (केनापि)

देवा अवि–देवावि (देवा अपि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विणा[४१] (विना) सिवाय, रहित.	सह (सम). साथे.
सव्वत्थ[४२], सव्वहिं, सव्वह (सर्वत्र, बधे ठेकाणे.	सद्धिं (सार्द्धम्) साथे.

धातुओ.

अड्, अट्ट् (अट्) अटन करवुं, भटकवुं	पीण् (प्रीण्) खुश करवुं.
अग्घ् (अर्घ) किंमत करवी, आदर करवो.	पेक्ख्, पिक्ख् (प्र+ईक्ष्) जोवुं.
खिव् (क्षिप्) फेंकवुं.	धाव्, धाय्, धा (धाव्) दोडवुं.
जय् (यत्) यत्न करवो.	लह् (लभ्) मेळववुं.
छिंद् (छिन्द्) छेदवुं.	सोह् (शोभ्) शोभवुं.

---

४१. 'विणा' अव्ययना योगमां बीजी त्रीजी अने पांचमी विभक्ति मुकाय छे. तेमज 'सह' अव्यय अने ते अर्थवाळा बीजा अव्ययो जे नामनी साथे जोडाय छे, ते नाम त्रीजी विभक्तिमां मुकाय छे.

उ० धम्मं विणा सुहं न लहेज्ज. णाणेण सह समणा सोहंते.

४२. जे अव्ययने अन्ते 'त्र' होय तेने बदले 'हि-ह-त्थ,' आवे छे.

जहि, जह, जत्थ (यत्र)	कहि, कह कत्थ (कुत्र)
तहि, तह, तत्थ (तत्र)	अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो

जो एगं जाणेइ सो सव्वं जाणइ ।
जो सव्वं जाणए सो एगं जाणेइ ।
बुहा बुहे पिक्खन्ति किं मुरुक्खो ?।
णाइं करेमि रोसं ।
धणं दाणेण सहलं होइ।
समणा मोक्खाय जएन्ते ।
बहिरो किमवि न सुणेइ ।
समणा नाणेण तवेण सीलेण य छज्जन्ते ।
सावगा अज्ज पंकएहिं जिणे अच्चेज्ज ।
जणो कुढारेण कट्ठाइं छिंदइ।
पावो वहाइ जणं धाएइ।
आयरिआ सीसेहिं सह विहरेइरे ।
उज्जमेण सिज्झंति कज्जाणि न मणोरहेहिं ।

रोगा ओसढेण नस्संते ।
सीसा आइरिए विणएण वंदिरे ।
सज्जणा कयाइ अप्पकेरं सहावं न छड्डिरे ।
वाहो मिगे सरेहिं पहरेइ।
सीलेण सोहए देहो, न वि भूसणेहिं ।
धणेण रहिओ जणो सव्वत्थ अवमाणं पावेज्ज ।
बुहो फरुसेहिं वक्केहिं कंपि न पीलेइ ।
भावेण सव्वे सिद्धे नमिमो।
वीयरागा नाणेण लोगमलोगं च मुणेइरे ।
संघो तित्थं अडइ ।
आयारो परमो धम्मो,
आयारो परमो तवो ।
आयारो परमं नाणं, आयारेण न होइ किं ?॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो

काम माणसने दुःख आपे छे.
चंद्रवडे आकाश शोभे छे.
जन्मवडे ब्राह्मण थतो नथी.
पण आचार वडे थाय छे.
लोभ माणसने पीडे छे.
राजाओ न्याय वडे राज्य करे छे.
पापवडे मनुष्य नरकमां जाय छे.
अने धर्मवडे स्वर्गमां जाय छे.
मोर वादळा वडे खुश थाय छे.
तमे बे नृत्यनी साथे गायन करो छो.
(बे) हाथवडे तमे पुष्पो ग्रहण करो छो.
साधु ज्ञानविना सुख मेळवता नथी.
अमे स्तोत्रो वडे जिनेश्वरनी स्तुति करीए छीए.
लुच्चो सज्जनोने निंदे छे.

उपाध्याय सूत्रोनो उपदेश करे छे.
मूर्ख दीवा वडे वस्त्रो बाळे छे.
अमे पुष्पो वडे जिनबिंबनी पूजा करीए छीए.
माणस धर्मवडे सर्व ठेकाणे सुख पामे छे.
पंडित पण मूर्खाओने खुश करी शकता नथी.
साधुओ काम क्रोध अने लोभने जीते छे.
वीर शस्त्रो फेंके छे.
अमे बे संघनी साथे तीर्थ तरफ जइए छीए.
वाचाल माणस कांइपण करी शकतो नथी.
जे तत्त्व जाणे छे ते पंडित छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ९ मो.

अकारान्त नाम.

पंचमी अने छट्ठी विभक्ति.

प्रत्यय.

		एकवचन.	बहुवचन.
अकारान्त पुल्लिंग	प०	त्तो, ओ, उ, *(तो-तु), हि, हिन्तो, ०(लुक्)	त्तो, ओ, उ, (तो-तु), हि, हिन्तो, सुन्तो, एहि, एहिन्तो, एसुन्तो
	छ०	स्स.	ण, णं.

अकारान्त नपुंसक--पुल्लिंग प्रमाणे.

१. त्तो अने एकारादि प्रत्ययो विना पंचमी विभक्तिना सर्वे प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना अ नो आ थाय छे, जेमके-देव+ओ=देवाओ, देव+हिन्तो=देवाहिन्तो, देव+त्तो=देवत्तो.

२. एकारादि प्रत्ययोनी पूर्वे अ नो लोप थाय छे, जेमके-देव+एहि=देवेहि.

३. षष्ठी विभक्तिना बहुवचनना प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना अ, इ, उ, दीर्घ थाय छे, जेमके-देव+णं=देवाणं.

---

* तो-तु आ प्रत्ययवाळां पंचमीनां रूपो वसुदेवहिण्डि आदि प्राकृतकथाओमां तेमज सूत्रोनी चूर्णिआदिमां बहुज वपरायेलां छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिण. (जिन)

पं०	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणा.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणासुन्तो, जिणेहि, जिणेहिन्तो, जिणेसुन्तो.
छ०	जिणस्स.	जिणाण, जिणाणं.

नाण. (ज्ञान)

पं०	नाणत्तो, नाणाओ, नाणाउ, नाणाहि, नाणाहिन्तो, नाणा.	नाणत्तो, नाणाओ, नाणाउ नाणाहि, नाणाहिन्तो, नाणासुन्तो, नाणेहि, नाणेहिन्तो, नाणेसुन्तो.
छ०	नाणस्स.	नाणाण, नाणाणं.

शब्दो (पुल्लिग)

अजीव (अजीव) अजीव, जड.	आणंद (आनन्द) विशेष नाम.
अट्ठ, अत्थ (अर्थ) धन, वस्तु, कारण, पदार्थ, अर्थ.	छप्पअ[43] (षट्पद) भमरो.
	जीव (जीव) जीव.
	दप्प (दर्प) अभिमान.

---

४३. संयुक्त व्यंजननो प्रथम अक्षर जो क्-ग्-ट्-ड् त्-द्-प्-य्-श्-ष्-स् अने ᳵक-ᳵप होय तों लोप थाय छे, लोप थया पछी शेष व्यंजन, तेमज संयुक्त व्यंजनने स्थाने थयेलो आदेशभूत व्यंजन जो शब्दनी आदिमां न होय तो द्वित्व थाय छे, (द्वित्व थयेल व्यंजन वर्गीय बीजो के चोथो अक्षर होय तो द्वित्वना पहेला व्यंजनने स्थाने अनुक्रमे वर्गनो पहेलो ने त्रीजो मूकाय छे. (नि. १९ मो जुओ.)

अपवाद—दीर्घस्वर तथा अनुस्वार पछी शेषव्यंजन तथा आदेश-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मिअ (धार्मिक) धर्मी जन.
नेह (स्नेह) स्नेह, प्रेम, प्रीति.
पव्वय (पर्वत) पर्वत.
पच्छायाव (पश्चात्ताप) अनुताप, बळापो.
मग्ग (मार्ग) रस्तो, मार्ग.
मंदर (मन्दर) मेरु पर्वत
मणूस (मनुष्य) माणस.
मुणिंद (मुनीन्द्र) आचार्य, मुनिवर.
वग्घ (व्याघ्र) वाघ.
वग्ग[४४] (वर्ग) समूह, वर्ग.

भूत व्यंजन द्वित्व थाय नहि. तेमज र-ह कोइ पण स्थाने द्वित्व पामता नथी.

उदा०—

'क्'-भुत्तं भुक्तम्)
'ग्'-दुद्धं (दुग्धम्)
'ट्'-छप्पओ (षट्पदः)
'ड्'-खग्गो (खड्गः)
'त्'- उप्पलं (उत्पलम्)
'द्'-मोग्गरो (मुद्गरः)
'प्'-सुत्तो (सुप्तः)
'श्'-निच्चलो (निश्चलः)
'ष्'-निट्ठुरो (निष्ठुरः)
'स्'-नेहो (स्नेहः)
'ᳵक'-दुक्खं (दुःखम्)
'ᳵप'-अन्तप्पाओ (अन्तःपातः)
दीर्घस्वर-फासो स्पर्शः)
अनुस्वार-संझा (सन्ध्या)
'र'-बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्).
'ह'-विहळो (विह्वलः)

आदेशभूत व्यंजन—क्ष नो ख जक्खो (यक्षः), खओ (क्षयः), संखओ (संक्षयः)

४४. संयुक्त व्यंजनने अंते म्-न्-य-ल्-व्-ब्-र् होय तथा संयुक्त व्यंजननो पहेलो व्यंजन ल्-व्-ब्-र् होय तो लोप थाय छे. (ज्यां बंने व्यजनोंनो लोप थतो होय त्यां प्रयोगने अनुसारे बेमांथी एकनो लोप करवो.) जेमके—कव्वं (काव्यम्), पक्कं (पक्वम्), सण्हं-लण्हं (श्लक्ष्णम्) दारं-वार (द्वारम्).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विणास (विनाश) नाश.
संफास[४५] (संस्पर्श) स्पर्श, अडकवुं.
सद्द (शब्द) शब्द.
सप्प (सर्प) साप.
संतोस (संतोष) संतोष.
सिंघ–सीह (सिंह सिंह.

'म्'–सरो (स्मरः)
'न्'–नग्गो (नग्नः)
'य्'–वाहो (व्याधः)
'ल्'–सण्हं (श्लक्ष्णम्)
'ल्'–वक्कलं (वल्कलम्)
'व्'–पक्कं (पक्वम्)
'व्'–सद्दो (शब्दः)
'र्'–चक्कं (चक्रम्)
'र्'–अक्को (अर्कः)
'र्'–वग्गो (वर्गः)

४५. 'य्–र्–व्–श्–ष्–स्' ए व्यंजनो 'श–ष–स' नी साथे पूर्वे के पछी जोडायेला होय तो ते व्यंजननो पूर्वोक्त नि. ४३–४४ नियमानुसार लोप थये छते पूर्वनो ह्रस्वस्वर दीर्घ थाय छे. उदा०—

'श्य' आवासयं (आवश्यकम्)
,, नासइ (नश्यति)
'श्र'–वीसामो (विश्रामः)
'र्श'–संफासो (संस्पर्शः)
'श्व'–आसो (अश्वः)
,, वीससइ (विश्वसिति)
'श्श'–मणासिला (मनश्शिला)
'ष्य'–सीसो (शिष्यः)
'र्ष'–कासओ (कर्षकः)
'ष्व'–वीसुं (विष्वक्)
'ष्ष'–नीसित्तो (निष्षिक्तः)
'स्य'–सासं (शस्यम्)
'स्र'–वीसंभो (विस्रम्भः)
'स्व'–विकासरो (विकस्वरः)
'स्स'–नीसहो (निस्सहः)

अपवाद—कोइ ठेकाणे आ नियम लागतो नथी त्यारे पूर्वोक्त (४३–४४) नियमानुसारे शेष रहेल श–ष–स प्रयोगने अनुसारे द्वित्व थाय छे.

'श्य'–आवस्सयं (आवश्यकम्)
,, –नस्सइ (नश्यति)
'श्र'–विस्समो (विश्रामः)
'श्व'–अस्सो (अश्वः)
,, –विस्ससइ (विश्वसिति)
'श्श'–मणस्सिला (मनश्शिला)
'ष्य'–सिस्सो (शिष्यः)
'र्ष'–कस्सओ (कर्षकः)
'ष्ष'–निस्सित्तो (निष्षिक्तः)
'स्य'–सस्सं (शस्यम्)
'स्व'–विकस्सरो (विकस्वरः)
'स्स'–निस्सहो (निस्सहः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसकलिंग.

अज्झयण (अध्ययन) अध्ययन.

आवासय
आवस्सय } (आवश्यक)
अवश्य करवानुं नित्यकर्म, धर्मानुष्ठान.

उप्पल (उत्पल) कमळ.

कम्म (कर्मन्) काम, कर्म, ज्ञानावरणीय आदि कर्म.

कव्व (काव्य) काव्य.

चरण (सम) चारित्र.

चरित्त (चरित्र चरित्र, वृतांत.

दंसण (दर्शन) चक्षु, जोवुं, सम्यक्दर्शन, मत, धर्मशास्त्र.

दइव (दैव) दैव, भाग्य, अदृष्ट.

दुद्ध (दुग्ध) दूध.

धन्न (धान्य), अनाज.

फल (सम) फळ.

मूल (सम) मूळकारण, आदि-कारण, मूल.

वयण (वचन) वचन.

सुत्त (सूत्र) सूत्र.

सम्मत्त (सम्यकुत्व) सत्यतत्त्व उपर श्रद्धा राखवी, सम्यक्दर्शन.

सोक्ख (सौख्य) सुख.

हिअअ
हिअ } (हृदय) हृदय, मन.

हरण (सम.) हरण करवुं, लइ ज्वुं.

विशेषण.

अणाबाह (अनाबाध)पीडा रहित.

गुरुअ
गरुअ } (गुरुक) मोटुं, घणुं, भारे.

दीण (दीन) गरीब.

नग्ग (नग्न) नग्न, वस्त्र रहित.

निच्चल (निश्चल)स्थिर, अचळ, दृढ.

निट्ठुर (निष्ठुर) घातकी, निर्दय.

पक्क (पक्व) पाकेलुं.

पयासग (प्रकाशक)प्रकाश करनार, प्रकाशक.

महुर (मधुर) मधुर, सुंदर.

मूढ (सम.) मोह पामेलुं, मूर्ख, अज्ञानी.

वराय (वराक) गरीब, दीन.

विविह (विविध) अनेक प्रकारे, बहुविध, जुदी जुदी जातनुं.

विरुद्ध (सम.) विपरित, प्रतिकूल.

सुत्त (सुप्त) सूतेल.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अईव (अतीव) घणुं, वधारे, अतिशय.

उ (उ) विस्मय, निंदा, तिरस्कार.

कासइ (कस्यचित्) कोइकनुं.

च्चिअ (एव) नक्की, निश्चयार्थे.

४६**जह**, **जहा** (यथा) जे प्रमाणे, जेम, जेवी रीते.

तह, **तहा** (तथा) ते प्रमाणे, तेम.

धि, धी (धिक्) धिक्, धिक्कारवचन

धिद्धी (धिक्धिक्) धिक् धिक्.

४७**नमो** (नमस्) नमस्कार, नमन.

पुण, पुणा, पुणाइ (पुनर्) वळी, फरीथी.

मिच्छा (मिथ्या) फोगट, असत्य.

व–वा (वा) वा, अथवा, के.

संपइ (सम्प्रति) हमणां, हाल.

सव्वया (सर्वदा) हंमेशां, सदा.

सइ–सया (सदा) सदा, हंमेशां.

सुट्ठु (सुष्ठु) सारी रीते, सारुं.

धातु

अइक्कम् (अति+क्रम्) उल्लंघन करवुं, हद बहार जवुं.

अवेक्ख्, **अविक्ख्** (अपेक्ष्) अपेक्षा करवी गरज राखवी

खम् (क्षम्) क्षमा करवी. माफी मागवी, सहन करवुं.

डर् (त्रस्) त्रास पामवुं, डरवुं.

निस्सर्, **नीहर** (निस्सर्) नीकळवुं

परिक्ख्, **परिच्छ्** (परीक्ष्) परीक्षा करवी तपास करवी.

४८**रुच्**, **रोय्** (रुच्) इच्छवुं, पसंद पडवुं

वक्खाण् (व्याख्यानय्) व्याख्यान करवुं, स्पष्ट समजाववुं.

वीसस्, **विस्सस्** (वि+श्वस्) विश्वास करवो भरोसो करवो.

विक्किण्, **विक्के** (वि+क्री) वेचवुं.

विढव्, **अज्ज्** (अर्ज्) मेळववु. उपार्जन करवुं, पेदा करवुं.

सद्दह् (श्रद्+धा) श्रद्धा करवी.

समायर् (समाचर्) करवुं, आचरण करवुं

---

४६. अव्ययमां 'आ' नो अ विकल्पे थाय छे.

अहव–अहवा (अथवा)
जह जहा (यथा)
तह–तहा (तथा)
व–वा (वा)
ह–हा (हा)

४७. 'नमो' अव्ययना योगमां छट्ठी विभक्ति मुकाय छे.
उदा०—नमो जिणाणं नमो जिनेभ्यः).

४८. आ धातुना योगमां जेने पसंद पडतुं होय ते शब्दनी छट्ठी विभक्ति आवे छे. उदा०—बालाणं दुद्धं रुच्चइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो

नमो सिद्धाणं ।

नमो उवज्झायाणं ।

समणा सव्वय च्चिअ आवा-सयं कम्मं समायरंति ।

जह छप्पआ उप्पलाणं रसं पिबिरे, ताइं च न पीलंति, तह समणा संति ।

जो खमइ सो धम्मं सुट्ठु आराहेइ ।

बुद्धो नरिंदस्स संतोसाय कव्वाइं रएइ ।

अईव नेहो दुहस्स मूलमत्थि ।

धम्मस्स फलमिच्छंति धम्मं नेच्छंति मणूसा ।

समणो सावगाणं जिणेसराणं चरित्तं वक्खाणेइ ।

बालो सप्पस्स दंसणेण डरइ, किं पुण सफासेण ? ।

मुणिंदो सीसाणं सुत्ताणमट्ठं उवदिसइ ।

नाणं तत्ताणं पयासगं होइ ।

धम्मो कासइ न रोएइ ? ।

निट्ठुरो पावेहिंतो धम्मं वछइ ।

आणंदो सावगो दंसणत्तो न कया चलइ ।

पव्वयाणं मंदरो निच्चलो अत्थि ।

सो पमाया सुत्तं पुत्तं पहरेइ ।

अट्ठाए गामाओ गाममडंति बंभणा ।

तस्स वच्छस्स पक्काइं फलाणि अईव महुराणि संति ।

धम्मिओ सइ दीणाणं जणाणं धन्नाइं देइ ।

जस्स धम्मो व अट्ठो अत्थि तं नरं सव्वे अभिक्खिरे ।

सो नग्गो भमइ जणेहिंतो वि न लज्जए ।

धम्मो सुहाणं मूलं, दप्पो मूलं विणासस्स ।

धिद्धी मूढा जीवा, कुणंति गुरुए मणोरहे विविहे ।

न उ जाणंति वराया, झायइ दइवं किमवि अन्नं ॥१॥

विणया णाणं णाणाओ, दंसणं दंसणाहि चरणं च ।

चरणाहिंतो मुक्खो, मोक्खे सोक्खं अणाबाहं ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

सज्जन पुरुषो पापीओनो विश्वास राखता नथी.

सिंहना शब्द वडे मनुष्योनां हृदय कंपे छे.

साधुओनो समुदाय जिनेश्वरनी साथे मोक्षमां जाय छे.

मूर्खाओ चारित्रनी श्रद्धा राखता नथी.

जीवो अने अजीवोने प्रकाश करनारुं शुं छे ?

जे चारित्रनी श्रद्धा करे छे, ते भावथी श्रावक छे.

ते घेरथी नीकळे छे अने साधु थाय छे.

पश्चात्तापथी पापो नाश पामे छे.

शिष्यो उपाध्यायनी पासे अध्ययन भणे छे.

जे न्यायमार्गनुं उल्लंघन करे छे, ते दुःख पामे छे.

राजा काव्यो वडे पंडितोनी परीक्षा करे छे.

वाघथी माणस भय पामे छे.

संघ धर्मनी विरुद्ध सहन करतो नथी.

धर्मी जन पापोथी डरे छे.

कोइनुं धन हरवुं ते पाप छे.

जेओ जिनेश्वरनुं वचन उल्लंघन करे छे. तेओ सुख पामता नथी.

तुं विनयथी सारी रीते शोभे छे.

तेने धिक्कार होजो के ते बधाने निंदे छे.

ते धान्य वेचे छे, अने घणुं द्रव्य कमाय छे.

तुं तेने फोगट निंदे छे.

शिष्यो हंमेशां सूत्रोना अध्ययनोनी आवृत्ति करे छे.

बाळकने दूध पसंद पडे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १० मो.

अकारान्त नाम.

सत्तमी विभक्ति तथा संबोहण.

प्रत्यय.

	एकवचन.	बहुवचन.
अकारान्त पुल्लिंग	स० ए, म्मि [सि]	सु, सुं.
	सं० ओ, आ, ०,[ए]	आ.

अकारान्त नपुसक–पुल्लिंग प्रमाणे.

१. सि प्रत्यय लगाडतां पूर्वना अक्षर उपर अनुस्वार मुकाय छे. जेमके–समणंसि (श्रमणे) घरंसि (गृहे)

२. नपुंसकलिंगना संबोधनना एकवचनमां मूलरूप ज थाय छे. तेमज बहुवचन पण प्रथमाना ते ते रूप जेवु ज थाय छे.

जिण (जिन)

स०	जिणे, जिणम्मि, जिणंसि.	जिणेसु, जिणेसुं.
सं०	हे जिण, जिणो जिणा, जिणे.	जिणा.

नाण (ज्ञान)

स०	नाणे, नाणम्मि, नाणंसि.	नाणेसु, नाणेसुं.
सं०	हे नाण.	नाणाइं,नाणाइँ नाणाणि.

३. सर्वनामनां रूपो विस्तारथी आगळ कहेवामां आवशे पण जे रूपोमां विशेष फेरफार नथी ते रूपो अत्रे आपवामां आवे छे. सर्वनाम शब्दोनां रूपो अने प्रत्ययो अकारान्त पुल्लिंग अने नपुंसकलिंगना जेवा छे. पण प्रथमाना बहुवचनमां ए प्रत्यय अने सप्तमीना एकवचनमां स्सि, म्मि, त्थ, हिं, प्रत्ययो लगाडाय छे तथा षष्ठीना बहुवचनमां एसिं प्रत्यय विकल्पे लगाडाय छे.

अपवाद–इम (इदम्) ने एअ एतद्) सर्वनामने सप्तमीना एकवचननो हिं प्रत्यय लागतो नथी. उदा०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प॰ ब॰ सव्वे, छ॰ ब॰–सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
स. ए॰ सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ. सव्वहिं, सव्वंसि.

अकारान्त पुल्लिंग "देव" शब्दनां रूपो.

	एकव॰	बहुव॰
प॰	देवो देवे.	देवा.
बी॰	देवं.	देवे, देवा.
त॰	देवेण, देवेणं.	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं.
च॰	देवस्स, देवाय, देवाए.	देवाण, देवाणं.
पं॰	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवा.	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवासुन्तो देवेहि, देवेहिन्तो, देवेसुन्ता.
छ॰	देवस्स.	देवाण, देवाणं.
स॰	देवे, देवम्मि, देवंसि,	देवेसु, देवेसुं.
सं॰	हे देव, देवो, देवा, देवे.	देवा.

अकारान्त पुल्लिग "सव्व" शब्दनां रूपो.

प॰	सव्वो, सव्वे.	सव्वे.
बी॰	सव्वं	सव्वे, सव्वा.
त॰	सव्वेण, सव्वेणं.	सव्वेहि, सव्वेहिँ. सव्वेहिं.
च॰	सव्वस्स, सव्वाय, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
पं॰	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा.	सव्वत्तो, सव्वाओ. सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहि, सव्वेहिन्ता. सव्वेसुन्तो.
छ.	सव्वस्स.	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
स॰	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वंसि.	सव्वेसु, सव्वेसुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं०	हे सव्व, सव्वो, सव्वा, सव्वे.	सव्वे.

नपुंसकलिंग. वण (वन)

प० } बी० }	वणं.	वणाइं, वणाइँ, वणाणि.
सं०	वण.	वणाइं, वणाइँ, वणाणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

सव्व (सर्व)

प० } बी० }	सव्वं.	सव्वाइं, सव्वाइँ सव्वाणि.

तृतीयाथी पुल्लिंग प्रमाणे.

पुल्लिंग त (तद्) शब्दनां रूपो

प०	स, सो, से.	ते.
बी०	तं.	ते, ता.
त०	तेण, तेणं.	तेहि, तेहिँ, तेहिं.
च०	तस्स, ताए.	तेसिं, ताण, ताणं.
पं०	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता.	तत्तो ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेहिन्तो, तेसुन्तो.
छ०	तस्स.	तेसिं, ताण, ताणं.
स०	+तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, तंसि.	तेसु, तेसुं.

नपुंसकलिंग.

प० बी०	तं	ताइं, ताइँ, ताणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

+त (तद्) वगेरे सर्वनामोनां संबोधनां रूपो थत नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुल्लिंग एअ–एत (एतद्)

प०	एस, एसा एसे.	एए,
बी०	एअं.	एए, एआ.
त०	एएण, एएणं.	एएहि–हिँ–हि
स०	एअस्सि, एअम्मि *एत्थ, एअसि.	एएसु, एएसुं.

शेषं 'त' शब्द प्रमाणे.

नपुंसक लिंग.

प० बी०	एअं.	एआइं, एआइँ, एआणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

पुल्लिंग.

	ए०	ब०
	ज (यत्)	
प०	जो जे.	जे.
बी०	जं.	जे, जा

बाकीनां 'त' शब्द प्रमाणे.

नपुंसकलिंग.

	ए०	ब०
	ज (यत्)	
प० बी०	जं,	जाइं, जाइँ, जाणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

क (किम्)

प०	को, के.	के.
बी०	कं.	के, का.

बाकीनां 'त' प्रमाणे.

क (किम्)

प० बी०	किं.	काइं, काइँ, काणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

इम (इदम्)

प०	इमो, इमे.	इमे.
बी०	इम	इमे, इमा.
स०	इमस्सि, इमम्मि.	इमेसु.
	इमत्थ इमंसि	इमेसुं.

बाकीनां 'त' शब्द प्रमाणे.

इम (इदम्)

प० बी०	इमं.	इमाइं इमाइँ, इमाणि.

बाकीनां पुल्लिंग प्रमाणे.

---

*'त्थ' प्रत्ययनी पूर्वे एअ ना अ नो लोप थाय छे. एअ+त्थ=एत्थ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द–(पुल्लिंग)

अणत्थ } (अनर्थ) नुकशान,
अणट्ठ } हानि.
आइच्च (आदित्य) सूर्य.
इंदियचोर (इन्द्रियचौर) इन्द्रिय रूपी चोर.
उच्छाह (उत्साह) उत्साह, आनंद.
काउस्सग्ग (कायोत्सर्ग) कायानो त्याग.
४९**खंध** (स्कन्ध) खभो.
५०**खमासमण** (क्षमाश्रमण) साधु, क्षमाप्रधान मुनि.
गुण (सम) गुण, सद्गुण.
जक्ख (यक्ष) यक्ष.
पंडिअ (पंडित) पंडित.
परोवयार (परोपकार) परोपकार.
पच्चूस } (प्रत्यूष) प्रातःकाळ,
पच्चूह } सवारनो पहोर.
पज्जाय (पर्याय) पर्याय, रूपान्तर, अनुक्रम.
पाणाइवाय (प्राणातिपात) जीवहिंसा.
पाउस (प्रावृष्) वर्षारुतु, चोमासुं.
भव (सम) भव, संसार.
भार (सम) भार, बोजो.
मण (मनस्) मन.
मच्छर (मत्सर) इर्ष्या द्वेष.
मअंक } (मृगाङ्क) चन्द्र.
मिअंक }

---

४९. संज्ञावाचक शब्दनी अंदर 'ष्क' अने 'स्क' नो क्ख थाय अने आदिमां होय तो 'ख' थाय छे.

'ष्क'–पोक्खरं (पुष्करम्) 'स्क'–अवक्खंदो (अवस्कन्दः)
,, निक्खं (निष्कम्) ,, खंधो (स्कन्धः)

५०. शब्दनी अंदर 'क्ष' नो 'क्ख' अने कोइ ठेकाणे 'च्छ–ज्झ' पण थाय छे, अने आदिमां होय तो 'ख–छ–झ' थाय छे.

खओ (क्षयः)
खीरं } (क्षीरम्)
छीरं }
रिच्छो } (ऋक्षः)
रिक्खो }
सरिच्छो (सदृक्षः)
खीणं }
छीणं } (क्षीणम्)
झीणं }
वच्छो (वृक्षः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१रिच्छ } (ऋक्ष) रींछ
रिक्ख }
विसय (विषय) इन्द्रियोना शब्दादि विषयो.
वियार (विचार) विचार.
५२वेज्ज (वैद्य) वैद.
सूर (शूर) शूर, पराक्रमी.

शब्द—(नपुंसकलिंग)

अच्चण (अर्चन) पूजा, पूजवुं.
अच्छेर (आश्चर्य) विस्मय, चमत्कार.
उज्जाण (उद्यान) बगीचो, उद्यान.
घर (गृह) घर.
चइत्त } (चैत्य) जिनमंदिर,
चेइअ } जिनमूर्ति.
चरणधण (चरणधन) चारित्ररूपी धन.
झाण (ध्यान) ध्यान.
नक्खत्त (नक्षत्र) नक्षत्र.
मंस } (मांस) मांस.
मास }
मज्ज (मद्य) मद्य, दारु, मदिरा.

५१. शब्दनी आदिमां (व्यंजन पछी) 'ऋ' होय तो 'अ' थाय छे, तेमज आदिमां केवल 'ऋ' होय तो 'रि' थाय, कृपादि शब्दमां 'ऋ' नो 'इ' अने ऋतु आदि शब्दोमां 'ऋ' नो 'उ' थाय छे, तथा दृश ना 'दृ' नो 'रि' थाय अने ऋण-ऋजु-ऋषभ ऋतु-ऋषि आ शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' विकल्पे थाय अने वृषभना 'वृ' नो 'उ' विकल्पे थाय छे उदा०—

घयं (घृतम्)	हिययं (हृदयम्)	रिजू-उज्जू (ऋजुः)
कयं (कृतम्)	उऊ (ऋतुः)	रिसहो उसहो (ऋषभः)
रिच्छो (ऋक्षः)	पुट्ठो (स्पृष्टः)	रिऊ-उऊ (ऋतुः)
रिद्धी (ऋद्धिः)	सरिसो (सदृशः)	रिसी-इसी (ऋषिः)
किवा (कृपा)	रिणं-अणं (ऋणम्)	ऊसहो-वसहो (वृषभः)

५२. शब्दनी अन्दर 'द्य, य्य, र्य' होय तो 'ज्ज' थाय अने आदिमां होय तो 'ज' थाय छे.

'द्य'-मज्जं (मद्यम्)	'य्य'-सेज्जा (शय्या)	'र्य'-कज्जं (कार्यम्)
,,-वेज्जो (वैद्यः)		
'द्य'-जोअए (द्योतते)	'र्य'-भज्जा (भार्या)	'र्य'-पज्जाओ (पर्यायः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३वच्छल्ल (वात्सल्य) स्नेह, प्रेम, वत्सलता.

वक्खाण (व्याख्यान) वखाण.

वुड्ढत्तण (वृद्धत्व) वृद्धपणुं, घडपण.

सच्च (सत्य) साचुं, यथार्थवचन.

साहज्ज, साहेज्ज (साहाय्य) मदद, सहायता.

सामाइअ (सामायिक) सामायिक. (पापनो व्यापार त्याग करी बे घडी समतामां रहेवुं)

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं.

सिहर (शिखर) शिखर.

विशेषण.

अहिय (अधिक) घणुं, अत्यन्त.

उज्जय (उद्यत) तत्पर.

खीण, छीण, झीण (क्षीण) जीर्ण, दुर्बल.

जारिस (यादृश) जेवुं, जेवा प्रकारनुं.

तारिस (तादृश) तेवुं, तेवा प्रकारनुं.

थिअ (स्थित) रहेलुं, स्थिर थयेलुं.

निक्कारण (निष्कारण) प्रयोजन रहित.

निम्मलयर (निर्मलतर) अतिशय निर्मळ.

निच्च (नित्य) अविनश्वर, शाश्वत.

पयासयर (प्रकाशकर) प्रकाश करनार.

पच्छ (पथ्य) हितकारी वस्तु.

पसत्त (प्रसक्त) प्रसक्त, आसक्त.

मइरामउम्मत्त (मदिरामदोन्मत्त) मदिराना मदथी उन्मत्त.

वच्छल (वत्सल) रागवाळो, स्नेही.

५४विब्भल, विहल. (विह्वल) विह्वल, मूंझायेल.

लुंठिअ (लुण्ठित) छीनवी लीधेलुं, लूंटी लीधेलुं.

सरिच्छ, सरिक्ख (सदृक्ष) सरखुं.

रुक्क, रुग्ग (रुग्ण) रोगी.

सोहण (शोभन) सुंदर.

साहम्मिअ (साधर्मिक) समान धर्मवाळो.

---

५३. ह्रस्व स्वरनी पछी 'थ्य-श्च-त्स-प्स' आवे तो प्रयोगानुसारे 'च्छ' थाय छे. उदा०

पच्छ (पथ्यम्)	पच्छा (पश्चात्)	लिच्छइ (लिप्सति)
मिच्छा (मिथ्या)	उच्छाहो (उत्साहः)	जुउच्छइ (जुगुप्सति)
अच्छेरं (आश्चर्यम्)	संवच्छरो (संवत्सरः)	

५४. शब्दनी अन्दर 'ह्व' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे. जिब्भा, जीहा (जिह्वा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय.

अवस्सं (अवश्यं) जरूर, नक्की.

अत्थ / एत्थ } (अत्र) अहीं.

मिव, पिव. विव / व्व, व, विअ, इव } (इव) जेम, पेठे, जाणे.

णइ, चेअ चिअ, / च्च, च्चिअ, / च्चेअ, एव. } (एव) नक्की, निश्चयार्थमां

इह (सम) अहींया.

इअ, त्ति, ति, इइ (इति) आ प्रमाणे, एम.

अओ (अतः) ए कारणथी, एथी.

जत्थ, जहि, जह (यत्र) ज्यां.

तत्थ, तहि, तह (तत्र) त्यां.

कत्थ, कहि, कह. (कुत्र) क्यां.

पच्छा (पश्चात्) पछी.

दिवा / दिआ } (दिवा) दिवस.

धातुओ

उववज्ज् (उप+पद्य) उत्पन्न थवुं.

आणे (आ+नी) लइ जवु, लाववुं.

कुज्झ् (क्रध्-क्रुध्य) क्रोध करवो.

खल् (स्खल्) रोकवुं, अटकाववुं.

पसंस् (प्र+शंस्) प्रशंसा करवी.

भुंज् (भुञ्ज्) खावुं.

उवभुंज् (उप+भुंज्) भोगववुं.

मज्ज् / मच्च् } (माद्य) मद करवो.

विज्ज् (विद्य) होवुं, थवुं.

उवसम् (उप+शम्) शांत थवुं.

परिचय् / परिच्चय् } (परित्यज्) त्याग करवुं.

प्राकृत वाक्यो,

हैं खमासमण! हं मत्थएण वंदामि ।

सव्वेसु धम्मेसु जत्थ पाणाइ-वाओ न विज्जइ, सो धम्मो सोहणो होइ ।

जक्खो समणाणं साहज्जं कुणेइ

वुड्ढत्तणे वि मूढाणं नराणं विसया न उवसमन्ते ।

पच्चूसे सो उज्जाणं जाइ, तत्थ थिआइं पुप्फाइं जिणि-दाणमच्चणाय घरं आणेइ ।

समणा चेइएसु निच्चं वच्चिरे, देवे य वंदंति ।

देवा वि तं नमंसंति, जस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मे सया मणो ।

मिच्छा तं पुत्ताणं [५५]कुज्झसि

जो धणस्स मपण मज्जइ, सो भवमडइ ।

पावाणं कम्माणं खयाए ठामि काउस्सग्गं ।

मज्जम्मि मंसम्मि य पसत्ता मणुसा निरयं वच्चन्ति ।

नक्खत्ताणं मिअंको जोअइ ।

परोवयारो पुण्णाय, पावाय अन्नस्स पीलणं.

इअ नाणं जस्स हिए सो धम्मिओ[५६]त्ति

मूढो हं, तत्तो कत्थ गच्छामि, कहिं चिट्ठामि, कस्स कहेमि, कस्स, रूसेमि ।

जीवा पावेहिं कज्जेहिं निरयंसि उववज्जिरे ।

चंदेसु[५७]निम्मलयरा आइच्चेसु अ अहियं पयासयरा तित्थयरा हुंति ।

खमासमणा सव्वया नाणम्मि तवंसि झाणे य उज्जया संति ।

जारिसो जणो होइ तस्स मित्तो वि तारिसो विज्जइ ।

जो पच्छं न भुंजइ, तस्स वेज्जो किं कुणइ ? ।

[५८]अम्हेत्थ पुण्णाणं पावाणं च कम्माण फलं उवभुंजिमो ।

---

५५. जेओनी उपर क्रोध-द्रोह इत्यादि करवामां आवे तेने छट्ठी विभक्ति मुकाय छे.

५६. वाक्यनी आदिमां "इति"ने बदले "इअ" मुकाय छे. जेम "इअ नाणं जस्स हियए", कोइ ठेकाणे 'इइ' पण आवे छे. पदान्ते स्वरनी पछी 'इति'ने बदले 'त्ति' मुकाय छे, पण पदान्ते स्वर न होय तो 'ति' मुकाय छे. उदा०—

तहत्ति (तथेति)	जुत्तंति (युक्तमिति)
पिओत्ति (प्रिय इति)	किंति (किमिति)

५७. पंचमी विभक्तिने स्थाने कोइ ठेकाणे सप्तमी विभक्ति पण आवे छे. उदा०—अंतेउरे रमिउं आगओ राया (अन्तःपुराद्रन्त्वाऽऽगतः राजा)

५८. सर्वनाम के अव्ययनी पछी सर्वनाम के अव्यय आवे तो पछीना सर्वनाम के अव्ययना आदि स्वरनो प्रायः लोप थाय छे.

अम्हे+एत्थ=अम्हेत्थ (वयमत्र)	जइ+अहं=जइहं (यद्यहम्)
अज्ज+एत्थ=अज्जत्थ (अद्यात्र)	सो+इमो=सोमो (सोऽयम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नच्चइ गायइ पहसइ, पणमइ
परिचियइ वत्थं पि ।
तूसइ रूसइ निक्कारणं पि
मइरामउम्मत्तो ॥१॥

स चिय सूरो सो चेव,पंडिओ
तं पसंसिमो निच्चं ।
इंदियचोरेहिं सया, न लुंठिअं
जस्स चरणधणं ॥२॥

गुजराती वाक्यो.

गुणोमां द्वेष अनर्थने माटे थाय छे.

सुवर्णनो पर्याय आभूषण छे.

मंदिरना शिखर उपर मोर नाचे छे.

आनंदश्रावक सम्यक्त्वमां निश्चल छे.

माणस पापनुं फळ जुए छे, तो पण धर्म करी शकतो नथी एथी बीजुं शुं आश्चर्य.

बाळक प्रभातमां पिताने नमे छे अने पछी पोतानुं अध्ययन करे छे.

विह्वळ माणसने कार्यमां उत्साह होतो नथी.

आ बागमां झाडो उपर सुंदर फळो छे.

वृद्धावस्थामां शरीर जीर्ण थाय छे.

जे पथ्यनुं सेवन करे छे ते मांदो पडतो नथी.

आचार्यो तीर्थंकरना समान छे.

साधर्मिकोनुं वात्सल्य आलोकमां धर्म अने परलोकमां मोक्ष आपे छे.

मेघ पर्वत उपर वरसे छे.

साधु व्याख्यानमां जिनेश्वरोनां चरित्र कहे छे.

हुं मार्गमां रींछ जोउं छुं.

हे मूर्ख ! तुं गरीबोने शा माटे पीडे छे ?

तुं दुर्जनोनां वचनो उपर विश्वास राखे छे, एथी दुःख पामे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ ११ मो.

इकारान्त अने उकारान्त पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग नामो- पढमा, बीआ अने तइआ विभक्ति.

प्रत्यय.

	एकवचन.	बहुवचन.
इकारान्त—पुल्लिंग	प०—०.	अउ, अओ, णो, ई.
	बी०—म्.	णो, ई.
	त०—णा.	हि, हिँ, हिं.

१. उकारान्त नामोना प्रत्ययो पण इकारान्त नामोना जेवा ज छे पण प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां ई प्रत्ययने बदले ऊ प्रत्यय लागे छे तथा प्रथमाना बहुवचनमां अवो प्रत्यय पण लगाडाय छे.

२. प्रथमानुं एकवचन, तृतीयानुं बहुवचन अने पंचमीना त्तो, णो सिवाय एकवचन अने बहुवचनना प्रत्ययो तेमज षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वेना इ–उ (ई, ऊ) दीर्घ थाय छे.—प० ए० मुणी. गुरू.

३. प्रथमा-द्वितीया अने संबोधनना बहुवचनमां णो सिवायना प्रत्ययो लगाडतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे उदा०—

प० ब०-गिरि+अउ=गिरउ,	भाणु+अवो-भाणवो.
प० ब०-गिरि+अओ=गिरओ	भाणु+अउ-भाणउ.
प० ब०-गिरि+ई=गिरी	भाणु+ऊ-भाणू.
बी० ब०-गिरि+ई-गिरी,	भाणु+ऊ-भाणू.

४. इकारान्त अने उकारान्त नपुंसकलिंगना प्रथमा अने द्वितीयाना प्रत्ययो अकारान्त नपुंसकलिंग जेवा छे, अने तृतीया विभक्तिथी इकारान्त अने उकारान्त पुल्लिंग जेवा छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुणि (मुनि)

एकवचन.	बहुवचन.
प० मुणी.	मुणउ, मुणओ, मुणिणो, मुणी.
बी० मुणि.	मुणिणो, मुणी.
त० मुणिणा.	मुणीहि, मुणीहिँ, मुणीहिं.

साहु (साधु)

प० साहू.	*साहवो, साहउ, साहओ, साहुणो, साहू.
बी० साहुं.	साहुणो, साहू.
त० साहुणा.	साहूहि, साहूहिँ, साहूहिं.

दहि-नपुंसकलिंग (दधि)

प० } बी० } ×दहिं	दहीइं, दहीइँ, दहीणि.
त० दहिणा.	दहीहि, दहीहिँ, दहीहिं.
प० } बी० } महुं	महूइं, महूइँ, महूणि.
त० महुणा	महूहि, महूहिँ, महूहिं.

महु-नपुंसकलिंग (मधु).

---

*आर्षप्राकृतमां प्र० अने द्वि० बहुवचनमां अवे प्रत्ययनो प्रयोग पण देखाय छे. जेम गुरु+अवे=गुरवे तेमज बहवे-साहवे वगेरे.

उदा०-ताव य तत्थारण्णे गिद्धो दट्ठूण साहवे सहसा ॥ इति पउमचरिए (तेटलामां ते जंगलमां गिध पक्षीए साधुओने जोइने जलदी...)

×संस्कृतमां सिद्ध प्रयोग उपरथी दहि-महु (दधि-मधु) वगेरे पण थाय छे, कोइ ठेकाणे दहिँ, महुँ, इत्यादि प्रयोग पण आवे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द. (पुल्लिंग)

इंदु (इन्दु) चन्द्र.	भिक्खु (भिक्षु) साधु.
कइ / कवि (कवि) कवि.	मंति (मंत्रिन् मंत्री.
गुरु (सम) गुरु, वडील.	मुणि (मुनि) मुनि.
जइ (यति) यति, साधु.	वाहि (व्याधि) रोग, पीडा.
†जोगि (योगिन्) योगी.	रिसि (ऋषि) ऋषी.
निवइ (नृपति) राजा.	सूरि (सूरिन्) आचार्य.
बंधु (बन्धु) बंधु, मित्र.	साहु (साधु) साधु, मोक्षमार्ग साधनार.
पाणि (प्राणिन्) प्राणी, जीव.	

नपुंसकलिंग.

महु (मधु) मध.	अंसु (अश्रु) आंसु.
वारि (सम) जळ.	दहि (दधि) दही.

विशेषण.

५८अहिण्णु (अभिज्ञ) कुशल, पंडित.	सवण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार, सर्वज्ञ भगवान.
कयण्णु (कृतज्ञ) उपकार जाणनार	

† 'ईन्' अन्त नामवाळा शब्दोना अंत्य व्यंजन 'न्' नो लोप थवाथी तेनां रूपो इकारान्त नामनी माफक थाय छे.

५९. शब्दनी अंदर 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' के 'न्न' थाय छे अने आदिमां 'न' के 'ण' थाय छे.

पज्जुण्णो / पज्जुन्नो (प्रद्युम्नः)	विण्णाणं / विन्नाणं (विज्ञानम्)	नाणं / णाणं (ज्ञानम्)

अपवाद–'ज्ञ' (ज्ञ्) ना 'ञ्' नो विकल्पे लोप पण थाय छे.

पज्जा / पण्णा (प्रज्ञा)	अज्जा / अण्णा (आज्ञा)	मणोज्जं / मणोण्णं (मनोज्ञम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरहंत } (अर्हत्) पूज्य,
अरिहंत } तीर्थंकर.
अरुहंत

६० अम्हारिस वि. (अस्मादृश) अमारा जेवा.

अजिण्ण वि. (अजीर्ण) अजीर्ण, अपचो.

अमिअ } न. (अमृत) अमृत.
अमय }

आएस पु. (आदेश) हुकम, आज्ञा.

ईसर पु (ईश्वर) ईश्वर.

कअ } वि. (कृत) करेलुं.
कड }

कायव्व वि. (कर्तव्य) करवा लायक.

तारग न. (तारक) तारा.

तित्थुद्धार पु. (तीर्थोद्धार) तीर्थनो उद्धार.

दिंत वि, (ददत्) आपतो.

धन्न वि. (धन्य) धन्य, प्रशंसा करवा लायक.

मज्झ न. (मध्य) वच्चमां, आन्तरे, अंदर.

पमाअ पु. (प्रमाद) प्रमाद, भूली जवुं.

पहावग वि. (प्रभावक) प्रभावना करनार, उन्नति करनार.

पालग वि. (पालक) पालन करनार.

पडिक्कमण न. (प्रतिक्रमण) आवश्यक कृत्य, क्रियाविशेष.

बम्हचेर } न. (ब्रह्मचर्य)
बम्हचरिअ } ब्रह्मचर्य.
बंभचेर }

भोयण न. (भोजन) भोजन.

मंत पुं. न. (मन्त्र) मंत्र, विचार, गुप्त वात.

मणोज्ज } वि. (मनोज्ञ) सुंदर.
मणोण्ण }

अभिज्ञ आदि शब्दोमां 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे त्यारे अन्त्य 'अ' नो 'उ' थाय छे. अहिण्णु (अभिज्ञ), कयण्णु (कृतज्ञ), ज्यारे 'ण्ण' न थाय त्यारे उपर कहेल नियम प्रमाणे 'ञ्' नो लोप थइ अहिज्ज (अभिज्ञ), सव्वज्ज (सर्वज्ञ). इत्यादि थाय छे. अभिज्ञ आदि शब्द होवाथी प्राज्ञ विगेरे शब्दोमां अन्त्य 'अ' नो उ' थाय नही. उदा०—पण्णो, पज्जो (प्राज्ञः)

६० शब्दनी अंदर 'श्म, ष्म, स्म, ह्म' नो 'म्ह' थाय छे तेमज 'पक्ष्म' शब्दना 'क्ष्म' नो पण 'म्ह' थाय छे. कोइ ठेकाणे 'ह्म' नो 'म्भ' पण थाय छे. उदा०—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पज्जुण्ण पु. (प्रद्युम्न) कामदेव, कृष्णनो पुत्र.
मित्त पु. न. (मित्र) सखा, मित्र, दोस्त.
रण्ण, अरण्ण न. (अरण्य) जंगल, वन, अरण्य.
विम्हअ पु. (विस्मय) आश्चर्य.
विरहिअ वि. (विरहित) रहित, शून्य, विरहवाळुं.
संसग्ग पु. (संसर्ग) संग, संबंध.
सासण न. (शासन) आगम, शास्त्र, शिक्षा, आज्ञा, शासन.

अव्यय.

अहुणा (अधुना) हमणां, हाल
कह, कहं (कथम्) केम, केवी रीते.
तओ (ततः) त्यार पछी, ते कारणथी.

धातुओ.

अव-गण् (अव+गण्) अवगणना करवो, अपमान करवुं.
अवणे (अप+नी) दूर करवुं, खसेडवुं
चड्, आ-रोह्, आ-रुह् (आ+रोह्) चढवुं, आरोहण करवुं.
उद्धर् (उद्+धर्) उद्धार करवो.
चक्ख् (आ-स्वाद्) स्वाद लेवो.
पाल् (सम) पालन करवुं.
फाल्, फाड् (पाटय्) फाडवुं, चीरवुं.
मंत् (मन्त्र्) विचार करवो.
नि-मंत् (नि+मन्त्र्) निमन्त्रण आपवुं निमन्त्रवुं.
वीसर्, विस्सर् (वि-स्मृ) भूली जवुं.
वण्ण् (वर्ण्) वखाणवुं, वर्णन करवुं
सेव् (सम.) सेवा करवी.

'श्म' कम्हारा (कश्मीराः)
'ष्म' गिम्हो (ग्रीष्मः)
'स्म' विम्हओ (विस्मयः)
'ह्म' बम्हा (ब्रह्मा)
बम्हणो, बम्भणो (ब्राह्मणः)
'ह्म' बम्हचेरं, बम्भचेर (ब्रह्मचर्यम्)
'क्ष्म' पम्ह (पक्ष्म)
कोइ ठेकाणे म्ह थतो नथी.
रस्सी (रश्मिः)
सरो (स्मरः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो.

अरिहंता सव्वण्णवो भवंति
कयण्णुणा सह संसग्गो सइ
कायव्वो ।
छप्पआ महुं चक्खेज्जा ।
सूरओ जिणिंदस्स सासणस्स
पहावगा संति ।
गुरुणो सीसाणं सुत्ताणमट्ठमु-
वदिसंति ।
अहिण्णू सत्थाणमत्थेसु न
मुज्झन्ति ।
जइणो मणोज्जेसु उज्जाणेसु
झाणं समायरन्ति ।
साहवो तत्तेसु विम्हयं न
पावेइरे ।
सूरी साहूहिं सह आवासयाइं
कम्माइं कुणइ ।
साहुणो पमाआ सुत्ताणि
वीसरेज्ज ।
मुणी धम्मस्स तत्ताइं सूरिं
पुच्छंति ।
साहू गुरुहिं सह गामाओ
गामं विहरंते ।
कइणो नरिंदस्स गुणे वण्णेइरे ।

दुक्खेसु साहेज्जं जे कुणंति—
ते बंधवो अत्थि ।
तुं अंसूणी किं मुंचसि ? ।
अजिण्णे ओसढं वारिं ।
भोयणस्स मज्झम्मि वारिं
अमयं ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज
भिक्खू ।
पज्जुण्णो जणे डहइ ।
निवई मंतीहिं सद्धिं रज्जस्स
मंतं मंतेइ ।
निवइणो मणोण्णेहिं कव्वेहिं
तूसंति ।
धन्नाणं चेव गुरुणो आएसं
दिंति ।
धम्मो बंधू अ मित्तो अ,
धम्मो य परमो गुरू ।
नराणं पालगो धम्मो, धम्मो
रक्खइ पाणिणो ॥१॥
दाणेण विणा न साहू, न हुंति
साहूहिं विरहिअं तित्थं ।
दाणं दिंतेण तओ, तित्थुद्धारो
कओ होइ ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुज़राती वाक्यो

मुनिओ शास्त्रमां पंडित होय छे.
तमे साधुओनी साथे हंमेशां प्रतिक्रमण करो छो.
हुं मधनो त्याग करुं छुं.
योगीओ वनमां रहे छे अने कामने जीते छे.
मुनिओ उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य पाळे छे.
पंडितो व्याधिथी मूंझाता नथी.
वैद्य व्याधिओने दूर करे छे.
हुं स्तोत्रोवडे सर्वज्ञ भगवाननी स्तुति करुं छुं.
ताराओनी मध्यमां चन्द्र शोभे छे.
राजाओ लुच्चाओने दंड करे छे.
अने सज्जनोनुं पालन करे छे.
मध भमराओने गमे छे.
ते हंमेशां प्रभाते उद्यानमां जाय छे अने आचार्यो तथा साधुओने वंदन करे छे.
साधुओ कोइ वखत पण पापमां प्रवृत्ति करता नथी.
ऋषि मन्त्रवडे आकाशमां उडे छे.
मेघ पाणी छांटे छे.
दिवसे चन्द्र शोभतो नथी.
बालक दहीं खाय छे.
गुरु अमारा सरखा पापीओनो पण उद्धार करे छे.

पाठ १२ मो.

(चालु) इकारान्त, उकारान्त पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग नामो. चउत्थी, पंचमी अने छट्ठी विभक्ति.

प्रत्यय.

	एकवचन.	बहुवचन.
च०	णो, स्स.	ण, णं.
पं०	णो, त्तो, ओ, उ, हिन्तो.	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो.
छ०	णो, स्स.	ण, णं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुणि, (मुनि)

च०	मुणिणो, मुणिस्स.	मुणीण, मुणीणं.
पं०	मुणिणो, मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ, मुणीहिन्तो.	मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ, मुणीहिन्तो, मुणीसुन्तो.
छ०	मुणिणो, मुणिस्स.	मुणीण, मुणीणं.

साहु, (साधु)

च०	साहुणो, साहुस्स.	साहूण, साहूणं.
पं०	साहुणो, साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो.	साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो, साहूसुन्तो.
छ०	साहुणो, साहुस्स.	साहूण, साहूणं.

दहि, (दधि)

च०	दहिणो, दहिस्स.	दहीण, दहीणं.
पं०	दहिणो, दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो.	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो, दहीसुन्तो.
छ०	दहिणो, दहिस्स.	दहीण, दहीणं.

महु, (मधु)

च०	महुणो, महुस्स.	महूण, महूणं.
पं०	महुणो, महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो.	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो, महूसुन्तो.
छ०	महुणो, महुस्स.	महूण महूणं.

चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृत उपरथी–मुणये, (मुनये), साहवे (साधवे) तेमज वारिणे (वारिणे), महुणे (मधुने) इत्यादि पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दो.

अगार, अंगाल, इंगार, इंगाल — पु. (अङ्गार) अंगारो.

अण्णाणि वि. (अज्ञानिन्) अज्ञानी, मूर्ख.

अवरण्ह[६१] पु. (अपराह्ण) दिवसनो पाछलो प्रहर.

अवराह पु. (अपराध) गुनो, वांक.

अच्छि पु. न. (अक्षि) आंख.

उत्तर न. (सम.) उत्तर, जवाब.

कण्ह, किण्ह — पु. (कृष्ण) वासुदेव.

कवि पु. (कपि) वांदरो.

कामसम वि. (सम.) कामसमान.

कोवसम वि. (कोपसम) क्रोधनी समान.

केवलि पु. (केवलिन्) केवळज्ञानी, सर्वज्ञ.

गणि पु. (गणिन्) गणधर, गणी.

गोयम पु. (गौतम) श्री महावीर स्वामीना प्रथम गणधर.

चंदण न. (चन्दन) चंदन.

जरागहिअ वि. (जरागृहीत) जराथी ग्रहण करायेल, घरडो.

जंतु पु. (जन्तु) प्राणी, जीव.

जीवाउ पु. न. (जीवातु) जीवन, औषध.

जुद्ध न. (युद्ध) युद्ध.

झुणि पु. (ध्वनि) शब्द.

तरु पु. (सम.) झाड.

तिक्ख, तिण्ह — वि. (तीक्ष्ण) तीखुं.

नमोक्कार, नमुक्कार — पु. (नमस्कार) नमन, प्रणाम.

नेमि पु. (सम.) बावीसमा जिनेश्वरनुं नाम.

---

६१. जे शब्दोमां 'श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्ण' होय तो तेनो 'ण्ह' थाय छे, तेमज सूक्ष्म शब्दना 'क्ष्म'नो पण 'ण्ह' थाय छे अने 'ह्ल'नो 'ल्ह' थाय छे.

'श्न'–पण्हो (प्रश्नः)
'ष्ण'–जिण्हू (जिष्णुः)
'त्स्न'–जोण्हा (ज्योत्स्ना)
'स्न'–ण्हाइ (स्नाति)
'ह्न'–जण्हू (जह्नुः)
'ह्ण'–पुव्वण्हो (पूर्वाह्णः)
'क्ष्ण'–सण्हं (श्लक्ष्णम्)
'क्ष्म'–सण्हं (सूक्ष्मम्)
'ह्ल'–पल्हाओ (प्रह्लादः)
आल्हाओ (आह्लादः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निमेस पु. (निमेष) पलकारो.
पर वि. (सम.) अन्य, श्रेष्ठ, बीजो.
पराभव पु. (सम) पराभव.
पयास पु. (प्रकाश) प्रकाश.
पसाय पु. (प्रसाद) महेरबानी, कृपा, दया.
पहु पु. (प्रभु) प्रभु, स्वामी.
पुव्वण्ह पु. (पूर्वाह्ण) दिवसनो पहेलो भाग.
पण्ह पु. (प्रश्न) प्रश्न, सवाल.
पुज्ज वि. (पूज्य) पूजवा योग्य.
बहु / **बहुअ** } वि. (बहु) घणुं, वधारे.
भगवंत / **भयवंत** } वि. (भगवत्) ऐश्वर्यवाळु, भगवान.
भड (भट) पु. लडवैओ.
भव्व वि. (भव्य) भव्य जीव, योग्य, सुंदर.
भाणु पु. (भानु) सूर्य.
मच्चु पु. (मृत्यु) मरण, मोत.
मज्झण्ह पु. (मध्याह्न) दिवसनो मध्य भाग.
मंद वि. (सम.) धीमुं, आळसु, थोडुं.
महुर वि. (मधुर) मीठु, सारुं.
मन्नु पु. (मन्यु) क्रोध.
मोहसम वि. (सम) मोहसमान, अज्ञान सरखुं.
रत्त वि. (रक्त) रंगेलुं, रातुं, आसक्त.
रिउ पु. (रिपु) शत्रु.
लहु / **लहुअ** } वि. (लघु) तुच्छ, नानुं, निस्सार.
वण्हि पु. (वह्नि) अग्नि.
विण्हु पु. (विष्णु) वासुदेवनुं नाम.
संति पु. (शान्ति) सोळमा तीर्थंकरनुं नाम.
समीव वि (समीप) पासे, नजीक.
सत्तु पु. (शत्रु) शत्रु.
सिसु पु. (शिशु) बालक
संहार / **संघार** } पु. (संहार) संहार, नाश करवो.
[६२]**हत्थि** पु. (हस्तिन्) हाथी.

---

६२. शब्दनी अंदर 'स्त' होय तो 'त्थ' थाय छे, अने आदिमां 'स्त' होय तो 'थ' थाय छे.

हत्थो (हस्तः) | थोत्तं (स्तोत्रम्)
नत्थि (नास्ति) | थुई (स्तुतिः)

अपवाद—समस्त अने स्तम्ब शब्दमां 'स्त' नो 'त्थ' के 'थ' थतो नथी. समत्तो (समस्तः), तम्बो (स्तम्बः).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय.

अन्नह } (अन्यथा) विपरीत,
अन्नहा } उलटुं.

किंतु (किन्तु) पण.

नत्थि (नास्ति) नथी.

बाहिं } (बाहिर) बहार.
बाहिर }

मणयं }
मणियं } (मनाक्) अल्प, थोडुं.
मणा }

धातुओ.

गण् (गण्) गणवुं.

जिय् (जीव्) जीववुं.

अव-मन्न् (अव+मन्य) अपमान करवुं, तिरस्कार करवो.

प्राकृत वाक्यो.

सव्वण्णूणं अरिहंताणं भगवंताणं इक्को वि नमोक्कारो भवं छिंदेइ ।

जरागहिआ जंतुणो तं नत्थि, जं पराभवं न पावंति ।

आणंदो संतिस्स चेइए नच्चं करेज्जा ।

पच्चूसे भाणुणो पयासो रत्तो हवइ ।

नमो पुज्जाणं केवलीणं गुरूणं च ।

पंडिआ मच्चुणो णेव बीहंति ।

तुम्हे गुरूओ विणा सुत्तस्स अट्ठाइं न लहेह ।

जंतुण जीवाउं वारिमत्थि ।

रण्णे सिंघाणं[६३] हत्थीणं च जुद्धं होइ ।

केवली महुरेण झुणिणा पाणीणं धम्ममुवएसइ ।

सूरिणो अवराहेण साहूणं कुज्झंति ।

अन्नाणिणो केवलिणो वयणं अवमन्नंति ।

निवईहिन्तो कवओ बहु धणं लहेइरे ।

---

६३. अनुस्वारनी पछी 'ह' आवे तो 'ह' नो 'घ' विकल्पे थाय छे. सिंघो-सीहो (सिंहः) संघारो-संहारो (संहारः) कोइ ठेकाणे अनुस्वार न होय तो पण 'ह' नो 'घ' थाय छे. दाघो (दाहः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अम्हे पहुणो पसाएण जीवामो।
जइणो मणयं पि कासइ मन्नुं
न कुणिज्जा।
अंगाराणं कज्जेण चंदणस्स
तरुं को डहेइ ?।
मच्चुस्स सो पमाओ, जं जीवो
जियइ निमेसंपि।
गिम्हस्स मज्झण्हे भाणुस्स
तावो अईव तिक्खो होइ,

पुव्वण्हे अवरण्हे य मंदो होइ।
गोयमाओ गणिणो पण्हाण-
मुत्तरं जाणिमो।
गुरुस्स विणएण मुरुक्खो वि
पंडिओ होइ।
नत्थि कामसमो वाही, नत्थि
मोहसमो रि
नत्थि कोवसमो वण्ही, नत्थि
नाणा परं सुहं ॥१॥

गुजराती वाक्यो.

शिष्यो गुरुने प्रश्नो पूछे छे.
अमे सर्वज्ञ भगवान पासेथी धर्म
सांभळीए छीए.
अज्ञानीओथी पंडितो भय पामे छे.
हुं हमेशां पुष्पोथी शान्ति (जिन) ने
पूजुं छुं.
ते तीक्ष्ण शस्त्रवडे शत्रुने हणे छे.
शान्ति (जिनेश्वर) ना ध्यानथी
कल्याण थाय छे.
प्रमाद प्राणीओनो परम शत्रु छे,
पण वीर पुरुषो तेने जीते छे.
केवलीनां वचनो अन्यथा होतां
नथी.
कृष्ण नेमि (जिनेश्वर) पासेथी
सम्यक्त्व पामे छे.
भमरो मधने माटे भमे छे.

लडवैयो राजानी पासे द्रव्यनी
आशा राखे छे.
सिंहना शब्दथी हरणोनुं हृदय
कंपे छे.
चन्द्रनो प्रकाश चित्तने आनंद
उपजावे छे.
वांदराओ झाडनां पाकां फळ
खाय छे.
अमे गुरु पासे धम सांभळीए
छीए.
माणसो व्याधिओथी बहु ज
मूंझाय छे.
बाळकोने प्रभुनुं पूजन गमे छे.
सिंहो हाथीओने फाडे छे.
साधु शास्त्रनुं अपमान करता
नथी.
हाथीओथी सिंहो डरता नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १३ मो.

(चालु) इकारान्त, उकारान्त पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग नामो. सप्तमी विभक्ती तथा संबोहण.

प्रत्यय.

	एकव०	बहुव०
स०–	म्मि, सि.	सु, सुं.
सं०–	०	प्रथमा प्रमाणे

संबोधनना एकवचनमां अन्त्य स्वर विकल्पे दीर्घ थाय छे.

मुणि, (मुनि).

स०	मुणिम्मि, मुणिंसि.	मुणीसु, मुणीसुं.
सं०	हे मुणी, मुणि.	मुणउ, मुणओ, मुणिणो, मुणी.

साहु, (साधु).

स०	साहुम्मि, साहुंसि.	साहूसु, साहूसुं.
सं०	हे साहू, साहु.	साहवो, साहउ, साहओ, साहुणो, साहू.

नपुसकलिंगना संबोधनना एकवचनमां मूल रूप ज रहे छे. तेम ज बहुवचन प्रथमाना ते ते रूप जेवां ज छे.

दहि, (दधि).

स०	दहिम्मि, दहिंसि.	दहीसु, दहीसुं.
सं०	हे दहि.	दहीइं, दहीइँ, दहीणि.

महु, (मधु).

स	महुम्मि, महुंसि.	महूसु, महूसुं.
सं०	हे महु.	महूइं, महूइँ, महूणि.

अदस् शब्दनो प्राकृतमां **'अमु'** आदेश थाय छे. पछी तेनां रूपो उकारान्त नामनी पेठे थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमु (अदस्) पुल्लिंग.

प० अमू.	अमवो, अमउ, अमओ, अमुणो, अमू.
बी० अमुं.	अमुणो, अमू.

बाकीनां रूपो 'साहु' प्रमाणे.

नपुंसकलिंग.

प० } अमुं. बी० }	अमूइं, अमूइँ, अमूणि.

शेष रूपो पुलिंग जेवां थाय छे.

संपूर्ण रूपो.

नेमि (पुल्लिग).

प० नेमी.	नेमउ, नेमओ, नेमिणो, नेमी.
बी० नेमिं.	नेमिणो, नेमी.
त० नेमिणा.	नेमीहि, नेमीहिँ, नेमीहिं.
च० नेमिणो, नेमिस्स.	नेमीण, नेमीणं.
पं० नेमिणो, नेमित्तो, नेमीओ, नेमीउ, नेमीहिन्तो.	नेमित्तो, नेमीओ, नेमीउ, नेमीहिन्तो, नेमीसुन्तो.
छ० नेमिणो, नेमिस्स.	नेमीण, नेमीणं.
स० नेमिम्मि, नेमिंसि.	नेमीसु, नेमीसुं.
सं० हे नेमी, नेमि.	नेमउ, नेमओ, नेमिणो, नेमी.

गुरु.

प० गुरू.	गुरवो, गुरउ, गुरओ, गुरुणो, गुरू.
बी० गुरुं.	गुरुणो, गुरू.
त० गुरुणा.	गुरूहि, गुरूहिँ, गुरूहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च०	गुरुणो, गुरुस्स.	गुरूण, गुरूणं.
प०	गुरुणो, गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिन्तो.	गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ. गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो.
छ०	गुरुणो, गुरुस्स.	गुरूण, गुरूणं.
स०	गुरुम्मि, गुरुंसि.	गुरूसु, गुरूसुं.
सं०	गुरू, गुरु.	गुरवो, गुरउ, गुरओ, गुरुणो, गुरू.

वारि (नपुंसकलिंग).

प० बी०	वारिं.	वारीइं, वारीइँ, वारीणि.

बाकीनां रूप '**नेमि**' प्रमाणे.

सं०	हे वारि.	हे वारीइं, वारीइँ, वारीणि.

अंसु, (अश्रु).

प० } वी०	अंसु.	अंसूइं, अंसूइँ, अंसूणि

बाकीनां रूप '**गुरु**' प्रमाणे.

सं०	अंसु.	अंसूइं, अंसूइँ, अंसूणि.

शब्दो.

अइसय पु. (अतिशय) अतिशय.
अग्गि पु. (अग्नि) अग्नि.
असार वि. (सम) सार विनानुं, असार.
असुर पु. (सम) असुर, राक्षस.
असुरिंद पु. (असुरेन्द्र) राक्षसोनो स्वामी.
अच्चंत वि. (अत्यन्त) वधारे, घणुं.
आसन्न वि. (सम) समीप, पासेनुं, नजीक.
इंद पु. (इन्द्र) इन्द्र.
उत्तम } **उत्तिम** } विं. (उत्तम) श्रेष्ठ, सुंदर.
कल्ल न. (कल्य) आवतीकाल, गइकाले.
कंठ पु. (कण्ठ) गरदन, गळुं.
किवण वि. (कृपण) कदर्य, कंजुस, लोभी.
खण पु. (क्षण) समय, काळ–विशेष, क्षण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरुल पु. (गरुड) पक्षिराज.
गुणि वि. (गुणिन्) गुणवाळो.
चक्खु पु. न. (चक्षुः) आंख, नेत्र.
जिअलोअ–ग पु. (जीवलोक) दुनिया, संसार.
जीविअ न. (जीवित) जीवन, जीवतर.
जीवियंत पु. (जीवितान्त) प्राणोनो नाश.
जोह पु. (योध) लडवैयो, योद्धो.
दव्व न. (द्रव्य) धन, द्रव्य, संपत्ति.
दिग्घ, दीह, दीहर वि. (दीर्घ) दीर्घ, लांबुं.
दिवस, दिवह पु. न. (दिवस) दिवस.
दोस पु. (दोष) दुर्गुण, दोष.
नायव्व वि. (ज्ञातव्य) जाणवा योग्य.
पक्खि पु. (पक्षिन्) पक्षी.
पभाय, पहाय पु. न. (प्रभात) परोढ, प्रातःकाळ.
परमपय न. (परमपद) उत्तम स्थान, मोक्ष.
पाय पु. (पात) पडवुं, पतन.
पाणि पु. (सम) हाथ.
पुव्व, पुरिम वि. (पूर्व) पहेलुं, अगाउनुं.
मच्छ पु. (मत्स्य) माछलुं.
मत्थय पु. न. (मस्तक) माथुं.
महुस्सव, महूसव, महोसव, महोच्छव पु. (महोत्सव) मोटो उत्सव.
महावीर पु. (सम) चोवीसमा तीर्थंकरनुं नाम.
मेरु पु. (सम) मेरु पर्वत.
रक्खण न. (रक्षण) रक्षण.
रहस्स वि. (रहस्य) गुप्त, गुह्य. एकान्त.
वज्ज, वइर पु. न. (वज्र) वज्र हीरो, इन्द्रनुं शस्त्र.
वज्जपाणी पु. (वज्रपाणि) इन्द्र.
वर वि. (सम) श्रेष्ठ, उत्तम.
वाउ पु. (वायु) पवन.
विज्जत्थि पु. (विद्यार्थिन्) विद्याना अर्थी, विद्यार्थी.
विंझ पु. (विन्ध्य) विन्ध्याचल पर्वत.
विन्नाण न. (विज्ञान) सद्बोध, कळा, ज्ञान.
वेरग्ग न. (वैराग्य) वैराग.
विसयविस पु. न. (विषयविष) विषय रूपी झेर.
सक्क पु. (शक्र) इन्द्र.
सरूव न. (स्वरूप) स्वरूप.
सत्तुंजय पु. (शत्रुंजय) सिद्धाचल तीर्थ.
सिद्धगिरि पु. (सम) सिद्धाचल पर्वत, सिद्धगिरि.
हरि पु. (सम) इन्द्र, विष्णु.
हार पु. (सम) माळा, हार.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय.

अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र) बीजे ठेकाणे.

एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ, एगया. (एकदा) एक दिवसे, कोइ वख्त.

एण्हि एत्ताहे, इदाणिं (णि), दाणि, दाणिं, दाणीं (इदानीम्) हाल, हमणां.

सम्मं (सम्यग्) सारी रीते.

नउण, नउणाइ, नउणा (न पुनः) फरीथी नहि.

धातुओ.

चय्, तर्, सक्क् (शक्) शक्तिमान थवुं.

जग्ग्, जागर् (जागृ) जागवुं.

जाय् (याच्) मांगवुं.

ढिक्क् (गर्ज्) बळदनुं गाजवुं.

परि-हा, परि-धा (परि+धा) धारण-करवुं, पहेरवुं.

पूय् (पूज्) पूजन करवुं.

बुक्क् (गर्ज्) गर्जना करवी, गाजवुं.

भर् (भृ) भरवुं.

विराय् (वि+राज्) शोभवुं.

प्राकृत वाक्यो.

जोहा सत्तूसु सत्थाणि मेल्लिन्ति ।
विज्जत्थिणो पभाए पुव्वं चिअ जग्गंति ।
सीसा गुरुम्मि वच्छला हवंति ।
पक्खिणो तरूसुं वसंति ।
मुणिंसि परमं नाणमत्थि ।
जओ हरी पाणिम्मि वज्जं धरेइ, तओ लोआ तं वज्ज-पाणि त्ति वयंति ।
सव्वण्णुणा जिणिंदेण समो न अन्नो देवो ।
सिद्धगिरिणा समं न अन्नं तित्थं ।
मेरुम्मि असुरा असुरिंदा देवा देविंदा य पहुणो महावीरस्स जम्मस्स महोसवं कुणन्ति ।
पक्खीसु के उत्तमा संति ? ।
अग्गिंसि पाओ वरं, न उण सीलेण विरहियाणं जीविअं ।
साहूणं सच्चं सीलं तवो य भूसणमत्थि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूढा पाणिणो इमस्स असारस्स संसारस्स सरूवं न जाणिज्ज ।
जं कल्ले कायव्वं तं अज्ज च्चिअ कायव्वं ।
अमूसुं तरूसु कवी वसंति ।
हे सिसु तं दहिंसि वहुं आसत्तो सि ।
साहवो परोवयाराय नयराओ नयरंसि विहरेइरे ।
वसहो वसहं पासेइ, ढिक्कइ अ ।
जणेसु साहू उत्तमा अत्थि ।
हत्थिणो विंझम्मि वसंति ।
हे सिसु ! तुं सम्मं अज्झयणं न अहिज्जेसि ।
अन्नाणीसुं सुत्ताणं रहस्सं न चिट्ठइ ।
गिम्हे दिग्घा दिवसा हुविरे ।
सिसू ! तं जणए वच्छलो सि ।
जो दोसे चयइ सो सव्वत्थ तरइ ।
गुणीसु चेअ गुणिणो रज्जंति नागुणीसु ।
सव्वेसु* पाणीसुं तित्थयरा उत्तिमा संति ।
जं पहूणं रोएइ, तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं ।

सच्चं सुअं पि सीलं, विन्नाणं तह तवं पि वेरग्गं ।
वच्चइ खणेण सव्वं विसयविसेण जईणं पि ॥१॥

जह जह दोसो विरमइ, जह जह विसएहि होइ वेरग्गं ।
तह तह वि नायव्वं, आसन्नं चिअ परमपयं ॥२॥

धन्नो सो जिअलोए, गुरवो निवसंति जस्स हिययंमि ।
धन्नाण वि सो धन्नो, गुरूण हिअए वसइ जो उ ॥३॥

गुजराती वाक्यो.

बाळको कंठमां हारो धारण करे छे.
इन्द्र देवोने तीर्थंकरना अतिशयो कहे छे.
ते मधमां घणो आसक्त छे.

---

* आवां वाक्योमां छट्ठी के सातमी विभक्ति मूकाय छे.

× पंचमीने स्थाने तृतीया विभक्ति पण थाय छे. **चोरेण बीहइ** (चोराद् बिभेति).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वज्ञमां जे गुणो होय छे ते गुणो बीजाओमां होता नथी.

ते पर्वतमां ज्यां गुरु रहे छे त्यां हुं रहु छुं.

गुरुओनो विनय करवाथी विद्यार्थीओमां ज्ञान वधे छे.

जेम पशुओमां सिंह, पक्षिओमां गरुड, माणसोमां राजा, अने देवोमां इन्द्र उत्तम छे, तेम सर्व धर्ममां जीवोनुं रक्षण उत्तम छे.

पक्षिओमां उत्तम पक्षी कोण छे ?

आ पाणीमां घणां माछलां छे.

हमणां हुं शत्रुओनी साथे लडुं छुं.

प्राणीओने जीवाडनार धर्म छे.

पर्वतोमां मेरु उत्तम छे.

पंडितो अज्ञानीओनो विश्वास करता नथी.

माणस तळावमां जळ भरे छे.

हे बाळको तमे क्यां जाओ छो ?

अमे सिद्धाचळ जइए छीए.

सरोवरना पाणीमां कमळो छे

साधुओ शत्रुथी भय पामता नथी.

भिक्षु कृपण पासेथी द्रव्य मागे छे.

बाळक चंद्रना दर्शनथी नेत्रमां सुख मेळवे छे.

साधुओने मृत्युनो भय होतो नथी.

मुनिओने गौतम गणधर उपर अत्यन्त राग छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १४ मो.

भूतकाळ.

१. व्यंजनान्त धातुओने सर्व वचन अने सर्व पुरुषमां 'ईअ' प्रत्यय लागे छे, अने स्वरान्त धातुओने 'सी', 'ही', 'हीअ', प्रत्ययो लागे छे.

सर्व वचन }
सर्व पुरुष } — 'ईअ'

उदा०—हस्+ईअ=हसीअ.

कर्-करीअ.	पढ्=पढीअ.
वंद्=वंदीअ.	वोह्=वोहीअ.

सर्ववचन }
सर्वपुरुष } — *सी, ही, हीअ.

हो+सी=होसी,	ने+सी=नेसी,
हो+ही=होही,	ने+ही=नेही,
हो+हीअ=होहीअ.	ने+हीअ=नेहीअ.

स्वरान्त धातुआने प्रत्ययोनी पूर्वे 'अ' आवे त्यारे.

नेअ+सी-नेअसी,
नेअ+ही=नेअही,
नेअ+हीअ=नेअहीअ.

व्यंजनान्त धातुओने 'ए' प्रत्यय लगाडीने 'सी, ही' वगेरेनो प्रयोग प्राकृत साहित्यमां देखाय छे. जेम–सुण्+ए+सी–सुणेसी. किं इदाणिं रोदसि, मम तदा न सुणेसी. (वसुदे० पृ० २९–११).

प्राकृतमां 'कृ' धातुने स्थाने 'का' बने छे.

---

* आ प्रत्ययोनो स्वर कोइ स्थळे ह्रस्व पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्ववचन } कासी, काही, काहीअ.
सर्वपुरुष }

अस् धातुनां रूपो.

सर्ववचन } आसि, अहेसि.
सर्वपुरुष }

संस्कृत सिद्ध प्रयोग उपरथी थतां आर्ष रूपो.

ब्रू— अब्बवी (अब्रवीत्) त्री० ए०

कृ— अकासी } (अकार्षीत्) ,,
अकासि }

वच्—अवोच (अवोचत्) ,,

भू— अभू (हू) (अभूत्) ,,

अस्— आसी (आसीत्) ,,

,,— आसिमो } (आस्म) ,, प० ब०
आसिमु }

दृश्—अदक्खु (अद्राक्षुः) त्री० ब०

२. आर्ष प्राकृतमां सर्ववचन अने सर्वपुरुषमां धातुना अंगने प्रयोगने अनुसारे 'त्था-त्थ' अने *'सु' प्रत्यय लागे छे. आ प्रत्यय लगाडतां पूर्वे अ नो इ थाय छे.

३. 'सु' प्रत्यय लगाडतां पूर्वना अक्षर उपर अनुस्वार मूकाय छे.

कह+त्था=कहित्था.	कह+सु=कहिंसु.
ने+त्था=नेत्था.	ने+सु=नेंसु.
नेअ+त्था=नेइत्था.	नेअ+सु=नेइंसु.
हस+त्था=हसित्था.	हस+सु=हसिंसु.
जिण+त्था=जिणित्था.	जिण+सु=जिणिंसु.

---

*सु प्रत्यय लगाडतां पूर्वना अ नो ए पण कोइ स्थाने थाय छे- परिकहेंसु, (बृह० गा० ४६८५). उदीरेंसु, निजरेंसु (भग० शत० १, उद्देसो ३, सूत्र. २८)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ए प्रमाणे—

बुह-बोहित्था. बोहिंसु.

हो-होत्था. होंसु.

हव-हवित्था. हविंसु.

मिला+अ-मिलाइत्था, मिलाइंसु.

उवे+अ-(उप+इ) उवित्था. उवेइत्था. उवेंसु, उवेइंसु.

जेम-रायगिहे नयरे सेणिओ नाम राया होत्था. (ए० व०)

समणस्स भगवओ महावीरस्स एगारह गणहरा होत्था.

४. 'सु' प्रत्यय लगाडतां धातुनी पहेलां अ आगम पण कोई ठेकाणे मूकाय छे.

कह+सु=अकहिंसु. भव+सु=अभविंसु.

कर+सु=अकरिंसु. जय+सु=अजइंसु.

जेम—अकहिंसु जिणो जयंतीए (एकव०)

किं अरिहंता गणहरदेवा वा सक्कयसिद्धंतकरणे असमत्था अभविंसु? ।

पाइअभासाए सिद्धंतं अकरिंसु (बहुव०)

(सम्यक्त्वसप्ततिकावृत्तौ).

शब्दो.

अधम्म, अहम्म पु. (अधर्म) अधर्म.

अभयकुमार पु. (सम) श्रेणिकराजानो पुत्र.

अमर पु. (सम) अमर, देव.

उसह, उसभ पु. (ऋषभ-वृषभ) प्रथम जिनेश्वरनुं नाम छे.

करुणाजुअ वि. (करुणायुत) दयाथी व्याप्त

काल पु. (सम) समय, वखत.

केसरि पु. (केशरिन्) सिंह.

गणहर पु. (गणधर) गणधर.

घड पु. (घट) घडो.

जइणधम्म पु. (जैनधर्म) जिनेश्वरनो धर्म.

जय पु. (सम) जय, जीत.

जिणिंद, जिणंद पु. (जिनेन्द्र) जिनेन्द्र, तीर्थंकर.

जाल न. (सम) जाळ, पाश.

दंसणमेत्त, दंसणमत्त न. (दर्शनमात्र) जोवा मात्रथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दत्त } वि. (दत्त) आपेलुं.
दिण्ण }

दाहिणिल्ल } वि. (दाक्षिणात्य) दक्षिण दिशानुं
दक्खिणिल्ल }

दुज्जण पु. (दुर्जन) दुर्जन, दुष्ट.

दुहिअ } वि. (दुःखित) पीडित, दुःखित.
दुक्खिअ }

देववंदण न. (देववंदन) देववंदन, जिनेश्वरने नमनक्रिया.

देस पु. (देश)

धअ } पु. (ध्वज) ध्वज, धजा.
झअ }

६४धम्मिट्ठ वि. (धर्मिष्ठ) धर्मपरायण, धर्मवाळो.

नरवइ पु. (नरपति) राजा.

नय पु. (सम) नय, नीति.

नाम न. (नामन्) नाम, संज्ञा-

पढम वि. (प्रथम) प्रथम, आद्य.

पढण न. (पठन) भणवुं.

पवण पु. (पवन) पवन, वायु.

परक्कम } पु.न. (पराक्रम) शक्ति, सामर्थ्य, बळ.
पराकम }

पहिअ पु. (पथिक) मुसाफर.

पारेवअ } पु. (पारापत=पारेवो, कबूतर.
पारावअ }

पावासु } वि. (प्रवासिन्) मुसाफर वटेमार्गु.
पवासु }
पवासि }

रायगिह न. (राजगृह) राजगृह, नगर.

रावण पु. (सम) विशेपनाम.

विसम वि. (विषम) सखत, उग्र. प्रचंड.

वीसाम } पु. (विश्राम) विश्रान्ति, विराम.
विस्साम }

वेयावच्च } न. (वैयावृत्य) सेवा, शुश्रूषा.
वेयावडिय }

वरिस } पु.न. (वर्ष) वरसाद, मेघ, भारतादिक्षेत्र, संवत्सर, साल.
वास }

वसह पु. (वृषभ) बळद.

६५सरअ पु. (शरद्) शरदऋतु.

ससंक पु. (शशाङ्क) चन्द्र.

---

६४. शब्दनी अंदर 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे अने आदिमां 'ष्ट' नो 'ठ' थाय छे.

पुट्ठो (स्पृष्टः), कट्ठं (कष्टम्), अणिट्ठं (अनिष्टम्).

'उष्ट्र-इष्टा-संदष्ट' आ शब्दमां 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थतो नथी.

उदा०—उट्टो (उष्ट्रः), इट्टा (इष्टा), संदट्टो (संदष्टः).

६५. सरअ (शरद्), पाउस (प्रावृष्), तरणि (सम) ए शब्दो पुलिंगमां वपराय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजम पु. (संयम) संयम, चारित्र, पापथी विरति.

सडिअ वि. (शटित) सडेलुं.

संसारचक्क न. (संसारचक्र) संसाररूपीचक्र.

सद्ध पु. (श्राद्ध) श्रावक, श्रद्धालु.

साउ वि. (स्वादु) मधुर, स्वादवालुं.

सीयाल पु. (शीतकाल) शीयाळो, शीत ऋतु.

सुहि वि. (सुखिन्) सुखी.

सेणिअ पु. (श्रेणिक) मगध देशना राजानुं नाम.

सोत्त न. (श्रोत्र) कर्ण, कान.

हालिअ पु. (हालिक) खेडुत.

हेट्ठ / **हिट्ठ** स्त्री. न. (अधस्) नीचे.

अव्यय.

अणंतखुत्तो (अनंतकृत्वस्) अनंतवार.

अहवा / **अहव** (अथवा) वा, अथवा, के.

जइ (यदि) जो.

पुरा (पुरस्) पहेलां.

सहसा (सम) एकदम.

धातुओ.

कुण् (कृ) करवुं.

पढ् (पठ्) भणवुं.

रय् (रच्) रचवुं, गोठववुं.

वा-गर् (व्या+कृ) कहेवुं. बोलवुं, प्रतिपादन करवुं.

ववसें (व्यव+सो) प्रयत्न करवो, व्यवसाय करवो.

वी-सम् / **विस्सम्** (वि+श्रम्) विश्रान्ति लेवी.

सह् (राज्) शोभवुं.

प्राकृत वाक्यो.

गोयमो गणहरो पहुं महावीरं धम्मस्स अधम्मस्स य फलं पुच्छीअ ।

पच्चूसे साहुणो पुरिमं देववंदणं समायरीअ, पच्छा य सत्थाणि पढीअ ।

रायगिहे नयरे सेणिओ नाम नरवई होत्था, तस पुत्तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभयकुमारो नाम आसि, सो य विन्नाणे अईव पंडिओ हुवीअ ।
गिम्हे काले विसमेण आयवेण हालिओ दुक्खिओ होसी ।
अज्ज च्च कुंभारो बहू घडे कासी ।
सरए ससको जणस्स हिए आणंदं काहीअ ।
सीयाले मयंकस्स पयासो सीयलो अहेसि ।
बालो जणयस्स विओएण दुहिओ अभू ।
नेहेण सो अच्चंतं दुक्खं पावीअ ।
तित्थयराणं उसहो पढमो होत्था ।
नाणेण दंसणेण संजमेण तवेण य साहवो सोहिंसु ।
ते जिणिंदं अदक्खु, दंसण-मेत्तेण य सम्मत्तं चरित्तं च लहीअ ।
जो जारिसं ववसेज्ज, फलं पि सो तारिसं लहेज्ज ।

निट्ठुरो जणो सुत्ते वि जणे खग्गेण पहरीअ ।
धम्मो धम्मिट्ठं पुरिसं सग्गं नेसी ।
नरिंदो देसस्स जणण तूसीअ ।
पक्खी उज्जाणे तरूसुं महुरं सद्दं कुणीअ ।
स अवोच तु अधम्मं काही, तेण दुहं लहीअ ।
पुरा अम्हे दुवे बंधुणो आसिमो ।
अम्हो मग्गे साऊणि फलाइं जेमीअ ।
स अपढणेण मुक्खो होत्था ।
स तह नरिंदं सेवित्था, जहा बहु दव्वं तस्स होही ।
पारेवओ सडिअं धन्नं कया वि न खाएज्जा ।
केसरी अज्ज उज्जाणे वसीअ, इअ सो अब्बवी ।
गणहरा सुत्ताणि रइंसु ।
जिणीसरो अट्ठं वागरित्था ।
बंभचेरेण बंभणा जाइंसु ।

सोत्तं सुएणं नहि कुण्डलेणं, दाणेण पाणी न य भूसणेणं ।
सहेइ देहो करुणाजुआणं, परोवयारेण न चंदणेण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

अमृत पीधुं पण अमर न थयो.
पराक्रमवडे शत्रुओने जीत्या.
मुसाफरोए झाड नीचे विश्रान्ति लीधी.
राम गुरुना आदेशने अनुसर्यां, तेथी सुखी थयो छे.
मुसाफरे खेडूतने रस्तो पूछ्यो.
दक्षिण दिशानो पवन वरसाद लाव्यो.
सज्जन दुर्जननी जाळमां पड्यो.
तेणे प्राणना नाशे पण अदत्तनुं ग्रहण कर्युं नहि.
जन धर्ममां जेवुं तत्त्वोनुं ज्ञान जोयुं तेवुं बीजामां न जोयुं.
सुख ने दुःख आ संसारचक्रमां अनंतवार जीवे भोगव्यां छे, तेमां आश्चर्य शुं ?
तें पापमांथी बचाव्यो, तेथी तारा जेवो बीजो उत्तम कोण होय.
रावणे नीतिनुं उल्लंघन कर्युं तेथी ते मृत्यु पाम्यो.
पंडितो मृत्युथी भय पाम्या नहि.
शिष्योए गुरु पासेथी ज्ञान ग्रहण कर्युं.
घणा भव्य जीवोए तीर्थंकरनी पूजा वडे नित्य सुख मेळव्युं.
तमे बे प्रभातमां क्यां रह्या ?
अमे प्रभु महावीरनी पासे धर्म पाम्या.
अहिंया धर्म ते ज धन अने सुखनुं कारण छे.
तेओमां ज्ञान हतुं. तेथी तेओने पूज्या.
तुं गुरुनी वैयावच्चथी एकदम होंशियार थयो.
ते नगर बहार गया ने रींछोनुं युद्ध जोयुं.
मंदिरनी ध्वजा उपर में मोर जोयो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १५ मो.

आज्ञार्थ अने विध्यर्थ.

आज्ञार्थ अने विध्यर्थना एक ज प्रत्ययो छे.

	एकवचन.	बहुवचन.
प० पु०	मु.	मो.
बी० पु०	हि, सु, इज्जसु. इज्जहि, इज्जे, (०लुक्).	ह.
त्री० पु०	उ, (तु), [ए].	न्तु.

१. आ प्रत्ययो लगाडतां पहेलां 'अ' होय तो, 'अ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे. **जाण्+अ+मु=जाणेमु–जाणमु.**

२. ***इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, (०लुक्)** आ प्रत्ययो अकारान्त अंगवाळा धातुओने ज लागे छे. **गच्छ्+अ+इज्जसु=गच्छिज्जसु, गच्छिज्जहि, गच्छिज्जे, गच्छ.**

३. आर्ष प्राकृतमां **बी० पु० ए०**मां **इज्जसि, इज्जासि, इज्जाहि.** प्रत्ययो पण लगाडवामां आवे छे. जेमके–**गच्छ् + अ+इज्जसि= गच्छिज्जसि, गच्छेज्जसि,** ए प्रमाणे **गच्छिज्जासि, गच्छेज्जासि, गच्छिज्जाहि, गच्छेज्जाहि.** इत्यादि रूपो थाय छे.

४. **'हि'** प्रत्यय लगाडतां पूर्वनो स्वर दीर्घ पण थाय छे. जेमके—**गच्छ+हि=गच्छाहि, पढ+हि=पढाहि.**

५. **'ह'** प्रत्यय लागतां **ज्जा** आगम विकल्पे मूकाय छे. उदा० **गच्छेज्जाह,** अथवा **गच्छेह.**

---

* आर्षमां 'इज्जासु' प्रत्यय पण आवे छे. गच्छिज्जासु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वरान्त धातुओने पण विकल्पे 'अ' प्रत्यय लगाडीने तथा छट्ठा पाटमां आपेला ज्ज, ज्जाना नियमो ध्यानमां राखी विध्यर्थ–आज्ञार्थनां रूपो करवां.

हस्

	एकव०	बहुव०
प० पु०	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु.	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो.
बी० पु०	हसहि, हसेहि, हससु, हसेसु, हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जहि, हसेज्जिहि, हसिज्जे, हसेज्जे, हस, हसे.	हसह, हसेह.
	आर्षमां— [हसिज्जसि, हसेज्जसि, हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जाहि, हसेज्जाहि, हसाहि].	हसिज्जाह, हसेज्जाह.
त्री० पु०	हसउ, हसेउ, हसए, हसे.	हसन्तु, हसेन्तु, हसिन्तु.

सर्वपुरुष } हसेज्ज, हसेज्जा,
सर्ववचन } हसिज्ज, हसिज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने. (नी.)

प० पु०	नेमु.	नेमो.
बी० पु०	नेहि, नेसु. [नेइज्जसि, नेइज्जासि, नेइज्जाहि]	नेह [नेज्जाह]
त्री० पु०	नेउ	नेन्तु, निन्तु.

दा–दे

प० पु०	देमु.	देमो.
बी० पु०	देहि, देसु, [देइज्जसि, देइज्जासि, देइज्जाहि.]	देह, दिज्जाह.
त्री० पु०	देउ.	देन्तु, दिन्तु.

अ प्रत्यय आवे त्यारे ने+अ=नेअ अंगनां रूपो.

प० पु०	नेअमु, नेआमु, नेइमु, नेएमु.	नेअमो, नेआमो, नेइमो, नेएमो.
बी० पु०	नेअहि, नेएहि, नेअसु, नेएसु, नेइज्जसु, नेएज्जसु, नेइज्जहि, नेएज्जहि, नेइज्जे, नेएज्जे. नेअ, नेए. [नेइज्जसि, नेएज्जसि, नेइज्जासि, नेएज्जासि, नेइज्जाहि, नेएज्जाहि, नेआहि.]	नेअह, नेएह, नेइज्जाह, नेएज्जाह.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्री० पु०	नेअउ, नेएउ,	नेअन्तु, नेएन्तु,
	नेअए.	नेइन्तु.

पुरुषबोधक प्रत्यय पहेला ज्ज-ज्जा मूकाय त्यारे,

नेज्ज-नेज्जा अंगनां रूपो.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	*नेज्जमु, नेज्जामु,	नेज्जमो, नेज्जामो,
	नेज्जिमु, नेज्जेमु,	नेज्जिमो, नेज्जेमो,
	नेज्ज, नेज्जा.	नेज्ज, नेज्जा.
बी० पु०	नेज्जहि, नेज्जाहि,	नेज्जह, नेज्जाह,
	नेज्जेहि,	नेज्जेह,
	नेज्जसु, नेज्जासु,	
	नेज्जेसु,	
	नेज्जिज्जसु, नेज्जेज्जसु,	
	नेज्जिज्जहि, नेज्जेज्जहि,	
	नेज्जिज्जे, नेज्जेज्जे	
	नेज्ज, नेज्जा,	नेज्ज, नेज्जा,
	[नेज्जिज्जसि, नेज्जेज्जसि,	नेज्जिज्जाह,
	नेज्जिज्जासि, नेज्जेज्जासि;	नेज्जेज्जाह,
	नेज्जिज्जाहि, नेज्जेज्जाहि,	
	नेज्जाहि.]	
त्री० पु०	नेज्जउ, नेज्जाउ;	नेज्जन्तु, नेज्जान्तु;
	नेज्जेउ, नेज्जए,	नेज्जिन्तु, नेज्जेन्तु,
	नेज्जे,	
	नेज्ज, नेज्जा.	नेज्ज, नेज्जा.

* परिशिष्ट. २. नि. ६. ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वरान्त धातुने ज्ज–ज्जा नी पहेलां 'अ' कार आवे छे त्यारे
नेएज्ज—नेएज्जा अंगनां रूपो.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	नेएज्जमु, नेएज्जामु.	नेएज्जमो, नेएज्जामो,
	नेएज्जिमु, नेएज्जेमु.	नेएज्जिमो, नेएज्जेमो.
	नेएज्ज, नेएज्जा,	नेएज्ज, नेएज्जा.

अे प्रमाणे बीजा अने त्रीजा पुरुषनां रूपो करी लेवां.

विध्यर्थमां 'ज्ज' अंगवाळा धातुने सर्ववचन अने सर्व पुरुषोमां 'इ' प्रत्यय पण लगाडाय छे. जेम के —

सर्वव० सर्वपु०	होज्ज+इ=होज्जइ.	होएज्ज+इ=होएज्जइ.
	होज्जा+इ=होज्जाइ *	होएज्जा+इ=होएज्जाइ.
	हसेज्ज+इ=हसेज्जइ.	हसेज्जा+इ=हसेज्जाइ.

संस्कृतनां तैयार आज्ञार्थ अने विध्यर्थनां रूप उपरथी प्राकृत नियमानुसार फेरफार थई रूपो पण वपराय छे. जेमके—

समायरे (समाचरेत्)	त्री० अे०	**वज्जए** (वर्जयेत्)	त्री० अे०
चरे (चरेत्)	,,	**लभे** (लभेत)	,,
पठे (पठेत्)	,,	**निवारए** (निवारयेत्)	,,
सिया (स्यात्)	,,	**बूया** (ब्रूयात्)	,,
कुज्जा (कुर्यात्)	,,	**बूहि** (ब्रूहि)	बी० अे०
अत्थु (अस्तु)	,,	**संतु** (सन्तु)	त्री० ब०

* परिशिष्ट. २. नि० ३.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज्ञार्थ अने विध्यर्थ ते आज्ञा, आशा, प्रार्थना, आशीर्वाद योग्यता, उपदेश, शकयता, संभव, धर्म इत्यादिमां वपराय छे.

शब्दो.

अपुव्व }
अउव्व } वि. (अपूर्व) अद्वितीय, नवुं.

अमयरस पु. (अमृतरस) सुधारस, अमृतनो रस.

अवज्झाण न. (अपध्यान) दुर्ध्यान, दुष्ट चिंतववुं.

उज्जोग पु. (उद्योग) प्रयत्न, उद्यम.

खल वि. (सम) दुर्जन, अधम मनुष्य.

गव्व पु. (गर्व) मान, अभिमान.

गव्विअ वि. (गर्वित) अभिमानी.

गिह न. (गृह) घर.

गुण पु न. (सम) गुण.

गोविसाण न. (गोविषाण) गायनुं शिंगडुं

घण पु. (घन) मेघ, वादळ.

चिंतण न. (सम) विचारवुं.

जइण वि. (जैन) जिन संबन्धी, जिनेश्वरनो भक्त, जैन.

जलण पु (ज्वलन) अग्नि.

[६६]**जोव्वण** न. (यौवन) तारुण्य, जुवानी.

नायपुत्त }
नायउत्त } पु. (ज्ञातपुत्र) भगवान महावीरनुं नाम,

निव पु (नृप) राजा.

पक्ख पु (पक्ष) पखवाडीयुं, अर्धो मास.

पय पु. न. (पद) विभक्ति अंतवाळो शब्द, पद, शब्द समूह.

पाय पु. (पाद) पग, श्लोकनो चोथो पाद.

---

६६. शब्दनी अंदर 'औ' होय तो 'ओ' थाय छे, तेमज पौर आदि शब्दमां 'औ' नो 'अउ' थाय छे.

जोव्वणं (यौवनम्)	कोसंबी (कौशाम्बी)	पउरिसं पौरुषम्)
कोसिओ (कौशिकः)	पउरा (पौराः)	मउणं (मौनम्)

गौरव शब्दमां 'औ' नो 'आ' अने 'अउ' थाय छे.

गारवं, गउरवं (गौरवम्)

('पौर' वगेरे शब्दो प्राकृत व्याकरणथी जाणी लेवा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पायड } पु. (प्रकट) प्रकट,
पयड } खुल्लुं.

परलोयहिअ वि. (परलोकहित) परलोकमां हित करनारुं.

पिय वि. (प्रिय) प्रिय, वहालुं. पु. पति, धणी, स्वामी.

मुसावाय
मूसावाय } पु. (मृषावाद) असत्य भाषण, जुठुं बोलवुं.
मोसावाय

भप्प } पु. न. (भस्मन्) राख.
भस्स }

भव पु. (भव) संसार.

वावार पु. (व्यापार) व्यापार, व्यवसाय.

वागरण
वायरण } न. (व्याकरण) व्याकरण शास्त्र, उपदेश, विशेष कथन, उत्तर.
वारण

विमान पु. न. (विमान) विमान, विद्याधर अने देवनुं वाहन.

विरोह पु. (विरोध) विरुद्धता.

विहव पु. (विभव) समृद्धि ऐश्वर्य.

विहवि वि. (विभविन्) समृद्धिवाळो.

विस पु. न. विष) विष, झेर.

विज्जाहर पु. (विद्याधर) विद्याधर, विद्यावाळो

६७**वेसवण** } पु. (वैश्रवण)
वेसमण } कुबेर.

समायरण न. (समाचरण) आचरण करवुं.

सिलोगद्ध पु.न. (श्लोकार्ध) श्लोकनो अर्धो भाग.

हिय वि. (हित) हितकर.

अव्यय.

चिरं (सम) दीर्घकाळ सुधी.

नाम (सम.) वाक्यालंकार, पादपूर्ति, संभावनार्थमां, आमंत्रणार्थे.

नवरि
नवर } (केवल) केवळ, फक्त.
नवरं

माइं } (मा) निषेधार्थमां, नकार.
मा }

मुहा (मुधा) फोगट.

सिक्खिउ हे. कृ (शिक्षितुम्) भणवाने.

---

६७. शब्दनी अंदर 'ऐ' नो 'ए' थाय छे, तेमज दैत्यादि शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छे.

सेला (शैला)	एरावणो (ऐरावणः)	वइएसो (वैदेशः)
सेन्नं (सैन्यम्)	दइच्चो (दैत्यः)	सइरं (स्वैरम्)
तेलुक्कं (त्रैलोक्यम्)	अइसरिअं (ऐश्वर्यम्)	चइत्तं (चैत्यम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातुओ,

६८ अरिह् (अर्ह्) लायक थवुं, पूजा करवी, योग्य थवु.

उज्जम् (उद्+यम्) उद्यम करवो, प्रयत्न करवो.

उप्पज्ज (उत्+पद्य) उत्पन्न थवुं

आ=दिस् (आ+दिश) आदेश करवो, फरमाववुं.

निज्जर् (निर्+जॄ=जर्) क्षय करवो, कर्मनो क्षय करवो, नाश करवुं.

६९ पवट्ट् } (प्र×वृत्=वर्त्)
पयट्ट् } प्रवर्तवुं, प्रवृत्ति करवी.

पमज्ज् (प्र+मद्) प्रमाद करवो भूलवुं.

भज्ज् (भ्रस्ज्) भुंजवुं, बाळवुं.

मर् (मृ) मरवुं.

वि-रम् (वि+रम्) विरमवुं, अटकवुं.

सिक्ख् (शिक्ष्) शीखवुं, भणवुं.

प्राकृत वाक्यो

तुम्हे एत्थ चिठ्ठेह, वीरं जिणं अम्हे अच्चेमो ।

सच्चं बोलिज्जा ।

धम्मं समायरे ।

उज्जमेण विणा धणं न लहेमु ।

सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू ।

जो गुरुकुले निच्चं वसेज्ज, सो सिक्खणं अरिहेइ ।

मुसावायं न वएज्जसि ।

तुं नयं न चयिज्जे ।

जइ तुम्हे विज्जत्थिणो, अत्थि, तया सुहं चएह पढणे य उज्जमह ।

अहं दुद्धं पासी, तुम्हे वि पिवेह ।

तुब्भे साहूणं समीवं हियाइं वयणाइं सुणिज्जाह, अहंपि सुणासु ।

---

६८. शब्दनी अन्दर 'र्ह' संयुक्त व्यंजन होय तो अन्त्य 'ह' नी पूर्वे 'इ' मूकाय छे. उदा०—अरिहंतो (अर्हन्) गरिहा (गर्हा).

६९. शब्दनी अन्दर 'र्त' नो 'ट्ट' थाय छे. उदा०—पयट्टइ (प्रवर्तते) संवट्टिअं (संवर्तितम्), नट्टओ (नर्त्तकः), केवट्टो (कैवर्त्तः).

अपवाद—'धूर्त' आदि शब्दोमां 'र्त' नो 'ट्ट' थतो नथी. धुत्तो (धूर्त्तः), कित्ती (कीर्त्तिः).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवाओ विरत्ताणं पुरिसाण गिहे वासो किं रोएज्ज ?

जइणं सासणं चिरं जयउ।

आइरिआ दीहं कालं जिणिंतु।

नायपुत्तो तित्थं पवट्टेउ।

तुं अकज्जं न कुणेज्जसु, सच्चं च वइज्जहि।

गुरूणं विणएण वेयावडिएण य नाण पढे।

अत्थो च्चिअ परिवड्ढउ, जेण गुणा पायडा हुंति।

जइ सिवं इच्छेह, तया कामेहिन्तो विरमेज्ज।

सज्जणे तुम्हे मा निन्देह।

पाणीणं अप्पकेरं नाणं दंसणं चरित्तं च अत्थि, न अन्नं किं पि, तओ तेहिं चिय संसारा पारं वच्चेह।

सढेसु माइं वीससेज्जइ।

सज्जणेहिं सद्धिं विरोहं कया वि न कुज्जा।

हे ईसर! अम्हारिसे पावे जणे रक्ख रक्खेहि।

पाणिवहो धम्माय न सिया।

कासइ न वीससे।

सच्चं पियं च परोलोयहियं च वएज्जा नरा।

जइ न हुज्जइ आयरिया, को तया जाणिज्ज सत्थस्स सारं।

होज्जा जले वि जलणो, होज्जा खीरं पि गोविसाणाओ।
अमयरसो वि विसाओ, न य पाणिवहा हवइ धम्मो ॥१॥

वरिसंतु घणा मा वा, मरंतु रिउणो अहं निवो होज्जा।
सो जिणउ परो भज्जउ, एव चिंतणमवज्झाणं ॥२॥

गुणिणो गुणेहिं विहवेहि, विहविणो होंतु गव्विआ नाम।
दोसेहि नवरि गव्वो, खलाण मग्गो च्चिअ अउव्वो ॥३॥

जइ वि दिवसेण पयं, धरेह पक्खेण वा सिलोगद्धं।
उज्जोगं मा मुंचह जइ इच्छह सिक्खिउं नाणं ॥४॥

कुणउ तवं पालउ, संजमं पढउ सयलसत्थाइं।
जाव न झायइ जीवो, ताव न मुक्खो जिणो भणइ ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

प्रभातमां स्तोत्रो वडे प्रभुनी स्तुति करवी जोइए, अने पछी अध्ययन भणवुं जोइए.

व्यापारनी जेम माणसे हंमेशां धर्ममां पण उद्यम करवो जोइए.

विद्याधरो विमानो वडे गमन करो.

इन्द्रे कुबेरने हुकम कर्यो (के) ज्ञात पुत्रने घेर द्रव्यनी वृष्टि करो.

तमे धर्म वडे जीवो अने सत्यथी सुखी थाओ.

गुरुनो आदेश उल्लंघन न करवो जोइए.

हे वाणक तुं फोगट राखमां घी नाख नहि.

तमारे उपाध्यायनी पासे व्याकरण शीखवुं जोइए.

जुवानीमां धर्म करवो जोइए.

करवा लायक काममां प्रमाद न करवो जोइए.

साधुओए दिवसेज विहार करवो जोइए.

तुं मिथ्या कोपने न कर, हितने सांभळ.

तमे पंडित छो माटे तत्त्वोनो विचार करो.

लोभने सन्तोष वडे छोड.

सर्वतीर्थोमां शत्रुंजय तीर्थ उत्तम छे. माटे त्यां तु जा, कल्याण कर अने पापोनो क्षय कर.

सन्तोषमां जेवुं सुख छे तेवुं सुख बीजामां नथी माटे सन्तोष धारण करवो जोइए.

जीव घडपणमां धर्म करवाने समथ होतो नथी.

सारुं पाकेलुं अनाज खावुं जोइए.

दररोज जिनेश्वरनु दर्शन अने गुरुनो उपदेश सांभळवो जोइए.

जे संसारमांथी तारनार छे ते ईश्वरनी निन्दा न कर.

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान
क्र. सं० ....
दिनांक ....
नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी-५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १६ मो.

आकारान्त, ह्रस्व तथा दीर्घ इ–ईकारान्त अने उ–ऊकारान्त स्त्रीलिंग नामो.

प्रयत्य.

	एकवचन.	बहुवचन.
प०	०.	उ, ओ, ०.
बी०	म्.	उ, ओ, ०.
त०	अ, आ, इ, ए.	हि, हिँ, हिं
च० छ०	अ, आ, इ, ए.	ण, णं.
प०	अ, आ, इ, ए. त्तो, ओ, उ, हिन्तो.	त्तो, ओ, उ हिन्तो सुन्तो.
स०	अ, आ, इ, ए.	सु, सुं.
सं०	०.	उ, ओ, ०.

१. म् अने त्तो प्रत्ययोनी पहेलां दीर्घस्वर होय तो ह्रस्व थाय छे. जेमके—

माला+म्=मालं, नई+म्=नइं, वहू+म्=वहुं.

२. तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमी विभक्तिनो जे 'आ' प्रत्यय छे ते आकारान्त स्त्रीलिंग नामोने लागतो नथी, जेमके—

मालाअ, मालाइ, मालाए.

३. 'म्' अने 'त्तो' सिवाय सर्वे विभक्तिना प्रत्ययोनी पूर्वे ह्रस्व स्वर होय तो दीर्घ थाय छे. जेमके—

प० ब० मइ+ओ=मईओ, मईउ, मई.

पं० ए० मईअ, मईआ, मईइ, मईए.

मइत्तो, मईओ मईउ, मईहिन्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग नामोमां प्रथमा विभक्तिना एकवचनमां तथा प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'आ' प्रत्यय पण लगाडवामां आवे छे. जेमके—

प० ए० नई, नईआ.
प० व० } नईओ, नईउ, नई, नईआ.
बी० व० }

५ जे नामो मूळथी आकारान्त छे तेना संबोधन एकवचनमां अन्त्य 'आ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे. जेमके—हे माले, हे माला. तेमज ह्रस्व इकारान्त अने उकारान्त नामोना संबोधनना एक वचनमां विकल्पे स्वर दीर्घ थाय छे. जेम—हे मई; मइ, हे धेणू, धेणु. अने ईकारान्त-ऊकारान्त नामोनां संबोधन एकवचनमां अन्त्य 'ई-ऊ' ह्रस्व थाय छे. जेम—हे नइ, हे वहु.

रमा (रमा).

	एकवचन	बहुवचन
प०	रमा.	रमाओ, रमाउ, रमा.
बी.	रमं.	रमाओ, रमाउ रमा.
त०	रमाअ, रमाइ, रमाए.	रमाहि, रमाहिँ, रमाहिं.
च०छ०	रमाअ, रमाइ, रमाए.	रमाण, रमाणं.
पं०	रमाअ, रमाइ, रमाए. रमत्तो, रमाओ, रमाउ, रमाहिन्तो.	रमत्तो, रमाओ, रमाउ, रमाहिन्तो, रमासुन्तो.
स०	रमाअ, रमाइ, रमाए.	रमासु, रमासुं.
सं०	हे रमे, रमा.	रमाओ, रमाउ, रमा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुद्धि (बुद्धि).

प०	बुद्धी,	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी,
बी०	बुद्धिं.	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी.
त०	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए.	बुद्धीहि, बुद्धीहिँ, बुद्धीहिं.
च०छ०	बुद्धीअ, बुद्धीआ. बुद्धीइ, बुद्धीए.	बुद्धीण, बुद्धीणं
प०	बुद्धीअ, बुद्धीआ; बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो.	बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो, बुद्धीसुन्तो.
स०	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए.	बुद्धीसु, बुद्धीसुं.
सं०	हे बुद्धि, बुद्धी.	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी.

धेणु (धेनु).

	एकवचन	बहुवचन
प०	धेणू.	धेणूओ, धेणूउ, धेणू.
बी०	धेणुं.	धेणूओ, धेणूउ, धेणू.
त०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए.	धेणूहि, धेणूहिँ, धेणूहिं.
च०छ०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए.	धेणूण, धेणूणं.
पं०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए. धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो.	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो.
स०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं.
सं०	हे, धेणू धेणु.	धेणूओ, धेणूउ, धेणू.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थी (स्त्री).

	एकवचन	बहुवचन
प०	इत्थी, इत्थीआ.	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ.
बी०	इत्थिं.	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ.
त०	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए.	इत्थीहि, इत्थीहिँ, इत्थीहिं.
च०छ०	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए.	इत्थीण, इत्थीणं.
पं०	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए, इत्थित्तो, इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थीहिन्तो.	इत्थित्तो, इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थीहिन्तो, इत्थीसुन्तो.
स०	इत्थीअ, इत्थीआ, इत्थीइ, इत्थीए.	इत्थीसु, इत्थीसुं.
सं०	इत्थि.	इत्थीओ, इत्थीउ, इत्थी, इत्थीआ.

सासू (श्वश्रू).

	एकवचन	बहुवचन
प०	सासू.	सासूओ, सासूउ, सासू.
बी०	सासुं.	सासूओ, सासूउ, सासू.
त०	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए.	सासूहि, सासूहिँ, सासूहिं.
च०छ०	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासुए.	सासूण, सासूणं.
पं०	सासूअ, सासूआ, सासूइ,	सासुत्तो, सासूओ, सासूउ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासूए, सासुत्तो, सासूओ, सासूहिन्तो, सासूसुन्तो.
सासूउ, सासूहिन्तो.

स० सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए. — सासूसु, सासूसुं.

सं० हे सासु. — सासूओ, सासूउ, सासू.

सर्वनामना स्त्रीलिंग शब्दो.

ता (तत्)	इमा (इदम्)
जा (यत्)	सव्वा (सर्वा)
का (किम्)	अन्ना (अन्या)
एआ–एता (एतद्)	

आ सर्वनामनां स्त्रीलिंग रूपो आकारान्त स्त्रीलिंग नामना जेवां थाय छे.

विशेषः—**ता** अने **एता** नुं **प० ए०** रूप क्रमथी **सा** अने **एसा** थाय छे. तेमज **ता** नो **ती**, **जा** नो **जी**, **का** नो **की**, **एआ** नो **एई** **इमा** नो **इमी**,–आ प्रमाणे शब्दो गणी ईकारान्त स्त्रीलिंगना जेवां रूपो पण विकल्पे थाय छे. पण **ती, जी** अने **की**, ना प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमां अने छठ्ठीना बहुवचनमां रूपो थतां नथी. (आ रुपो आगळ सर्वनामना पाठमां विस्तारथी आपवामां आवशे.) संक्षेपथी आ प्रमाणे—

सव्वा (सर्वा)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सव्वा.	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा,
बी०	सव्वं.	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा.
त०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए.	सव्वाहि, सव्वाहिँ, सव्वाहिं.

बाकीनां रूपो 'रमा' प्रमाणे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता-ती (तद्)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सा.	ताओ, ताउ, ता. तीओ, तीउ, ती, तीआ.
बी०	तं.	ताओ, ताउ, ता. तीओ, तीउ, ती, तीआ.
त०	ताअ, ताइ, ताए. तीअ, तीआ, तीइ, तीए.	ताहि, ताहिँ, ताहिं. तीहि, तीहिँ, तीहिं.
च० छ०	ताअ, ताइ, ताए. तीअ, तीआ, तीइ, तीए.	ताण, ताणं.

बाकीनां रूपो 'रमा' अने 'इत्थी' प्रमाणे.

जा-जी (यत्)

प०	जा.	जाओ, जाउ, जा. जीओ, जीउ, जी, जीआ.
बी०	जं.	जाओ, जाउ, जा. जीओ, जीउ, जी, जीआ.
त०	जाअ, जाइ, जाए. जीअ, जीआ, जीइ, जीए.	जाहि, जाहिँ, जाहिं. जीहि, जीहिँ, जीहिं,
च० छ०	जाअ, जाइ, जाए. जीअ, जीआ, जीइ, जीए.	जाण, जाणं.

बाकीनां रूपो 'ता-ती' प्रमाणे.

का-की (किम्)

प०	का.	काओ, काउ, का. कीओ, कीउ, की, कीआ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बी० कं.	काओ, काउ, का. कीओ, कीउ, की, कीआ.
त० काअ, काइ, काए कीअ कीआ, कीइ, कीए.	काहि, काहिँ, काहिं, कीहि, कीहिँ, कीहिं.
च० छ० काअ, काइ, काए. कीअ, कीआ, कीइ, कीए.	काण. काणं.

बाकीनां रूपो 'ता–ती' प्रमाणे.

एआ–एई (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प० एसा.	एआओ, एआउ, एआ. एईओ, एईउ, एई, एईआ.
बी० एअं, एइं.	एआओ, एआउ, एआ. एईओ, एईउ, एई, एईआ.
त० एआअ, एआइ, एआए. एईअ, एईआ, एईइ, एईए.	एआहि, एआहिँ, एआहिं, एईहि, एईहिँ, एईहिं.
च० छ० एआअ, एआइ, एआए, एईअ, एईआ, एईइ, एईए.	एआण' एआणं, एईण, एईणं.

बाकीनां रूपो 'ता–ती' प्रमाणे.

इमा–इमी (इदम्)

प० इमा, इमी, इमीआ.	इमाओ, इमाउ, इमा. इमीओ, इमीउ, इमी, इमीआ.
बी० इमं, इमिं.	इमाओ, इमाउ, इमा. इमीओ, इमीउ, इमी, इमीआ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त०	इमाअ, इमाइ, इमाए.	इमाहि, इमाहिँ, इमाहिं.
	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए.	इमीहि, इमीहिँ, इमीहिं.
च० छ०	इमाअ, इमाइ, इमाए.	इमाण, इमाणं.
	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए.	इमीण, इमीणं.

बाकीनां रूपो **'ता-ती' प्रमाणे.**

शब्दो (स्त्रीलिंग).

अवरा (अपरा) पश्चिम दिशा.
असाया (अशाता) दुःख, पीडा.
आणा (आज्ञा) आदेश, हुकम.
आवया (आपद्-दा) आपदा, पीडा.
इड्ढि / **रिद्धि** (ऋद्धि) वैभव, ऐश्वर्य, समृद्धि.
इत्थी / **थी** (स्त्री) स्त्री, नारी.
उत्तरा (सम) उत्तरदिशा.
कला (सम) कला.
कहा (कथा) कथा, वार्ता.
कामधेणु (कामधेनु) कामधेनु गाय.
किवा (कृपा) दया.
कोसा (कोशा) वेश्यानुं नाम.
गंगा (सम) गंगा नदी.
छुहा (क्षुध्) क्षुधा-भुख.
छुहा (सुधा) अमृत.
छाही / **छाया** (छाया) आतपनो अभाव, प्रतिबिंब, छाया.
जउँणा (यमुना) नदीनुं नाम.
जिब्भा / **जीहा** (जिह्वा) जीभ.
जोण्हा (ज्योत्स्ना) चन्द्रप्रकाश.
तिण्हा (तृष्णा) स्पृहा, वांछा, पिपासा.
थुइ (स्तुति) स्तव, गुणकीर्तन.
दया (सम) दया, अनुकंपा, करुणा.
दाढा (दंष्ट्रा) दाढ.
दाहिणा (दक्षिणा) दक्षिणदिशा.
दिसा (दिश्-दिशा) पूर्वादि दिशा.
दोवई (द्रौपदी) पांडवोनी भार्या.
धिइ (धृति) धीरज, धैर्य.
नारी (सम.) स्त्री.
नीइ (नीति) न्याय, उचित व्यवहार.
निसा (निशा) रात्रि.
पइण्णा (प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा.
पण्णा (प्रज्ञा) बुद्धि.
पवित्तया (पवित्रता) पवित्रपणुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिमा (प्रतिमा) प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिबिंब.

पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी, भूमि.

पुढवी }
पुहवी } (पृथ्वी) पृथ्वी.

पुव्वा (पूर्वा) पूर्व दिशा.

बहिणी }
भइणी } (भगिनी) बहेन.

बालिआ (बालिका) छोकरी, युवती.

बाहा (बाहु) हाथ, भुजा.

बुद्धि (सम) बुद्धि.

भज्जा (भार्या) भार्या, स्त्री.

मज्जाया (मर्यादा) सीमा, हद.

मट्टिआ (मृत्तिका) माटी.

महासई (महासती) परमशील-वती स्त्री.

रुप्पिणी[७०] (रुक्मिणी) कृष्णनी स्त्री.

लच्छी (लक्ष्मी) लक्ष्मी.

लया (लता) लता, वेल.

वणस्सइ }
वणप्फइ } (वनस्पति) वनस्पति.

वत्ता (वार्ता) वार्ता, कथा.

वरिसा[७१] }
वासा } (वर्षा) चोमासुं.

वसहि }
वसइ } (वसति) स्थान, आश्रय.

वहू (वधू) नारी, पुत्रनी स्त्री.

वियणा }
वेयणा } (वेदना) दुःख, पीडा.

विज्जा (विद्या) विद्या, शास्त्रज्ञान.

वुड्ढि (वृद्धि) वृद्धि, चडती.

वेसा (वेश्या) वेश्या.

सज्जा }
सेज्जा } (शय्या) शयन, पथारी.

सन्ना (संज्ञा) चेष्टा, ज्ञान.

---

७० 'क्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे. जेम—कुप्पलं (कुंडमलम्), रुप्पिणी (रुक्मिणी).

७१ शब्दनी अंदर 'शं' के 'र्ष' संयुक्त व्यंजन होय तो संयुक्तना अन्त्य व्यंजन जे 'श—ष' तेनी पूर्वे 'इ' आगम विकल्पे मूकाय छे. तेमज 'तप्त—वज्र', शब्दमां पण संयुक्त अन्त्य अक्षरनी पूर्वे 'इ' आगम विकल्प आवे छे. उदा०—

आयरिसो }
आयंसो } (आदर्शः)

दरिसणं }
दंसणं } (दर्शनम्)

वरिसं }
वासं } (वर्षम्)

वरिसा, वासा (वर्षा)

तविअं, तत्तं (तप्तम्)

वइरं, वज्जं (वज्रम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस्सई (सरस्वती) वाणी देवी.
समाहि (समाधि) चित्तनी स्वस्थता, मननी शांति.
सासू (श्वश्रू) सासु.
सिक्खा (शिक्षा) शिक्षण, दंड.
सुण्हा / **सुसा** / **ण्हुसा** (स्नुषा) पुत्रवधु.
सिरी[७२] (श्री) लक्ष्मी.
सुहा (सुधा) अमृत.
सेणा (सेना) सेना, सैन्य, लश्कर.
सेवा (सम) सेवा, चाकरी, भक्ति.
हिरी (ह्री) लज्जा, शरम.

अत्थ पु. (अस्त) अस्ताचल पर्वत.
अत्थ न. (अस्त) अन्तर्धान, मृत्यु.
अतुल्ल / **अउल्ल** वि. (अतुल्य) असाधारण.
असाय न. (असात) दुःख, पीडा.
अहि (सम) सर्प.
आगास पु. न. (आकाश) आकाश.
आहार पु. (आधार) आधार, आलंबन, आश्रय.
उदग / **दग** न. (उदक) जल.
कुमार / **कुमर** पु. (कुमार) कुमार.
किण्ह वि. (कृष्ण) श्याम वर्णवाळुं, काळुं.
गिहासत्त वि. (गृहासक्त) घरमां आसक्त.
जाय वि. (जात) उत्पन्न थयेलुं.
जीवियंत पु. (जीवितान्त) प्राणनो नाश.
णायव्व वि. (ज्ञातव्य) जाणवा योग्य.
दढ वि. (दृढ) मजबूत, निश्चल, समर्थ.
दव्वलुद्ध वि. (द्रव्यलुब्ध) द्रव्यमां लोभी.
दाहिणपास न. (दक्षिणपार्श्व) जमणी तरफ.
दुज्जोहण पु. (दुर्योधन) नाम छे.
देवालय न. (सम) देवनुं मंदिर.
निय वि. (निज) पोतानुं.
पउण वि. (प्रगुण) होंशियार.

---

७२ 'श्री, ह्री, कृत्स्न, क्रिया' आ शब्दोमां संयुक्त अन्त्याक्षरनी पूर्वे इ मूकाय छे. जेमके—

सिरी (श्रीः) | कासिणो (कृत्स्नः)
हिरी (ह्रीः) | किरिया (क्रिया)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंडव पु. (पांडव) पांडवो, पांडुना पुत्रो.

पहाव पु. (प्रभाव) प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य.

पत्थिअ वि. (प्रार्थित) मांगेल, प्रार्थेल.

बाहु पु. (सम) हाथ, भुजा.

मांसभोइ वि. (मांसभोजिन्) मांस खानार.

माणि वि. (मानिन्) अभिमानी.

रक्खस पु. (राक्षस) राक्षस.

वसीहूअ वि. (वशीभूत) वश थयेल.

विक्कम पु. (विक्रम) विक्रमराजा.

विवाअ पु. (विवाद) चर्चा, वाग्युद्ध.

विसाल वि. (विशाल) मोटुं.

विसेस पु. न. (विशेष) विशेष, प्रकार, भेद.

सत्त वि. (सक्त) आसक्त.

समाण वि. (समान) सदृश, तुल्य, सरखुं.

समीहिअ वि. (समीहित) इष्ट, वांछित.

सवण न. (श्रवण) सांभळवुं.

साय न. (सात-शात) सुख.

सार वि. (सम) श्रेष्ठ, उत्तम.

सुक्क वि. (शुक्ल) शुक्ल, शुक्ल-वर्णवाळुं, धोळुं.

सिमि(वि)ण } पु. (स्वप्न) स्वप्न.
सुमि(वि)ण }

हेमचंद (हेमचन्द्र) श्रीहेमचन्द्र-सूरिजी.

अव्यय.

उ }
तु } (तु) समुच्चय, अवधारण, निश्चय, किन्तु, प्रशंसा, पादपूर्ति.

उवरि-रिं }
अवरि-रिं } (उपरि) ऊर्ध्व, उपर.

उअ (पश्य) तुं जो. ए अर्थमां अव्यय छे.

जओ[७३] }
जदो }
जत्तो } (यतः) जेनाथी, जे कारणथी, जे तरफथी.

जइया }
जया } (यदा) ज्यारे.

पाओ }
पाएण-णं }
पायसो } (प्रायस्) घणुं करीने, कदाच.

मुसा }
मूसा }
मोसा } (मृषा) असत्य, खोटुं.

पुरा (सम) पूर्वे पहेलां.

---

७३ संस्कृतमां 'तस्' प्रत्यय आवे छे तेने स्थाने 'त्तो-दो' विकल्पे आवे छे, 'त्तो-दो' न थाय त्यारे अकारथी पर विसर्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातुओ.

आढव् (आ+रभ्) शरू करवुं.
आइग्घ् (आ+घ्रा) सुंघवुं.
आ-राह् (आ+राध्) आराधना करवी, उपासना करवी.
उट्ठ } (उत्+स्था) उठवुं.
उट्ठा }
उदे (उद्+इ) उदय पामवुं.
उद्दाल् (आ+छिद्) छीनवी लेवुं.
उल्लंघ् (सम) उल्लंघन करवुं.
उव्विव् (उद्+विज्) उद्वेग पामवो. कंपवुं, कंटाळवुं, खिन्न थवुं.
ए (इ) जवुं,
कुप्प् (कुप्+कुप्य) कोप करवो.
गिज्झ् (गृध्+गृध्य) आसक्त थवुं.
गठ् } (ग्रन्थ्) गुंथवुं, रचवुं, बनाववुं.
गंथ् }
जण् (जनय्) उत्पन्न करवुं, पेदा करवुं.
झर् (क्षर्) झरवुं, टपकवुं.
पलोट्ट् (प्र+लुठ्) लोटवुं, आळोटवुं.
पहुप्प् (प्र+भू) समर्थ थवुं.
पारं-गच्छ् (पारङ्गच्छ्) पार पामवुं.
वह् (सम) वहेवुं, लइ जवुं.
वसीकर् } (वशी+कृ) वश-करवुं.
वसीकुण् }
हिंस् (हिंस्) हिंसा करवी.
लुह् (मृज्) वाळवुं, साफ करवुं, मांजवुं.

प्राकृत वाक्यो

जस्स जओ आइच्चो उदेइ, सा तस्स होइ पुव्वा दिसा, जत्तो अ अत्थमेइ सा उ अवरा दिसा नायव्वा, दाहिणपासम्मि य दाहिणा दिसा, उत्तरा उ वामेण ।
किवाए विणा को धम्मो ? ।
पंडवाणं सेणाइ दुज्जोहणस्स

आवे तो विसर्गनो पूर्वना स्वर अने व्यंजन सहित 'ओ' थाय छे. जेमके—

जत्तो, जदो, जओ. (यतः).
कत्तो, कदो, कओ. (कुतः).
तत्तो, तदो, तओ. (ततः).
सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ. (सर्वतः).
अन्नतो, अन्नदो, अन्नओ. (अन्यतः).
पुरओ (पुरतः).
मग्गओ (मार्गतः).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेणाए सह जुज्झं होत्था, तम्मि जुद्धे पंडवाणं जयो आसि ।
कोसा वेसा सव्वासु कलासु *निउणा, नच्चम्मि उ विसेसेण कुसला ।
सव्वा कला धम्मकला जएइ ।
सव्वा कहा धम्मकहा जिणेइ ।
जस्स जीहा वसीहूआ, सो परमो पुरिसो ।
नारीओ जोण्हाए रमेन्ति ।
छुहाए समाणा वेयणा नत्थि ।
पंडवाणं भज्जा दोवई सव्वासु इत्थीसुं उत्तिमा महासई अहेसि ।
वणस्सईणं पि सन्ना अत्थि तओ दगं मट्टिआए रसं च आहरेज्जा ।
सज्जणा पइण्णाहिंतो कहंपि न चलन्ति ।
इत्थीओ सज्जाहिन्तो उट्ठन्ति आवासयाइं च किच्चाइं कुणन्ति ।
सासूए ण्हूसाए उवरि, वहूइ य सासूअ अवरिं, अईव पीई अत्थि ।
दिवहो निसं, निसा य दिणं अणुसरेइ ।
जणा रिद्धीए गव्विट्ठा पाएण हवंति ।
जोव्वणं असारं, लच्छी वि असारा, संसारो असारो ;तओ धम्मम्मि मइं दढं कुज्जा ।
थी एगाए वाहाए भारं नेहीअ ।
कामे सत्ताओ इत्थीओ कुलं सीलं च न रक्खन्ति ।
उअ थीणं सरूवं, संसारा य उव्विवेसु ।
जो संघस्स आणं अइक्कमेइ, सो सिक्खं अरिहेइ ।

---

* विशेषणनुं स्त्रीलिंग शब्दने अन्ते 'आ' के 'ई' लगाडवाथी थाय छे. पण अकारान्त विशेषण नामोनुं स्त्रीलिंग प्रायः 'आ' लगाडवाथी थाय छे. कोई स्थणे ई पण लागे छे. जेमके—

पिय–पिया, पिआ. (प्रिया).
निच्च–निच्चा, (नित्या).
वल्लह–वल्लहा, (वल्लभा).
सरिस–सरिसा, सरिसी (सदृशी).
तारिस–तारिसा, तारिसी, (तादृशी).
हसमाण–हसमाणा, हसमाणी (हसमाना).
हसंत–हसंता, हसंती (हसन्ती).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जउँणाए उदगं किण्ह, गंगाअ य दगं सुक्कमत्थि ।
हेमचंदो सरस्सइं देविं आराहीअ ।
सासू वहूणं देवालए गमणाय कहेइ ।
जो हिरिं नीइं धिइं च धरेइ, सो सिरिं लहेइ ।
अहिणो दाढाए विसं झरेइ ।
तिण्हा आगासेण समा विसाला ।
तरुस्स छाहीए थीओ गाणं काहीअ ।
विक्कमो निवो पिच्छीए सुट्ठु पालगो आसि ।
कुमारो सव्वासु कलासु पहुप्पइ ।
पहुणो महावीरस्स अतुल्लाए सेवाए गोयमो गणहरो संसारं तरीअ ।
धन्नाओ ताओ बालिआउ, जाहिं सुमिणे वि न पत्थिओ अन्नो पुरिसो ।

गुजराती वाक्यो.

वडीलोनी मर्यादा उलंघवी नहि.
चोरे ब्राह्मणनी लक्ष्मी छीनवी लीधी.
पुत्रनी वहु सासुनां सर्व कामो विनयथी करे छे.
ज्यारे माणसनी ऋद्धि नाश पामे छे, त्यारे तेनी साथे बुद्धि अने धीरज पण नाश पामे छे.
धर्मीजन धननी वृद्धिमां धर्मनो त्याग करतां नथी.
सरस्वती अने लक्ष्मी (सिरी)नां विवादमां कोण जीते ?
माणस वेदनामां बहुज मुंझाय छे.
सर्व जीवो सुखने (साय) इच्छे छे, अने दुःखने (असाय) इच्छता नथी.
उत्तम पुरुष जे कार्यनो आरंभ करे छे, तेने जरुर पार पामे छे.
उनाळामां सर्व पशुओ झाडोनी छायामां विश्रान्ति ले छे.
दक्षिण दिशामां चोरो गया
सर्व ठेकाणे सुखीओने सुख अने दुःखीओने दुःख होय छे.
हुं जिनेश्वरोनी प्रतिमाओनी स्तुतिओ वडे स्तुति करुं छुं.
सर्पो जीभ वडे दूध पीए छे.
स्त्रीओ बागमां विहरे छे, अने पुष्पो सूंघे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते तीर्थंकरोनी वार्ताओ वडे बोध पाम्यो.

पूर्वे पृथ्वी उपर घणा राक्षसो हता.

दुर्जननी जीभमां अमृत छे पण हृदयमां विष छे.

में वहेनोने घणुं धन आप्युं.

कृष्णनी स्त्री रुक्मिणीनो पुत्र प्रद्युम्न छे.

सासु वहुओ उपर कोप करे छे.

चोमासामां मुनिओ एकज स्थळे (वसहि) रहे छे.

रात्रे स्त्रीओ चन्द्रना प्रकाशमां नाचे छे.

प्रभुनी सेवा अने कृपाथी कल्याण थाय छे.

साधुओ प्राणान्ते पण असत्य बोलता नथी.

बाळक शयनमां लोटे छे.

स्त्री, लता अने पंडितो आश्रय विना शोभतां नथी.

पाठ १७ मो

भविष्यकाळ.

प्रत्यय.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि.	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था.
बी० पु०	हिसि, हिसे.	हित्था, हिह.
त्री० पु०	हिइ, हिए.	हिन्ति, हिन्ते, हिरे.

आर्ष प्राकृतमां बीजा अने त्रीजा पुरुषमां नीचे आपेला प्रत्ययोनो पण प्रयोग करी शकाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बी० पु०	स्ससि, स्ससे.	स्सह.
त्री० पु०	स्सइ, स्सए.	स्सन्ति, स्सन्ते.

आ प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अथवा 'ए' थाय छे.

हस् धातुनां रूपो.

	एकवचन	बहुवचन
प० पु०	हसिस्सं, हसेस्सं, हसिस्सामि, हसेस्सामि, हसिहामि, हसेहामि, हसिहिमि, हसेहिमि.	हसिस्सामो-मु-म, हसिहामो-मु-म, हसिहिमो-मु-म, हसिहिस्सा, हसिहित्था, हसेस्सामो-मु-म, हसेहामो-मु-म, हसेहिमो-मु-म, हसेहिस्सा, हसेहित्था.
बी० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे, हसिस्ससि, हसिस्ससे, हसेस्ससि, हसेस्ससे.	हसिहित्था, हसिहिह, हसेहित्था, हसेहिह, हसिस्सह, हसेस्सह.
त्री० पु०	हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए, हसिस्सइ, हसिस्सए, हसेस्सइ, हसेस्सए.	हसिहिन्ति-न्ते, हसिहिरे, हसेहिन्ति-न्ते, हसेहिरे, हसिस्सन्ति न्ते, हसेस्सन्ति-न्ते.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ज, ज्जा आवे त्यारे

सर्वव० } हसेज्ज, हसेज्जा.
सर्वपु० } हसिज्ज, हसिज्जा.

ने धातुनां रूपो.

	एकव०	बहुव०
प० पु०	नेस्सं, नेस्सामि. नेहामि, नेहिमि.	नेस्सामो, नेहामो, नेहिमो, नेस्सामु, नेहामु, नेहिमु, नेस्साम, नेहाम, नेहिम, नेहिस्सा, नेहित्था.
बी० पु०	नेहिसि, नेहिसे, नेस्ससि, नेस्ससे.	नेहित्था, नेहिह, नेस्सह.
त्री० पु०	नेहिइ, नेहिए, नेस्सइ, नेस्सए.	नेहिन्ति, नेहिन्ते, नेहिरे. नेस्सन्ति, नेस्सन्ते.

प्रत्ययोनी पूर्वे 'अ' आवे त्यारे

नेअ अंगनां रूपो.

प० पु० ए० नेइस्सं, नेइस्सामि, नेइहामि, नेइहिमि,
नेएस्सं, नेएस्सामि, नेएहामि, नेएहिमि.

आ प्रमाणे सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां रूपाख्यानो करी लेवां.

प्रत्ययोनी पूर्वे अने स्थाने ज्ज ज्जा आवे त्यारे

नेज्ज नेज्जा नां रूपो.

प० पु० ए० नेज्जस्सं, नेज्जस्सामि, नेज्जहामि, नेज्जाहामि, नेज्जहिमि, नेज्जाहिमि, नेज्ज, नेज्जा वगेरे रूपो थाय छे.

नेएज्ज–नेएज्जा अंगनां रुपो.

षड्भाषामां हि प्रत्यय राखीने ज्ज ज्जा नां रूपो कर्यां छे. जेम—हसिहिज्ज–ज्जा, हसेहिज्ज–ज्जा.

(परिशिष्ट २. नि. इ.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प० पु० ए० नेएज्जस्सं, नेएज्जस्सामि, नेएज्जहामि,
नेएज्जाहामि, नेएज्जहिमि, नेएज्जाहिमि,
* नेएज्ज, नेएज्जा. वगेरे रूपो थाय छे.

कर्–आ धातुनो भविष्यकाळमां का आदेश विकल्पे थाय छे. का आदेश थाय त्यारे प्रथम पुरुषना एकवचनमां काहं एवुं रूप विकल्पे थाय छे. तेज प्रमाणे दा धातुनुं पण दाहं एवुं रूप विकल्पे थाय छे.

का (कृ)

	एकव०	बहुव०
प० पु०	काहं, कास्सं,	कास्सामो-मु-म,
	कास्सामि, काहामि,	काहामो-मु-म,
	काहिमि.	काहिमो-मु-म,
		काहिस्सा, काहित्था.
बी० पु०	काहिसि-से.	काहित्था, काहिह.
त्री० पु०	काहिइ-ए, काही.	काहिन्ति न्ते, काहिरे.

कर् (कृ)

प० पु० करिस्सं, करिस्सामि, करिहामि, करिहिमि,
करेस्सं, करेस्सामि, करेहामि, करेहिमि.
वगेरे रूपां हस् प्रमाणे जाणवा.

दा

प० पु०	दाहं, दास्सं,	दास्सामो-मु-म,
	दास्सामि, दाहामि,	दाहामो-मु-म,
	दाहिमि.	दाहिस्सा, दाहित्था.
बी० पु०	दाहिसि-से,	दाहित्था, दाहिह,
	दास्ससि-से.	दास्सह.

---

* षड्भाषा प्रमाणे नेएहिज्ज, नेएहिज्जा थाय छे. (परिशिष्ट. २-नि. ४)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकवचन	बहुवचन
त्री० पु० दाहिइ-ए, दाही.	दाहिन्ति-न्ते-दाहिरे.
दास्सइ-ए.	दास्सन्ति-न्ते.

षड्भाषामां **प्रथम पुरुष** एकवचनमां **'हिस्सं'** प्रत्यय लगाडीने रूपो कर्यां छे.

हसिहिस्सं, नेहिस्सं, करिहिस्सं, होहिस्सं. (षड् २-१-३-३३)

भविष्यकाल–आवतो काळ एटले जे क्रिया थवानी छे ते—देखाडे छे. जेमके—

रामो गामं गच्छिहिइ=राम गाममां जशे.

अज्ज नयरं गच्छिस्सं=आजे हुं नगरमां जइश

(स्त्रीलिंग) शब्दो.

अच्चणा (अर्चना) पूजा

अच्चा (अर्चा) पूजा, सत्कार.

अवण्णा (अवज्ञा) अपमान, अवगणना, तिरस्कार.

कन्ना (कन्या) कन्या.

खमा (क्षमा) क्रोधनो अभाव, शान्ति, माफी.

खंति (क्षान्ति) क्रोधनो अभाव शान्ति, क्षमा.

गरिहा (गर्हा) पापनी निन्दा करवी ते

चवेडा-ला | **चमेडा-ला** | (चपेटा) थप्पड, तमाचो.

चिंता (चिन्ता) चिन्ता, विचार.

जीवहिंसा (सम) जीव वध, जीवनो नाश करवो ते.

दिक्खा (दीक्षा) दीक्षा, प्रव्रज्या, संन्यास.

देसविरइ (देशविरति) देशथी पांचे यमोनुं पालन, अल्पांशे पापोनो त्याग.

धेणु (धेनु) गाय.

नई (नदी) नदी.

नावा (नौ) नौका, वहाण.

निंदा (सम) निंदा.

पया (प्रजा) प्रजा, संतति.

पाढसाला (पाठशाला) पाठशाला.

पीइ (प्रीति) प्रेम.

पुंण्णिमा (पूर्णिमा) पूनम, पूर्णिमा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोहि (बोधि) शुद्ध धर्मनी प्राप्ति.

भत्ति (भक्ति) भक्ति, सेवा, चाकरी.

मइ (मति) बुद्धि.

मक्खिआ } (मक्षिका) माखी.
मच्छिआ }

माला (सम) माळा.

माया (सम) माया, कपट, छळ.

रत्ति } (रात्रि) रात्रि.
राइ }

रिउ } (ऋतु) वसंतादि ऋतु.
उउ }

वणिआ } (वनिता) स्त्री.
विलया }

वीणा (सम) वीणा, ते नामनुं वाद्य.

सलाहा (श्लाघा) वखाण, प्रशंसा.

संकला (शृङ्खला) सांकळ, बेडी.

समिद्धि } (समृद्धि) आबादी, चढती.
सामिद्धि }

सव्वविरइ (सर्वविरति) पांचे महाव्रतोनुं पालन, सर्व पाप व्यापारनो त्याग.

साहा (शाखा) झाडनी शाखा, डाळी.

अणुपत्त वि. (अनुप्राप्त) प्राप्त करेल.

आगमत्थ पु. न. (आगमार्थ) सूत्रार्थ, आगमनो अर्थ.

आलाव पु. (आलाप) सूत्रनो आलावो.

आसण न. (आसन) बेसवानी वस्तु.

उग्ग वि. (उग्र) तीव्र, प्रबळ.

उज्जयंत पु. (उज्जयन्त) गिरनार पर्वत.

कलि पु. (सम) कलियुग, कळह, झघडो.

कल्ल न. (कल्य) गई काले, आवती काले.

कुडुंबि वि. (कुटुम्बिन्) कुटुम्ब-वाळो, गृहस्थ.

गाण न. (गान) गावुं, गीत.

गोवाल पु. (गोपाल) गोवाळ.

गीयत्थ } पु. (गीतार्थ) साधुनी सामाचारी जाणनार साधु.
गीयट्ठ }

चच्चर न. (चत्वर) चौटुं, बजार.

चाइ वि. (त्यागिन्) दानी, त्यागी.

जडिल पु. (जटिल) तापस, जटाधारी.

तावस पु. (तापस) तापस, योगी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिहुवण न. (त्रिभुवन) त्रण लोक.
थिर वि. (स्थिर) निश्चल, स्थिर.
दव्व } न. (द्रव्य) द्रव्य,
दविअ } धन, संपत्ति.
दुहि वि. (दुःखिन्) दुःखी.
धणि वि. (धनिन्) धनवाळो.
पविट्ठ वि. (प्रविष्ट) प्रवेश करेलुं.
पारद्धि पु. (पापर्धि) पारधी, शिकारी.
भय न. (भय) भय, भीति, त्रास.
भिच्च पु. (भृत्य) नोकर, कर्मकर.
मक्कड पु. (मर्कट) मांकडुं.
मोग्गर[७४] पु. (मुद्गर) मोगर.
वाणिज्ज न. (वाणिज्य) वेपार. व्यापार.
वावारि वि. (व्यापारिन्) व्यापारी.
वियाररहिअ वि. (विकाररहित) विकार रहित.
लोद्धअ वि. (लुब्धक) लोभी. लंपट, पु. शिकारी.
लोह पु. (लोभ) लोभ, तृष्णा.
सत्थ पु. (सार्थ), सार्थ, मुसाफरोनो समुदाय.
समय पु. (सम) काळ, वखत, अवसर.
समोसरण } न. (समवसरण)
समवसरण } समवसरण.
सर पु. न. (सरस्) सरोवर
सरोअ न. (सरोज) कमळ.
साण पु. (श्वन्) कुतरो.
सामि पु. (स्वामिन्) स्वामी.
सिरिवद्धमाण पु. (श्रीवर्धमान) चोवीशमा जिनेश्वर, श्रीमहावीर.
सिद्धालय पु. न. (सम) सिद्धोनुं मंदिर, सिद्धालय.
सुहि वि. (सुखिन्) सुखवाळो.
सुमिणतुल्ल } वि. (स्वप्नतुल्य)
सुविणतुल्ल } स्वप्न समान.

---

७४. संयुक्त व्यंजननी पूर्वे 'उ' नो 'ओ' थाय अने 'इ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे.

पोक्खरं (पुष्करम्)	वेण्हू, विण्हू (विष्णुः)
पोत्थओ (पुस्तक)	धम्मेल्लं, धम्मिल्लं (धम्मिल्लम्)
मोण्डं (मुण्डम्)	पेण्डं, पिण्डं (पिण्डम्)
कोई स्थाने 'ए' थतो पण नथी	चिंता (चिन्ता)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय.

अदुव, अदुवा, अदु (दे०) वा, के अथवा.

उदाहु, उयाहु (उताहु) अथवा, के.

कए, कएण–णं (कृते) माटे, निमित्त, लीधे.

तो (तदा) त्यारे, ते वखते.

पए (प्रगे) प्रभातमां.

पुरओ (पुरतस्) आगळ

णु, नु (नु) वितर्क, प्रश्न, हेतु, पश्चात्ताप.

धातुओ.

कीड्, कील् (क्रीड्) क्रीडा करवी, खेलवुं.

गण् (सम) गणवुं.

गल् (गल्) गळी जवुं, सडवुं, नाश पामवुं, समाप्त थई जवुं, झरवुं.

डस्, डंस् (दंश्) डसवुं, करडवुं.

णिमज्ज्, णुमज्ज् (निमज्ज्) डूबवुं.

दुह्, दोह् (दुह्) दोहवुं

नास् (नाशय्) नाश करवुं.

मन्न् (मन्–मन्य) मानवुं, विचारवुं.

मग्ग् (मार्गय्) शोधवुं, मागवुं.

बुक्क्, भस् (भष्) श्वाननुं भूंकवुं, भसवुं.

लिह्, लेह् (लिह्) चाटवुं.

प्राकृत वाक्यो

अज्ज सह्वो नयराओ विहरिस्सन्ति ।

गोवाला पए धेणूओ दोहिहिन्ति ।

अहं सीसाणमुवएसं करिस्सं ।

मक्खिआ महुं लेहिस्सइ ।

पारद्धिणो अरण्णे वच्चिहिन्ते, तहिं च वीणाए झुणिणा हरिणीओ वसीकरिस्सन्ते, पच्छा य ताओ हिंसिहिरे ।

तुं रण्णे जाज्जाहिसे, तया सिंघो चवेडाए पहरेहिए

लोद्धओ मोग्गरेण जणे हणीअ ।

तुम्हे गुरू भत्तीए सेवेह, ताणं किवाए कल्लाणं भविस्सइ ।

कन्नाओ अज्ज पहुणो पुरओ नच्चिस्सन्ति, गाणं च काहिन्ति ।

उज्जाणे अज्ज जाइस्सामो, तत्थ य सरंसि जायाइं सरोयाणि जिणिंदाणं अच्चणाए गिण्हिहिस्सा ।

अज्ज अह तत्ताणं चिंताए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्तिं नेस्सं।
तं कज्जं काहिसि तो दव्वं दाहं।
कलिम्मि नरिंदा धम्मेण पयं न पालिहिरे।
जइ सो दुज्जणो *होही, तया परस्स निंदाए तूसेहिइ।
पुत्ताणं सलाहं न काहं।
तीए मालाए सप्पो अत्थि, जइ मालं फासिहिसे तया सो डसिस्सइ।
कल्ले पुण्णिमाए मयंको अईव विराइहिइ।
विज्जत्थिणो अज्झयणाय पाढसालं जाज्जाहिरे।
अहुणा अम्हे पवयणस्स आलावे गणिहित्था।
अम्हे वाणिज्जेण धणिणो होइहिमो, तुम्हे नाणेण पंडिआ होस्सह।
धम्मेण नरा सग्गं सिवं वा लहिस्सन्ति।
अज्ज समोसरणे सिरिवद्धमाणो जिणिंदो देसणं काही,*
तत्थ य बहुणो भव्वा बोहिं अदुव देसविरइं अदुवा सव्वविरइं च गिण्हेहिरे।
जइ तुम्हे सुत्ताणि भणेज्जा तया गीयट्ठा होज्जाहित्था।
कल्लम्मि धम्मं काहामि त्ति सुविणतुल्लमि जियलोए को णु मन्नेइ।
जिणधम्माओ अन्नह सम्मं जीवदयं न पासेस्सह।
कलिम्मि पविट्ठे मुणीणं, आगमत्था गलिहिन्ति।
आयरिआ वि सीसाणं, सम्मं सुअं न दाहिंति ॥ १ ॥
नरवइणो कुडुंबिणा सह जुज्झिस्सन्ति।
जे जिणपडिमं, सिद्धालयं वा पूइस्सन्ति ताण घरं थिरं होही।
न वि अत्थि न वि होही, पाएण तिहुवणम्मि सो जीवो।
जो जुव्वणमणुपत्तो. वियाररहिओ सया होइ ॥१॥

---

*एक पदमां कोई वखत संधि थाय छे. (नि० ६. जुओ.) जेमके—
काहिइ–काही, होहिइ=होही, दाहिइ–दाही.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

तुं पापोनी निंदा करीश तो सुखी थईश.

अमे नावमां बेसीशुं अने सरोवरमां क्रीडा करीशुं.

अमो स्वामीने माटे माळा गुंथीशुं.

ते लोभी छे माटे ब्राह्मणोने धन आपशे नहि.

स्वप्नमां चन्द्रे मुखमां प्रवेश कर्यो तेथी तुं राज्य पामीश.

बोधिने माटे अमे जिनेश्वरना चरित्र सांभळीशुं

गिरनारमां घणी वनस्पतिओ छे ज्यारे हुं त्यां जइश त्यारे जोइश.

ते त्यागी छे माटे गरीबोने दान आपशे.

ते तापस छे माटे फळोनो आहार करशे.

तुं क्षमा धारण करीश तो दुर्जन शुं करशे.

वसंत ऋतुमां नगरना लोको उद्यानमां फरवा जशे, ते वखते ते कन्या सखीओ साथे जरुर आवशे.

वनमां तापस उग्र तप करे छे अने तपना प्रभावथी इन्द्रनी रिद्धि मेळवशे.

तुं वडीलोनी सेवा करीश तो सुखी थईश.

तमो सार्थनी साथे विहार करशो तो जंगलमां भय थशे नहि.

हुं संसारना दुःखोथी बीहुं छुं, माटे दीक्षा ग्रहण करीश.

तुं जीवहिंसा न कर, नहितर दुःखी थइश.

क्रोध प्रीतिने हणे छे, अने माया मित्रोने हणे छे, अने मान विनयनो नाश करे छे, अने लोभ सर्व गुणोनो नाश करे छे, माटे तेओनो त्याग करीशुं.

चोरो दक्षिण दिशामां गया छे, पण तेनी जरुर तपास करीश.

तुं सरोवरमां जईश तो जरुर डूबीश.

ते कूतरो भसशे, पण करडशे नहि.

जीवदया समान धर्म नथी, अने जीवहिंसा समान अधर्म नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १८ मो

(चालु) भविष्यकाळ अने क्रियातिपत्त्यर्थ.

'सोच्छ' वगेरे धातुओनां रूपाख्यानो.

सं० प्रा०	सं० प्रा०
श्रु–सोच्छ सांभळवुं.	मुच्–मोच्छ मुकवुं, छोडवुं.
गम्–गच्छ जवुं.	वच्–वोच्छ बोलवुं.
रुद्–रोच्छ रोवुं.	छिद्–छेच्छ छेदवुं.
विद्–वेच्छ जाणवुं.	भिद्–भेच्छ भेदवुं.
दृश्–दच्छ जोवुं.	भुज् भोच्छ खावुं.

'सोच्छ' वगेरे दश धातुओ भविष्यकाळमां वपराय छे. अने तेनां रूपाख्यानो करती वखते भविष्यकाळना प्रत्ययमांना हिनो लोप विकल्पे थाय छे, तेमज प्रथम पुरुष एकवचननुं रूप आ धातुओने अन्ते अनुस्वार मुकवाथी विकल्पे सिद्ध थाय छे.

गच्छनां रूपो.

एकवचन.	बहुवचन.
प्र० पु० गच्छं.	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो, गच्छिमो, गच्छिहिमो.
गच्छिस्सं, गच्छेस्सं.	गच्छिस्सामु, गच्छिहामु, गच्छिमु, गच्छिहिमु.
गच्छिस्सामि, गच्छेस्सामि,	गच्छिस्साम, गच्छिहाम, गच्छिम, गच्छिहिम.
गच्छिहामि, गच्छेहामि.	गच्छिहिस्सा, गच्छिहित्था.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गच्छिमि, गच्छेमि, ए थाय त्यारे गच्छेस्सामो
गच्छिहिमि, गच्छेहिमि. वगेरे रूपो थाय छे.

बी० पु० गच्छिसि, गच्छेसि, गच्छित्था, गच्छेत्था,
गच्छिहिसि, गच्छेहिसि, गच्छिहित्था, गच्छेहित्था,
गच्छिसे, गच्छेसे, गच्छिह, गच्छेह,
गच्छिहिसे, गच्छेहिसे. गच्छिहिह, गच्छेहिह.

त्री० पु० गच्छिइ, गच्छेइ, गच्छिन्ति, गच्छेन्ति,
गच्छिहिइ, गच्छेहिइ, गच्छिहिन्ति, गच्छेहिन्ति,
गच्छिए, गच्छेए, गच्छिन्ते, गच्छेन्ते,
गच्छिहिए, गच्छेहिए. गच्छिहिन्ते, गच्छेहिन्ते,
गच्छिरे, गच्छेरे,
गच्छिहिरे, गच्छेहिरे.

ज्ज, ज्जा, प्रत्ययो आवे त्यारे थतां रूपो–

सर्वपु०
सर्वव० } गच्छिज्ज, गच्छिज्जा.

क्रियातिपत्त्यर्थ.

१. **क्रियातिपत्त्यर्थ**–क्रियानी अतिपत्ति (निष्फलता) सूचवे छे. 'अमुक काम बन्युं होत तो अमुक बनत' पण प्रथम काम न बन्युं एटले तेना उपर आधार राखनार बीजुं पण नथी ज बन्युं आ रीते क्रियानी निष्फलता अर्थ सूचवे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्यय.

२. विशेष्यना लिंग प्रमाणे प्रथमाना एकवचन अने बहुवचनना ते ते लिंगना प्रत्ययो 'न्त-*माण' ने लगाडी तैयार थएला प्रत्ययो तथा सर्ववचन अने सर्व पुरुषमां 'ज्ज-ज्जा' प्रत्ययो धातुने लगाडवाथी क्रियातिपत्त्यर्थनां रूपो थाय छे.

×तैयार प्रत्ययो.

	एकवचन०	बहुवचन०
पुल्लिंगना	न्तो, माणो.	न्ता, माणा.
स्त्रीलिंगना	न्ती, माणी.	न्तीओ, माणीओ.
	न्ता, माणा.	न्ताओ, माणाओ.
नपुंसकना	न्तं, माणं.	न्ताइं, माणाइं.
सर्व वचन / सर्व पुरुष	ज्ज, ज्जा.	

	एकव०	बहुव०
पुंलिंग	हस्-हसन्तो, हसमाणो.	हसन्ता, हसमाणा.
	हो-होन्तो, हुन्तो,	होन्ता, हुन्ता,
	होमाणो.	होमाणा.

---

* 'माण' आ प्रत्ययांतवाळा प्रयोगो प्राकृत साहित्यमां बहुज अल्प देखवामां आवे छे.

प्राकृत रूपावतारमां 'न्त-माण' प्रत्ययनी पूर्वे 'अ' नो 'इ-ए' करवामां आवेल छे. जेम हसिंतो, हसेंतो, हसिमाणं, हसेमाणं वगेरे.

×प्राकृत साहित्यमांथी उध्धृत क्रियातिपत्त्यर्थना त्रणे लिंगनां दृष्टांतो.

पुं. ए. जइ तुमं संपइ मं न **मुंचंतो**, ता हं मंसगिद्धगिद्धाइयाण भक्खं **हुंतो** । (पूजाष्टक. पृ. २४ गा. ४६).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीलिंग–	**हसन्ती, हसमाणी.**	**हसन्तीओ, हसमाणीओ.**
	हसन्ता, हसमाणा.	**हसन्ताओ, हसमाणाओ.**
	होन्ती, हुन्ती.	**होन्तीओ, हुन्तीओ.**
	होन्ता, हुन्ता.	**होन्ताओ, हुन्ताओ.**
	होमाणी, होमाणा.	**होमाणीओ, होमाणाओ.**
नपुंसक–	**हसन्तं, हसमाणं.**	**हसन्ताइं, हसमाणाइं.**
	होन्तं, हुन्तं,	**होन्ताइं, हुन्ताइं,**
	होमाणं.	**होमाणाइं.**

आर्षमां **न्तो–माणो** ने स्थाने **न्ते–माणे** प्रत्यय पण लागे छे. जेमके–**हसन्ते, हसमाणे, होन्ते, हुन्ते, होमाणे.**

पुं. व० — ते पुण जइ अन्नोन्नं **पासंता,** तया तत्थ न **विसंता।** (बृह० गा० ३४२७).

पुं० ए० } व० } — जइ तस्स गुणा **हुंता,** ता नूणं जणो वि (तं) **सलहंतो।** (संवेग० शा० पृ. ३७ गा० ९८).

पुं० ए० } व० } — जइ अज्ज पहु! तए हं विणासिओ **हुंतो,** ता केत्तियमेत्ता पुत्ता मज्झ जणयस्स **हुंता** (पू. पृ. २९ गा. ९९).

पुं० ए० } स्त्री० ए० } — जइ (तुम्ह) तणयं हं न **हरावंतो,** ता मे सुया **मरंती।** (पू. पृ. ३८ गा. २४).

,, — एयंमि मसे **अच्छंते,** (ता) एसा पडिमा अईव अब्भुदयहेऊ सप्पभावा **हुंता।** (तीर्थकल्प. पृ. ३४).

पुं० ए० } न० ए० } — जइ नवरं जीवाकुलो लोगो न दिट्ठो **हुंतो,** तो सुंदरं **हुंतं।** (निशीथ. भा. १ पृ. ५)

,, — जइ पढममेव सो तुम्हेहिं नियत्तिओ **होंतो,** ता जुत्तं **हुंतं।** (महा. नि. पृ. ९८ गा. ९९).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुं० ए०
न० ए० } जइ मूले वि रोसुप्पायणं **करेंतो**, ता जुत्ततरं हुंतं ।
(महा. पृ. ९).

,, जइ हं **नागच्छंतो**, ता एक्कमवि पावं न मे **हुंतं** ।
(पूजा. पृ. २१ गा. १३).

स्त्री० ए० जइ गब्भाओ **पडंता**, बालत्ते वा वि जइ मया **होंता** ।
ता किं मज्झ निमित्ते, होज्ज इमा आवया तुज्झ ? ॥
(करुणरसकदंबक. पृ. ३३)

स्त्री० ए०
पुं० ए० } जइ हं तं **पुच्छंती**, ता सो तइया वि मह **पयासंतो** ।
(पूजा. पृ. १७ गा. ९४).

स्त्री० ए०
न० ए० } जह वल्लहजणे मणो जाइ, तहा जइ तणू वि **वच्चंती** ता
नूण कस्सइ तव्विरहविहुरत्तं न **हुंतं** । (पूजा. पृ. ३१ गा ९४)

न० ए०
पुं० ब० } जइ पुण दुगंछिएसु, कुलेसु एयाण जणणमिह **हुंतं**;
ता कह जयएक्कपुज्जा, **ठायंता** तग्गिहे मुणिणो ॥
(संवेग. पृ. १६३ गा. ६१).

,, जइ सव्वण्णूहिं तिकालदरिसीहिं सव्वं सुकरं दिट्ठं **हुंतं**,
तो णं अम्हारिसा कापुरिसा सुहं **करेंता** ।
(निशीथ भा. १ पृ. ५).

स्त्री० ए०
न० ए०
पुं० ब० } होज्ज न संझा, होज्जा न निसा, तिमिरं पि जइ न
होमाणं । ता **होंता** कह अम्हे, इअ संपइ पंसुलालावो ॥
(कुमारपालचरित स. ५ गा. १०५).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होअ अंगनां रूपो.

पुं०	स्त्री०	नपुं०
होअन्तो होअन्ता, होअमाणो, होअमाणा.	होअन्ती, होअन्ता, होअमाणी, होअमाणा.	होअन्तं, होअन्ताइं, होअमाणं, होअमाणाइं.

ज्ज-ज्जा नां रूपो.

सर्व व० } हसेज्ज, हसेज्जा.
सर्व पु० } होज्ज, होज्जा, होएज्ज, होएज्जा.

क्रियातिपत्त्यर्थ-ज्यारे संकेत के शरत पूर्ण न थयेल होय तेवा सांकेतिक वाक्योमां वपराय छे. जेम—**जइ सो विज्जं भणन्तो. ता सुही होन्तो**-जो ते विद्या भण्यो होत तो सुखी थात.

ऋकारान्त नाम.

प्राकृतमां 'ऋ' स्वरनो प्रयोग थतो नथी तेथी ऋकारान्त जे शब्दो छे तेमां अमुक फेरफार थई नीचे प्रमाणे रूपो थाय छे.

१ संस्कृतमां जे शब्दो ऋकारान्त छे तेमां जे शब्दो संबंध-वाचक छे तेना अन्त्य 'ऋ'नो 'अर' थाय छे. अने जे शब्दो विशेषण छे तेना अन्त्य 'ऋ' नो 'आर' थाय छे. पछी अन्त्य अकारान्त होवाथी तेनां रूपो पुल्लिंग अने नपुंसकलिंगमां अकारान्त पुल्लिग अने अकारान्त नपुंसकलिंग जेवां थाय छे. जेमके—

संबंधवाचक नाम—**पिअर (पितृ), जामाअर (जामातृ).**

विशेषण नाम—**कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ).**

२ प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचन सिवाय सर्व विभक्तिमां ऋकारान्त शब्दना अन्त्य 'ऋ' नो 'उ' पण थाय छे. **पिउ (पितृ), कत्तु (कर्तृ), दाउ (दातृ),** अन्त्य अंग उकारान्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होवाथी तेनां रूपो उकारान्त पुल्लिंग अने नपुंसकलिंग जेवां थाय छे. तेथी **पिअर, पिउ (पितृ), कत्तार, कत्तु (कर्तृ), दायार, दाउ (दातृ)** इत्यादि शब्द गणी रूपो करवां.

३ पुल्लिगमां प्रथमानुं एकवचन 'ऋ' नो 'आ' करवाथी पण विकल्पे थाय छे. जेमके–**पिआ (पिता), कत्ता (कर्ता), दाया(दाता).**

४ संबंधवाचक ऋकारान्त शब्दनुं सम्बोधन एकवचननुं रूप अन्त्य 'ऋ' नो 'अ' अने 'अरं' करवाथी, अने विशेषणवाचक ऋकारान्त शब्दोना 'ऋ' नो 'अ' करवाथी विकल्पे थाय छे.

जेमके—**हे पिअ ! हे पिअरं ! (पितृ)**
हे कत्त ! (कर्तृ)
हे दाय ! (दातृ)

पुल्लिंग तथा विशेषण शब्दो.

जामाअर, जामाउ पु. (जामातृ) जमाई, जामाता.
पिअर, पिउ पु. (पितृ) पिता, बाप.
भायर, भाउ पु. (भ्रातृ) भाई, भ्राता.
कत्तार, कत्तु वि- (कर्तृ) करनार.
दायार, दाउ वि (दातृ) देनार, दाता.
भत्तार, भत्तु पु. (भर्तृ) स्वामी, भरतार, वि. भरण पोषण करनार.

अकारान्त पुल्लिंग.

	एकवचन.	बहुवचन.
प.	पिआ, पिअरो.	पिअरा. पिअवो, पिअउ, पिअओ, पिउणो, पिऊ.
बी.	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त.	पिअरेण-णं, पिउणा.	पिअरेहि-हिँ-हिं, पिऊहि-हिँ-हिं.
च. छ.	पिअरस्स, पिउणो,* पिउस्स.	पिअराण-णं, पिऊण-णं.
पं.	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ-हि-हिन्तो, पिअरा, पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ-उ-हिन्तो.	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ-हि-हिन्तो-सुन्तो, पिअरेहि-हिन्तो-सुन्तो, पिउत्तो, पिऊओ-उ-हिन्तो-सुन्तो.
स.	पिअरे, पिअरम्मि, पिअरंसि, पिउम्मि, पिउंसि.	पिअरेसु-सुं, पिऊसु-सुं
सं.	हे पिअ, पिअरं, पिअर, पिअरो.	पिअरा, पिअवो, पिअउ-ओ, पिउणो, पिऊ.

कत्तार-कत्तु (कर्तृ) शब्द.

प.	कत्ता, कत्तारो.	कत्तारा, कत्तवो, कत्तउ, कत्तओ, कत्तुणो, कत्तू.
बी.	कत्तारं.	कत्तारे, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तू.
त.	कत्तारेण-णं, कत्तुणा.	कत्तारेहि-हिँ-हिं, कत्तूहि-हिँ-हिं.

* आर्षमां छट्ठी विभक्तिना एकवचनमां 'ए' प्रत्यय पण लागे छे. जेम-पिउए, भाउए. इत्यादि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च. छ.	कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स.	कत्ताराण-णं, कत्तूण-णं.
पं.	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ-हि-हिन्तो, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूओ-उ-हिन्तो.	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ-हि-हिन्तो-सुन्तो, कत्तारेहि-हिन्तो-सुन्तो. कत्तुत्तो, कत्तूओ-उ-हिन्तो-सुन्तो.
स.	कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तारंसि, कत्तुम्मि, कत्तुंसि.	कत्तारेसु-सुं, कत्तूसु-सुं.
सं.	हे कत्त, कत्तार, कत्तारो.	कत्तारा, कत्तवो, कत्तउ-ओ, कत्तुणो, कत्तू.

कत्तार-कत्तु ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्द.

प. बी.	कत्तारं.	कत्ताराइं, कत्ताराइँ, कत्ताराणि, कत्तूइं, कत्तूइँ, कत्तूणि.
सं.	हे कत्त, कत्तार.	कत्ताराइं, कत्ताराइँ, कत्ताराणि, कत्तूइं, कत्तूइँ, कत्तूणि.

बाकीनां रूप पुल्लिग प्रमाणे.

दायार, दाउ (दातृ) शब्द.

	एकवचन.	बहुवचन.
प. बी.	दायारं.	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि. दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि.
सं.	हे दाय, दायार.	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि. दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाकीनां रूप कत्तार, कत्तु प्रमाणे.

१. ऋकारान्त स्त्रीलिंगमां संबंधवाचक शब्दोनां रूपो नीचे प्रमाणे फेरफार थईने थाय छे.

दुहिआ
धूआ } (दुहितृ) दीकरी, पुत्री.
धीआ

नणंदा (ननान्दृ) नणंद.

पिउसिआ } (पितृष्वसृ) फोइ, बापनी बहेन.
पिउच्छा

माउसिआ } (मातृष्वसृ) मासी, मानी बेन.
माउच्छा

*माअरा
माआ } (मातृ) माता, मा.
माउ

ससा } (स्वसृ) व्हेन.
सुसा

२. आ शब्दोनां रूपो **आ**कारान्त होवाथी **आ**कारान्त स्त्रीलिंग नामोनां जेवां ज थाय छे. अने **'माउ'** शब्दनां रूपो **उ**कारान्त स्त्रीलिंग नाम जेवां थाय छे, पण प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमां **'माउ'** शब्दनो प्रयोग थतो नथी.

३. आ स्त्रीलिंग शब्दो मूळथी **आ**कारान्त नहि होवाथी संबोधन एकवचनमां **हे माआ, माअरा, हे ससा** ए प्रमाणे थाय छे.

---

* 'मातृ' शब्दनो कोई स्थळे 'माइ' एवो शब्द सिद्ध थई ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग जेवां रूपो पण थाय छे, जेमके—

प० ब० } माईओ, माईउ, माई.
बी० ब०

छ० ब० माईणं, माईण, इत्यादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माआ-माअरा-माउ शब्दनां रूपो.

	एकवचन	बहुवचन.
प.	माआ.	माआओ,माआउ, माआ.
	माअरा.	माअराओ माअराउ, माअरा.
		माऊओ, माऊउ, माऊ.
बी.	माअं, माअरं.	,, ,, ,,
त.	माआअ, माआइ, माआए.	माआहि हिँ-हिं.
	माअराअ, माअराइ, माअराए.	माअराहि-हिँ-हिं.
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माऊहि-हिँ-हिं.
च. छ.	माआअ, माआइ, माआए.	माआण-णं.
	माअराअ, माअराइ, माअराए.	माअराण-णं.
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए.	माऊण-णं.
पं.	माआअ, माआइ, माआए, माअत्तो, माआओ-उ-हिन्तो,	माअत्तो, माआओ-उ-हिन्तो सुन्तो,
	माअराअ, माअराइ, माअराए, माअरत्तो, माअराओ-उ-हिन्तो,	माअरत्तो, माअराओ-उ-हिन्तो सुन्तो.
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए, माउत्तो माऊओ, उ-हिन्तो.	माउत्तो, माऊओ-उ-हिन्तो-सुन्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स.	माआअ, माआइ, माआए,	माआसु-सुं.
	माअराअ, माअराइ, माअराए.	माअरासु-सुं.
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए.	माऊसु-सुं.
सं.	हे माआ,	माआओ, माआउ, माआ.
	हे माअरा.	माअराओ, माअराउ, माअरा.

ससा (स्वसृ) शब्दनां रूपो.

प.	ससा.	ससाओ, ससाउ, ससा.
बी.	ससं.	ससाओ, ससाउ, ससा.
त.	ससाअ, ससाइ, ससाए.	ससाहि-हिँ-हिं.
च.छ.	ससाअ, ससाइ, ससाए.	ससाण-णं.
पं.	ससाअ, ससाइ, ससाए. ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो.	ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो, ससासुन्तो.
स.	ससाअ, ससाइ, ससाए.	ससासु-सुं.
सं.	हे ससा.	ससाओ, ससाउ, ससा.

शब्दो.

अक्क पु. (अर्क) सूर्य.

अग्ग न. (अग्र) आगळ, शिखर.

असोगचन्द पु. (अशोकचन्द्र) श्रेणिकना पुत्रनुं नाम, बीजुं नाम कोणिक.

अहिमन्नु, अहिमञ्जु, अहिमज्जु पु. (अभिमन्यु) नाम छे, अर्जुननो पुत्र.

आयारंग न. (आचाराङ्ग) आचारांग सूत्र, बार अंगोमां पहेलुं अंग.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आसम पु. (आश्रम) आश्रम, तापसनुं स्थान.

एरिस वि. (ईदृश) एवुं, एवी रीतनुं.

कउरव पु. (कौरव) कुरुराजाना वंशज, कौरवो.

कत्तार
कत्तु } वि. (कर्तृ) करनार.

चीवंदण न. (चैत्यवन्दन) चैत्य-वंदन.

जत्ता स्त्री. (यात्रा) यात्रा, तीर्थ यात्रा.

चोज्ज न. (चोद्य) आश्चर्य, प्रश्न.

जाया स्त्री. (सम) स्त्री.

जामायर
जामाउ } पु. (जामातृ) जमाई.

जीवाइ पु. (जीवादि) जीव–अजीव आदि नवतत्त्वो.

णायार
णाउ } वि. (ज्ञातृ) जाणनार.

णेय वि. (ज्ञेय) जाणवा लायक.

तत्तवत्ता स्त्री. (तत्त्ववार्ता) तत्त्वोनी वात.

तिसला स्त्री. (त्रिशला) प्रभु-महावीरनी माता.

तत्तनाण न. (तत्त्वज्ञान) जीवादि तत्त्वोनुं ज्ञान.

थोक्क
थोव
थेव } वि. (स्तोक) अल्प, थोडुं.

दायार
दाउ } वि. (दातृ) दातार, आपनार.

दुहिआ
धुआ
धीआ } स्त्री. (दुहितृ) दीकरी, पुत्री.

देवाणंदा स्त्री. (सम) नाम महावीर प्रभुनी माता.

धायार
धाउ } वि. (धातृ) धारण करनार, विधाता, पालनार, ब्रह्मा.

नणंदा स्त्री. (ननान्दृ) नणंद.

निप्फल वि. (निष्फल) निरर्थक, फळ रहित.

नेमित्तिअ वि. (नैमित्तिक) निमित्त शास्त्र जाणनार.

परिमाण न. (सम) मान, माप.

पडिवया
पाडिवया } स्त्री. (प्रतिपत्) एकम तिथी, पडवो.

परप्पर
परोप्पर
परुप्पर } वि. (परस्पर) एक, बीजाओने, अन्यो अन्य.

परदार न. पु. (सम) परस्त्री.

पहिअ पु. (पान्थ–पथिक) मुसाफर,

पालग वि. (पालक) पालन करनार.

पिअर
पिउ } पु. (पितृ) पिता.

पिउसिआ
पिउच्छा } स्त्री. (पितृष्वसृ) फोई.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिवासा स्त्री. (पिपासा) तृषा, तरस.

बंधण न. (बंधन) बेडी, अटकाव, बांधवुं.

भट्ठ वि. (भ्रष्ट) भ्रष्ट, पतित.

भमंत वि. (भ्रमत्) भमतो.

भत्तार } पु. (भर्तृ) स्वामी, पति,
भत्तु } वि. पोषण करनार.

भाल न. (सम) ललाट.

भायर } पु. (भ्रातृ) भाई, बंधु.
भाउ }

भूयहिअ न. (भूतहित) जीवोनो उपकार.

भोयण न. (भोजन) भोजन.

माआ }
माअरा } स्त्री. (मातृ) माता, मा.
माउ }
माइ }

माहप्प पु. न. (माहात्म्य) महिमा, मोटाई, प्रभाव

माउसिआ } स्त्री. (मातृष्वसृ) मासी.
माउच्छा }

मीसिअ वि. (मिश्रित) मिश्रण करेलुं, मळेलुं, मेळवेलुं.

रअ वि. (रत) आसक्त.

ललाड } न. (ललाट) भाल,
णडाल } ललाट, कपाळ.

लक्खण न. (लक्षण) लक्षण.

लक्खण पु. (लक्ष्मण) रामनो भाई, लक्ष्मण.

लेह पु. (लेख) लेख, लखाण.

वत्तार } वि. (वक्तृ) वक्ता,
वत्तु } बोलनार.

वासुदेव पु. (सम) वासुदेव.

विवत्ति स्त्री. (विपत्ति) दुःख.

विरूव वि. (विरूप) कदरूप, कुरूप.

विसमीसिअ वि. (विषमिश्रित) झेरवाळुं.

वीयराग वि (वीतराग) राग–रहित.

सत } पु न. (शत) सोनी–
सय } संख्या.

सकम्म पु. न. (स्वकर्म) पोतानुं कर्म.

सगास न (सकाश) समीप, पासे.

सरण न. (शरण) शरण, आश्रय.

सयसहस्स पु. न. (शतसहस्र) लाख–सो वार हजार.

सच्चवय पु. (सत्यवद) सत्य बोलनार, सत्यवादी.

सरोरुह न. (सम) कमळ.

सुसा स्त्री. (स्वसृ) बहेन.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धत्थ पु. (सिद्धार्थ) सिद्धार्थ राजा, भगवान महावीरना पितानुं नाम.

सेत्तुंजी } **सित्तुंजी** } स्त्री. (शत्रुञ्जयी) नदीनुं नाम छे.

सोहा स्त्री. (शोभा) शोभा, दीप्ति.

सीस पु. न. (शीर्ष) मस्तक, माथुं.

हरअ } **द्रह** } पु. (ह्रद) झरो, तळाव, मोटुं सरोवर.

अव्यय.

अंत-अंतो (अन्तर्) अंदर, वचमां.

अम्मो (दे) आश्चर्य.

अहो (सम) विस्मय, आश्चर्य, शोक.

किर } **इर** } **हिर** } **किल** } (किल) निश्चय, संभावना, संशय.

झडित्ति } **झडत्ति** } **झत्ति** } (झटिति) जलदी, झट.

तहिं (तत्र) त्यां.

तहवि (तथापि) तोपण.

सणियं (शनैस्) धीमे धीमे.

धातुओ.

अल्ली (आ–ली) आश्रय करवो, आलिंगन करवुं, प्रवेश करवो.

कंख् } **मह्** } (काङ्क्ष्) चाहवुं, वांछवुं.

घोट्ट् (पा) पीवुं.

निगिण्ह् } **निग्गह्** } (निग्रह्) पकडवुं, अटकाववुं, शिक्षा करवी.

निवड् (निपत्) पडवुं.

पल्लोट्ट् } **पल्हत्थ्** } (पर्यस्) फेंकवुं, फेंकी देवुं.

पउस्स् } **पउस्** } (प्र+द्विष्) द्वेष करवो.

रुंभ् } **रुंध्** } (रुध्) रोकवु.

सिणिज्झ् (स्निह्) स्नेह करवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो।

हं वच्छाणं पण्णाणि छेच्छं।

अम्हे साहुणो सगासे तत्ताइं सोच्छिस्सामो ।

जया माआ जत्ताए गच्छिइ तो वच्छो दुहिआ य रोच्छिहिन्ति ।

अम्हे किर सच्चं वोच्छिस्सामो ।

सव्वण्णू झत्ति सिवं गच्छिहिरे।

हं सत्तुंजयं गच्छिस्सं, तहिं गिरिस्स सोहं दच्छं, तह सेत्तुंजीए नईए ण्हाहिस्सं, पच्छा य तित्थयराणं पडिमाओ चन्दणेण पुप्फेहिं च अच्चिहिमि, गिरिणो य माहप्पं सोच्छिमि, पावाइं च कम्माइं छेच्छिहिमि, जीविअं च सहलं करिस्सं ।

जइ असोगचंदो नरिंदो दिसासु परिमाणं कुणंतो ता निरए नेव निवडन्तो ।

सो आयारंगं भणेज्जा ता गीअत्थो होन्तो ।

जइ हं सत्तुं निगिण्हन्तो, तया परिसं दुहं अहुणा किं लहमाणो ? ।

जइ धम्मस्स फलं हविज्ज तया परलोगे सुहं लहेज्जा ।

साहम्मिआणं वच्छल्लं सइ कुज्ज त्ति वीयरागस्स आणा।

तिसला देवी देवाणंदा य माहणी पहुणो महावीरस्स माऊओ आसि ।

सिरिवद्धमाणस्स पिआ सिद्धत्थो नरिंदो होत्था ।

पुव्वण्हे अक्कस्स तावो थोवो, मज्झण्हे य अईव तिक्खो, अवरण्हे अ थोक्को अइ थेवो वा ।

सकम्मेहिं इह संसारे भमंताणं जन्तूणं सरणं माआ पिआ भाउणो सुसा धूआ अ न हवन्ति, एक्को एव धम्मो सरणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो बाहिरं पासेइ, सो मूढो, अंतो पासेइ सो पंडिओ णेओ।

पिउणो ससा पिउसिअ त्ति, तह माऊए य ससा माउसिआ इइ कहेइ।

नणंदा भाउस्स जायाए सिणिज्झइ।

धूआ माअरं पिअरं च सिलेसइ।

रामस्स वासुदेवस्स य पिअरम्मि माऊसुं अ परा भत्ती अत्थि।

सासू जामाऊणं पडिवयाए पाहुडं दाहिन्ति।

जा नारी भत्तारम्मि पउस्सेइ सा सुहं न पावेइ।

कुलवालियाणं भत्तवो चेव देवा।

माआ धूआणं पुत्ताणं च वहुं धणं अप्पेइ।

जे नरा भत्तूणमाएसे न वट्टन्ते ते दुहिणो हवन्ति।

आवयासु जे सहेज्जा हुंति ते च्च भाउणो।

धूआए माआए य परुप्परं अईव नेहो अत्थि।

सासूणं जामाउणो अईव पिआ हवन्ति।

अहं माअराए य पिउणा य भायरेहिं च ससाहिं च सह सिद्धगिरिस्स जत्ताए जाएज्जा।

दायाराणं मज्झे कण्णो निवो पढमो होत्था।

रामस्स भाया लक्खणो निएण चक्केण रावणस्स सीसं छिन्दीअ।

सतेसु जायते सूरो, सहस्सेसु य पंडिओ।
वत्ता सयसहस्सेसु, दाया जायति वा न वा॥
इंदियाणं जए सूरो, धम्मं चरति पंडिओ।
वत्ता सच्चवओ होइ, दाया भूयहिए रओ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो.

जो तेणे झेरवाळुं भोजन खाधुं होत तो ते मृत्यु पामत.

जो तमे जिनेश्वरना चरित्रो सांभळ्या होत तो धर्म पामत.

अभिमन्यु जीव्यो होत तो कौरवोनी बधी सेनाने जीती लेत.

जो तने तत्त्वोनुं ज्ञान होत तो ते धर्म पामत.

जो तमो ते समये बंधनमांथी छोडत तो हुं सत्य कहेत.

रावणे परस्त्रीनो त्याग कर्यो होत तो ते मृत्यु पामत नही.

जाणनार पासेथी तेणे तत्त्वोनुं ज्ञान मेळव्युं.

हुं तलावमांथी कमळो लईश, अने माता अने बेनने आपीश.

माता अने पितानी साथे जिनालयमां जईश, अने चैत्यवंदन करीश.

लक्ष्मणना भाई रामे दीक्षा लीधी अने मोक्ष मेळव्यो.

वहुने नणंद उपर घणो स्नेह छे.

गरीबोने पाळनार थोडा ज होय छे.

विधाताना लेखने कोई पण उलंघतुं नथी.

कुरूपा बाळको उपर पण मातानो घणो ज स्नेह होय छे.

जेम बहेरानी आगळ गायन नकामुं छे तेम मूर्ख पुरुषनी आगळ तत्त्वोनी वात नकामी छे.

दिवसे दिवसे घणा प्राणीओ मरण पामे छे, तो पण अज्ञानीओ अमे मरवाना नथी एम माने छे तेथी बीजुं शुं आश्चर्य होय?

निमित्तिअए तेना कपाळमां सारा लक्षणो जोयां अने कह्युं (के) तुं राजा थईश.

ते वेश्यामां आसक्त थयो न होत तो धर्मथी पतित थात नहि.

मूर्ख पण धीमे धीमे उद्यम करवाथी होंशियार थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ १९ मो.

*कर्मणि रूप अने भावे रूप.

१. धातुनुं कर्मणि के भावे रूप करवा धातुने ईअ (ईय) के इज्ज प्रत्यय लगाडाय छे. अने ए तैयार थयेल अंगने कालना पुरुष बोधक प्रत्ययो लगाडवा.

२. भविष्यकाळ क्रियात्तिपत्यर्थ वगेरेनां कर्मणि अने भावे रूपो कर्तरि जेवां ज थाय छे.

कर्मणि-भावे-अंग.

हस्+ईअ=हसीअ,	हो+ईअ=होईअ,
हस्+इज्ज=हसिज्ज,	हो+इज्ज=होइज्ज,
पढ्+ईअ=पढीअ,	ने+ईअ=नेईअ,
पढ्+इज्ज=पढिज्ज,	ने+इज्ज=नेइज्ज,
बोल्ल्+ईअ=बोल्लीअ,	ठा+ईअ=ठाईअ,
बोल्ल्+इज्ज=बोल्लिज्ज,	ठा+इज्ज=ठाइज्ज,
कंप्+ईअ=कंपीअ,	झा+ईअ=झाईअ,
कंप्+इज्ज=कंपिज्ज,	झा+इज्ज=झाइज्ज,
देक्ख्+ईअ=देक्खीअ,	ण्हा+ईअ=ण्हाईअ,
देक्ख्+इज्ज=देक्खिज्ज,	ण्हा+इज्ज=ण्हाइज्ज,

* जो धातु सकर्मक होय तो तेनो कर्मणि प्रयोग थाय, अने अकर्मक (कर्मरहित) होय तो भावेप्रयोग थाय छे. (लज्जा पामवी, उभा रहेवुं, होवुं, जागवुं, वधवुं, जीर्ण थवुं, भय पामवुं, जीववुं, मरवुं, सुवुं, प्रकाशवुं अने रमवुं, ए अर्थवाळा धातुओ अकर्मक जाणवा ए सिवाय बीजा अर्थवाळा धातुओ सकर्मक जाणवा.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ प्रमाणे अंग तैयार करी पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी कर्मणि ने भावे रूपो थाय छे.

पढीअ, पढिज्ज (पढ्) नां रूपो.

वर्तमानकाळ.

	एकव०	बहुव०
प पु.	पढीअमि,	पढीअमो-मु-म,
	पढीआमि.	पढीआमो-मु-म,
	पढिज्जमि,	पढीइमो-मु-म.
	पढिज्जामि.	पढिज्जमो-मु-म,
		पढिज्जामो-मु-म,
		पढिज्जिमो-मु-म.
बी. पु.	पढीअसि, पढीअसे,	पढीइत्था, पढीअह,
	पढिज्जसि, पढिज्जसे.	पढिज्जित्था, पढिज्जह.
त्री. पु.	पढीअइ, पढीअए,	पढीअन्ति-न्ते, पढीइरे,
	पढिज्जइ, पढिज्जए.	पढिज्जन्ति-न्ते पढिज्जिरे.

कर्मणिप्रयोगमां कर्ता त्रीजी विभक्तिमां मूकाय छे अने कर्म प्रथमा विभक्तिमां आवे छे, तेमज कर्मने आधारे क्रियापद मूकाय छे. जेमके—कर्तरि–**कुंभारो घडं कुणइ,** कर्मणिमां **कुंभारेण घडो कुणीअइ,** (कुंभार वडे घडो कराय छे), **रामो जिणे अच्चेइ-रामेण जिणा अच्चिज्जंति** (राम वडे जिनेश्वरो पूजाय छे) अने भावेप्रयोगमां कर्ता त्रीजी विभक्तिमां आवे छे, अने कर्म होतुं नथी तेथी क्रियापद त्रीजा पुरुष एकवचनमां मूकाय छे. जेमके—

बालो जग्गइ-बालेण जग्गिज्जइ (बाळकवडे जगाय छे).
वच्छा रमंति-वच्छेहिँ रमिज्जइ (बाळकोवडे रमाय छे).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषबोधक प्रत्ययोनी पहेलां अ नो ए थाय त्यारे. पढीएइ, पढिज्जेइ, पढीएन्ति, पढीएन्ते, पढीएइरे, पढिज्जेन्ति, पढिज्जेन्ते, पढिज्जेइरे. इत्यादि रूपो पण थाय छे.

ज्ज-ज्जा प्रत्ययो आवे त्यारे.

सर्ववचन } पढीएज्ज, पढीएज्जा,
सर्वपुरुषमां } पढिज्जेज्ज, पढिज्जेज्जा.

ह्यस्तन भूत.

सर्ववचन } ×पढीअईअ, पढीअईअ.
सर्वपुरुष } पढिज्जईअ, पढिज्जईअ.

आर्षमां

सर्ववचन } पढीइत्था, पढिज्जित्था,
सर्वपुरुष. } पढीइंसु, पढिज्जिंसु.

परोक्षभूत- } कर्तरि प्रमाणे—*पढीअ थाय छे.
अद्यतनभूतमां }

विधि-आज्ञार्थ.

	एकवचन	बहुवचन
प. पु.	पढीअमु-आमु-इमु-एमु, पढिज्जमु-ज्जामु-ज्जिमु-ज्जेमु.	पढीअमो-आमो-इमो-एमो, पढिज्जमो-ज्जामो-ज्जिमो-ज्जेमो.
बी. पु.	पढीअहि-एहि, पढीअसु,-एसु, पढीइज्जसु-एज्जसु, पढीइज्जहि-एज्जहि, पढीइज्जे-एज्जे, पढीअ.	पढीअह, पढीएह,

---

× परिशिष्ट-१. नि. २.

* षड्भाषाचन्द्रिकामां 'पढीअ' एवो कर्तरिवत् प्रयोग करेल नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varaṇasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढिज्जहि–ज्जेहि, पढिज्जह, पढिज्जेह
पढिज्जसु–ज्जेसु,
पढिज्जिज्जसु–ज्जेज्जसु,
पढिज्जिज्जहि–ज्जेज्जहि,
पढिज्जिज्जे–ज्जेज्जे,
पढिज्ज.

आर्षमां— पढीइज्जसि, पढीएज्जसि, पढीइज्जाह,
पढीइज्जासि, पढीएज्जासि, पढीएज्जाह,
पढीइज्जाहि, पढीएज्जाहि, पढिज्जिज्जाह,
पढीआहि. पढिज्जेज्जाह.
पढिज्जिज्जसि, पढिज्जेज्जसि,
पढिज्जिज्जासि, पढिज्जेज्जासि,
पढिज्जिज्जाहि, पढिज्जेज्जाहि,
पढिज्जाहि.

त्री० पु० पढीअउ, पढीएउ, पढीअन्तु, पढीएन्तु,
पढिज्जउ, पढिज्जेउ, पढिज्जन्तु, पढिज्जेन्तु.

सर्व व० } पढीएज्ज–ज्जा *पढीएज्जइ, पढीएज्जाइ,
सर्व पु० } पढिज्जेज्ज–ज्जा, पढिज्जेज्जइ, पढिज्जेज्जाइ.

भविष्यकाळ.

त्री० पु० } ×पढिहिइ, पढेहिइ, पढिस्सइ,
ए० } पढिहिए, पढेहिए, पढिस्सए.

आ प्रमाणे सर्व रूपो कर्तरि प्रमाणे जाणवां.

---

* पृ० १०० मुं. जुओ.

× षड्भाषा चन्द्रिका तथा आर्षमां 'ईअ–इज्ज' नो प्रयोग भविष्यकाल अने क्रियातिपत्तिमां देखाय छे, तेथी पढीइहिइ–ए, पढीएहिइ–ए, पढिज्जिहिइ–ए, पढिज्जेहिइ–ए, पढीइहिज्ज–ज्जा, पढीएहिज्ज–ज्जा, पढिज्जिहिज्ज–ज्जा, पढिज्जेहिज्ज–ज्जा, इत्यादि रूपो पण थाय छे. आर्षमां–साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, (संहरिष्ये) कप्पसुत्ते सुत्तं ३०.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियातिपत्ति.

	एकव०	बहुव०
पुं.	*पढन्तो,	पढन्ता.
स्त्री.	पढन्ती,	पढन्तीओ.
नपुं.	पढन्तं	पढन्ताइं.

वगेरे कर्तरि प्रमाणे.

सर्व व० } सर्व पु० } पढेज्ज, पढेज्जा.

हो-होईअ, होइज्ज.

वर्तमानकाळ.

त्री. पु. ए. होईअइ, होईएइ, होइज्जइ, होइज्जेइ.

ए प्रमाणे सर्व रूपो लइ लेवां.

सर्व व० } होईएज्ज, होईएज्जा,
सर्व पु० } होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा.

सर्व व० } होईअसी, होईअही, होईअहीअ,
सर्व पु० } होइज्जसी, होइज्जही, होइज्जहीअ.

आर्षमां—

होईइत्था, होईइंसु,
होइज्जित्था, होइज्जिंसु.

परोक्षभूत सर्व पु० }
अद्यतनभूतमां सर्व व० } होसी, होही, होहीअ.

आर्षमां—होत्था, हविंसु. कर्तरि प्रमाणे.

× षड्भाषामां पढीअन्तं, पढिज्जन्तं पढीएज्ज—ज्जा, पढिज्जेज्ज—ज्जा वगेरे प्रयोगो देखाय छे: परिशिष्ट. १. नि. ४. परि० २. नि. ६.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधि-आज्ञार्थ.

त्री. पु. ए. होईअउ, होईएउ, होइज्जउ, होइज्जेउ वगेरे.

सर्व पु० सर्व व०	होईएज्ज,	होईएज्जा,
	होइज्जेज्ज	होइज्जेज्जा.
	होईएज्जइ,	होईएज्जाइ,
	होइज्जेज्जइ,	होइज्जेज्जाइ.

भविष्यकाळ.

त्री. पु. ए. *होहिइ, होहिए, इत्यादि कर्तरि प्रमाणे.

क्रियातिपत्ति.

	एकवचन.	बहुवचन.
पुं०	+होन्तो, हुन्तो,	होन्ता, हुन्ता,
स्त्री०	होन्ती, हुन्ती,	होन्तीओ, हुन्तीओ,
नपुं०	होन्तं, हुन्तं,	होन्ताइं, हुन्ताइं.

वगेरे कर्तरि प्रमाणे.

सर्व व० } होज्ज-ज्जा,
सर्व पु० } हुज्ज-ज्जा.

कर्मणि ने भावेमां ज वपराता धातुओ—

कर्तरि	कर्मणि	
पास्	दीस	(दृश्) देखवुं.
वय्	वुच्च	(वच्) बोलवुं.

---

* होईइहिइ, होईएहिइ, होइज्जिहिइ, होइज्जेहिइ, होईइहिज्ज-ज्जा, होईएहिज्ज-ज्जा, होइज्जिहिज्ज-ज्जा, होइज्जेहिज्ज-ज्जा, इत्यादि प्रयोगो पण षड्भाषाचन्द्रिकामां देखाय छे

\+ षड्भाषामां-होईअन्तं, होइज्जन्तं, होईएज्ज-ज्जा, होइज्जेज्ज-ज्जा वगेरे प्रयोगो देखाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिण्	चिव्व चिम्म	(चि) एकठुं करवुं.
जिण्	जिव्व	(जि) जीतवुं.
सुण्	सुव्व	(श्रु) सांभळवुं.
हुण्	हुव्व	(हु) होम करवो.
थुण्	थुव्व	(स्तु) स्तुति करवी.
लुण्	लुव्व	(लू) कापवुं
पुण्	पुव्व	(पू) पवित्र करवुं.
धुण्	धुव्व	(धू) हलाववुं, कंपाववुं.
हण्	हम्म	(हन्) हणवुं, नाश करवुं.
खण्	खम्म	(खन्) खोदवुं.
दुह्	दुब्भ	(दुह्) दोहवुं.
लिह्	लिब्भ	(लिह्) चाटवुं.
वह्	वुब्भ	(वह्) वहन करवुं.
रुंध्	रुब्भ	(रुध्) रोकवुं.
डह्	डज्झ	(दह्) दाझवुं, बाळवुं.
वंध्	बज्झ	(बन्ध्) बांधवुं.
सं-रुंध्	संरुज्झ	(सं+रुध्) रोकवुं.
अणु-रुंध्	अणुरुज्झ	(अनु+रुध्) आज्ञा मानवी, अनुसरवुं, ताबे थवुं.
उव-रुंध्	उवरुज्झ	(उप+रुध्) अटकाववुं
गम्	गम्म	(गम्) जवुं.
हस्	हस्स	(हस्) हसवुं.
भण्	भण्ण	(भण्) बोलवुं, भणवुं.
छुव्	छुव्व	(छुप्) स्पर्श करवो.
रुव्	रुव्व	(रुद्) रोवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लह्	लब्भ	(लभ्) मेळववुं.
कह्	कत्थ	(कथ्) कहेवुं.
भुंज्	भुज्ज	(भुज्) खावुं.
हर्	हीर	(हृ) हरण करवुं, लई जवुं.
कर्	कीर	(कृ) करवुं.
तर्	तीर	(तृ) तरवुं.
जर्	जीर	(जॄ) जीर्ण थवुं.
विढव्, अज्ज्	विढप्प	(अर्ज्) पेदा करवुं, कमावुं.
जाण्	णव्व, णज्ज	(ज्ञा) जाणवुं.
वाहर्	वाहिप्प	(वि+आ+हृ) बोलवुं, बोलाववुं.
आढव्	आढप्प	(आ+रभ्) शरु करवुं, आरंभ करवो.
सिणिज्झ्	सिप्प	(स्निह्) स्नेह करवो.
सिच्	सिप्प	(सिच्–सिञ्च्) छांटवुं, सिंचवुं.
गह–गिण्ह्	घेप्प, घिप्प	(ग्रह्) ग्रहण करवुं.
छिव्	छिप्प	(स्पृश्) स्पर्श करवो.

'चिव्व' थी मांडीने **'छिप्प'** सुधीना धातुओ कर्मणि ने भावे प्रयोगमां ज विकल्पे वपराय छे. ज्यारे तेओनो प्रयोग थाय छे त्यारे कर्मणि भावेना प्रत्ययो लगाड्या सिवाय लागला ज ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडाय छे. अने **दीस** ने **वुच्च** धातुने आ प्रयोग नित्य थाय छे. ज्यारे **चिव्व जिव्व.** वगेरे धातुओनो प्रयोग न करवो होय त्यारे **चिण्–जिण्** वगेरे मूळ धातुओने कर्मणि भावे प्रत्यय लगाडी अंग तैयार करी ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी पण रूपो थाय छे. जेमके—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मणि— वर्तमान	विधि-आज्ञार्थ	भूतकाळ	भविष्य-काळ	क्रियातिपत्त्यर्थ.
त्री.ए.	त्री.ए.*	सर्वव.सर्वपु.	त्री.ए.	सर्वव.सर्वपु.
दीस-दीसइ.	दीसउ.	दीसीअ.	दीसिहिइ.	दीसंतो-न्ती-न्तं दीसेज्ज-ज्जा.
भण्-भण्णइ,	भण्णउ,	भण्णीअ,	भण्णिहिइ,	भण्णन्तो-न्ती-न्तं, भण्णेज्ज-ज्जा.
भणीअइ,	भणीअउ,	भणीअईअ,	भणिहिइ.	भणेज्ज-ज्जा.
भणिज्जइ,	भणिज्जउ,	भणिज्जईअ.		भणन्तो-न्ती-न्तं.
हस्-हस्सइ,	हस्सउ,	हस्सीअ,	हस्सिहिइ,	हस्सन्तो-न्ती-न्तं. हस्सेज्ज-ज्जा
हसीअइ,	हसीअउ,	हसीअईअ,	हसिहिइ.	हसन्तो-न्ती-न्तं.
हसिज्जइ.	हसिज्जउ.	हसिज्जईअ.		हसेज्ज-ज्जा.
थुण्-थुव्वइ.	थुव्वउ.	थुव्वीअ.	थुव्विहिइ.	थुव्वन्तो-न्ती-न्तं, थुव्वेज्ज-ज्जा.

* आर्षमां 'दीससी' वगेरे प्रयोगो पण देखाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थुणीअइ, थुणीअउ, थुणीअईअ थुणिहिइ, थुणन्तो-न्ती-न्त
थुणेज्ज-ज्जा.
थुणिज्जइ. थुणिज्जउ. थुणिज्जईअ.
ने-नेईअइ, नेईअउ, नेईअसी-ही-हीअ, नेहिइ. नेन्तो-न्ती-न्तं,
नेइज्जइ, नेइज्जउ. नेइज्जसी-ही-हीअ. नेज्ज-ज्जा.

शब्दो.

अउज्झा } स्त्री. (अयोध्या) नगरीनुं नाम.
अओज्झा }

अप्प वि. (अल्प) थोडुं.

अकाल पु. (सम) अकाळ, समय विना.

असब्भ वि. (असभ्य) खराब, सभ्य नहि.

आणाल पु. (आलान) हाथीने बांधवानो खूंटो, बन्धन.

इणं सर्व. (इदम्) ('इम' शब्दनुं प्रथमानुं एकवचन,) आ.

इयर वि. (इतर) अन्य, बीजुं, हीन.

उच्च } वि. (उच्चक) उन्नत, उंचुं.
उच्चअ }

उवयार पु. (उपकार) उपकार, आदर, सेवा.

कयग्घ वि. (कृतघ्न) उपकारने नहि माननार, निमकहराम.

किअंत वि. (कियत्) केटलुं.

केरिसी स्त्री. (कीदृशी) केवा प्रकारनी.

गुंजिअ न. (गुञ्जित) गणगणाट.

गुरुअ वि. (गुरुक) वडील, मोटा. गुरु.

चिंध } न. (चिह्न) चिन्ह, लांछन.
चिण्ह }

ठिअ वि. (स्थित) उभु रहेलुं.

तारा स्त्री. (सम) नक्षत्र, तारा.

जंत न. (यन्त्र) यंत्र, संचो.

थेर वि. (स्थविर) वृद्ध, वृद्ध जैन साधु.

देवी स्त्री. (सम) देवी, उत्तम स्त्री, पट्टराणी.

दयालु वि. (सम) दयावाळो.

दुआर }
दार } न. (द्वार) दरवाजो.
वार }

धवल वि. (सम) सफेद, श्वेत, धोळुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धुत्त वि. (धूर्त) ठग, छेतरनार.
नहयल न. (नभस्तल) आकाश तळ.
निम्मल वि. (निर्मल) स्वच्छ.
नीसंद पु. (निःष्यन्द) रसनुं झरवुं, झरणुं, गणवुं.
नायमग्ग पु. (न्यायमार्ग) नीतिमार्ग.
पओग पु. (प्रयोग) प्रयोग, साधन.
पच्चक्ख वि. (प्रत्यक्ष) साक्षात्, देखीतुं, खुल्लुं, आंख आगळनुं.
परिसा स्त्री. (पर्षद्) सभा.
परिसर पु. (सम) समीप.
भद्द[७५] } **भद्र** } वि. (भद्र) कल्याण कर नार, सुखी, मायाळु, वहालुं, न. कल्याण, सुख.
भुयग पु. (भुजग) सर्प.
मउण } **मोण** } न. (मौन) मौन.
मारुअ पु. (मारुत) पवन, वायु.
रउद्द } **रोद्द** } वि. (रौद्र) दारुण, भयंकर, भीषण.
रुक्ख पु. न. (वृक्ष) झाड.
राहु पु. (सम) राहु ग्रह.
वसण न. (व्यसन) कष्ट, दुःख.
विउस पु. (विद्वस्) विद्वान्.
विहि पु. (विधि) प्रकार, नसीब, कर्तव्य, आज्ञा.
वीसत्थ वि. (विश्वस्त) विश्वासवाळुं.
सज्झाय पु. (स्वाध्याय) शास्त्र पठन, आवृत्ति करवी.
सद्धा } **सड्ढा** } (श्रद्धा) धर्मराग, स्पृहा, विश्वास.
समणोवासग-य पु. (श्रमणोपासक) श्रावक, साधुओनो उपासक.
सहा स्त्री. (सभा) सभा.
सीयल वि. (शीतल) शीत स्पर्शवाळुं, टंडुं,
सुरहि वि. (सुरभि) सुगन्धवाळुं. न, सुगन्ध.
सुअ पु. (सुत) पुत्र.
मसाण } **सुसाण** } न (श्मशान) मसाण, स्मशानभूमि.

---

७५. शब्दमां 'द्र' संयुक्त व्यंजन होय तो 'द्र' ना 'र्' नो लोप विकल्पे थाय छे. जेमके—

चन्दो, चंद्रो, (चन्द्रः). भद्दो, भद्रो, (भद्रः).
रुद्दो, रुद्रो, (रुद्रः), समुद्दो, समुद्रो, (समुद्रः).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामासिक शब्दो.

अन्नुन्नरूव (अन्योन्यरूप) परस्पर स्वरूपवाळुं.
इंदियवग्ग (इन्द्रियवर्ग) इन्द्रियोनो समुदाय.
जोयणपरिमंडल (योजनपरिमंडल) गोळाकार योजन प्रमाण.
नयसहस्स (नयसहस्र) हजारो नीति.
भिच्चगुण (भृत्यगुण) नोकरोना गुणो.
महिलामण (महिलामनस्) स्त्रीओनुं मन.
मच्छवहगाइ (मत्स्यवधकादि) माछीमार वगेरे.
विविहचरित (विविधचरित्र) तरेह तरेहनां चरित्रो.
ससिरवि (शशिरवि) चन्द्र ने सूर्य.
सिहरपरंपरा (शिखरपरंपरा) शिखरोनी परंपरा.
सुयणदुज्जणविसेस (सुजनदुर्जनविशेष) सज्जन दुर्जननो भेद.

अव्यय.

केणइ (केनचित्) कोईवडे.
जहसत्ति (यथाशक्ति) शक्तिमुजब.
सव्वओ (सर्वतः) सर्व तरफ.
समंता (समन्तात्) चारे बाजु.
सक्खं (साक्षात्) प्रत्यक्ष.
हु } **खु** } (खलु) निश्चय, वितर्क संभावना, विस्मय ए अर्थमां अव्यय छे.

धातुओ.

अव-मन्न् (अव+मन्) अवज्ञा करवी, अपमान करवुं.
अव-लंब् (अव+लम्ब्) आश्रय लेवो.
उव-यर् (उप+कृ) उपकार करवो.
चव् (कथ्) बोलवुं.
पम्हस् (वि+स्मृ) भूलवुं, विस्मरण थवुं.
दम् (दम्) निग्रह करवो, दमवुं.
सं-प-मज्ज् (सं+प्र+मृज्) साफ करवुं, निर्मळ करवुं.
हिंड् (हिण्ड्) जवुं, भमवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो.

जे भावा पुव्वण्हे दीसीअ, ते अवरण्हे न दीसन्ति ।

जह पवणस्स रउद्देहिँ गुंजिएहिँ मंदरो न कंपिज्जइ, तह खलाणं असब्भेहिँ वयणेहिँ सज्जणाणं चित्ताइं न कंपीइरे ।

धम्मेण सुहाणि लब्भन्ति, पावाइं च नस्संति ।

समणोवासएहिँ चेइएसु जिणंदाणं पडिमाओ अच्चिज्जीअ ।

विउसाण परिसाए मुरुक्खेहिँ मउणं सेवीअउ अन्नह मु*क्खत्ति नज्जिहिन्ति ।

देवेहिं सीयलेण सुहफासेण सुरहिणा मारुएण जोयणपरिमंडला भूमी सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ ।

अग्गिणा नयरं डज्झीअ ।

गुरूणं भत्तीए सत्थाणं तत्ताइं णव्विहिरे ।

अज्ज वि अउज्झाए परिसरे उच्चेसु रुक्खेसु ठिएहिं जणेहिँ निम्मले नहयले धवला सिहरपरंपरा तस्स गिरिणो दीसइ ।

गुरूणमुवएसेण संसारो तीरइ।

भद्दे ! का तुमं *देवि व्व दीससि ।

सहा केरिसी वुच्चए।

जत्थ थेरा अत्थि सा सहा।

कलिम्मि अक्काले मेहो वरिसेइ, काले न वरिसेज्ज, असाहू पूइज्जन्ति, साहवो न पूईइरे ।

वेसाओ धणं च्चिय गिण्हन्ति, न हु धणेण ताओ घिप्पन्ति।

होइ गुरुयाणं गरुयं, वसणं लोयम्मि न उण इयराणं ।
जं ससिरविणो घेप्पंति, राहुणा न उण ताराओ ॥१॥
जलणो वि घेप्पइ, सुहं, पवणो भुयगो य केणइ नएण ।
महिलामणो न घेप्पइ, बहुएहि नयसहस्सेहि ॥२॥
पूइज्जंति दयालू जइणो, न हु मच्छबहगाई ।

---

*नियम ११ जुओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को कस्स एत्थ जणओ, का माया बंधवो य को कस्स ।
कीरंति सकम्मेहिं, जीवा अन्नुन्नरूवेहिं ॥३॥
सव्वस्स उवयरिज्जइ, न पम्हसिज्जइ परस्स उवयारो ।
विहलो अवलंबिज्जइ, उवएसो एस विउसाणं ॥४॥
रिउणो न वीससिज्जइ, कया वि वंचिज्जइ न वीसत्थो ।
न कयग्घेहि हविज्जइ, एसो नाणस्स नीसंदो ॥५॥
वन्निज्जइ भिच्चगुणो, न य वन्निज्जइ सुअस्स पच्चक्खे ।
महिलाओ नोभया वि हु, न नस्सए जेण माहप्पं ॥६॥
जीवदयाइ रमिज्जइ, इंदियवग्गो दमिज्जइ सयावि ।
सच्चं चेव चविज्जइ, धम्मस्स रहस्समिणमेव ॥७॥
दीसइ विविहचरित्तं, जाणिज्जइ सुयणदुज्जणविसेसो ।
धुत्तेहिं न वंचिज्जइ, हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥८॥

गुजराती वाक्यो.

लक्ष्मणवडे शत्रुनुं माथुं कपायुं.

श्रावकोथी गुरुओनां वचनो सद्दहाय छे. (सद्दह्)

श्रद्धावडे उपाध्याय पासेथी ज्ञान मेळवाय छे.

योगीओथी स्मशानमां मन्त्रोनुं ध्यान धराय छे. (ध्या)

वारणे नटलोकोवडे नचाय छे.

प्रजाए राजानी आज्ञानुं अपमान करवुं नहि.

चोरना कपाळमां अग्निवडे चिह्न कराय छे.

पहेलां कोई जळमां अने वनस्पतिमां जीव मानता न हता, पण हालमां यन्त्रना प्रयोगथी साक्षात् तेमां जीवो देखाय छे.

राजाना पुरुषो वडे चोर पकडायो, अने दंडायो.

जे धन न्याय रस्तेथी पेदा कराय छे, ते कदि पण नाश पामतुं नथी.

रात्रिमां मुनिओ वडे स्वाध्याय कराशे.

शिष्योए हंमेशां आचार्यनी सेवा करवी जोइए

हुं दुष्कर्मोवडे मुकाउं छुं.

तमे मोहवडे मूंझाता नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुं शत्रुवडे जीतायो.

तमे धर्मवडे रक्षाया.

जो हंमेश धर्म संभळाय, दान अपाय, शील धारण कराय, गुरुओ वन्दाय, विधिवडे जिनेश्वरनी प्रतिमाओ पूजाय, अने तत्त्वोनी श्रद्धा कराय तो आ संसार तराय.

थोडो पण उपकार कराय तो परलोकमां सुखी थवाशे.

बाळकवडे पितानी आज्ञा मनाई.

उत्तम पुरुषोवडे जे कार्य शरु कराय छे तेमां ते जरूर पार पामे छे.

पाठ २० मो.

कृदंत.

१. धातुना अंगने 'अ' के 'त' प्रत्यय लगाडवाथी कर्मणिभूत-कृदंत थाय छे.

आ प्रत्यय लगाडता पहेलां 'अ' नो 'इ' थाय, तेमज आ कृदंत विशेषण थाय छे, तेथी तेनुं स्त्रीलिंग करवुं होय तो 'आ' लगाडवाथी थाय छे.

पुं०		स्त्री०		नपुं०	
सुण+अ=सुणिओ सुण+त=सुणितो	(श्रुतः)	सुणिआ सुणिता	(श्रुता)	सुणिअं सुणितं	(श्रुतम्)

उदा० **रामेण देसणा सुणिआ**=रामवडे देशना संभळाई.

झा+अ=झाअं–झातं (ध्यातम्) ध्यान करायेलुं.

हस+अ=हसिअं–हसितं (हसितम्) हसायुं.

झाअ+अ=झाइअं–झाइतं–(ध्यातम्) ध्यान करायेलुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेमज संस्कृत कृदन्त उपरथी प्राकृत नियमानुसार फेरफार थईने पण कृदन्तो तैयार थाय छे. जेमके—

उक्किट्ठं (उत्कृष्टम्) श्रेष्ठ.
कडं } (कृतम्) करेलुं.
कयं }
गयं (गतम्) गयेलुं.
चत्तं (त्यक्तम्) त्याग करायेलुं.
दिट्ठं (दृष्टम्) जोयेलुं.
धत्थं (ध्वस्तं) नाश पामेलुं, पडेलुं.
नयं (नतम्) नमेल, नम्र.
निव्वुओ (निर्वृतः) शान्त थयेलो.
पण्णत्तं (प्रज्ञप्तम्) प्रतिपादन-करेलुं, कहेलुं.
मिट्ठं (मृष्टम्) मधुर, साफ, स्वच्छ.
संवुअं (संवृतम्) ढांकेलुं, संताडेलुं-
सिट्ठं (सृष्टम्) त्याग करायेलुं, मूकेलुं, छुटुं.
सुयं (श्रुतम्) सांभळेलुं.
हयं (हतम्) हणायेलुं.
हिअं (हृतम्) हरण करायेलुं.
वट्टं (वृत्तम्) बनेलुं, थयेलुं.

हेत्वर्थ कृदन्त.

२ धातुओना अंगने 'उं-तुं' प्रत्ययो लगाडवाथी हेत्वर्थ कृदन्त थाय छे. आ प्रत्यय लगाडवाथी पूर्वे 'अ' होय तो 'अ'नो 'इ' के 'ए' थाय छे. तेमज आर्षमां 'त्तए' ने 'त्तुं' प्रत्यय पण लागे छे. उदा०—

सुण+उं=सुणिउं, सुणेउं.
सुण+तुं=सुणितुं, सुणेतुं.
सुण+त्तए=सुणित्तए, सुणेत्तए.
सुण+त्तुं=सुणित्तुं, सुणेत्तुं.
(श्रोतुम्) सांभळवाने.

हस+उं=हसिउं, हसेउं.
हस+तुं=हसितुं, हसेतुं.
हस+त्तए=हसित्तए, हसेत्तए.
हस+त्तुं=हसित्तुं हसेत्तुं.
(हसितुम्) हसवाने.

झाअ+उं=झाइउं, झाएउं.
झाअ+तुं=झाइतुं, झाएतुं.
झाअ+त्तए=झाइत्तए, झाएत्तए.
झाअ+त्तुं=झाइत्तुं, झाएत्तुं.
झा+उं=झाउं.
झा+तुं=झातुं.
} (ध्यातुम्) ध्यान करवाने.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चय=चइउं, चएउं, चइत्तए, चएत्तए, चइत्तुं, चएत्तुं. (त्यक्तुम्) त्याग करवाने.

कर=करिउं, करेउं, करित्तए, करेत्तए, करित्तुं, करेत्तुं. (कर्तुम्) करवाने.

उपयोगी अनियमित हेत्वर्थ कृदन्तो.

घेत्तुं (ग्रहीतुम्) ग्रहण करवाने.
वोत्तुं (वक्तुम्) बोलवाने.
रोत्तुं (रोदितुम्) रोवाने,
भोत्तुं (भोक्तुम्) खावाने.
बोद्धुं (बोद्धुम्) जाणवाने.

मोत्तुं (मोक्तुम्) मुकवाने.
दट्ठुं (द्रष्टुम्) जोवाने.
काउं } (कर्तुम्) करवाने.
कट्टुं }

संबन्धक भूतकृदन्त.

३ धातुना अंगने **तुं, उं, अ, तूण, ऊण, तुआण, उआण** प्रत्ययो लगाडवाथी संबन्धक भूतकृदन्त थाय छे, आ प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' के 'ए' थाय छे, अने आर्षमां **त्ता, त्ताणं, त्तु,** अने **इय,** प्रत्यय पण लागे छे.

हस+तुं=हसितुं, हसेतुं.
हस+उं=हसिउं, हसेउं.
हस+अ=हसिअ, हसेअ.
हस+तूण=हसितूण, हसेतूण.
हस+ऊण=हसिऊण, हसेऊण.
हस+तुआण=हसितुआण, हसेतुआण.
हस+उआण=हसिउआण, हसेउआण.
हस+त्ता=हसित्ता, हसेत्ता.
हस+त्ताणं=हसित्ताणं, हसेत्ताणं.
हस+त्तु=हसित्तु, हसेत्तु.
हस+इय=हसिय.

(हसित्वा) हसीने.

झाअ+तुं=झाइतुं, झाएतुं.
झाअ+झाउं=झाइउं, झाएउं.
झाअ+अ=झाइअ, झाएअ.
झाअ+तूण=झाइतूण, झाएतूण.
झाअ+ऊण=झाइऊण, झाएऊण.
झाअ+तुआण=झाइतुआण, झाएतुआण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झाअ+उआण=झाइउआण, झाएउआण
झाअ+त्ता=झाइत्ता, झाएत्ता.
झाअ+त्ताणं=झाइत्ताणं, झाएत्ताणं.
झाअ+त्तु=झाइत्तु, झाएत्तु.
झाअ+इय=झाइय.
(ध्यात्वा) ध्यान करीने.

झा=झातुं, झाउं, झाअ, झातूण, झाऊण, झातुआण, झाउआण.
झाइअ. (ध्यात्वा) ध्यान धरीने.

अनियमित संबंधक भूतकृदन्तो.

घेत्तूण, घेत्तुआण (गृहीत्वा) ग्रहण करीने
वोत्तूण, वोत्तुआण (उक्त्वा) कहीने
रोत्तूण, रोत्तूआण (रुदित्वा) रोइने.
भोत्तूण भोत्तुआण (भुक्त्वा) खाइने.
मोत्तूण, मोत्तुआण (मुक्त्वा) मुकीने.
दट्ठूण, दट्ठुआण (दृष्ट्वा) जोइने.
काऊण, कट्टु } काऊआण (कृत्वा) करीने

गन्तूण, गंतुआण (गत्वा) जइने.
उट्ठाए, उट्ठाय (उत्थाय) उठीने.
गच्चा[७६] (गत्वा) जइने.
णच्चा (ज्ञात्वा) जाणीने.
बुज्झा (बुद्ध्वा) बोध पामीने.
भोच्चा (भुक्त्वा) खाइने.
मोच्चा (मुक्त्वा) मुकीने.
मच्चा (मत्वा) विचारीने.
वंदित्ता (वंदित्वा) वंदीने.

सुच्चा-सोच्चा (श्रुत्वा) सांभळीने.
सुत्ता (सुप्त्वा) सूइने.
साहट्टु (संहृत्य) समेटीने, संकोचीने.

आ संबंधक भूतकृदन्तना प्रत्ययो संबंधी जे **'ण'** तेनो अनुस्वार सहित पण प्रयोग थाय छे. जेम—

---

७६. शब्दनी अंदर त्व नो च्च, थ्व नो च्छ, द्व नो ज्ज अने ध्व नो ज्झ प्रयोगने अनुसारे थाय छे.

किच्चा (कृत्वा), पिच्छी (पृथ्वी), विज्जं (विद्वान्), बुज्झा (बुद्ध्वा).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तूणं, ऊणं, तुआणं, उआणं=हसितूणं, हसिऊणं, हसितुआणं, हसिउआणं वगेरे.

वर्तमान कृदन्त.

४ धातुओनुं वर्तमान कृदन्त करवुं होय तो तैयार थयेला धातुओना कर्तरि अंगने 'न्त–माण' प्रत्ययो पुल्लिंग अने नपुंसकलिंगमां लागे छे, अने स्त्रीलिंगमां ई–न्ती–न्ता–माणी–माणा प्रत्ययो लगाडाय छे. आ प्रत्ययो लगाडतां पूर्वे 'अ' होय तो 'अ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे, जेम —

पु०

हस+न्त=हसन्तो, हसेन्तो }
हस+माण=हसमाणो, हसेमाणो } (हसन्–हसमानः) हसतो.

नपुं०

हसन्तं, हसेन्तं. }
हसमाणं, हसेमाणं. } (हसत्–हसमानम्) हसतुं.

स्त्री०

हस+ई=हसई, हसेई. }
हस+न्ती=हसन्ती, हसेन्ती. }
हस+न्ता=हसन्ता, हसेन्ता. } (हसन्ती–हसमाना) हसती.
हस+माणी=हसमाणी, हसेमाणी. }
हस+माणा=हसमाणा, हसेमाणा. }

पु०	नपुं०	स्त्री०
होअ–होअन्तो	होअन्तं	होअई, होएई.
,, होएन्तो	होएन्तं	होअन्ती, होएन्ती.
		होअन्ता, होएन्ता.
,, होअमाणो	होअमाणं	होअमाणी, होएमाणी.
,, होएमाणो	होएमाणं	होअमाणा, होएमाणा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो-होन्तो	होन्तं	होई.
,, हुन्तो	हुन्तं	होन्ती, हुन्ती, होन्ता, हुन्ता.
,, होमाणो	होमाणं	होमाणी, होमाणा.
(भवन्-भवमानः)	(भवत्-भवमानम्)	(भवन्ती-भवमाना)
थतो.	थतुं.	थती.

कर्मणि वर्तमान कृदन्त.

५ धातुनुं कर्मणि वर्तमान कृदन्त करवुं होय तो धातुना कर्मणि अंगने आ ज प्रत्ययो लगाडवाथी कर्मणि वर्तमान कृदन्त थाय छे.

पु०	न०	स्त्री०
हसिज्ज-हसिज्जन्तो	हसिज्जन्तं	हसिज्जई, हसिज्जेई.
हसिज्जेन्तो	हसिज्जेन्तं	हसिज्जन्ती, हसिज्जेन्ती.
हसिज्जमाणो	हसिज्जमाणं	हसिज्जन्ता, हसिज्जेन्ता.
हसिज्जेमाणो	हसिज्जेमाणं	हसिज्जमाणी,
		हसिज्जेमाणी,
		हसिज्जमाणा,
		हसिज्जेमाणा.
हसीअ-असीअन्तो	हसीअन्तं	हसीअई, हसीएई.
हसीएन्तो	हसीएन्तं	हसीअन्ती, हसीएन्ती.
हसीअमाणो	हसीअमाणं	हसीअन्ता, हसीएन्ता.
हसीएमाणो	हसीएमाणं	हसीअमाणी,
		हसीएमाणी.
		हसीअमाणा,
		हसीएमाणा.
(हस्यमानः) हसातो.	(हस्यमानम्) हसातुं.	(हस्यमाना) हसाती.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पु०	नपुं०	स्त्री०
दीस-दीसन्तो दीसेन्तो	दीसन्तं दीसेन्तं	दीसई, दीसेई, दीसन्ती, दीसेन्ती, दीसन्ता, दीसेन्ता,
दीसमाणो दीसेमाणो	दीसमाणं दीसेमाणं	दीसमाणी, दीसेमाणी, दीसमाणा, दीसेमाणा
(दृश्यमानः) देखातो.	(दृश्यमानम्) देखातुं.	(दृश्यमाना) देखाती.

भविष्य कृदन्त.

६ धातुने **'इस्स'** प्रत्यय लगाडी वर्तमान कृदन्तना प्रत्ययो लगाडवाथी भविष्य कृदन्त थाय छे.

पु०

जिण+इस्स=जिणिस्सन्तो
जिणिस्समाणो } (जेष्यन्-जेष्यमाणः) जिततो हशे.

नपुं०

जिणिस्सन्तं
जिणिस्समाणं } (जेष्यत्-जेष्यमाणम्) जिततु हशे.

स्त्री०

जिणिस्सई, जिणिस्सन्ती, जिणिस्समाणी
जिणिस्सन्ता, जिणिस्समाणा } (जेष्यन्ती-जेष्यमाणा) जितती हशे.

*विध्यर्थ कृदन्त.

७ धातुना अंगने **तव्व, अव्व, अणीअ (अणीय)** अने **अणिज्ज** प्रत्ययो लगाडवाथी विध्यर्थ कर्मणि कृदन्त थाय छे. तेमज **'तव्व'** अने **'अव्व'** प्रत्यय लगाडता पूर्वे **'अ'** होय तो 'अ' नो **'इ'** के **'ए'** थाय छे. जेम—

---

*प्राकृत रूपमालामां तैयार कृदन्तोनुं कोष्टक आपेलुं छे. वधु जिज्ञासुए त्यांथी कर्मणि भूतकृदन्त आदि कृदन्तो जोई लेवां.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोह–बोहिअव्वं, बोहेअव्वं, बोहणीअं, बोहितव्वं, बोहेतव्वं, बोहणिज्जं } (बोद्धव्यम्–बोधनीयम्) जाणवा लायक छे.

झाअ–झाइअव्वं, झाएअव्वं, झाअणीअं,
झाअ–झाइतव्वं, झाएतव्वं, झाअणिज्जं
झा=झाअव्वं, झाणीअं.
झा=झातव्वं, झाणिज्जं. } (ध्यातव्यम्–ध्यानीयम्) ध्यान करवा लायक.

अनियमित विध्यर्थ कृदंतो.

कायव्वं (कर्तव्यम्) करवा लायक.

घेत्तव्वं (ग्रहीतव्यम्) ग्रहण करवा लायक.

दट्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) देखवा लायक, जोवा लायक.

भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) भोगववा लायक, खावा लायक.

मोत्तव्वं (मोक्तव्यम्) मुकवा लायक.

रोत्तव्वं (रोदितव्यम्) रोवा लायक.

हंतव्वं (हन्तव्यम्) हणवा लायक.

८ मूळ धातुओने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी कर्तृसूचक कृदन्त बने छे.

हस्=हसिरो (हसनशीलः) हसनार.

हसिरा, हसिरी } (हसनशीला) हसनारी.

हसिरं (हसनशीलम्) हसनारुं.

रोव्=रोविरो (रुदनशीलः) रुदन करनारो.

रोविरा, रोविरी } (रुदनशीला) रुदन करनारी.

रोविरं (रुदनशीलम्) रुदन करनारुं.

भम्=भमिरो (भ्रमणशीलः) भमनारो.

भमिरा, भमिरी } (भ्रमणशीला) भमनारी.

भमिरं (भ्रमणशीलम्) भमनारुं.

ए प्रमाणे **लज्जिरो**=लज्जावाळो, **जम्पिरो**=बोलनार, **वेविरो**=कंपनार, **नमिरो**=नम्र, **गव्विरो**=गर्विष्ठ. वगेरे करी लेवा.

९ कर्तृसूचक कृदन्तो सिद्ध संस्कृत उपरथी पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पायगो / **पायओ** } (पाचकः) पकावनार.
दायगो / **दायओ** } (दायकः) आपनार.
जायगो / **जायओ** } (याचकः) मागनार.
कुंभआरो / **कुंभारो** } (कुम्भकारः) कुंभार.
लोहयारो / **लोहारो** } (लोहकारः) लुहार.
कत्ता (कर्ता) करनार.
भत्ता / **भट्टा** } (भर्ता) पोषण करनार.
गंता (गन्ता) जनार.
सुवण्णआरो / **सुवण्णगारो** } (सुवर्णकारः) सोनी.

१० आ कृदन्तोमां हेत्वर्थ कृदन्त अने संबन्धक भूतकृदन्तने अव्यय तरीके गणवां अने बीजा कृदन्तोने विशेषण तरीके गणवां.

केटलांएक उपयोगी अनियमित कर्मणि भूतकृदन्तो.

अप्फुण्णो (आक्रान्तः) दुःखित, दबायेल.
आढत्तो / **आरद्धो** } (आरब्धः) शरू करायेल.
उक्कोसं (उत्कृष्टम्) श्रेष्ठ.
७७**किलिन्नो** (क्लिन्नः) भीनुं थयेल.
खित्तं (क्षिप्तम्) दूर करायेलुं.
गिलाणं (ग्लानम्) ग्लानि पामेलुं, रोगी.
गुत्तो (गुप्तः) रक्षण करायेल, संताडेल.
चक्खिअं (आस्वादितम्) चखायेलुं.
छित्तं (स्पृष्टम्) स्पर्श करायेल.
छूढं (क्षिप्तम्) फेंकायेलुं, नाखेलुं.
छिक्को / **छुत्तो** } (छुप्त) स्पर्श करायेल.
जढं (त्यक्तम्) त्याग करायेल.
झोसिअं (क्षिप्तम्) नाखेलुं.

---

७७. शब्दनी अन्दर संयुक्त व्यंजननो अन्त्याक्षर 'ल' होय तो तेनी पूर्वे 'इ' मूकाय छे. जेम—

किलिन्नो (क्लिन्नः) | सिलिट्ठं (श्लिष्टम्) | गिलायइ } (ग्लायति)
किलेसो (क्लेशः) | सिलोओ–गो (श्लोकः) | गिलाइ }

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठड्ढो (स्तब्धः) अक्कड, अभिमानी.

तत्थं } (त्रस्तम्) त्रास पामेलुं.
तट्ठं
हित्थं

दिण्णं (दत्तम्) अपायेलुं.

दक्को } (दष्टः) दंश दीधेलो.
दट्ठो

दुद्धं (दुग्धम्) दोहेलुं, दूध.

दड्ढो } (दग्धः) बाळेल.
दद्धो

निसुट्टो (निपातितः) मारेल, पाडी नाखेल.

निमिअं (स्थापितम्) स्थापन करायेलुं.

निच्छूढं (उद्वृत्तम्) बहार काढेल, ऊंचे फेंकेल.

पम्हुट्टो (दे. विस्मृतं) नाश पामेल, भूली गयेल

पल्हत्थं } (पर्यस्तम्) फेंकेलुं, दूर करेलुं.
पल्लोट्टं

फुडं (स्पृष्टम्) स्पर्श करायेलुं

फुडं (स्पष्टम्) स्पष्ट करायेलुं.

मुद्धं (मुग्धम्) मोहित, मूर्ख.

मिलाणं (म्लानम्) सुकायेलुं, चिमळायलुं, म्लानि पामेलुं.

मुक्को } (मुक्तः) छोडायेल, त्याग करायेल.
मुत्तो

लुअं (लूनम्) कपायेलुं.

लुक्को } (रुग्णः) रोगी.
लुग्गो

लिहक्को (नष्टः) नाशी गयेल, नाश, पामेल.

विढत्तं (अर्जितम्) पेदा करेलुं.

वोलीणो (अतिक्रान्तः) उल्लंघन करायेल.

वोसट्टो (विकसितः) विकास पामेल.

सक्को } (शक्तः) समर्थ.
सत्तो

सुत्तो (सुप्तः) सुतेलो.

सिलिट्ठो (श्लिष्टः) भेटेल.

सणिद्धं } (स्निग्धम्) मायाळु.
सिणिद्धं
निद्धं

शब्दो.

अच्चय पु. (अत्यय) विनाश, मरण, विपरीत आचरण.

अग्गि पु. (अग्नि) अग्नि.

अमरी स्त्री. (सम) देवी.

अलंकिअ वि. (अलङ्कृत) शोभित.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगम पु (सम) शास्त्र, सिद्धान्त.

आयइ स्त्री. (आयति) भविष्यकाळ, भावि.

आलोयणा स्त्री. (आलोचना) प्रायश्चित्त माटे दोषो कहेवा, देखाडवुं, वतावधुं.

आहि पु. स्त्री. (आधि) मानसिक पीडा.

उम्मत्त वि. (उन्मत्त) मत्त, गांडो.

उवाय पु. (उपाय) उपाय.

काया स्त्री. (सम) देह.

किन्नरी स्त्री. (सम) व्यन्तरदेवी.

कुमारत्तण न. (कुमारत्व) कुमारपणुं.

गब्भ पु. (गर्भ) गर्भ.

चरम } **चरिम** } वि. (सम) छेल्लुं.

जंबूकुमार पु. (सम) नाम छे.

जाम पु. (याम) प्रहर.

जीवलोग पु. (जीवलोक) दुनिया, जगत.

दव्वलिंग न. (द्रव्यलिंग) मुनिनो, वेष, बाह्यवेष.

धणवंत वि. (धनवत्) धनवाळो.

नाणि वि. (ज्ञानिन्) ज्ञानवाळो.

निद्दा स्त्री. (निद्रा) निद्रा.

निअम पु. (नियम) निश्चय, लीधेली प्रतिज्ञा.

पडियार पु. (प्रतिकार) आवती वस्तुने रोकवुं, रोगनो इलाज, बदलो.

पच्चक्खाण न. (प्रत्याख्यान) प्रत्याख्यान.

परिक्खण न. (परीक्षण) परीक्षा करवी.

परिणीअ वि. (परिणीत) परणेल.

परिच्चत्त } **परिचत्त** } वि. (परित्यक्त) त्याग करायेल.

पसु पु. (पशु) पशु.

पाण पु. न. ब. (प्राण) इन्द्रियादि दश प्राण.

पाहुड न. (प्राभृत) भेट, उपहार.

पीडा } **पीला** } स्त्री. (पीडा) पीडा, दुःख.

पिअसही स्त्री. (प्रियसखी) प्रेमपात्र सखी.

पोरुस } **पोरिस** } न. (पौरुष) पुरुषत्व, पुरुषार्थ.

महादेवी (सम.) पटराणी.

मुक्खत्थि वि. (मोक्षार्थिन्) मोक्षनो अर्थी.

रमणी स्त्री. (सम) सुंदर स्त्री.

लग्ग वि. (लग्न) संबंध पामेलुं, लागेलुं.

वत्थु न. (वस्तु) पदार्थ, चीज.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वयणिज्ज वि. (वचनीय) निंदवा लायक.

वायस पु. (सम) कागडो.

वियक्खण वि. (विचक्षण) होंशियार, कुशळ.

संवेग पु. (सम) भवथी वैराग्य थवो.

सत्ति स्त्री. (शक्ति) शक्ति, सामर्थ्य.

समत्थ वि. (समर्थ) समर्थ.

साविगा / **साविआ** स्त्री. (श्राविका) श्राविका.

सिद्धि स्त्री. (सम) मोक्ष.

सुह न. (शुभ) मंगळ, कल्याण.

सोग पु. (शोक) शोक.

सुविज्ज पु. (सुवैद्य–सुविद्यः) सारो वैद्य, सारी विद्यावाळो.

सामासिक शब्दो.

अजसघोसणा (अयशोघोषणा) अपजशनी घोषणा.

कालसप्प (कालसर्प) काळरूपी सर्प,

जीवदयामय (सम) जीवदयारूप.

जुवइपिया (युवतिपिता) स्त्रीनो पिता.

निययकुलं (निजककुलं) पोताना कुळने.

अव्यय.

नूण–नूणं (नूनम्) निश्चय, विचार, कारण.

धातुओ.

अभिनन्द् (सम) प्रशंसा करवी.

आलोय् (आ+लोक्) देखवुं, तपासवुं.

उवज्ज् (उत्+पद्य) उत्पन्न थवुं.

उव्वह् (उद्+वह्) वहन करवुं, पालन करवुं.

खंड् (खण्ड्) तोडवुं, ककडा करवा.

गा (गै) गावुं, गान करवुं.

पेच्छ् (प्र+इक्ष्) जोवुं.

वज्ज् (वृज्-वर्ज्) त्याग करवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो.

पाणाणमच्चए वि जीवेहिं अकरणिज्जं न कायव्वं, करणीअं च कज्जं न मोत्तव्वं ।
धम्मं कुणमाणस्स सहला जंति राईओ ।
जेण इमा पुहवी हिंडिऊण दिट्ठा सो नरो नूणं वत्थूणं परिक्खणे वियक्खणो होइ ।
एगो जायइ जीवो, एगो मरिऊण तह उवज्जेइ ।
एगो भमइ संसारे, एगो च्चिय पावइ सिद्धिं ॥१॥
कालसप्पेण खाइज्जन्ती काया केण धरिज्जइ, नत्थि तत्थ को वि उवाओ ।
सव्वे जीवा जीविउं इच्छन्ति, न मरित्तए, तओ जीवा न हंतव्वा ।
'परस्स पीडा न कायव्वा' इइ जेण न जाणिअं तेण पढिआए विज्जाए किं ? ।
मुक्खत्थीहिं जीवदयामओ धम्मो करेअव्वो ।

नाणेणं चिय नज्जइ, करणिज्जं तह य वज्जणिज्जं च ।
नाणी जाणइ काउं, कज्जमकज्जं च वज्जेउं ॥२॥
जं जेण पावियव्वं, सुहमसुहं वा जीवलोयम्मि ।
तं पाविज्जइ नियमा, पडियारो नत्थि एयस्स ॥३।
जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता ।
परिणीआए दंडो, जुवइपिआ दुक्खिओ निच्चं ॥४॥
जं चिय खमइ समत्थो, धणवंतो जं न गव्विरो होइ ।
जं च सुविज्जो नमिरो[७८], तिसु तेसु अलंकिआ पुहवी ॥५॥
का सत्ती तीए तस्स पुरओ ठाइउं ।
लज्जा चत्ता, सीलं च खंडिअं, अजसघोसणा दिण्णा ।
जस्स कए पिअसहि ! सो चेअ जणो अजणो जाओ ॥६॥

---

७८. तृतीया विभक्तिने स्थाने कोई स्थाने सप्तमी विभक्ति पण थाय छे त्रिभिः तैः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिच्चइय पोरुसं अपासिऊण निययकुलं, अगणिऊण वयणीअं, अणालोइऊण आयइं, परिचत्तं तेण दव्वलिङ्गं ।

जं जिणेहिं पन्नत्तं तमेव सच्चं इअ बुद्धी जस्स मणे निच्चलं तस्स सम्मत्तं ।

चोरो धणिणो धणं हरित्तए घरे पविसीअ ।

पच्चूसे जिणे अच्चिय, गुरू य वंदित्ता, पच्चक्खाणं च करित्तु, पच्छा य भोयणं कुज्जा।

गुरुणा धम्मं कुणमाणाणं सावगाणं, समायरंतीणं च साविआणं उवएसो दिण्णो ।

पिउणा सिक्खीअमाणो पुत्तो सिक्खिज्जन्ती य पुत्ती गुणे लहेज्ज ।

सा महादेवी सुराणं रमणीहिं सळहिज्जंती, किन्नरीहिं गाइज्जंती, बुहेहिँ थुव्वंती, बंधुणा मित्तेण य अभिनंदिज्जंती गब्भमुव्वहइ ।

जत्थ रमणीण रूवं, रमणिज्जं पेच्छिऊण अमरीओ । लज्जंतीओ व्व चिंताइ, कह वि निद्दं न पावंति ॥७॥

गायंता सज्झायं, झायंता धम्मझाणमकलंकं ।

जाणंता मुणियव्वं, मुणिणो आवस्सए लग्गा ॥८॥

गुजराती वाक्यो

जंबूकुमारे कुमारपणामां पोतानी सर्व ऋद्धि (चय्) त्याग करीने चारित्र लीधुं. (गिण्ह्)

हुं शास्त्रो भणवाने (अहिज्ज्) गुरुपासे जाउं छुं.

गुरु प्रमाद करता (पमज्ज्) साधुने भणवाने माटे (पढ्) कहे छे.

रात्रिना पहेला प्रहरमां सूइने (सुव्) अने छेल्ला प्रहरमां जागीने (जग्ग्) करातो (कीर्) अभ्यास स्थिर थाय छे.

मनुष्योमां सोनी, पक्षिओमां कागडो, अने पशुओमां शियाळ लुच्चुं होय छे.

पाठशाळामां अध्ययन करती (कुण्) कन्याओने तमे इनाम आपो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माणसोनी आधि हरवानो (**हर्**) शास्त्रोना श्रवण सिवाय बीजो कोइ उपाय नथी.

अग्निवडे बलती (**डज्झ्**) स्त्रीनुं तेणे रक्षण कर्युं. (**रक्ख्**)

रामवडे कहेवाती (**कह्**) वार्ता सांभळीने (**सुण्**) वैराग्य पाम्यो.

जाणवा लायक (**जाण्**) भावोने तुं जाण.

गांडा माणसे पोतानुं वस्त्र अग्निमां नाख्युं (**खिव्**), अने ते बळी गयुं (**डह्**).

साधुओनी सेवा वडे तेना दिवसो गया. (**वोलीण**)

जीवोनो वध करतो अने मांसनुं भक्षण करतो (**भक्ख्**) मनुष्य राक्षस कहेवाय छे.

ते पापोनी आलोचना लेवा (**गिण्ह्**) गुरुनी पासे जतां (**वच्च्**) लज्जा पामे छे.

ते समाधिपूर्वक मृत्यु पामीने (**पाव्**) स्वर्गमां देव थयो.

रोता (**रुव्**) बाळकने तुं पीड नहि.

हसतो बाळक बधाने प्रिय लागे छे.

ग्रहण करवा लायकने (**गह्-गिण्ह्**) ग्रहण कर, त्याग करवा लायकने (**चय्**) त्याग कर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ २१ मो.

व्यंजनान्त नाम.

१ प्राकृतमां अन्त्य व्यंजनोनो लोप थाय छे पण केटलाएक शब्दोमां विशेषता छे. जेमां अन्त्य व्यंजननो लोप थाय छे तेनां रूपो पूर्वे आपेलां अकारान्त–इकारान्त–उकारान्त पुल्लिंग अने नपुंसकलिंग नामोनी माफक जाणी लेवां. **जसो** [७९] **(यशस्), तमो (तमस्), चक्खू (चक्षुष्), जम्मो (जन्मन्), धणी (धनिन्) हत्थी (हस्तिन्),** इत्यादि.

---

७९. 'स्' अन्तवाळां नामो अने 'न्' अन्तवाळां नामो पुल्लिंगमां ज वपराय छे, पण दाम (दामन्), सिर (शिरस्), नह (नभस्), शब्दोनो प्रयोग नपुंसकलिंगमां ज थाय छे.

पु०	पु०
उरो (उरस्) वक्षस्थल.	जम्मो (जन्मन्) जन्म.
जसो (यशस्) यश.	नम्मो (नर्मन्) हांसी, क्रीडा.
तमो (तमस्) अंधकार.	मम्मो (मर्मन्) मर्म, रहस्य.
तेओ (तेजस्) तेज.	दामं (दामन्) माला.
पओ (पयस्) दुध, जल.	सिरं (शिरस्) माथुं.
तवो (तपस्) तप.	नहं (नभस्) आकाश.

विशेष—कोई ठेकाणे नपुंसकलिंगमां पण प्रयोग देखाय छे. तेथी—

सेयं (श्रेयस्) कल्याण.	सम्मं (शर्मन्) कल्याण.
वयं (वयस्) उंमर.	चम्मं (चर्मन्) चामडुं.
सुमणं (सुमनस्) सारुं मन, उदार चित्त.	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे शब्दोमां अन्त्य व्यंजननो लोप थतो नथी, तेमां नीचे प्रमाणे फेरफार थाय छे—

२ **विद्युत्** सिवायना व्यंजनान्त स्त्रीलिंग शब्दोमां अन्त्य व्यंजननो 'आ' के 'या' थाय छे.

सरिआ-या	स्त्री,	(सरित्) नदी.
पाडिवआ-या / **पडिवआ-या**	,,	(प्रतिपद्) एकम, पडवो.
आवआ-या	,,	(आपत्) दुःख, आपदा.
संपआ-या	,,	(सम्पत्) लक्ष्मी.
विज्जु	,,	(विद्युत्) वीजळी.

३ व्यंजनान्त स्त्रीलिंगमां अन्त्य 'र्' नो 'रा' थाय छे, तेमज **क्षुध्**ना 'ध्' नो 'हा', **दिश्** ना 'श्' नो 'सा', **ककुभ्**ना 'भ्'नो 'हा' थाय छे अने **अप्सरस्** शब्दना 'स्' नो 'सा' विकल्पे थाय छे.

गिरा	स्त्री.	(गिर्) वाणी.	**दिसा**	स्त्री.	(दिश्) दिशा.
पुरा	,,	(पुर्) नगरी.	**कउहा**	,,	(ककुभ्) दिशा.
धुरा	,,	(धुर्) धुंसरी, अग्र.	**अच्छरसा** / **अच्छरा**	स्त्री.	(अप्सरस्) अप्सरा, देवयोनि विशेष.
छुहा	,,	(क्षुध्) भुख.			

४ **शरद्** आदि शब्दोमां अन्त्य व्यंजननो 'अ' थाय छे. **प्रावृष्** ना अन्त्य 'ष्' नो 'स' थाय छे; तेमज **आयुष्** शब्दना अन्त्य 'ष्' नो 'स' अने **धनुष्** शब्दना ष् नो 'ह' विकल्पे थाय छे. 'शरद्' अने 'प्रावृष्' शब्दनां रूपो पुल्लिगमां वपराय छे.

प० ए०

सरओ	पु. (शरद्) शरदऋतु.	**आउसो-सं** / **आऊ-उं**	पु. न.	(आयुष्) आवरदा, आयु.
भिसओ	पु. (भिषज्) वैद्य.	**धणुहं** / **धणू**	पु. न.	(धनुष्) धनुष्य, कामठुं.
पाउसो	पु. (प्रावृष्) वर्षाऋतु.			

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ पुल्लिंगमां **अन्** अन्तवाळा जे नामो छे तेना **'अन्'** नो **'आण'** विकल्पे थाय छे, ज्यारे **'आण'** न थाय त्यारे **'न्'** नो लोप थाय छे. तेथी आ प्रमाणे तैयार शब्दो थाय छे.

अद्ध–अद्धाण पु. (अध्वन्) मार्ग, रस्तो.
अप्प–अप्पाण पु. (आत्मन्) आत्मा.
उच्छ–उच्छाण पु. (उक्षन्) वृषभ, बळद.
गाव–गावाण पु. (ग्रावन्) पत्थर.
जुव–जुवाण पु. (युवन्) जुवान,
तक्ख–तक्खाण, **तच्छ–तच्छाण** पु. (तक्षन्) सुतार.
पूस–पूसाण पु. (पूषन्) सूर्य.
बम्ह–बम्हाण पु. (ब्रह्मन्) ब्रह्मा.
महव–महवाण पु. (मघवन्) इन्द्र.
मुद्ध–मुद्धाण पु. (मूर्धन्) मस्तक, माथुं.
राय–रायाण पु. (राजन्) राजा.
स–साण पु. (श्वन्) कूतरो.
सुकम्म, **सुकम्माण** वि. (सुकर्मन्) सारां कर्मवाळो.

६ आ शब्दोनां रूपो अकारान्त पुल्लिंग जेवां थाय छे. पण मूळ शब्दो **'अद्ध–अप्प'** आदिनां रूपोमां केटलीएक विशेषता छे. ते नीचे प्रमाणे छे.

प्रथमाना एकवचनमां **आ** प्रत्यय, प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां तेमज चतुर्थी, पंचमी अने षष्ठीना एकवचनमां **णो** प्रत्यय अने तृतीयाना एकवचनमां **णा** प्रत्यय, तेमज द्वितीयाना एकवचनमां अने चतुर्थी ने षष्ठीना बहुवचनमां **'इणं'** प्रत्यय, आटला प्रत्ययो वधारे लगाडवामां आवे छे. तेमज चतुर्थी अने षष्ठी विभक्ति सिवाय *'**णो**' प्रत्यय लगाडतां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छे.

---

*षड्भाषा चन्द्रिकामां षष्ठीना एकवचनमां पण 'णो' प्रत्ययनी पूर्वे दीर्घ स्वर करेल छे तेथी बम्हाणो, अप्पाणो, रायाणो वगेरे पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपरना नियमथी आ प्रमाणे प्रत्ययो तैयार थाय छे.

एकव.	बहुव.	बम्ह	(ब्रह्मन्)
प. आ.	णो	बम्हा	बम्हाणो
बी. इणं	णो	बम्हिणं	,,
त. णा	०.	बम्हणा	०
च-छ. णो	इणं	बम्हणो	बम्हिणं
पं. णो	०	बम्हाणो	०
स. ०	०	०	०
सं. ०.	०	०	०

अन् छेडावाळां नामोमां आटलां रूपो अधिक थाय छे. बाकीनां 'देव' प्रमाणे.

बम्ह-बम्हाण शब्दनां संपूर्ण रूपो.

	एकव.	बहुव.
प.	बम्हो, बम्हाणो, बम्हा.	बम्हा, बम्हाणा बम्हाणो.
बी.	बम्हं, बम्हाणं, बम्हिणं.	बम्हे, बम्हा, बम्हाणे. बम्हाणा, बम्हाणो.
त.	बम्हेण-णं, बम्हाणेण-णं. बम्हणा.	बम्हेहि-हिँ-हिं. बम्हाणे-हिँ-हिं.
च.	बम्हाय, बम्हस्स, बम्हाणाय, बम्हाणस्स, बम्हणो.	बम्हाण, बम्हाणं, बम्हाणाण, बम्हाणाणं, बम्हिणं.
पं.	बम्हत्तो, बम्हाओ-उ-हि-हिन्तो, बम्हा. बम्हाणो, बम्हाणत्तो, बम्हाणाओ-उ-हि-हिन्तो, बम्हाणा.	बम्हत्तो, बम्हाओ-उ-हि, हिन्तो-सुन्तो, बम्हेहि-हिन्तो सुन्तो, बम्हाणत्तो, बम्हाणाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, बम्हाणेहि-हिन्तो-सुन्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छ.	वम्हस्स, वम्हणो, वम्हाणस्स,	वम्हाण, वम्हाणं, वम्हिणं, वम्हाणाण, वम्हाणाणं.
स.	वम्हे, वम्हम्मि, वम्हाणे, वम्हाणम्मि.	वम्हेसु, वम्हेसुं, वम्हाणेसु वम्हाणेसुं.
सं.	हे वम्ह, वम्हो, वम्हा, हे वम्हाण, वम्हाणो, वम्हाणा.	हे वम्हा, वम्हाणा, वम्हाणो.

आ प्रमाणे सर्वे 'अन्' छेडावाळां नामोनां रूपो जाणवां पण केवळ 'अप्प' ने 'राय' शब्दनां रूपोमां विशेषता छे.

७ अप्प शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'णिआ-णइआ' ए बे प्रत्ययो वधारे लगाडवामां आवे छे तेथी तृ. ए. वचनमां अप्पणिआ, अप्पणइया, ए बे रूपो वधारे जाणवां. बाकीनां अप्प ने अप्पाण शब्दनां रूपो वम्ह अने वम्हाण शब्दनी माफक जाणवां.

अप्प-अप्पाण, (आत्मन्) शब्दनां रूपो.

प.	अप्पो, अप्पाणो, अप्पा.	अप्पा, अप्पाणा अप्पाणो,
वी.	अप्पं, अप्पाणं, अप्पिणं.	अप्पे, अप्पा, अप्पाणे, अप्पाणा, अप्पाणो.
त.	अप्पेण-णं, अप्पाणेण-णं, अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइआ.	अप्पेहि-हिँ-हिं, अप्पाणेहि-हिँ-हिं.
च.	अप्पाय, अप्पस्स, अप्पाणाय, अप्पाणस्स, अप्पणो.	अप्पाण, अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं. अप्पिणं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं.	अप्पत्तो, अप्पाओ-उ-हि-हिन्तो, अप्पा, अप्पाणो, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, उ-हि-हिन्तो, अप्पाणा.	अप्पत्तो, अप्पाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, अप्पेहि-हिन्तो-सुन्तो, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो, अप्पाणेहि-हिन्तो-सुन्तो.
छ.	अप्पस्स, अप्पाणस्स, अप्पणो.	अप्पाण, अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पिणं.
स.	अप्पे, अप्पम्मि, अप्पाणे, अप्पाणम्मि.	अप्पेसु, अप्पेसुं, अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं.
सं.	हे अप्प, अप्पो, अप्पा, हे अप्पाण, अप्पाणो, हे अप्पाणा.	अप्पा. अप्पाणा, अप्पाणो.

८ **राय (राजन्)** शब्दनां रूपोमां विशेषता आ प्रमाणे छे.

(१) **णो, णा, म्मि,** आ त्रण प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना **य** नो विकल्पे इ थाय छे, **राइणो, राइणा, राइम्मि,** 'इ' न थाय त्यारे- **रायणो, रायणा, रायम्मि.**

(२) द्वितीयाना एकवचनमां अने षष्ठीना बहुवचनमां प्रत्यय सहित **'राय'** शब्दना **'य'** नो **'इणं'**, आदेश विकल्पे थाय छे.

बी. ए. **राइणं** अथवा **रायं.**
छ. ब. **राइणं** अथवा **रायाणं.**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) तृतीया, पंचमी ने षष्ठीना एकवचनमां **'णा–णो'** प्रत्ययनी पूर्वे **राय** शब्दना **'आय'** नो **'अण्'** विकल्पे थाय छे.

त. ए. **रण्णा,** अथवा **राइणा, रायणा.**
पं. ए. **रण्णो,** अथवा **राइणो, रायाणो.**
छ. ए. **रण्णो,** अथवा **राइणो, रायणो.**

(४) तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमां प्रत्ययोनी पूर्वे **'राय'** शब्दना **'य'** नो विकल्पे दीर्घ **'ई'** थाय छे.

त. ब. **राईहि** अथवा **राएहि.**
च. ब. }
छ. ब. } **राईणं** अथवा **राइणं, रायाणं.**
पं. ब. **राईओ, राईसुन्तो** अथवा **रायाओ, रायासुन्तो.**
स. ब. **राईसुं** अथवा **राएसुं.**

राय–रायाण शब्दनां रूपो.

	एकव०	**बहुव०**
प०	रायो, रायाणा, राया.	राया, रायाणा, राइणो, रायाणो.
बी०	रायं, रायाणं, राइणं.	राए, राया, रायाणे, रायाणा, राइणो, रायाणो.
त०	राएण–णं, रायाणेण–णं, रण्णा, राइणा, रायणा.	राएहि–हिँ–हिं, रायाणेहि,–हिँ–हिं, राईहि, राईहिँ, राईहिं.
च०	रायाय, रायस्स, रायाणाय, रायाणस्स, रण्णो, राइणो, रायणो.	रायाण–णं, रायाणाण–णं, राइणं, राईण–णं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं०	रायत्तो, रायाओ- उ-हि-हिन्तो, राया, रायाणत्तो, रायाणाओ, उ-हि-हिन्तो, रायाणा, रण्णो, राइणो, रायाणो.	रायत्तो, रायाओ-उ-हि- हिन्तो-सुन्तो, राएहि-हिन्तो-सुन्तो, रायाणत्तो, रायाणाओ-उ-हि- हिन्तो-सुन्तो, रायाणेहि-हिन्तो-सुन्तो. *राइत्तो, राईओ-उ- हिन्तो-सुन्तो.
छ०	रायस्स, रायाणस्स, रण्णो, राइणो, रायणो.	रायाण, रायाणं, रायाणाण-णं, राइणं, राईण-णं.
स०	राए, रायम्मि, रायाणे, रायाणम्मि, राइम्मि. [रायंसि, रायाणंसि]	राएसु, राएसुं, रायाणेसु-सुं, राईसु-सुं.
सं०	हे राय, रायो, रायाण, रायाणो, राया, [रायं].	हे राया, रायाणा, राइणो, रायाणो.

नपुंसकलिंग.

'अन्' छेडावाळां नामोनां नपुंसकलिंगमां रूपो 'वण' जेवां थाय छे अने जे नामो विशेषण छे तेनां तृतीयाथी मांडीने रूपो पुल्लिंग जेवां थाय छे.

सम्म (शर्मन्)

प. बी. सम्मं. — सम्माइं, सम्माइँ, सम्माणि.

शेष रूपो 'वण' प्रमाणे.

प. बी. दामं. — दामाइं, दामाइँ, दामाणि.

शेष रूपो 'वण' प्रमाणे.

---

*जुओ नियम ११ मांनुं टिप्पण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुकम्म, सुकम्माण (सुकर्मन्)

प० बी०	सुकम्मं, सुकम्माणं.	सुकम्माइं, सुकम्माइँ, सुकम्माणि, सुकम्माणाइं, सुकम्माणाइँ सुकम्माणाणि.

बाकीनां रूपो 'बम्ह, बम्हाण' प्रमाणे.

९ **मत्, वत्** अने **अत्** अन्तवाळा शब्दोनां रूपो अंत्य **'अत्'** नो **'अंत'** करवाथी अकारान्त शब्दोना जेवां ज थाय छे.

भगवंतो (भगवान्) पूज्य.	**हिरिमंतो** (ह्रीमान्) लज्जावाळो.
धणवंतो (धनवान्) धनवाळो.	**भवंतो** (भवान्) आप.
सिरिमंतो (श्रीमान्) लक्ष्मीवाळो.	**कियंतो** (कियान्) केटलो.
भविस्संतो (भविष्यन्) थतो.	**अरिहंतो** (अर्हन्) अरिहंत.

आर्षमां प्राकृत प्रथमाना एकवचनमां **भयवं** (भगवान्), **मइमं** (मतिमान्), **धणवं** (धनवान्), **सिरिमं** (श्रीमान्), **अरिहं** (अर्हन्), **संवसं (संवसन्)** इत्यादि प्रयोग पण देखाय छे.

प. व. **भगवंतो** (भगवन्तः).	**भवन्तो** (भवन्तः).
तृ. ए. **भगवया-ता** (भगवता),	**भवया-ता** (भवता).
छ. ए. **भगवओ-तो** (भगवतः).	**भवओ-तो** (भवतः).

आ प्रमाणे संस्कृत उपरथी सिद्ध प्रयोग पण आर्षमां देखाय छे.

स् अन्तवाळां नामो

१० **जस (यशस्)** आदि शब्दोनां रूपो पण अकारान्त शब्दोनां जेवां ज थाय छे. जेम-**जसो** (यशः), **तमो** (तमः), **नहं** (नभः).

जस (यशस्)

प.	**जसो.**	**जसा.**
बी.	**जसं.**	**जसे, जसा.**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त.	जसेण–णं.	जसेहि–हिँ–हिं.

बाकीनां रूपो 'देव' प्रमाणे.

सुजसस् (सुयशस्)

प.	सुजसो.	सुजसा.
बी.	सुजसं.	सुजसे, सुजसा.
त.	सुजसेण–णं.	सुजसेहि–हिँ–हिं.

बाकीनां रूपो 'देव' प्रमाणे.

आर्षमां वपरातां सान्त शब्दोनां तेमज बीजां विशेष रूपो.

	तृ. ए.	छ–ए.
जस=जश.	जससा (यशसा)	जससो (यशसः)
मण=मन	मणसा (मनसा)	मणसो (मनसः)
वय=वचन	वयसा (वचसा)	वयसो (वचसः)
सिर=मस्तक	सिरसा (शिरसा)	सिरसो (शिरसः)
तेय=तेज.	तेयसा (तेजसा)	तेयसो (तेजसः)
तव=तप.	तवसा (तपसा)	तवसो (तपसः)
तम=अंधकार, राहु.	तमसा (तमसा)	तमसो (तमसः)
चक्खु=चक्षु.	चक्खुसा (चक्षुषा)	चक्खुसो (चक्षुषः)
काय=देह.	कायसा (कायेन)	कायसो (कायस्थ)
जोग=योग.	जोगसा (योगेन)	स. ए.
बल=बळ.	बलसा (बलेन)	मणसि (मनसि)
कम्म=कर्म–क्रिया.	कम्मुणा (कर्मणा)	
धम्म=धर्म.	धम्मुणा (धर्मेण)	

आ प्रमाणे सिद्ध प्रयोगो पण आर्ष प्राकृतमां देखाय छे. जेमके—**तमसा गसिओ वि सूरो विक्कमं किं विमुच्चइ**=राहु वडे ग्रहण करायेलो सूर्य पण शुं पराक्रमने त्याग करे छे ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपयोगी तद्धित प्रत्ययो तथा शब्दो.

११ संस्कृतमां जे अर्थमां **वत्–मत्** प्रत्ययो आवे छे ते ज अर्थमां प्राकृतमां **आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त, इत्त, इर** अने **मण,** प्रत्ययो आवे छे.

नेहो अस्स अत्थि त्ति नेहालू (स्नेहवान्)
जडा अस्स अत्थि त्ति जडालो (जटावान्)

प. ए

आलु–नेहालू (स्नेहवान्) स्नेहवाळो.
दयालू (दयावान्) दयावाळो.
ईसालू (ईर्ष्यावान्) इर्षावाळो
इल्ल–छाइल्लो (छायावान्) छायावाळो.
सोहिल्लो (शोभावान्) शोभावाळो.
उल्ल–विआरुल्लो (विकारवान्) विकारवाळो.
मंसुल्लो (श्मश्रुवान्) दाढीवाळो.
आल–सद्दालो (शब्दवान्) शब्दवाळो.
जडालो (जटावान्) जटावाळो
रसालो (रसवान्) रसवाळो.
वन्त–धणवन्तो (धनवान्) धनवाळो.
भत्तिवन्तो (भक्तिमान्) भक्तिवाळो.
मन्त–हणुमन्तो (हनुमान्) हनुमान.
सिरिमन्तो (श्रीमान्) श्रीमन्त, लक्ष्मीवाळो.
इत्तो–कव्वइत्तो (काव्यवान्) काव्यवाळो.
इर–गव्विरो (गर्ववान्) गर्ववाळो.
मण–धणमणो (धनवान्) धनवाळो.

१२ भावमां **'त्त–इमा–त्तण'** ए प्रत्ययो लागे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीणत्तं, पीणिमा, पीणत्तणं (पीनत्वं) पुष्टपणुं.
पुप्फत्तं, पुप्फिमा, पुप्फत्तणं (पुष्पत्वं) पुष्पपणुं.

१३ **भव**-(थयेल) ए अर्थमां **'इल्ल-उल्ल'** प्रत्ययो आवे छे.
इल्ल-गामिल्लो (ग्रामे भवः) गाममां उत्पन्न थयेल.
,, **पुरिल्ला** (पुरे भवाः) नगरमां उत्पन्न थयेला.
उल्ल-अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्) आत्मामां थयेल.

१४ स्वार्थमां-**'इल्ल-उल्ल-अ'** ए त्रण प्रत्ययो आवे छे.
इल्ल-पल्लविल्लो (पल्लवकः) पांदडुं.
उल्ल-पिउल्लो (पितृकः) पिता.
उल्ल-मुहुल्लम् (मुखकम्) मोढुं.
अ-चन्दओ (चन्द्रकः) चंद्र.
दुहिअओ (दुःखितकः) दुःखी.
बहुअं (बहुकम्) घणुं.

१५ **वत्** (जेवुं-जेम) ए अर्थमां **व्व** प्रत्यय आवे छे अने **'मयट्'** प्रत्ययना अर्थमां **मइअ** प्रत्यय विकल्पे आवे छे.
महुरव्व (मधुरावत्) मथुराना जेवा.
विसमइओ / **विसमओ** (विषमयः) विष रूप.
नाणमइओ / **नाणमओ** (ज्ञानमयः) ज्ञान स्वरूप.

१६ 'जेवुं' एवो अर्थ बताववामां सर्व नामोने **रिस** (दृश-दृश्) प्रत्यय लागे छे. आ प्रत्यय लगाडतां पूर्वना **अ** नो **आ** थाय छे, तेमज **इम** नो **ए** अने **क** (**किम्**) नो **के** थाय छे.

जारिसो (यादृशः) जेवो, **एरिसो** (ईदृशः) आवो, आना जेवो.
तारिसो (तादृशः) तेना जेवो. **केरिसो** (कीदृशः) केवो, कोना जेवो.
एयारिसो (एतादृशः) आना जेवो. **अम्हारिसो** (अस्मादृशः) अमारा जेवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हारिसो (युष्मादृशः) तमारा जेवो. **अन्नारिसो** (अन्यादृशः) बीजा जेवो.

आर्षमां **तालीसो** / **तालिसो** } (तादृशः). **एयालिसो** (एतादृशः).

केसो (कीदृशः). **इमेरिसो** / **एलिसो** } (ईदृशः).

१७ अनियमित उपयोगी तद्धित शब्दो.

तुम्हकेरो (युष्मदीयः) तमारो.

अम्हकेरो (अस्मदीयः) अमारो.

पारकेरं / **पारक्कं** / **परक्कं** } (परकीयम्) पारकुं.

रायकेरं / **राइक्कं** } (राजकीयम्) राजानुं.

तुम्हेच्चयं (यौष्माकम्) तमारुं.

अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्) अमारुं

सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणः) सर्वाङ्ग व्याप्त.

अप्पणयं (आत्मीयं) पोतानुं.

जित्तिअं, जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेद्दहं. (यावत्) जेटलुं.

तित्तिअं, तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेद्दहं. (तावत्) तेटलुं.

इत्तिअं, एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं. (एतावत्) एटलुं.

एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं. (इयत्) एटलुं

केत्तिअं, केत्तिलं, केद्दहं. (कियत्) केटलुं.

कडुएल्लं, (कटुतैलम्) कडवुं तेल.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवल्लो }
नवो } (नवकः) नवो.

एकल्लो }
एगो } (एककः) एकलो.
एक्को }

एक्कसि }
एक्कसिअं } (एकदा) एक वखते.
एक्कइया }

अवरिल्लो (उपरि) उपरनुं वस्त्र.

भुमया }
भमया } (भ्रू) भमर, भ्रगुटी, भवां.

मीसालिअं }
मीसं } (मिश्रकं) मिश्र, भेगुं.

विज्जुला }
विज्जू } (विद्युत्) वीजळी.

पत्तलं }
पत्तं } (पत्रम्) पत्र, पांदडुं, पर्ण

पीवलं }
पीअलं } (पीतम्) पीळुं.
पीअं }

अंधलो }
अंधो } (अन्धकः) आंधळो.

१८ अधिकतादर्शक 'यर' (तर) अने श्रेष्ठतादर्शक 'यम' (तम) प्रत्यय शब्दने लगाडाय छे; आ विशेषण बने छे. तेथी स्त्रीलिंग अन्त्य अ नो ई करवाथी थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्न-धन्नयरो (धन्यतरः) अधिक प्रशंसापात्र.

धन्नयमो (धन्यतमः) सर्वाधिक प्रशंसापात्र.

कट्ठ-कट्ठयरं (कष्टतरम्) अधिक दुःख आपनारुं.

कट्ठयमं (कष्टतमम्) सर्वथी अधिक दुःख आपनारुं.

लहु-लहुयरो (लघुतरः) अधिक नानो.

लहुयमो (लघुतमः) सर्वथी नानो.

उच्च-उच्चयरो (उच्चतरः) अधिक उंचो.

उच्चयमो (उच्चतमः) सर्वथी उंचो.

स्त्रीलिंगमां—**धन्नयरी, कट्ठयमी, लहुयरी, उच्चयमी** वगेरे थाय छे. कोई ठेकाणे स्त्रीलिंगमां '**आ**' प्रत्यय पण आवे छे. **धन्नयरा, उच्चयमा**, वगेरे.

देश्य प्राकृतमां वपराता उपयोगी शब्दो

गोणो (गौः) बेल, वृषभ.

***गावी** (गौः) गाय.

बइल्लो (बलीवर्दः) बेल-बळद.

आऊ (आपः) जल

विउसग्गो (व्युत्सर्गः) त्याग.

वोसिरणं (व्युत्सर्जनम्) त्याग करवुं.

बहिद्धा (बहिर्धा) मैथुन, कामक्रीडा, बहार.

कत्थइ (क्वचित्) क्यां.

मुव्वहइ (उद्वहति) ते धारण करे छे.

छिछि / **धिद्धि** (धिक्धिक्) धिक्कार पडो.

धिरत्थु (धिगस्तु) धिक्कार हो.

---

* गो शब्दना स्त्रीलिंग अंगो गावी, गाई, गोणी, गउ थाय छे, गावी—गाई अने गोणीनां रूपो इत्थी प्रमाणे, तेमज '**गउ**' नां रूपो '**घेणु**' प्रमाणे समजवां.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मघोणो (मघवान्) इन्द्र. **अकाळ.**

सक्खिणो (साक्षी) साक्षी. **लज्जालुइणी** (लज्जावती) लज्जावाळी, लजामणी.

जम्मणं (जन्म) जन्म.

आसीसा (आशीः) आशीर्वाद. **पक्कलो** (पक्वलः) समर्थ.

वड्डयरं (बृहत्तरं) घणुं मोटुं.

खुड्डओ (क्षुल्लकः) नानो साधु. **छिंछई** (पुंश्चली) असती, कुलटा स्त्री.
अत्थक्कं (अकाण्डम्) अकस्मात्.

१८ **आकारान्त पुल्लिंग.**

गोवा (गोपा) गोवाल.

प.	गोवा.	गोवा.
बी.	गोवाम्.	गोवा.
त.	गोवाण-णं.	गोवाहि, गोवाहिँ, गोवाहिं.
च. छ.	गोवस्स.	गोवाण, गोवाणं.
पं.	गोवत्तो, गोवाओ,-उ, गोवाहिन्तो.	गोवत्तो, गोवाओ-उ-हिन्तो-सुन्तो.
स.	गोवम्मि.	गोवासु, गोवासुं.
सं.	हे गोवा !	हे गोवा !

१९ **गामणी-खलपू** वगेरे दीर्घ ईकारान्त-ऊकारान्त शब्दोनां रूपो तेओना स्वर ह्रस्व थइ ह्रस्व इकारान्त-उकारान्त पुल्लिंग जेवां ज रूपो थाय छे. मात्र संबोधनमां तेओनो स्वर नित्य ह्रस्व थाय छे.

प.	गामणी.	गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी.
प.	खलपू.	खलपवो, खलपउ, खलपओ, खलपुणो, खलपू.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं. हे गामणि. गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी.
सं. हे खलपु. खलपवो, खलपउ, खलपओ, खलपुणो, खलपू.
शेष रूपो मुणि, साहु प्रमाणे.

शब्दो.

अंगण न. (सम) आंगणुं, चोक.

अभिभूअ वि. (अभिभूत) पराभूत, पराजित.

अवच्च न. (अपत्य) पुत्र.

आसिण पु. (आश्विन) आसो मास.

छण पु. (क्षण) उत्सव.

चवल वि. (चपल) चंचळ, अस्थिर.

चत्तारि द्वि. व. (चत्वारि) चार.

जय } **जग** } न. (जगत्) जगत, दुनिया, संसार.

जिइंदिअ वि. (जितेन्द्रिय) जेणे इन्द्रियो जीतेली छे ते.

तणु स्त्री. (तनु) शरीर.

दार पु. न. (सम) स्त्री, महिला.

दीणत्तण न. (दीनत्व) गरीबपणुं.

नक्क पु. (दे) नाक, नासिका.

निज्जरा स्त्री. (निर्जरा) कर्मक्षय.

निद्दय वि. (निर्दय) दयारहित.

निहस पु. (निकष) कसोटीनो पत्थर.

परिहा स्त्री. (परिखा) खाइ.

पहार पु. (प्रहार) प्रहार.

मय } **मुअ** } वि. (मृत) मरी गयेल.

मंगल न. (सम) मंगळ, शुभ.

मंडल न. (सम) गोळाकार, चक्राकार.

संपत्ति स्त्री. (सम) संपदा.

सण्ह } **सुण्ह** } **सुहुम** } वि. (सूक्ष्म) सूक्ष्म, बारीक.

सीया स्त्री. (सीता) रामनी पत्नी.

हेम न. (हेमन्) सुवर्ण, सोनुं.

सामासिक शब्दो.

उच्छाहसत्तिं (उत्साहशक्तिम्) उत्साह अने शक्तिने.

जलपूरीकओ (जलपूरीकृतः) जलथी भरी दीधो.

चउगइभवे (चतुर्गतिभवे) चार गतिरूप संसारमां.

नियववसायाणुरूवं (निजव्यवसायानुरूपम्) पोताना व्यवसायना समान.

निअसीलबलेण (निजशीलबलेन) पोताना शीयळना बळथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यय.

जाव जा	(यावत्) ज्यां सुधी.	ताव ता	(तावत्) त्यां सुधी.

धातुओ.

तुड्, तुट्ट् (त्रुट्) तूटवुं.

निवट्ट्, निअट्ट् (नि+वृत्-वर्त्) पाछा फरवुं.

प-वज्ज् (प्र+पद्य) स्वीकार करवो.

वि-वाह् (वि+वाहय्) विवाह करवो.

संध् (सं+धा) सांधवुं, जोडवुं, संधी करवी, चाहवुं.

सोह् (शोधय्) शुद्ध करवुं, शोधवुं.

सूय् (सूचय्) सूचना करवी.

आरब्भ-सं. भू. कृ. (आरभ्य) आरंभीने, शरु करीने.

प्राकृत वाक्यो ।

देविंदेहिँ अच्चिअं सिरिमहावीरं सिरसा मणसा वयसा वंदे ।

महासईए सीयाए अप्पाणं सोहन्तीए निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ ।

गुरुया अप्पणो गुणे अप्पणा कयाइ न वण्णन्ति ।

नराणं सुहं वा दुहं वा को कुणइ ? अप्पण च्चिय कयाइं कम्माइं समयम्मि परिणमंति ।

जइ उ तुम्हे अप्पणो रिद्धिं इच्छह, तो निच्चंपि जिणेसरं आराहह ।

जो कोहेण अभिभूओ जीवे हणेइ, सो इह जम्मे परम्मि य जम्मणे वि अप्पणो वहाइ होइ ।

नायपुत्तो भयवं महावीरो सिद्धत्थस्स रण्णो अवच्चं होत्था ।

अरिहंता मंगलं कुज्जा । अरिहंते सरणं पवज्जामि ।

गयणे अच्छरसाणं नच्चं दीसइ ।

भिसया तणुस्स वाही अवणेन्ति, लोगोत्तमा य भगवंता सू-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिणो य मणसो आहिणो हरन्ति ।
सरए इत्थीओ घराणं अंगणे अच्छरसाउ व्व गाणं कुणन्ति नच्चंति अ ।
मुणओ पाउसे एगाए वसहीए चिट्ठन्ति ।
जए दयालवो जणा बहुआ न हवन्ति ।
कलिम्मि सिरिमन्ता लोगा पायेण गव्विरा निद्दया य संति ।
दीणत्तणे वि जो उवयरेइ सो धम्मवंतो जाणेअव्वो ।
गामिल्लाणं तत्ताइं न रोएन्ति ।
पुरिल्ला लोगा तत्ताणं नाणे कुसला संति ।
दुहिअएसु नरेसु सइ दयं कुज्जा ।
धणवंताणं पि लच्छी पाउसस्स विज्जुव्व चवला नायव्वा ।
इमं भोयणं विसमइयं अत्थि, तओ मा खाएह ।
राइक्कं दव्वं पयाए हिआय होइअव्वं ।
जीवाणं अप्पणयं नाणं दंसणं चरित्तं च अत्थि, अन्नं सव्वमणिच्चं तत्तो ताणि चिय सेविज्जाह ।
जे निरत्थयं पाणिवहं कुणंति, ताणं धिरत्थु ।
गावीणं दुद्धं वालयाणं सोहणं ति जणा वयन्ति ।
तं परिसेहि कम्मेहिं अप्पं निरए माइ पक्खिवसु ।
दुज्जणाणं गिराए अमयमत्थि हियए उ विसं ।
पावा अप्पणो हिअं पि न पिच्छन्ति न सुणन्ति य ।
जो सीलवंतो जिइंदिओ य होइ, तस्स तेओ जसो य धिई य वड्ढन्ते ।
नहस्स सोहा चंदो, सरोयाइं सरस्स य,
तवसो उवसमो य मुहस्स य चक्खू नक्को अ ।
राइणा वुत्तं-भयवं ! वेसासु मणं कयावि न करिस्सं ।
अप्पस्स इव सव्वेसु पाणीसुं जो पासइ स च्चिय पासेइ ।
जीवाणं अजीवाणं च सण्हं सरूवं जित्तियं जारिसं च जिणि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दस्स पवयणे अत्थि, तेत्तिलं तारिसं च सरूवं न अन्नह दंसणे ॥
एवं जीवांतणॅ, कालेण कयाइ होइ संपत्ती ।
जीवाण मयाणं पुण, कत्तो दीहंमि संसारे ॥१॥
पाणेसु धरन्तेसु य, नियमा उच्छाहसत्तिममुयन्तो ।
पावेइ फलं पुरिसो, नियववसायाणुरूवं तु ॥२॥
दारं च विवाहंतो, भममाणो मंडलाइं चत्तारि ।
सूएइ अप्पणो तह, वहूइ चउगइभवे भमणं ॥३॥

गुजराती वाक्यो.

प्रभातमां गोवाळो (गोवा) गायोने (गावी) दोहे छे.

सारा कर्मवाळा जीवो (सुकम्म) शुभ कृत्यो करीने परलोकमां सुखी थाय छे.

हे भगवन् ! आप (भगवन्त-भवन्त) आ असार संसारमांथी अमारा जेवा दुःखीओनो उद्धार करो.

शत्रुओथी प्रजानुं रक्षण करवाने राजा (राय) ना पुरुषोए नगरनी बहार खाई (परिहा) करी.

पत्थर जेवा (गाव) हृदयने धारण करनारा आ माणसो बळदोने (उच्छ-वइल्ल) बहु ज पीडे छे.

माणसो अन्धारामां (तम) चक्षु (चक्खु) वडे जोवाने समर्थ थता नथी.

लोको आसो मासमां एकमथी (पाडिवया) आरंभीने पूर्णिमा सुधी महोत्सव करे छे.

विद्वान माणसो पोताना (अप्प) गुण वडे सर्व ठेकाणे पूजाय छे.

सोनी कसोटी उपर सोनानी परीक्षा करे छे.

सारो वैद्य पण तुटेल आयुषने (आउ-आउस) सांधवाने (संधू) समर्थ (पक्कल) थतो नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तमारा सरखा (**तुम्हारिस**) स्नेहवाळा (**नेहालु**) पुरुषोए अमारा सरखा (**अम्हारिस**) गरीब उपर प्रीति करवी जोइए.

सर्व इन्द्रो तीर्थंकरोना जन्म (**जम्म**) वखते मेरु पर्वत ऊपर तीर्थंकरोने लई जई जन्म महोत्सव करे छे.

माणसोए संपत्ति (**संपया**) मां गर्विष्ठ (**गव्विर**) न थवुं अने दुःखमां (**आवया**) मुंझावुं नहि.

जीव पोताना ज (**अप्पाण**) कर्मं वडे सुख अने दुःख पामे छे, बीजो आपे छे ते मिथ्या छे.

गुरुओना आशीर्वादो (**आसीसा**) वडे कल्याण ज थाय छे, तेथी तेओनी आज्ञानुं उल्लंघन करवुं नहि.

तपश्चर्या (**तव**) वडे कर्मोनी निर्जरा थाय छे, अने क्रोध वडे कर्मो बंधाय छे.

शास्त्र भणेला[1] मूर्खो घणा होय छे, पण जे आचारवाळा (**आयारवंत**) छे ते ज पंडित कहेवाय छे.

बंधुए राजाने (**राय**) कह्युं के तुं राज्यनो त्याग कर, अने अहिंआं उभो न रहे.

सारी रीते पालन करातुं राज्य राजाने (**राय**) घणुं धन अने कीर्ति आपे छे.

वृद्धपणामां (**वुड्ढत्तण**) शरीरनी सुन्दरता (**सुंदरत्तण**) नाश पामे छे.

पारकानां (**पारकेर**) दुःख सांभळीने महात्माओनुं (**महप्प**) मन दयावाळुं थाय छे. (**दयालु**).

---

१. अहिं '**पढिअवंता**' कर्तरिभूतकृदन्त वापरवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ २२ मो.

प्रेरक भेद.

१. धातुओनां प्रेरक रूपो मूळ धातुने अ, ए, आव, आवे ए प्रत्ययो लगाडी अंग तैयार करी ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे.

२. धातुमां उपान्त्य 'अ' होय तो 'अ' के 'ए' प्रत्यय लगाडतां 'अ' नो 'आ' थाय छे. जेमके—

हस्+अ=हास+इ=हासइ.
हस्+ए=हासे+इ=हासेइ.
हस्+आव=हसाव+इ=हसावइ.
हस्+आवे=हसावे+इ=हसावेइ. } ते हसावे छे.

ने+अ=नेअ+इ=नेएइ.
ने+ए=नेए+इ=नेएइ.
ने+आव=नेआव+इ=नेआवइ.
ने+आवे=नेआवे+इ=नेआवेइ. } ते लेवडावे छे.

३. मूळ धातुओमां उपान्त्य 'इ' के 'उ' होय तो प्रायः 'इ' नो 'ए' अने 'उ' नो 'ओ' थाय छे. जेमके—

रिय्+अ=रेय-रेयइ. तुस्+अ=तोस-तोसइ.
बुह्+अ=बोह-बोहइ. तुड्+अ=तोड-तोडइ.

४. जो धातुमां आदि स्वर गुरु होय तो तेने उपरना प्रत्ययो तथा 'अवि' प्रत्यय पण लागे छे. बोल्लवि-तोसवि.

५. 'आव'-आवे' प्रत्यय पर छतां 'अ' नो 'आ' कोई ठेकाणे थाय छे. जेमके—'कारावइ' 'कारावेइ'.

६. 'भम्' धातुनुं प्रेरक अंग 'भमाड' पण विकल्पे थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूल धातु.	प्रेरक अंग.			
पड्—पाड,	पाडे,	पडाव,	पडावे.	
कर्—कार,	कारे,	कराव,	करावे.	
हस्—हास,	हासे,	हसाव,	हसावे.	
जाण्—जाण,	जाणे,	जाणाव,	जाणावे,	जाणवि.
बोल्ल्—बोल्ल,	बोल्ले,	बोल्लाव,	बोल्लावे,	बोल्लवि.
भम्—भाम,	भामे,	भमाव,	भमावे,	भमाड.
ने—नेअ,	नेए,	नेआव,	नेआवे,	नेअवि.
हो—होअ,	होए,	होआव,	होआवे,	होअवि.
बुह्—बोह,	बोहे,	बोहाव,	बोहावे,	बोह्वि.

आ प्रमाणे धातुओनुं प्रेरक अंग तैयार करी तेने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी पूर्वनी माफक रूपो साधी लेवां.

कार्—कार, कारे, कराव, करावे अंगनां रूपो.

वर्तमानकाळ.

एकवचन	बहुवचन
प. पु.	
कार—कारमि, कारामि, कारेमि.	कारमो, कारामो, कारिमो, कारेमो.
कारे—कारेमि	कारेमो.
कराव—करावमि, करावामि, करावेमि.	करावमो, करावामो, कराविमो, करावेमो.
करावे—करावेमि.	करावेमो. (ए प्रमाणे मु—म प्रत्ययनां समजवां.)
बी. पु.	
कार—कारसि, कारेसि.	कारह, कारेह.
कारे—कारेसि.	कारेह.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कराव-करावसि, करावेसि.	करावह, करावेह.
करावे-करावेसि	करावेह.
(ए प्रमाणे से पर छतां)	
कार-	कारित्था, कारेइत्था.
कारे-	कारेइत्था.
कराव-	करावित्था, करावेइत्था.
करावे-	करावेइत्था
ती. पु.	
कार-कारइ, कारेइ.	कारन्ति, कारेन्ति.
कारे-कारेइ.	कारेन्ति.
कराव-करावइ, करावेइ.	करावन्ति, करावेन्ति.
करावे-करावेइ.	करावेन्ति (ए प्रमाणे 'न्ते'
(ए प्रमाणे 'ए' प्रत्ययनां.)	प्रत्ययनां.)
कार-	कारिरे कारेइरे.
कारे-	कारेइरे.
कराव-	कराविरे, करावेइरे.
करावे-	करावेइरे.

ज्ज-ज्जा आवे त्यारे.

सर्वपुरुष } कारेज्ज, कारेज्जा.
सर्ववचन } करावेज्ज, करावेज्जा.

* भूतकाळ.

सर्वपुरुष } कारीअ, कारेईअ.
सर्ववचन } करावीअ, करावेईअ.

---

* आर्षमां-भूतकालमां व्यंजनान्त धातुओमां पण 'सी' प्रत्ययनो प्रयोग देखाय छे. जेम-सीलवंती राईमई पव्वइया संती तर्हि बहुं सयगं परियिणं चेव पव्वावेसी (प्रावीव्रजत्) उत्त० अध्य० २२, गा० ३२.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्षमां—

सर्वव. सर्वपु.	कार-कारित्था, कारिंसु. कारे-कारेत्था, कारेंसु, कराव-करावित्था, करावसु. करावे-करावेत्था, करावेंसु.

विध्यर्थ-आज्ञार्थ.

एकवचन.	बहुवचन.
प. पु.	
कार-कारमु, कारामु,	कारमो, कारामो,
कारिमु, कारेमु.	कारिमो, कारेमो.
कारे-कारेमु.	कारेमो.
कराव-करावमु, करावामु,	करावमो, करावामो,
कराविमु, करावेमु.	कराविमो, करावेमो.
करावे-करावेमु.	करावेमो.
बी पु.	
कार-कारहि, कारेहि.	कारह, कारेह.
कारसु, कारेसु.	
कारिज्जसु, कारेज्जसु.	
कारिज्जहि, कारेज्जहि.	
कारिज्जे, कारेज्जे, कार, कारे.	
आर्षमां-[कारिज्जसि, कारेज्जसि,	[कारिज्जाह,
कारिज्जासि, कारेज्जासि,	कारेज्जाह]
कारिज्जाहि, कारेज्जाहि,	
काराहि]	
कारे-कारेहि, कारेसु.	कारेह.
कराव-करावहि, करावेहि,	करावह, करावेह.
करावसु, करावेसु,	
कराविज्जसु, करावेज्जसु,	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करावेज्जहि, करावेज्जहि,	
कराविज्जे, करावेज्जे,	
कराव. करावे.	
आर्षमां-[कराविज्जसि, करावेज्जसि,	[कराविज्जाह,
कराविज्जासि, करावेज्जासि,	करावेज्जाह.]
कराविज्जाहि, करावेज्जाहि, करावाहि.]	
करावे-करावेहि-करावेसु.	करावेह.
ती. पु.	
कार-कारउ, कारेउ.	कारन्तु, कारेन्तु,
कारे-कारेउ.	कारेन्तु.
कराव-करावउ, करावेउ.	करावन्तु, करावेन्तु.
करावे-करावेउ, [कारए]	करावेन्तु.
सर्वपु० } कारेज्ज, कारेज्जा,	कारेज्जइ, कारेज्जाइ,
सर्वव० } करावेज्ज, करावेज्जा.	करावेज्जइ, करावेज्जाइ.

भविष्यकाळ.

प. पु.	
कार-कारिस्सं, कारेस्सं,	
कारिस्सामि, कारेस्सामि,	कारिस्सामो. कारेस्सामो,
	कारिहामो, कारेहामो.
कारिहामि, कारेहामि,	कारिहिमो, कारेहिमो,
	कारिहिस्सा, कारेहिस्सा.
कारिहिमि, कारेहिमि.	कारिहित्था, कारेहित्था.
कारे-कारेस्सं, कारेस्सामि,	कारेस्सामो, कारेहामो,
कारेहामि, कारेहिमि.	कारेहिमो,
	कारेहिस्सा, कारेहित्था.
कराव-कराविस्सं, करावेस्सं,	कराविस्सामो, करावेस्सामो,
कराविस्सामि, करावे-	कराविहामो, करावेहामो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्सामि, — कराविहिमो, करावेहिमो,
कराविहामि, करावेहामि, — कराविहिस्सा, करावेहिस्सा.
कराविहिमि, करावेहिमि. — कराविहित्था, करावेहित्था.
करावे–करावेस्सं, करावेस्सामि, — करावेस्सामो, करावेहामो,
करावेहिमो.
करावेहामि, करावेहिमि. — करावेहिस्सा–करावेहित्था,
(ए प्रमाणे 'मु–म' प्रत्ययनां)

बी. पु.

कार–कारिहिसि, कारेहिसि, — कारिहिह, कारेहिह,
कारिस्ससि, कारेस्ससि. — कारिहित्था, कारेहित्था,
कारिस्सह, कारेस्सह.
कारे–कारेहिसि, कारेस्ससि. — कारेहिह, कारेहित्था, कारेस्सह.
कराव–कराविहिसि, — कराविहिह, करावेहिह,
करावेहिसि, — कराविहित्था, करावेहित्था.
कराविस्ससि, करावेस्ससि. — कराविस्सह, करावेस्सह.
करावे–करावेहिसि, — करावेहिह, करावेहित्था,
करावेस्ससि. — करावेस्सह.
(ए प्रमाणे 'से' प्रत्ययनां)

ती. पु.

कार–कारिहिइ, कारेहिइ, — कारिहिन्ति, कारेहिन्ति,
कारिस्सइ, कारेस्सइ. — कारिस्सन्ति, कारेस्सन्ति.
कारे–कारेहिइ, कारेस्सइ, — कारेहिन्ति, कारेस्सन्ति,
कराव–कराविहिइ, — कराविहिन्ति, करावेहिन्ति,
करावेहिइ, — कराविस्सन्ति,
कराविस्सइ, — करावेस्सन्ति.
करावेस्सइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करावे–करावेहिइ,	करावेहिन्ति,
करावेस्सइ.	करावेस्सन्ति.
(ए प्रमाणे 'ए' प्रत्ययनां)	(ए प्रमाणे न्ते–इरे प्रत्ययनां समजवां

सर्वव० } कारेज्ज, कारेज्जा,
सर्वपु० } करावेज्ज, करावेज्जा.

क्रियातिपत्त्यर्थं.

	एकव०	बहुव०
पुं.	कार–कारन्तो,	कारन्ता.
	कारे–कारेन्तो,	कारेन्ता.
	कराव–करावन्तो,	करावन्ता.
	करावे–करावेन्तो.	करावेन्ता.
स्त्री.	कार–कारन्ती	कारन्तीओ.
	कारे–कारेन्ती	कारेन्तीओ.
	कराव–करावन्ती	करावन्तीओ.
	करावे–करावेन्ती	करावेन्तीओ.
न. पुं	कार–कारन्तं	कारन्ताइं.
	कारे–कारेन्तं	कारेन्ताइं.
	कराव–करावन्तं	करावन्ताइं.
	करावे–करावेन्तं	करावेन्ताइं.

वगेरे कर्तरि प्रमाणे.

सर्वव० } कार–कारेज्ज–ज्जा,
सर्वपु० } कारे–कारेज्ज–ज्जा,
कराव–करावेज्ज–ज्जा,
करावे–करावेज्ज–ज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमानकाळ.

होअ, होए, होआव, होआवे, होअवि-अंगनां रूपो.

प. पु. ए. होअमि, होआमि, होएमि. होएमि.

होआवमि, होआवामि, होआवेमि. होआवेमि.

होअविमि.

ज्ज-ज्जा आवे त्यारे.

होएज्जमि, होएज्जामि.

होआवेज्जमि, होआवेज्जामि.

होअविज्जमि, होअविज्जामि.

होएज्ज-ज्जा, होआवेज्ज-ज्जा, होअविज्ज-ज्जा.

भूतकाळ.

सर्व व०
सर्व पु०

होअसी-ही-हीअ,
होएसी-ही-हीअ,
होआवसी-ही-हीअ,
होआवेसी-ही-हीअ,
होअविसी-ही-हीअ.

आर्षमां—

सर्व व०
सर्व पु०

होअ-होइत्था,	होइंसु,
होए-होएत्था,	होएंसु,
होआव-होआवित्था,	होआविंसु,
होआवे-होआवेत्था,	होआवेंसु,
होअवि-होअवित्था.	होअविंसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

प. पु. ए. होअमु, होआमु, होइमु, होएमु, होएमु.
होआवमु, होआवामु, होआविमु होआवेमु.
होआवेमु होअविमु.

ज्ज-ज्जा आवे त्यारे

होएज्जमु, होएज्जामु, होएज्जिमु, होएज्जेमु,
होआवेज्जमु, होआवेज्जामु, होआवेज्जिमु,
होआवेज्जेमु, होअविज्जमु, होअविज्जामु,
होअविज्जिमु, होअविज्जेमु.

भविष्यकाळ

प, पु. ए.

होअ } होइस्सं होएस्सं होइस्सामि होएस्सामि.
होए } होइहामि, होएहामि, होइहिमि, होएहिमि.
होआव } होआविस्सं, होआवेस्सं, होआविस्सामि,
होआवे } होआवेस्सामि, होआविहामि, होआवेहामि,
होआविहिमि, होआवेहिमि.
होअवि-होअविस्सं होअविस्सामि, होअविहामि, होअविहिमि

ज्ज-ज्जा आवे त्यारे

होएज्ज } होएज्जस्सं, होएज्जस्सामि, होएज्जहामि,
होएज्जा } होएज्जाहामि, होएज्जहिमि, होएज्जाहिमि,
होएज्ज, होएज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होआवेज्ज होआवेज्जा	होआवेज्जस्सं, होआवेज्जस्सामि, होआवेज्जहामि, होआवेज्जाहामि,होआवेज्जहिमि,होआवेज्जाहिमि होआवेज्ज–ज्जा.
होअविज्ज होअविज्जा	होअविज्जस्सं, होअविज्जस्सामि, होअविज्जहामि, होअविज्जाहामि, होअविज्जहिमि, होअविज्जाहिमि, होअविज्ज–ज्जा.

क्रियातिपत्त्यर्थ.

पुं.	होअ–होअन्तो,	होअन्ता.
	होए–होएन्तो,	होएन्ता.
	होआव–होआवन्तो,	होआवन्ता.
	होआवे–होआवेन्तो,	होआवेन्ता.
	होअवि–होअविन्तो,	होअविन्ता.
स्त्री.	होअ–होअन्ती	होअन्तीओ.
	होए–होएन्ती	होएन्तीओ.
	होआव–होआवन्ती	होआवन्तीओ.
	होआवे-होआवेन्ती	होआवेन्तीओ.
	होअवि–होअविन्ती	होअविन्तीओ.
न.	होअ–होअन्तं	होअन्ताइं
	होए–होएन्तं	होएन्ताइं
	होआव-होआवन्तं	होआवन्ताइं
	होआवे–होआवेन्तं	होआवेन्ताइं
	होअवि–होअविन्तं	होअविन्ताइं

वगेरे कर्तरि प्रमाणे—

सर्व व० सर्व पु०	होअ–होएज्ज–ज्जा. होए- ,, ,, होआव–होआवेज्ज–ज्जा. होआवे- ,, ,, होअवि–होअविज्ज–ज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	वर्त-का.	भू-का.	वि-आ.	भ-का.	क्रि-प.
पड्-	पाडइ	पाडीअ	पाडउ	पाडिहिइ	पाडन्तो.
	पाडेइ	पाडेईअ	पाडेउ	पाडेहिइ	पाडेन्तो.
	पडावइ	पडावीअ	पडावउ	पडाविहिइ	पडावन्तो.
	पडावेइ	पडावेईअ	पडावेउ	पडावेहिइ	पडावेन्तो.
हस्-	हासइ	हासीअ	हासउ	हासिहिइ	हासन्तो.
	हासेइ	हासेईअ	हासेउ	हासेहिइ	हासेन्तो.
	हसावइ	हसावीअ	हसावउ	हसाविहिइ	हसावन्तो.
	हसावेइ	हसावेईअ	हसावेउ	हसावेहिइ	हसावन्तो.
बोल्ल्-	बोल्लइ	बोल्लीअ	बोल्लउ	बोल्लिहिइ	बोल्लन्तो.
	बोल्लेइ	बोल्लेईअ	बोल्लेउ	बोल्लेहिइ	बोल्लेन्तो.
	बोल्लावइ	बोल्लावीअ	बोल्लावउ	बोल्लाविहिइ	बोल्लावन्तो.
	बोल्लावेइ	बोल्लावेईअ	बोल्लावेउ	बोल्लावेहिइ	बोल्लावेन्तो.
	बोल्लविइ	बोल्लविईअ	बोल्लवि उ	बोल्लविहिइ	बोल्लविन्तो.
भम्-	भामइ	भामीअ	भामउ	भामिहिइ	भामन्तो.
	भामेइ	भामेईअ	भामेउ	भामेहिइ	भामेन्तो.
	भमावइ	भमावीअ	भमावउ	भमाविहिइ	भमावन्तो.
	भमावेइ	भमावेईअ	भमावेउ	भमावेहिइ	भमावेन्तो.
	भमाडइ	भमाडीअ	भमाडउ	भमाडिहिइ	भमाडन्तो.
ने-	नेअइ	नेअसी	नेअउ	नेइहिइ	नेएन्तो.
	नेएइ	नेएसी	नेएउ	नेएहिइ	नेअन्तो.
	नेआवइ	नेआवसी	नेआवउ	नेआविहिइ	नेआवन्तो.
	नेआवेइ	नेआवेसी	नेआवेउ	नेआवेहिइ	नेआवेन्तो.
	नेंअविइ	नेअविसी	नेअविउ	नेअविहिइ	नेअंविन्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातुओनुं प्रेरक हेत्वर्थकृदन्त, संबन्धकभूतकृदन्त, वर्तमानकृदन्त, भविष्यकृदन्त अने विध्यर्थकर्मणिकृदन्त करवुं होय तो प्रेरक अंगने पूर्वे कहेला कृदन्तोना प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे, अने कर्मणि भूतकृदन्त करवुं होय तो मूळ धातुने **'आवि'** प्रत्यय लगाडी भूतकृदन्तना प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे, अथवा उपान्त्य **'अ'** नो **'आ'** करी भूतकृदन्तनो प्रत्यय लगाडवाथी पण थाय छे. जेम—

हस्+आवि+अ=हसाविअं
हस्+अ =हासिअं. } हसावायेलुं, हसावेलुं.

कर्+आवि+अ=कराविअं
कर्+अ=कारिअं } करावायुं, कराव्युं.

हे–कृ.	सं–भू.	व–कृ.	भ–कृ.
कार–कारिउं	कारिउं	कारन्तो	कारिस्सन्तो
कारे–कारेउं	कारेउं	कारेन्तो	कारेइस्सन्तो
कराव–कराविउं	कराविउं	करावन्तो	कराविस्सन्तो
करावे–करावेउं	करावेउं	करावेन्तो	करावेइस्सन्तो
कार–कारित्तए	कारिअ	कारमाणो	कारिस्समाणो
कारे–कारेत्तए	कारेअ	कारेमाणो	कारेइस्समाणो
कराव–करावित्तए	कराविअ	करावमाणो	कराविस्समाणो
करावे–करावेत्तए	करावेअ	करावेमाणो	करावेइस्समाणो
कार–कारित्तुं	कारिऊण	कारई	
कारे–कारेत्तुं	कारेऊण	कारेई	
कराव–करावित्तुं	कराविऊण	करावई	
करावे–करावेत्तुं	करावेऊण	करावेई	
कार—	कारिउआण	कारन्ती–न्ता	
कारे—	कारेउआण	कारेन्ती–न्ता	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कराव-	कराविउआण	करावन्ती-न्ता
करावे-	करावेउआण	करावेन्ती-न्ता
कार—	कारित्तु	कारमाणी-णा
कारे—	कारेत्तु	कारेमाणी-णा
कराव-	करावित्तु	करावमाणी-णा
करावे-	करावेत्तु	करावेमाणी-णा
कार—	कारित्ता-णं	
कारे—	कारेत्ता-णं	
कराव-	करावित्ता-णं	
करावे-	करावेत्ता-णं	

विध्यर्थ कर्मणि कृदन्त.

कारियव्वं, कारेयव्वं, करावियव्वं, करावेयव्वं, कारणीअं, कारेअणीअं, करावणीअं, करावेअणीअं, कारणिज्जं, कारेअणिज्जं, करावणिज्जं, करावेअणिज्जं.

आ प्रमाणे सर्व धातुओनुं प्रेरक अंग तैयार करी कृदन्तो समजवां.

प्रेरक कर्मणि अने भावे रूपो.

१ धातुओनो प्रेरक कर्मणि के भावे प्रयोग करवो होय तो **अ-ए-आव-आवे** ए प्रत्ययोने स्थाने प्रेरक सूचक ***आवि** प्रत्यय लगाडवो अने ते तैयार थयेला अंगने पूर्वे कहेला कर्मणि-भावेना-**ईअ-इज्ज** प्रत्ययो लगाडीने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी प्रेरक कर्मणि भावे रूपो थाय छे.

तेमज बीजी रीते पण प्रेरक सूचक कोई पण प्रत्यय लगाड्या

---

*आवि प्रत्यय लगाडतां पूर्वना **अ** नो **आ** पण कोई स्थळे थाय छे. हासावीअइ-(नायविढत्तधणेण जं काराविज्जंति देवभवणाइं कुव० मा० पृ० २०६-पं-१६) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विना उपान्त्य 'अ' होय तो 'आ' करी 'ईअ–इज्ज' प्रत्यय लगाडवाथी प्रेरककर्मणि–भावे रूपो थाय छे.

कर्+आवि=करावि+ईअ=करावीअ
कर्+आवि=करावि+इज्ज=कराविज्ज
कर्–कार्+ईअ=कारीअ
कर्–कार्+इज्ज=कारिज्ज
जाण्+आवि=जाणावि+ईअ=जाणावीअ
जाण्+आवि+जाणावि+इज्ज=जाणाविज्ज
जाण्+ईअ=जाणीअ
जाण्+इज्ज=जाणिज्ज
हो+आवि=होआवि+ईअ=होआवीअ
हो+आवि=होआवि+इज्ज=होआविज्ज
हो+ईअ=होईअ
हो+इज्ज=होइज्ज.

आ प्रमाणे अंग तैयार करी ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्यय लगाडी रूपो साधी लेवां.

हस्–हसावीअ, हसाविज्ज, हासीअ, हासिज्ज–अंगनां रूपो.

वर्तमानकाळ.

	एकवचन.	बहुवचन.
प.पु.	हसावीअमि, हसावी-आमि, हसावीएमि.	हसावीअमो, हसावीआमो. हसावीइमो, हसावीएमो.
	हसाविज्जमि, हसा-विज्जामि, हसाविज्जेमि.	हसाविज्जमो, हसाविज्जामो. हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो.
	हासीअमि, हासीआमि, हासीएमि.	हासीअमो, हासीआमो. हासीइमो, हासीएमो,
	हासिज्जमि, हासिज्जामि,	हासिज्जमो, हासिज्जामो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हासिज्जेमि. हासिज्जिमो, हासिज्जेमो.

(ए प्रमाणे–'मु–म' प्रत्ययनां समजवां)

बी.पु. हसावीअसि, हसावीइत्था, हसावीअह,
हसाविज्जसि, हसाविज्जित्था, हसाविज्जह,
हासिअसि, हासीइत्था, हासीअह,
हासिज्जसि. हासिज्जित्था, हासिज्जह.
(ए प्रमाणे–'से' प्रत्ययनां समजवां)

ती.पु. हसावीअइ, हसावीअन्ति–न्ते, हसावीइरे,
हसाविज्जइ, हसाविज्जन्ति–न्ते, हसाविज्जिरे,
हासीअइ, हासीअन्ति–न्ते, हासीइरे,
हासिज्जइ, हासिज्जन्ति–न्ते, हासिज्जिरे.
(ए प्रमाणे–'ए' प्रत्ययनां समजवां)

सर्वपु. सर्वव. } हसावीएज्ज–ज्जा, हसाविज्जेज्ज–ज्जा,
हासीएज्ज–ज्जा, हासिज्जेज्ज–ज्जा.

भूतकाळ.

सर्वपु. सर्वव. } हसावीअईअ, हसाविज्जईअ,
हासीअईअ, हासिज्जईअ.

आर्षमां—

सर्वपु. सर्वव. } हसावीअ– हसावीइत्था, हसावीइंसु.
हसाविज्ज–हसाविज्जित्था, हसाविज्जिंसु.
हासीअ– हासीइत्था, हासीइंसु.
हासिज्ज– हासिज्जित्था, हासिज्जिंसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधि–आज्ञार्थ.

	एकवचन.	बहुवचन.
प.पु.	हसावीअमु, हसावीआमु, हसावीइमु. हसावीएमु, हसाविज्जमु, हसाविज्जामु, हसाविज्जिमु, हसाविज्जेमु.	हसावीअमो, हसावीआमो, हसावीइमो, हसावीएमो, हसाविज्जमो, हसाविज्जामो, हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो.
	हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु, हासीएमु, हासिज्जमु, हासिज्जामु, हासिज्जिमु, हासिज्जेमु,	हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हासीएमो, हासिज्जमो, हासिज्जामो, हासिज्जिमो, हासिज्जेमो.
बी.पु.	हसावीअहि, हसावीएहि, हसावीअसु, हसावीएसु, हसावीइज्जसु, हसावीएज्जसु. हसावीइज्जहि, हसावीएज्जहि, हसावीइज्जे, हसावीएज्जे, हसावीअ, हसावीए.	हसावीअह, हसावीएह, हसाविज्जह, हसाविज्जेह, हासीअह, हासीएह. हासिज्जह. हासिज्जेह.

(आ प्रमाणे–हसाविज्ज–हासीअ–हासिज्ज अंगनां पण समजवां)

	एकवचन.	बहुवचन.
ती.पु.	हसावीअउ, हसावीएउ, हसाविज्जउ, हसाविज्जेउ, हासीअउ, हासीएउ, हासिज्जउ, हासिज्जेउ.	हसावीअन्तु, हसावीएन्तु, हसाविज्जन्तु, हसाविज्जेन्तु, हासीअन्तु, हासीएन्तु, हासिज्जन्तु, हासिज्जेन्तु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व पु. सर्व व.	हसावीएज्ज-ज्जा, हसावीएज्जइ, हसाविज्जेज्ज-ज्जा, हसाविज्जेज्जइ, हासीएज्ज-ज्जा, हासीएज्जइ, हासिज्जेज्ज-ज्जा, हासिज्जेज्जइ.

भविष्यकाळ.

* हसावि-हास.

	एकवचन	बहुवचन
प. पु.	हसाविस्सं, हसाविस्सामि, हसाविहामि, हसाविहिमि. हासिस्सं, हासेस्सं, हासिस्सामि, हासेस्सामि, हासिहामि, हासेहामि, हासिहिमि, हासेहिमि.	हसाविस्सामो, हसाविहामो, हसाविहिमो, हसाविहिस्सा, हसाविहित्था. हासिस्सामो, हासेस्सामो, हासिहामो, हासेहामो, हासिहिमो, हासेहिमो, हासिहिस्सा, हासेहिस्सा, हासिहित्था, हासेहित्था. (ए प्रमाणे–'मु·म' प्रत्ययनां)
बी. पु.	हसाविहिसि, हसाविस्ससि, हासिहिसि, हासेहिसि, हासिस्ससि, हासेस्ससि. (ए प्रमाणे–'से' प्रत्ययनां)	हसाविहिह, हसाविस्सह, हसाविहित्था, हासिहिह, हासेहिह, हासिस्सह, हासेस्सह, हासिहित्था, हासेहित्था.

---

*भविष्यकाळ अने क्रियातिपत्त्यर्थमां 'ईअ–इज्ज' प्रत्ययो लागता नथी. माटे 'ईअ–इज्ज' प्रत्यय लगाडया विना लागला ज पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडाय छे. परिशिष्ट १. नि. ९.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्री. पु.	हसाविहिइ, हसावि- हिए. हसाविस्सइ, हसाविस्सए, हासिहिइ, हासिहिए, हासेहिइ, हासेहिए, हासिस्सइ, हासिस्सए, हासेस्सइ, हासेस्सए.	हसाविहिन्ति, हसाविस्सन्ति, हासिहिन्ति, हासेहिन्ति, हासिस्सन्ति, हासेस्सन्ति, (ए प्रमाणे-'न्ते-इरे' प्रत्ययनां समजवां)

सर्व व० } हसाविज्ज-ज्जा,
सर्व पु० } हासेज्ज-ज्जा.

क्रियातिपत्त्यर्थ

	एकवचन.	बहुवचन.
पुं.	हसाविन्तो, हासन्तो.	हसाविन्ता, हासन्ता.
स्त्री.	हसाविन्ती, हासन्ती.	हसाविन्तीओ, हासन्तीओ.
न.	हसाविन्तं, हासन्तं.	हसाविन्ताइं, हासन्ताइं.

वगेरे कर्तरि प्रमाणे.

सर्व व० } हसाविज्ज-ज्जा,
सर्व पु० } हासेज्जा-ज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंग- वर्त. का.	भू. का.
कर्-करावीअ-करावीअइ,	करावीअईअ.
कराविज्ज-कराविज्जइ,	कराविज्जईअ.
कारीअ-कारीअइ,	कारीअईअ.
कारिज्ज-कारिज्जइ,	कारिज्जईअ.
पड्-पडावीअ-पडावीअइ,	पडावीअईअ.
पडाविज्ज-पडाविज्जइ,	पडाविज्जईअ.
पाडीअ-पाडीअइ,	पाडीअईअ.
पाडिज्ज-पाडिज्जइ,	पाडिज्जईअ.
हो-होआवीअ-होआवीअइ,	होआवीअसी-ही-हीअ.
होआविज्ज-होआविज्जइ,	होआविज्जसी- ,, ,,
होईअ-होईअइ,	होईअसी- ,, ,,
होइज्ज-होइज्जइ,	होइज्जसी- ,, ,,
(दृश्) *दीसावि-दीसाविइ,	दीसाविईअ.
दीस-दीसइ,	दीसईअ.
(ग्रह्)-घेप्पावि-घेप्पाविइ,	घेप्पाविईअ.
घेप्प-घेप्पइ,	घेप्पईअ.
गहावीअ-गहावीअइ,	गहावीअईअ.
गहाविज्ज-गहाविज्जइ,	गहाविज्जईअ.
गाहीअ-गाहीअइ,	गाहीअईअ.
गाहिज्ज-गाहिज्जइ,	गाहिज्जईअ.

*दीस वगेरे धातुओने माटे पृष्ठ १५५ मुं जुओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वि॰ आ॰	भ॰ का॰	क्रिया॰
करावीअउ,	कराविहिइ, करावित्सइ	कराविन्तो-न्ती-न्तं, कराविज्ज-ज्जा.
कराविज्जउ,	,,	,,
कारीअउ, कारिज्जउ,	कारिहिइ कारिस्सइ,	कारन्तो-न्ती-न्तं, कारेज्ज-ज्जा.
पडावीअउ.	पडाविहिइ पडाविस्सइ	पडाविन्तो-न्ती-न्तं, पडाविज्ज-ज्जा.
पडाविज्जउ,	,,	,,
पाडीअउ, पाडिज्जउ.	पाडिहिइ पाडिस्सइ	पाडन्तो-न्ती-न्तं, पाडेज्ज-ज्जा.
होआवीअउ,	होआविहिइ होआविस्सइ	होआविन्तो-न्ती-न्तं होआविज्ज-ज्जा.
होआविज्जउ,	,,	,,
होईअउ, होइज्जउ,	होहिइ होस्सइ	होन्तो-न्ती-न्तं, होज्ज-ज्जा.
दीसाविउ,	दीसाविहिइ	दीसाविन्तो-न्ती-न्तं,
दीसउ.	दीसिहिइ	दीसाविज्ज-ज्जा. दीसन्तो-न्ती-न्तं दीसेज्ज ज्जा
घेप्पाविउ,	घेप्पाविहिइ घेप्पाविस्सइ	घेप्पाविन्तो-न्ती-न्तं, घेप्पाविज्ज-ज्जा.
घेप्पउ,	घेप्पिहिइ घेप्पिस्सइ	घेप्पन्तो-न्ती-न्तं घेप्पेज्ज-ज्जा.
गहावीअउ,	गहाविहिइ गहाविस्सइ	गहाविन्तो-न्ती-न्तं, गहाविज्ज-ज्जा.
गहाविज्जउ,	,,	,,
गाहीअउ गाहिज्जउ.	गाहिहिइ गाहिस्सइ	गाहन्तो-न्ती-न्तं, गाहेज्ज-ज्जा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरक कर्मणि वर्तमानकृदन्त.

प्रेरक कर्मणि अंगने वर्तमानकृदन्तना प्रत्ययो लगाडवाथी प्रेरक कर्मणि वर्तमानकृदन्त थाय छे.

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
करावीअ-करावीअन्तो-माणो.	करावीअई-न्ती-न्ता-माणी-माणा
कराविज्ज-कराविज्जन्तो-माणो.	कराविज्जई ,, ,, ,, ,,
कारीअ-कारीअन्तो-माणो.	कारीअई- ,, ,, ,, ,,
कारिज्ज-कारिज्जन्तो-माणो.	कारिज्जई- ,, ,, ,, ,,

प्रेरकनी वाक्य रचना.

१ प्रेरकनी वाक्यरचनामां मूल क्रियानो कर्त्ता बीजी विभक्ति के त्रीजी विभक्तिमां मूकाय छे, जेम **सीसो गंथं रएइ, तं गुरू पेरणं करेइ त्ति गुरू सीसं सीसेण वा गंथं रयावेइ** (गुरु शिष्यनी पासे ग्रंथ रचावे छे.)

२ अपवाद-अकर्मक धातुओनी वाक्यरचनामां तेमज शब्दकर्मक धातुओ, गति, ज्ञान, भोजन, अर्थवाळा धातुओ अने **देक्ख-पास** वगेरे धातुओनी प्रेरक वाक्यरचनामां मूलक्रियानो कर्त्ता बीजी विभक्तिमां प्राय: मूकाय छे. जेम—

कर्तरि— प्रेरक—

बालो जग्गइ=पिआ बालं जग्गावेइ—अकर्मक.
समणो सिद्धन्तं पढेइ=सूरी समणं सिद्धन्तं पढावेइ—शब्दकर्मक.
समणा विहरन्ति=आयरिओ समणे विहरावेइ—गति-अर्थ.
सावगो तत्ताइं जाणेइ=गुरू सावगं तत्ताइं जाणावइ—ज्ञानार्थ.
पुत्तो आहरेइ=पिआ पुत्तं आहारेइ—भोजनार्थ.
वच्छो जिणपडिमं देक्खइ=जणओ वच्छं जिणपडिमं देक्खविइ.

बीजी प्रक्रिया

संस्कृतमां जेम इच्छादर्शक आदि अन्य पक्रियाओ छे. तेम प्राकृतमां नथी पण केटलीएक प्रक्रियानां रूपो आर्ष प्राकृतमां देख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वामां आवे छे. ते पूर्वे कहेला वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार थइ सिद्ध थाय छे. जेमके:—

संo प्राo

सनन्त=जुगुप्सते=जुगुच्छइ } निन्दा करे छे. जुगुच्छिअ–भू. कृ.
जुउच्छइ } घृणा करे छे. जुगुच्छमाण–व. कृ.

पिपासति=पिवासइ=पिवानी इच्छा करे छे. पिवासिअ–भू. कृ.

बुभुक्षति=बुहुक्खइ=खावानी इच्छा करे छे. बुहुक्खिअ–भू. कृ.

लिप्सति=लिच्छइ=मेळववाने इच्छे छे.

शुश्रूषते-सुस्सूसइ=सेवा करे छे. सांभळवाने इच्छे छे. सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण–व. कृ.

चिकित्सति=चिइच्छइ=दवा करे छे.

तितिक्षते=तितिक्खइ=सहन करे छे. तितिक्खमाण, तिइक्खमाण–व. कृ.

यङन्त–लालप्यते=लालप्पइ=लपलप करे छे. लालप्पमाण–व. कृ.

चङ्क्रम्यते=चंकम्मइ=बहु ज चाले छे. चंकम्मंत, चंकम्ममाण–व. कृ.

यङ्लुगन्त–चङ्क्रमीति=चंकमइ=वारंवार चाले छे. चंकमंत,
चंकमाण–व. कृ.
चंकमिउं–हे. कृ.
चंकमियव्व–वि. कृ.
चंकमिअ–भू. कृ.

नामधातु (दमदमायते) दमदमाइ } आडंबर करे छे.
दमदमाअइ }

(गुरुकायते) गुरुआइ } गुरुनी जेम आचरण करे छे.
गुरुआअइ }

(लोहितायते) लोहिआइ } लाल थाय छे.
लोहिआअइ }

(अमरायते) अमराइ } अमरनी जेम आचरण करे छे.
अमराअइ }

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दो

अण्णमण्ण, अण्णण्ण, अण्णुण्ण, अण्णोण्ण वि. (अन्योन्य) परस्पर.

अणज्ज, अणारिय वि. (अनार्य) आर्य नहि ते.

आराहणा स्त्री. (आराधना) उपासना, सेवना.

कवड न. (कपट) कपट, माया.

कणिट्ठ वि. (कनिष्ठ) लघुभ्राता, सर्वथी नानुं, लघु.

कट्ठ न. (कष्ट) दुःख, पीडा, वि. दुःखकारी.

कन्नगा स्त्री. (कन्यका) कन्या.

कुमरवाल, कुमारवाल पु. (कुमारपाल) कुमारपाल राजा.

केवल न. (सम) केवळज्ञान.

खसर (दे) रोग विशेष, खरजवुं, खस.

खलिअ वि. (स्खलित) पडेलुं, भूलेलुं. न. अपराध, भूल.

गइ स्त्री. (गति) आधार, देवादि चार गति.

गिह न. (गृह) घर.

गेह न. (सम) घर, मकान.

८० चोरिअ न. (चौर्य) चोरी.

जलोयर न. (जलोदर) जलोदर.

जावज्जीव, जाजीव न. (यावज्जीव) जीवन पर्यन्त

जोग्ग वि. (योग्य) योग्य, लायक.

जुत्त वि (युक्त) उचित, योग्य, सळेलुं.

तवस्सि पु. (तपस्विन्) तपस्वी.

तिमिर न. (सम) आंखनो रोग, अन्धकार, अज्ञान.

देव्व-व, दइव्व-व पु. न. (दैव) दैव भाग्य, अदृष्ट.

नव (सम) द्वि. ब. नव संख्या.

नट्टअ पु. (नर्तक) नट.

---

८० स्याद्–भव्य–चैत्य तेमज चौर्य अने तेना जेवा समान शब्दोमां संयुक्त जे 'य' व्यंजन तेनी पूर्वे 'इ' मुकाय छे.

सिया (स्याद्)	चेइअं (चैत्यम्)	थेरिअं (स्थैर्यम्)
सियावाओ (स्याद्वादः)	चोरिअं (चौर्यम्)	वीरिअं (वीर्यम्)
भविओ (भव्य)		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निग्गुण वि. (निर्गुण) गुणरहित.
पइट्ठा स्त्री. (प्रतिष्ठा) प्रतिष्ठा, कीर्ति, आदर.
पयत्थ पु. (पदार्थ) पदार्थ, वस्तु, पदनो अर्थ.
पइदिण न. (प्रतिदिन) दररोज, सदा.
पास न. (पार्श्व) समीप, पासे.
पावकम्म न. (पापकर्म) पापकर्म.
बंधण न. (बन्धन) बन्धन.
भविअ / **भव्व** वि. (भव्य) भव्य, सुंदर, योग्य जीव.
मउड पु. (मुगुट) मुगट.
मूग / **मूअ** वि. (मूक) मूंगो.
रयण पु. न. (रत्न) रत्न.
वियंभिय वि. (विजृम्भित) विकसित.
वेडुज्ज / **वेडुरिअ** / **वेरुलिअ** पु. न. (वैडूर्य) वैडूर्यरत्न.
सइंदय वि. (स-इन्द्रक) इन्द्र सहित.
संपइनरिंद पु. (सम्प्रतिनरेन्द्र) संप्रति राजा.
सयल वि. (सकल) पूर्ण, सर्व.
समणोवासय पु. (श्रमणोपासक) श्रावक.
सरूव न. (स्वरूप) स्वरूप.
सब्भाव पु. (सद्भाव) सारो भाव, सत्ता, विद्यमान.
सरणत्त न. (शरणत्व) शरणपणुं.
सप्पाण वि. (सप्राण) प्राण सहित.
सासय वि. (शाश्वत) नित्य, अविनश्वर.
सिद्धराय पु. (सिद्धराज) राजानुं नाम छे.
सिद्धहेम न. (सिद्धहैम) व्याकरणनुं नाम छे.
सूल पु. न. (शूल) शूल, शूलनो व्याधि.

सामासिक शब्दो.

जीवाजीवाइ (जीवाजीवादि) जीव-अजीव आदि नव पदार्थो.
पाइयकव्व (प्राकृतकाव्य) प्राकृत काव्य.
पाणिगण (प्राणिगण) जीवोनो समुदाय.
मणवल्लह (मनोवल्लभ) मनने प्रिय.
मरणभय (सम) मरणनो भय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसुदेवपुत्त (वसुदेवपुत्र) वसुदेवनो पुत्र.

दूसमसमय } (दुःषमसमय)
दुस्समसमय } दुषमकाल.

धणहरण (धनहरण) धननुं हरण करवुं.

सव्वायर (सर्व्वादर) सर्व आदर पूर्वक.

सकुडुंबय (सकुटुम्बक) कुटुम्ब सहित.

अव्यय.

अहो (सम) शोक, आश्चर्य, प्रशंसा, आमंत्रणादि अर्थे.

***अलाहि** } (दे. अलम्) निवारण,
अलं } निषेध, पूर्ण, बस.

पुणरुत्तं (दे) वारंवार.

सयं (स्वयम्) पोते, पोतानी मेळे.

सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे.

हंतूण सं. भू. (हत्वा) हणीने.

धातुओ.

अणु-सास् (अनु+शास्) शिखामण आपवी, उपदेश आपवो, आज्ञा आपवी.

अप्प् } (अर्पय्) अर्पण करवुं,
×पणाम } भेट करवुं.

अब्भस् (अभि+अस्) अभ्यास करवो, शीखवुं.

अभिनिक्खम् (अभि+निष्क्रम्) संयमने माटे घेरथी नीकळवुं.

उग्घाड् (उद्+घटय्) उघाडवुं.

उम्मूल् (उद्+मूल्) मूळथी उखेडवुं.

×उल्लाल }
×उन्नाम } (उद्+नामय्) ऊंचुं करवुं उपर फेरववुं.
×उन्नाव }

गम् (गमय) वीताववुं.

×जव } (यापय्) वीताववुं, शरीरनुं
×जाव् } पालन करवुं.

जम्प् (कथ्–जल्प्) बोलवुं, कहेवुं.

×ठव (स्थापय) स्थापन करवुं.

×ढक्क } (छादय्) ढांकवुं,
छाय् } आच्छादन करवुं.

×दाव }
×दंस } (दर्शय्) देखाडवुं,
×दक्खव } बताववुं.
दरिस् }

×दूम (दू–दावय्) दुःख आपवुं, सन्ताप उपजाववो.

×नासव }
×पलाव } (नाशय्) नाश करवो,
नास् } भगाडवुं.

निम्माण् }
निम्मव } (निर+मा) बनाववुं,
निम्म् } रचवुं.

---

*आ अव्ययना योगमां त्रीजी विभक्ति मुकाय छे,
×आ चिह्नवाळा धातुओ प्रेरकमां ज वपराय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×निस्सार } (निर्+सारय्) बहार
×नीसार } निकाळवुं.

×पट्ठव } (प्र+स्थापय्) मोकलवुं,
×पट्ठाव } प्रस्थान करवुं, प्रारंभ करवो.

×पव्वाव (प्र + व्राजय्) दीक्षा अपाववी.

पसम् (प्र शमय्) शान्ति करवी.

पज्जुवास् (परि+उप+आस्) सेवा भक्ति करवी.

परिचिंत् (परि+चिन्तय्) चिन्तन करवुं, विचार करवो.

×पभाव (प्र+भावय्) प्रभावना करवी.

×पत्तिआव (प्रति+आयय्) विश्वास कराववो.

फेड् (स्फेटय्) विनाश करवो.

भुंज् (भुज्) भोजन करवुं.

बहुमाण् (बहुमानय्) सन्मान करवुं, आदर करवो.

×रोमन्थ } (रोमन्थय्) वागोळवुं.
×वग्गोल }

×विणास् (वि+नाशय्) विनाश करवो.

वेढ् } (वेष्ट्) वींटवुं, लपेटवुं.
×परिआल }

×सिह् (स्पृह) चाहवुं, इच्छवुं.

सुह् (सुखय्) सुखी करवुं.

प्राकृत वाक्यो।

पावकम्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा ।

पाइयकव्वं लोए कस्स हिययं न सुहावेइ ।

बलवंता पंडिआ य जे के वि नरा संति, ते वि महिलाए अंगुलीहिं नच्चाविज्जन्ति ।

अहं वेज्जोम्हि, फेडेमि सीसस्स वेयणं, सुणावेमि बहिरं, अवणेमि तिमिरं, पणासेमि खसरं, उम्मूलेमि वाहिं, पसमेमि सूलं, नासेमि जलोयरं च ।

साहूणं दंसणं पि हि नियमा दुरियं पणासेइ ।

रण्णा सुवण्णगारे वाहराविऊण अप्पणो मउडम्मि वइराइं वेड्डज्जाइं रयणाणि य रयावीअईअ ।

संपइनरिंदेण सयलाए पिच्छीए जिणेसराणं चेइआइं कराविआइं।

तवस्सी भिक्खू ण छिंदे, ण छिंदावए, ण पए, ण पयावए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समणोवासगो पइट्ठाए महोच्छवे सव्वे साहम्मिए भुंजावेईअ।

जइ पिआ पुत्ते सम्मं पढावंतो ता वड्ढत्तणे सो किं एवंविहं दुहं लहेन्तो?।

नरिंदेण तत्थ गिरिंमि चेइअं निम्मवियं।

खमियव्वं खमावियव्वं, उवसमियव्वं उवसमावियव्वं, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तओ अप्पणा चेव उवसमियव्वं।

एरिसा कण्णगा परस्स दाऊण अप्पणो गेहाओ किं निस्सारिज्जइ? सव्वहा न जुत्तमेयं।

अहो कट्ठं कट्ठं वसुदेवपुत्तो होऊण सयलजणाणं मणवल्लहं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि।

हेमचंदसूरिणो पासे देवाणं सरूवं मुणिऊण हं सव्वत्थ वि तित्थयराणं मंदिराइं कराविस्सामि त्ति पइण्णं कुमारवालनरिंदो कासी।

सो पइदिणं अब्भसंतो जिणधम्मं, पज्जुवासंतो मुणिजणं, परिचिन्तन्तो जीवाजीवाइणो नव पयत्थे, रक्खन्तो रक्खावितो य पाणिगणं, बहुमाणन्तो साहम्मिए जणे, सव्वायरेण पभावंतो जिणसासणं कालं गमेइ।

एसो रज्जस्स जोग्गो ता झत्ति रज्जे ठविज्जउ, अलाहि निग्गुणेहिँ अन्नेहिँ।

गिहं जहा कोवि न जाणइ तहा पवेसेमि नीसारेमि य।

जो सावज्जे पसत्तो सयंपि अतरंतो कहं तारए अन्नं?।

गुरुणा पुणरुत्तं अणुसासिओ वि न कुप्पेज्जा।

एक्कस्स चेव दुक्खं, मारिज्जंतस्स होइ खणमेक्कं
जावज्जीवं सकुडुंबयस्स पुरिसस्स धणहणे ॥१॥

दूसमसमए वि हु हेमसूरिणो निसुणिऊण वयणाइं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वजणो जीवदयं, कराविओ कुमरवालेणं ॥ २ ॥
रोवन्ति रुवावन्ति य, अलियं जंपन्ति पत्तियावेन्ति ।
कवडेण य खंति विसं, मरन्ति न य जंति सब्भावं ॥३॥
मरणभयम्मि उवगए, देवा वि सइंदया न तारेंति ।
धम्मो ताणं सरणं, गइत्ति चिंतेहि सरणत्तं ॥ ४ ॥
हन्तूण परप्पाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं ।
अप्पाणं दिवसाणं, कए स णासेइ अप्पाणं ॥ ५ ॥

गुजराती वाक्यो.

१ पिताए उपाध्यायनी पासे पुत्रोने तत्त्वोनुं ज्ञान ग्रहण करावराव्युं. (गिण्ह)

२ सिद्धराजे हेमचन्द्रसूरिजीनी पासे व्याकरण रचाव्युं (रय्) तेथी 'सिद्धहैम' ए प्रमाणे तेनु नाम स्थापन करायुं. (ठव्)

३ सारा शिष्यो गुरुओने पोतानी भूलो संभळावे छे (सुण्) अने संभळावीने पछी तेओ खमावे छे. (खम्)

४ जे पुस्तकोनो विनाश करे छे (वि-नास्) ते परलोकमां मुंगा, आंधळा अने बहेरा थाय छे.

५ आचार्य शिष्योने रात्रिना छेल्ला प्रहरमां उठाडीने (उट्ठ्) हंमेशां स्वाध्याय करावे छे.

६ नटे राजाने अने सभाना लोकोने भरत राजानु नाटक देखाड्युं (दाव-दक्खव) अने ते देखाडतां नटे केवलज्ञान प्राप्त कर्युं.

७ पिता पुत्रोने विद्वान गुरु पासेथी शिखामण अपावे छे. (अणुसास्)

८ राजाना बुद्धिशाळी मन्त्रीए पोतानी बुद्धिवडे नगर तरफ आवता शत्रुओनो नाश कराव्यो. (नासव)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९ राजाए उपाध्यायने बोलावीने (**वाहर्-बोल्ल्**) कह्युं के तमे राज-पुत्रोने नीतिशास्त्र अने व्याकरणशास्त्र भणावो.

१० रामे ते वखते तेने झेर खवडाव्युं होत (**भक्ख्**) तो ते जरुर मरत.

११ माताए नाना बालकोने बीवडाववा न जोइए. (**बीह्**)

१२ तीर्थंकरो भव्य जीवोने संसारना बंधनमांथी छोडावी (**मुय्**) शाश्वत सुख अपावे छे. (**अप्प्**)

१३ जेओथी चोरी कराई तेओने राजाए शिक्षा करावी. (**दंड्**)

१४ कुमारे घेरथी नीकळी (**अभिनिक्खम्**) सर्वनो त्याग करी उद्यानमां आचार्य पासे संयम ग्रहण कर्यो अने घणा कुमारोने ग्रहण कराव्यो. (**गिण्ह्**)

१५ संयममां रहेला साधु पुरुषो सुखपूर्वक दिवसो वीतावे छे. (**जाव**)

१६ जे भाईओने अने मित्रोने परस्पर लडावी मारे छे (**जुज्झ्**) अने वखते माणस पासे पोतानुं माथुं पण कपावे छे (**छिंद्**) ते अदृष्ट ज छे.

१७ खुशी थयेली राणीए चोरने पोताना मकानमां लइ जइ सारुं भोजन कराव्युं, त्यार पछी वस्त्रो अने आभूषणो आपीने रजा आपी.

१८ ज्ञातपुत्र समवसरणमां बेसीने जन्म अने मरणनुं कारण मनुष्यो अने देवोने समजावे छे. (**जाण्-बोह्**)

१९ साधु पुरुषो कहे छे के पापकर्मो जीवोने हंमेशां संसारचक्रमां भमाडे छे. (**भमाड**)

२० सर्व धर्मोनो त्याग करी एक वीतराग देवने तुं भज, ते ज सर्व पापोथी (तने) मुकावशे. (**मुय्**)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठ २१ मो.

समास.

भिन्न भिन्न अर्थवाळा शब्दो भेगा थइने एक अर्थने जणावनारुं जे पद तेने समास कहे छे.

प्राकृतमां समास प्रकरण संस्कृतनी माफक जाणी लेवुं;

जेम संस्कृतमां द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्विगु, अव्ययीभाव अने एकशेष एम सात प्रकारना समासो आवे छे. ते ज प्रमाणे प्राकृतमां छे. जेमके—

[१]दंदे य [२]बहुव्वीही, [३]कम्मधारयए [४]दिगुयए चेव ।
[५]तप्पुरिसे [६]अव्वईभावे, [७]एगसेसे य सत्तमे ॥

१ दंद (द्वन्द्व) समास.

१. एक मूळ नामनो बीजा एक अथवा अनेक नामो साथे समास थाय अथवा तो घणा नामो एक एक साथे जोडी मोटो समास पण करी शकाय छे, ते द्वन्द्व कहेवाय छे. (आ समासमां बधा नामो मुख्य होय छे. एटले एकज क्रियाना करनार होय छे.)

आ समास करवा माटे अ, य, अने कोई ठेकाणे **च** अव्ययनो प्रयोग करवामां आवे छे. (नि. ३० जुओ.)

२. द्वन्द्व समास बहुवचनमां वपराय छे. अने छेल्ला नामनी जाति आखा समासने लागे छे उदा०—

अजिअसंतिणो (अजितशान्ती)=अजिओ अ संती अ–अजितनाथ अने शान्तिनाथ.

उसहवीरा (ऋषभवीरौ)=उसहो अ वीरो अ–ऋषभदेव अने वीरजिनेश्वर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवदाणवगंधव्वा (**देवदानवगन्धर्वाः**)=**देवा य दाणवा य गंधव्वा य**–देवो दानवो अने गंधर्वो.

वानरमोरहंसा (**वानरमयूरहंसाः**)=**वानरो अ मोरो अ हंसो अ**–वानर मोर अने हंस.

सावगसाविगाओ (**श्रावकश्राविके**)=**सावगो अ साविगा य**–श्रावक अने श्राविका.

देवदेवीओ (**देवदेव्यः**)=**देवा य देवीओ अ**–देवो अने देवीओ.

सासूवहूओ (**श्वश्रूवध्वौ**)=**सासू अ वहू अ**–सासु अने वहू.

भक्खाभक्खाणि (**भक्ष्याभक्ष्ये**)=**भक्खं च अभक्खं च**–भक्ष्य अने अभक्ष्य.

पत्तपुप्फफलाणि (**पत्रपुष्पफलानि**)=**पत्तं च पुप्फं च फलं च**–पत्र पुष्प अने फल.

ए प्रमाणे–**जीवाजीवा, पासवीरा, समणसमणीओ, सत्तुमित्ताणि, निंदासलाहाओ, रूवसोहग्गजोव्वाणाणि** ना विग्रह करी लेवा.

३. आ द्वन्द्व समास ज्यारे समूह बतावतो होय के ज्यारे ते समूहनो एकज संकीर्ण विचार बतावतो होय त्यारे समाहार द्वन्द्व समास थाय छे. आ समास एकवचनमां अने प्रायः नपुंसकलिंगमां थाय छे.

(आ समासनो प्रयोग प्राकृतमां बहु ज अल्प देखाय छे.) जेम–

असणपाणं (**अशनपानम्**) **असणं च पाणं च एएसिं समाहारो.**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तवसंजमं (तपःसंयमम्) तवो अ संजमो अ एएसिं समाहारो.

नाणदंसणचरित्तं (ज्ञानदर्शनचारित्रम्) नाणं च दंसणं च चरित्तं च एएसिं समाहारो.

रागदोसभयमोहं (रागद्वेषभयमोहम्) रागो अ दोसो अ भयं च मोहो अ एएसिं समाहारो.

२ तप्पुरिस (तत्पुरुष) समास.

१. प्रथमा सिवायनी छ विभक्तिवाळा पूर्वपदोनो उत्तरपद साथे समास थाय छे. आ समासमां उत्तरपद प्रधान होय छे.

द्वितीया–भद्दपत्तो (भद्रप्राप्तः) भद्दं पत्तो.
सिवगओ (शिवगतः) सिवं गओ.

तृतीया–साहुवंदिओ (साधुवन्दितः) साहूहिं वन्दिओ.
जिणसरिसो (जिनसदृशः) जिणेण सरिसो.

चतुर्थी–कलसखुवण्णं (कलशसुवर्णम्) कलसाय सुवण्णं.
मोक्खत्थं नाणं (मोक्षार्थं ज्ञानम्) मोक्खाय इमं.

पंचमी–दंसणभट्ठो (दर्शनभ्रष्टः) दंसणाओ भट्ठो.
अन्नाणभयं (अज्ञानभयम्) अन्नाणाओ भयं.

षष्ठी–जिणेन्दो, जिणिन्दो (जिनेन्द्रः) जिणाणं इंदो.

८१देवत्थुई / देवथुई (देवस्तुतिः) देवस्स थुई.

---

८१ संयुक्त व्यंजनमां एकनो लोप थया पछी शेष व्यंजन, तेमज संयुक्त व्यंजनने स्थाने थयेल आदेशभूत व्यंजन जो समासनी अंदर होय तो विकल्पे द्वित्व थाय छे. जेम—

विसप्पओगो–विसपओगो (विषप्रयोगः) कुसुमप्पयरो–कुसुमपयरो (कुसुमप्रकरः)
घणक्खओ, घणखओ (घनक्षयः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[८२]विबुहाहिवो (विबुधाधिपः) विबुहाणं अहिवो.
[८३]वहुमुहं (वधूमुखम्) वहूए मुहं.

सप्तमी–जिणोत्तमो, जिणुत्तमो, (जिनोत्तमः) जिणेसु उत्तमो.
नाणोज्जओ, नाणुज्जओ, (ज्ञानोद्यतः) नाणम्मि उज्जओ.
कलाकुसलो (कलाकुशलः) कलासु कुसलो.

---

८२. प्राकृतमां बे पदोनी सन्धि विकल्पे थाय छे (नियम ६ ट्ठो जुओ.)

उदा०–जिण+अहिवो=जिणाहिवो, जिणअहिवो. (जिनाधिपः)
जिण+ईसरो=जिणेसरो, जिणीसरो. (जिनेश्वरः)
कवि+ईसरो=कवीसरो, कविईसरो. (कवीश्वरः)
साहु+उवस्सओ=साहूवस्सओ, साहुउवस्सओ. (साधूपाश्रयः)

अपवाद–'इ' अने 'उ' वर्ण पछी विजातीय स्वर आवे तो सन्धि थती नथी. तेमज 'ए' अने 'ओ' पछी कोई पण स्वर आवे तो सन्धि थाय नहि.

उदा०–वंदामि+अज्जवइरं=वंदामि अज्जवइरं (वन्दे आर्यवज्रम्)
संति+उवाओ=संतिउवाओ. (शान्त्युपायः)
दणु+इंद=दणुइंद. (दनुजेन्द्र)
संजमे+अजियं=संजमे अजियं. (संयमेऽजितम्)
देवो+असुरो य=देवो असुरो य. (देवोऽसुरश्च)

८३. समासमां स्वरनुं ह्रस्व अने दीर्घ विधान एटले ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर प्रयोगने अनुसारे थाय छे.

उदा०–ह्रस्वनो दीर्घ–सत्तावीसा (सप्तविंशतिः), अंतावेई (अन्तर्वेदिः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नञ् तत्पुरुष.

निषेधवाचक अव्यय 'अ' अथवा 'अण' नो नाम साथे समास थाय छे.

शब्दनी आदिमां व्यंजन होय तो 'अ' अने स्वर होय तो 'अण' मुकाय छे. जेमके—

अदेवो (अदेवः) न देवो । अणवज्जं (अनवद्यम्) न अवज्जं. अविरई (अविरतिः) न विरई । अणायारो (अनाचारः) न आयारो.

३ कम्मधारय (कर्मधारय) समास.

विशेषण आदि पूर्वपदनो विशेष्यादि उत्तरपद साथे समास थाय छे. आ समासमां घणे भागे बन्ने पदो सरखी विभक्तिमां वपराय छे, तेथी आ समास समानाधिकरण ज होय छे.

पईहरं } (पतिगृहम्). वेलूवणं } (वेणुवनम्)
पइहरं } वेलुवणं }

दीर्घनो ह्रस्व–जउँणअडं–जउँणाअडं (यमुनातटम्),

गयहत्थो–गयाहत्थो (गदाहस्तः),

गोरिहरं–गोरीहरं–(गौरीगृहम्),

सिरीसरिसं } (श्रीसदृसम्)
सिरिसरिसं }

लच्छीफलं–लच्छिफलं (लक्ष्मीफलम्)

नइसोत्तं-नईसोत्तं (नदीश्रोतः),

वहुमुहं-वहूमुहं (वधूमुखम्),

मायपिअरा (मातापितरौ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषणपूर्वपद–रत्तघडो (रक्तघटः)=रत्तो अ एसो घडो.
सुंदरपडिमा (सुन्दरप्रतिमा)=सुंदरा य एसा पडिमा.
परमपयं (परमपदम्)=परमं च एअं पयं च.
विशेषणोभयपद–रत्तसेओ आसो (रक्तश्वेतोऽश्वः)रत्तो अ एस सेओ य.
सीउण्हं जलं (शीतोष्णं जलम्) सीअं च तं उण्हं च.
विशेष्यपूर्वपद वीरजिणिंदो (वीरजिनेन्द्रः) वीरो अ एसो जिणिंदो.
उपमानपूर्वपद–चंदाणणं (चन्द्राननम्)=चंदो इव आणणं.
उपमानोत्तरपद–मुहचंदो (मुखचन्द्रः)=मुहं चंदो व्व.
जिणचंदो (जिनचन्द्रः)=जिणो चंदु व्व.
अवधारणपूर्वपद–अन्नाणतिमिरं (अज्ञानतिमिरम्)=अन्नाणं चेअ तिमिरं.
नाणधणं (ज्ञानधनम्)=नाणं चेअ धणं.
पयपउमं (पदपद्मम्)=पयमेव पउमं.

४ दिगु (द्विगु) समास.

कर्मधारय समासनो पहेलो अवयव संख्यादर्शक होय तो द्विगु समास थाय छे, अने ते समूहसूचक छे माटे एकवचनमां अने नपुंसकलिंगमां थाय छे अने अन्ते अ होय तो कोई कोई ठेकाणे दीर्घ 'ई' थाय छे अने तेनां रूपो दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग नामनां जेवां थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिलोअं. तिलोई (त्रिलोकम्, त्रिलोकी) तिण्हं लोआणं समाहारोत्ति.

नवतत्तं (नवतत्त्वम्)=नवण्हं तत्ताणं समाहारोत्ति.

चउकसायं } (चतुःकषायम्)=चउण्हं कसायाणं समाहारोत्ति.
चउक्कसायं }

कोई ठेकाणे समाहार द्विगु पुंलिंगमां पण थाय छे.

तिविगप्पो (त्रिविकल्पस्) तिण्हं विगप्पाणं समाहारो त्ति

५ बहुव्वीही (बहुव्रीहि) समास.

१ जे पदोनो समास कर्यो होय तेथी अन्य पदनी प्रधानता आ समासमां होय छे. तेथी आ सामासिक पद बीजा नामनुं विशेषण थाय छे, तथा विभक्ति. वचन अने लिंग, विशेष्य प्रमाणे थाय छे. तेम ज ते समास जो स्त्रीलिंगनुं विशेषण होय तो अन्त्य अ नो आ अथवा ई प्रयोगने अनुसारे थाय छे. उदा०

कमलाणणा नारी (कमलानना नारी)
चंदमुही कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या)

२ आ समासमां प्रथमपद घणुं करीने विशेषण बने छे, अने पछीनुं पद विशेष्य बने छे. कोई ठेकाणे उपमान–तेम ज अवधारण सूचक पद पण पहेलुं आवे छे.

३ आ समास बे अथवा घणा समानाधिकरण (समान विभक्तिवाळा) पदोनो थाय छे.

४ कोई ठेकाणे समान विभक्ति न होय त्यां पण आ समास थाय छे, तेने व्यधिकरण बहुव्रीहि कहे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ आ समासनां विग्रह करतां प्रथमा सिवायनी सर्व विभक्तिनो प्रयोग थाय छे.

द्वितीया–पत्तनाणो मुणी (प्राप्तज्ञानो मुनिः) पत्तं नाणं जं सो.

तृतीया–जिअकामो थूलभद्दो (जितकामः स्थूलभद्रः)=जिओ कामो जेण सो.

जिआरिगणो अजिओ (जितारिगणोऽजितः)=जिओ अरिगणो जेण सो.

पंचमी–नट्ठदंसणो मुणी (नष्टदर्शनो मुनिः)=नट्ठ दंसणं जत्तो सो.

षष्ठी–सेअंबरा मुणिणो (श्वेताम्बराः मुनयः)=सेअं अंबरं जाणं ते.

दिण्णवया साहवो (दत्तव्रताः साधवः)=दिण्णाइं वयाइं जेसिं ते.

सप्तमी–वीरनरो गामो (वीरनरो ग्रामः)=वीरा नरा जम्मि सो.

कुद्धसीहा गुहा (क्रुद्धसिंहा गुफा)=कुद्धो सीहो जाए सा.

व्यधिकरणबहुव्रीही–चक्कहत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः)=चक्कं हत्थे जस्स सो.

विशेषणपूर्वपद–नीलकंठो मोरो (नीलकण्ठो मयूरः)=नीलो कंठो जस्स सो.

उपमानपूर्वपद–चंदमुही कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या)=चन्दो इव मुहं जाए सा.

अवधारणपूर्वपद–चरणधणा साहवो (चरणधनाः साधवः) चरणं चेअ धणं जाणं ते.

बहुपद–धुअसव्वकिलेसो जिणो (धुतसर्वक्लेशो जिनः)=धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निषेधार्थ अव्यय **अ** के **अण** नो तथा **वि-निर्** आदि उपसर्गनो तेमज **स** के **सह** अव्ययनो नाम साथे समास विशेषण तरीके वपराय तो पण बहुव्रीहि समास थाय छे.

अ—अपुत्तो (अपुत्रः)=नत्थि पुत्तो जस्स सो.

अणाहो (अनाथः)=नत्थि नाहो जस्स सो.

अण-अणुज्जमो पुरिसो (अनुद्यमः पुरुषः)=नत्थि उज्जमो जस्स सो.

अणवज्जो मुणी (अनवद्यो मुनिः)=नत्थि अवज्जं जस्स सो.

निर्-निद्दयो जणो (निर्दयो जनः)=निग्गआ दया जस्स सो.

निराहारा कन्ना (निराहारा कन्या)=निग्गओ आहारो जीए सा.

वि—विरूवो जणो (विरूपो जनः)=विगयं रूवं जत्तो सो.

विरसं भोयणं (विरसं भोजनम्)=विगओ रसो जत्तो तं.

सह / स -ससीसो आइरिओ विहरेइ (सशिष्य आचार्यो विहरति)=सीसेहिं सह आइरिओ विहरेइ सो.

सपुत्तो पिआ गच्छइ (सपुत्रः पिता गच्छति)=पुत्तेहिं सह पिआ गच्छइ स.

६ अव्वईभाव (अव्ययीभाव) समास.

नामनी साथे अव्यय जोडवाथी अव्ययीभाव समास थाय छे, आ समास एकवचनमां अने नपुंसकलिंगमां थाय छे. अन्ते दीर्घ स्वर होय तो ह्रस्व थाय छे.

उव-उवसिद्धगिरिं (उपसिद्धगिरि) सिद्धगिरिणो समीवं=सिद्धगिरि पासे.

अणु-अणुजिणं (अनुजिनम्) जिणस्स पच्छा=जिनने पाछळ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जह—जहसत्ति (यथाशक्ति) सत्ति अणइक्कमिअ–शक्ति मुजब.
जहविहिं (यथाविधि) विहिं अणइक्कमिअ–विधि मुजब.
अहि-(अधि)-अज्झप्पं (अध्यात्मम्) अप्पम्मि इइ (आत्मनि इति)–आत्माने विषे.

पइ—पइनयरं (प्रतिनगरम्) नयरं नयरं ति–दरेक नगरमां.
पइदिणं (प्रतिदिनम्) दिणं दिणं ति–हंमेशां.
पइघरं (प्रतिगृहम्) घरे घरे त्ति–दरेक घरे.

७ एकसेस (एकशेष) समास.

स्वरूप सम्बन्धी.

समान रूपवाला पदोनो समास करतां जेमां एकपद रहे छे अने बाकीनां लोप थाय छे ते एक शेष समास.

जिणा (जिनाः) जिणो अ जिणो अ जिणो अ त्ति.
नेत्ताइं (नेत्रे) नेत्तं च नेत्तं च त्ति.

विरूप सम्बन्धी.

पिअरा (पितरौ) माआ य पिआ य त्ति.
ससुरा (श्वशुरौ) सासू अ ससुरो अ त्ति.

आ प्रमाणे संक्षेपथी अहिंआं समासो बोधने माटे आप्या छे. वास्तविक रीते तो संस्कृतना नियमानुसार ज प्राकृतमां समासो थाय छे श्रीमद् हेमचन्द्रसूरीश्वरजीए पण. पोताना आठमा अध्यायमां (८-१-१) सूत्रमां समास प्रकरणने माटे संस्कृतनी पेठे ज भलामण करेली छे माटे विद्यार्थीओए संस्कृतना नियमो ध्यानमां राखी समासो करवा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दो.

अंजण न. (अञ्जन) अंजन, काजळ, आंखमां आंजवुं, सुरमो.

अणंत वि. (अनन्त) अनन्त, अपरिमित.

अगार न. (सम) घर.

अग्गला स्त्री. (अर्गला) बंधन, दरवाजानो आगळो, भोगळ, बेडी.

अब्भत्थणा स्त्री. (अभ्यर्थना) प्रार्थना, अरज.

अडवि } स्त्री. (अटवी) जंगल,
अडवी } वन, अरण्य.

अरइ स्त्री. (अरति) अप्रीति, सुखनो अभाव.

अरुण पु. (सम) सूर्यनो सारथि, सूर्य, संध्याराग.

अमयभूअ वि. (अमृतभूत) अमृत रूप थयेल, अमृत समान.

अववाय पु. (अपवाद) निंदा, अपवाद.

असण न. (अशन) भोजन, खावुं.

आउल वि. (आकुल) व्याकुल, व्याप्त, दुःखित.

आगय वि. (आगत) आवेलुं.

आयत्त वि. (सम) आधीन, स्वाधीन.

आरंभ पु. (सम, आरंभ, जीववध.

इस्सरिअ } न. (ऐश्वर्य) ऐश्वर्य,
ईसरिअ } वैभव, प्रभुता

उचिअ वि. (उचित) योग्य, लायक.

एरावण पु. (ऐरावण) इन्द्रनो हाथी.

ओह पु. (ओघ) समूह.

करण न. (सम) करवुं, इन्द्रिय.

कलत्त पु. न. (कलत्र) स्त्री, भार्या.

किंनर पु. (सम) देवविशेष, व्यन्तर देवनी जाति.

कुगइ स्त्री. (कुगति) खराब गति.

कुल पु. न. (सम) वंश.

गंभीर वि. (सम) गंभीर, ऊंडुं.

गण पु. (सम) समुदाय.

गय पु. (गज) हाथी.

गरिट्ठ वि. (गरिष्ठ) सौथी मोटुं.

चलण पु. (चरण) पग, पाद.

चक्कवाय पु. (चक्रवाक) चक्रवाक, पक्षिविशेष.

जोग पु. (योग) व्यापार, योग.

तवोवण न. (तपोवन) आश्रम.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिलअ } पु. (तिलक) तिलक,
तिलग } चांदलो.

तिअस पु. (त्रिदश) देव.

दाणव पु. (दानव) असुर, दैत्य.

दुक्कर वि. (दुष्कर) दुःखे करीने करी शकाय तेवुं.

देसय वि. (देशक) देखाडनार, उपदेशक.

नव वि. (सम) नवुं.

निवास पु. (सम) स्थान, वास.

निव्वुइ स्त्री. (निर्वृति) मोक्ष, चित्तनी स्वस्थता, शान्ति.

नियाण न. (निदान) नियाणुं, कारण, हेतु.

नेउर } न. (नूपुर) पगनुं
निउर } आभरण विशेष,
नूउर } नूपुर, झांझर.

पंजर न. (सम) पांजरुं.

पच्चोणी स्त्री. (दे.) सन्मुख.

पडिवक्ख पु. (प्रतिपक्ष) शत्रु.

पढम वि. (प्रथम) पहेलुं, आद्य.

परिसा स्त्री. (परिषद्) सभा, पर्षदा.

बंधव पु. (बांधव) बन्धु, मित्र.

बंभयारि वि. (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचर्य पालन करनार.

बल न. (सम) शक्ति, सामर्थ्य.

बलिट्ठो वि. (बलिष्ठ) सर्वथी बळवान.

बाला स्त्री. (सम) कुमारी, छोकरी, जुवान स्त्री.

भावि वि. (भाविन्) भावि, थनारुं, नशीब.

महिला स्त्री. (सम) स्त्री, नारी.

मत्त वि. मदयुक्त, उन्मत्त.

रवि पु. (सम) सूर्य.

रूव पु. न. (रूप) देहकान्ति, सौन्दर्य, आकृति.

ललिय वि. (ललित) सुंदर, मनोहर.

लुद्ध वि. (लुब्ध) लोलुप, आसक्त.

वय पु. न. (व्रत) व्रत, नियम.

ववसाय (व्यवसाय) व्यापार, कार्य, उद्यम.

वाया स्त्री. (वाच्) वाणी, वाचा.

वाणी स्त्री. (सम) वाणी, वचन.

वियंभिय वि. (विजृम्भित) विकास पामेल.

विरल वि. (सम) अल्प, थोडुं, दुर्लभ.

विहुर वि. (विधुर) दुःखी, व्याकुळ.

विवेअ } पु. (विवेक) विवेक,
विवेग } सत्यासत्यनो निर्णय.

विहूण } वि. (विहीन) वर्जित,
विहीण } रहित.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वुट्ठि स्त्री. (वृष्टि) वृष्टि, वर्षा.
संसार पु. (सम) चार गतिरूप संसार.
संगम पु. (सम) मळवुं, प्राप्ति.
सत्त न. (सत्त्व) बळ, पराक्रम.
समावडिअ वि. (समापतित) सन्मुख आवीने पडेलुं.
सयण पु. (स्वजन) स्वजन, कुटुम्बी.
सामन्न वि. (सामान्य) साधारण.
सावय पु. (श्वापद) शिकारी पशु, हिंसक जानवर.
सिणेह पु. (स्नेह) स्नेह, प्रेम.
सोम पु. (सम) चन्द्र.

अव्ययो.

अह (अथ) अनन्तर, मंगळ, प्रश्न, अधिकार, आरंभ, समुच्चय, अथवा.
खलु (खलु) निश्चय, अवधारण अर्थमां.
उट्ठाय सं. भू. (उत्थाय) उठीने.

धातुओ.

अब्भुद्धर् (अभ्युद्+धर्) उद्धार करवो.
अवे (अप+इ) दूर थवुं, चाली जवुं.
उवे (उप+इ) पासे जवुं.
चक्कम्म् (भ्रम्) भमवुं.
जोय् (दृश्) देखवुं, जोवुं.
जव् (जप्) जपवुं.
निव्विज्ज् (निर+विद्–विद्य) निर्वेद पामवो, विरक्त थवुं.
पत्थ् } **पच्छ्** } (प्रार्थय्) प्रार्थना करवी.
परिव्वय् (परि+व्रज्) दीक्षा लेवी.
पूर् (पूरय्) भरवुं, पूरण करवुं.
भाव् (भावय्) वासित करवुं, चिंतन करवुं.
विसीय् (वि+सीद्) शाप देवो.
सव् (शप्) खेद करवो.
सिढिल् (शिथिलय्) शिथिल करवुं, ढीला थवुं.
सोव् } **सुव्** } (स्वप्) सूवुं, ऊंघवुं.

प्राकृत वाक्यो.

साहवो मणसा वि न पत्थन्ति बहुजीवाउलं जलारंभं ।
खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ।
ते सत्तिमंता पुरिसा, जे अब्भत्थणावच्छला समावडियकज्जा न गणेइरे आयइं, अब्भुद्धरेन्ति दीणयं, पूरेन्ति परमणोरहे, रक्खन्ति सरणागयं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे निद्दुज्जणाइं तवोवणाइं सेवन्ति ते जणा सुधन्ना ।

अहो णु खलु नत्थि दुक्करं सिणेहस्स, सिणेहो नाम मूलं सव्वदुक्खाणं, निवासो अविवेयस्स, अग्गला निव्वुईए, वंधवो कुगइवासस्स, पडिवक्खो कुसलजोगाणं, देसओ संसाराडवीए, वच्छलो असच्चववसायस्स, एएण अभिभूआ पाणिणो न गणेन्ति आयइं, न जोयन्ति कालोइअं, न सेवन्ति धम्मं, न पेच्छन्ति परमत्थं, महालोहपंजरगया केसरिणो विव समत्था वि विसीयन्ति त्ति ॥

उत्तमपुरिसा न सोवंति संझाए ।
नेव वसणवसगएणं वुद्धिमया विसाओ कायव्वो ।
अम्हे पच्चोणिं गन्तूण पिऊणं चलणेसु पडिआ ।
अह निण्णासिअतिमिरो, विओगविहुराण चक्कवायाण ।
संगमकरणेक्करसो, वियंभिओ अरुणकिरणोहो ॥१॥

पुत्ता ! तुम्हे वि संजमे नियमे य उज्जमं करिज्जाह, अमयभूएण य जिणवयणेण अप्पाणं भाविज्जाह ।

देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
वम्हयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करेइ तं ॥२॥
विरला जाणन्ति गुणे, विरला जाणन्ति ललियकव्वाइं ।
सामन्नधणा विरला, परदुक्खे दुक्खिआ विरला ॥३॥
गलइ वलं उच्छाहो, अवेइ सिढिलेइ सयलवावारे ।
नासइ सत्तं अरई, विवड्ढए असणरहिअस्स ॥४॥

सोमगुणेहिं पावइ न तं[1] नवसरयससी,
तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं [2]धरणिधरवई ॥५॥

---

१ तं—अजितजिनम् , २ मेरुपर्वतः.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जस्सत्थो तस्स सुहं, जस्सत्थो पंडिओ य सो लोए ।
जस्सत्थो सो गुरुओ, अत्थविहूणो य लहुओ य ॥६॥
वंचइ मित्तकलत्ते, नाविक्खइ मायपिअसयणे अ ।
मारेइ बंधवे वि हु, पुरिसो जो होइ धणलुद्धो ॥७॥
न गणन्ति कुलं न गणन्ति, पावयं पुण्णमवि य न गणन्ति ।
इस्सरिएण हि मत्ता, तहेव परलोयमिहलोयं ॥८॥
न गणन्ति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोयअववायं ।
न य भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाए आयत्ता ॥९॥
मेरू गरिट्ठो जह पव्वयाणं, एरावणो सारबलो गयाणं ।
सिंहो बलिट्ठो जह सावयाणं, तहेव सीलं पवरं वयाणं ॥१०॥
बालत्तणंमि जणओ, जुव्वणपत्ताइ होइ भत्तारो ।
बुड्ढत्तणेण पुत्तो, सच्छंदत्तं न नारीणं ॥११॥
'पसिणं'–किं होइ रहस्स वरं, बुद्धिपसाएण को जणो जयइ ।
किं च कुणंती बाला, नेउरसद्दं पयासेइ ॥१२॥

उत्तरं–*चक्कम्मंती.

गुजराती वाक्यो.

१. ×**राम अने लक्ष्मणे** रावणनी सेनाने जीती अने लक्ष्मणना **चक्रथी हणायेल** रावण मरीने नरके गयो.

२. सज्जनो **दुःखमां पडया** छतां पण **असत्य वचन** बोलता नथी.

३, विद्यार्थीओए प्रभातमां वहेला उठीने **मातापिता** अथवा गुरुने नमस्कार करीने पछी पोतानुं अध्ययन करवुं जोईए.

---

* चक्कं (चक्रम्), मंती (मन्त्री), चक्कम्मंती (भ्रमन्ती).

× आ अने आगळना पाठमां गुजराती वाक्योमां ज्यां जाडा अक्षर छे त्यां विद्यार्थीओए प्राकृत समास वापरवा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. **संसारनां दुःखो** जोइने ते संसारथी निर्वेद पामे छे.

५. ते बाळाए **हाथरूपी कमळवडे** राजाना कपाळे तिलक कर्युं.

६. **करेलुं छे नियाणुं जेमणे** एवा तेओने **बोधिनी प्राप्ति** क्यांथी होय ?

७. **तीर्थंकर गंभीर वाणीवडे** समवसरणमां **देव-दानव अने मनुष्योनी सभामां** देशना आपे छे अने ते सांभळी भव्य जीवो **दर्शन-ज्ञान अने चारित्र** ग्रहण करे छे अने **आहाररहित** एवुं मोक्षपद मेळवे छे.

८. **पुष्पो छे हाथमां** जेओना तेवी नगरनी कन्याओए **माणसोमां उत्तम एवा** राजा उपर **पुष्पोनी वृष्टि** करी.

९. **त्रणे भुवनमां** सर्व जीवो करतां तीर्थंकरो **अनन्त रूपवाळा** होय छे.

१०. **जेओनी पासे संयमरूपी धन छे** तेवा साधुओने **परलोकनो भय** नथी.

११. सिद्ध भगवंतोने **आहार-देह-आयुष अने कर्म नथी** तेथी ज ते **अनन्त सुखवाळा** छे.

१२. जे **विधि प्रमाणे** मन्त्रोनुं आराधन करे छे, ते जरुर फळ पामे छे.

१३. **जे शक्ति उल्लंघन कर्या विना अहिंसा-संयम-अने तपरूप धर्ममां** उद्यम करे छे, ते **संसाररूपी समुद्रथी** तरी जाय छे.

१४. **अज्ञानरूपी अन्धकारथी अंध थयेलाओने** ज्ञान ते ज उत्तम अंजन छे.

१५. जे कुमारपाल पहेलां **सिद्धराजनी बीकथी** भमतो हतो ते पाछळथी **हेमचंद्रसूरिजीनी मददथी भयमांथी मुक्त** थइने राज्य पाम्यो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. **जेओनी पासे घणुं धन** छे अने आ पर्वतनी उपर **सुन्दर जिनालयो** बंधावीने, लोकोने संतोषीने **जेमणे मोटी कीर्ति मेळवी** छे ते आ **वस्तुपाल अने तेजपाल** महामन्त्री छे.

पाठ २४ मो.

पूर्व पाठमां संक्षेपथी सर्वनामोनां रूपो आप्यां हतां. अहींआं विशेषता सहित सर्व रूपो आपवामां आवे छे.

सर्वनामोनां रूपो त्रणे लिंगमां थाय छे.

अमु (अदस्) सिवाय बधां सर्वनामो अकारान्त छे. अने तेथी तेनां सामान्य रूपो **अकारान्त** नामोना जेवां जाणवां. अने **अमु (अदस्)** शब्द **उकारान्त** होवाथी तेनां सामान्य रूपो **उकारान्त** नामोनां रूपो जेवां जाणवां.

अम्ह (अस्मद्) तुम्ह (युष्मद्) शब्दोनां रूपो त्रणे लिंगमां समान थाय छे.

१ पुंलिंगमां प्रथमाना बहुवचनमां '**ए**' प्रत्यय ज लागे छे अने षष्ठीना बहुवचनमां '**एसिं**' प्रत्यय विकल्पे लागे छे.

२ '**एसिं**' प्रत्यय लगाडतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे.

३ सप्तमीना एकवचनमां **स्सिं, म्मि, त्थ,** ए त्रण प्रत्ययो लागे छे. '**एअ**' अने '**इम**' सिवाय सकळ सर्वनामोने '**हिं**' प्रत्यय पण लागे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकारान्त पुंल्लिग सव्व (सर्व)

	एकव.	बहुव.
प.	सव्वो, सव्वे.	सव्वे.
बी.	सव्वं.	सव्वे, सव्वा.
त.	सव्वेण, सव्वेणं.	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ.
च.	सव्वाय, सव्वस्स, सव्वाए.	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
पं.	सवत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहि, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो.
छ.	सव्वस्स.	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं.
स.	सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वंसि.	सव्वेसु, सव्वेसुं.
सं.	हे सव्व, सव्वो, सव्वा, सव्वे.	सव्वे.

ए प्रमाणे वीस, विस्स (विश्व), उह–उभ (उभ), उहय–उभय (उभय), अन्न (अन्य), अन्नयर (अन्यतर), इयर (इतर), कयर (कतर), कयम (कतम), सम (सम), पुव्व (पूर्व), अवर (अपर), दाहिण–दक्खिण (दक्षिण), उत्तर (उत्तर), सुव (स्व), आदि सर्व नामोनां रूपो जाणवां.

विशेष. उभ–उहनां रूपो बहुवचनमां थाय छे अने छट्ठीना बहुवचनमां उहण्ह, उहण्हं, उभण्ह, उभण्हं, थाय छे. बीजां रूपो समान ज छे.

सर्वनामनां स्त्रीलिंग रूपो.

आकारांत स्त्रीलिंग सर्वनामनां रूपो आकारान्त स्त्रीलिंग नामनां जेवां ज थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष–छट्ठी विभक्तिना बहुवचनमां 'एसिं' प्रत्यय पण प्रयोगने अनुसारे लागे छे अने आर्षमां 'सिं' प्रत्यय पण लागे छे.

आकारान्त स्त्रीलिंग सव्वा (सर्वा)

	एकव०	बहुव०
प.	सव्वा.	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा.
बी.	सव्वं.	,, ,, ,,
त.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए.	सव्वाहि, सव्वाहिं, सव्वाहिँ.
च.–छ.	,, ,, ,,	सव्वेसिं, सव्वाण–णं, सव्वासिं.
पं.	,, ,, ,, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो.
स.	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए.	सव्वासु, सव्वासुं.
सं.	हे सव्वा.	सव्वा.

अकारान्त नपुंसकलिंग सव्व (सर्व)

प. बी.	सव्वं.	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि.
सं.	हे सव्व.	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि.

बाकीनां रूप पुल्लिंग प्रमाणे.

त–ण (तद्), एअ–एत (एतद्), ज (यत्), क (किम्) इम (इदम्), अमु (अदस्), अम्ह (अस्मद्), तुम्ह (युष्मद्). शब्दोनां रूपो.

त–ण (तद्) शब्दनां त्रणे लिंगनां रूपो.

पुल्लिंग.

	एकव०	बहुव०
प.	स, सो, से.	ते, णे.
बी.	तं, णं.	ते, ता, णे, णा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त.	तेण, तेणं, तिणा.	तेहि, तेहिं, तेहिँ.
	णेण, णेणं, णिणा.	णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च.छ.	तास, तस्स, से,	तास, तेसिं, ताण, ताणं, सिं.
	णस्स.	णेसिं, णाण, णाणं.
पं.	तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो ता. णत्तो, णाओ, णाउ, णाहि, णाहिन्तो, णा.	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेहिन्तो, तेसुन्तो. णत्तो, णाओ, णाउ, णाहि, णाहिन्तो, णासुन्तो, णेहि, णेहिन्तो, णेसुन्तो.
स.	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, तंसि.	तेसु, तेसुं.
	णस्सिं, णम्मि, णत्थ, णहिं, णंसि.	णेसु, णेसुं.
	*ताहे ताला, तइआ.	

ता,+ ती, णा, णी, स्त्रीलिंग.

	एकवचन.	वहुवचन.
प.	सा.	ताओ, ताउ, ता. तीआ, तीओ, तीउ, ती.
बी.	तं.	ताओ, ताउ, ता. तीआ, तीओ, तीउ, ती.
त.	ताअ, ताइ, ताए. तीअ, तीआ, तीइ, तीए.	ताहि, ताहिं, ताहिँ, तीहि, तीहिं, तीहिँ.

---

*ताहे आदि त्रणे रूपो 'ते वखते' एवा अर्थमां वपराय छे.

+ता नो ती, जा नो जी, का नो की, एआ नो एई, इमा नो इमी पण विकल्पे थाय छे. पृ. ११० जुओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	एकवचन	बहुवचन
च. छ.	तिस्सा, तीसे, तास, से, ताअ, ताइ, ताए, तीअ, तीआ, तीइ. तीए.	तेसिं, ताण, ताणं, सिं, तास, तासिं,
पं.	ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो. तीअ, तीआ, तीइ, तीए तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो.	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो. तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो.
स.	ताअ, ताइ, ताए, तीअ, तीआ, तीइ, तीए.	तासु, तासुं. तीसु, तीसुं.

णा–णी नां पण रूपो आ प्रमाणे जाणवां.

नपुंसकलिंग.

	एकवचन.	वहुवचन.
प. बी.	तं.	ताइं, ताइँ, ताणि,
	णं.	णाइं, णाइँ, णाणि.

वाकीनां रूपो पुल्लिग प्रमाणे.

ज (यत्) पुल्लिग.

	एकवचन.	वहुवचन.
प.	जो, जे.	जे.
बी.	जं.	जे, जा.
त.	जेण, जेणं, जिणा.	जेहि, जेहिँ, जेहिं.
च. छ.	जास, जस्स.	जेसिं, जाण, जाणं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प.	जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा.	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जासुन्तो. जेहि, जेहिन्तो, जेसुन्तो,
स.	जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं, जंसि. +जाहे, जाला, जइआ.	जेसु, जेसुं..

जा-जी (यत्) स्त्रीलिंग.

प.	जा.	जाओ, जाउ, जा. जीआ, जीओ, जीउ, जी.
बी.	जं.	जाओ, जाउ, जा. जीआ, जीओ, जीउ, जी.
त.	जाअ, जाइ, जाए. जीअ, जीआ, जीइ, जीए.	जाहि, जाहिं, जाहिँ. जीहि, जीहिं, जीहिँ.
च. छ.	जिस्सा, जीसे. जाअ, जाइ, जाए. जीअ, जीआ, जीइ, जीए.	जेसिं, जाण, जाणं, जासिं.
पं.	जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ जाउ, जाहिन्तो. जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो.	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो. जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जीसुन्तो.
स.	जाअ, जाइ, जाए. जीअ, जीआ, जीइ, जीए,	जासु, जासुं. जीसु, जीसुं.

+जाहे आदि त्रणे रूपो 'ज्यारे, जे वखते' तेवा अर्थमां वपराय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसकलिंग.

प. बी. जं. जाइं, जाइँ, जाणि.

बाकीनां रूप पुल्लिंग प्रमाणे

क (किम्) पुल्लिंग.

	एकवचन.	बहुवचन.
प.	को, के.	के.
बी.	कं	के, का.
त.	केण, केणं, किणा.	केहि, केहिँ, केहिं.
च. छ.	कास, कस्स,	कास, केसिं, काण, काणं,
पं.	क्रिणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो का.	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो. केहि, केहिन्तो, केसुन्तो.
स.	कस्सि, कम्मि, कत्थ. कहिं, कंसि. +काहे, काला, कइआ.	केसु, केसुं.

का, की (किम्) स्त्रीलिंग.

प.	का.	काओ, काउ, का. कीआ, कीओ, कीउ, की.
बी.	कं.	काओ, काउ, का. कीआ, कीओ, कीउ, की,
त.	काअ, काइ, काए. कीअ, कीआ, कीइ, कीए.	काहि, काहिँ, काहिं. कीहि कीहिँ, कीहिं.

+काहे आदि त्रणे रुपो 'क्यारे अथवा कये वखते' एवा अर्थमां वपराय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च. छ.	किस्सा कीसे, कास, काअ, काइ, काए, कीअ, कीआ, कीइ, कीए.	केसिं, काण, काणं, कासिं, कास.
पं.	काअ, काइ, काए, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो. कीअ, कीआ, कीइ, कीए, कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो.	कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो किंत्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो कीसुन्तो
स.	काअ, काइ, काए, कीअ, कीआ, कीइ, कीए.	कासु, कासुं. कीसु कीसुं.

क (किम्) नपुंसकलिंग

प. बी.	किं.	काइं काइँ, काणि.

बाकीनां रूपो पुल्लिग प्रमाणे

एअ, एत, (एतद्) पुल्लिग.

	एकवचन.	बहुवचन.
प.	एस, एसो एसे, इणं, इणमो.	एए.
बी.	एअं	एए, एआ.
त.	एएण, एएणं, एइणा.	एएहि, एएहिँ, एएहिं.
च. छ.	एअस्स, से.	एएसिं, एआण, एआणं, सिं.
पं.	एत्तो, एत्ताहे, (एअत्तो,) एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ,	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआसुन्तो, एएहि, एएहिन्तो, एएसुन्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स. अयम्मि, ईअम्मि, एअस्सिं, एएसु, एएसुं.
एअम्मि, एत्थ, एअंसि.

एआ, एई, (एतद्) स्त्रीलिंग.

प. एस, एसा, इणं, इणमो, एआओ, एआउ, एआ.
एई, एईआ. एईआ, एईओ, एईउ, एई.

बी. एअं एइं. उपर प्रमाणे.

त. एआअ, एआइ, एआए, एआहि, एआहिँ, एआहिं.
एईअ, एईआ, एईइ, एईए. एईहि, एईहिँ, एईहिं.

च. } एआअ, एआइ, एआए, एआण-णं, सिं,
छ. } एईअ, एईआ, एईइ, एएसिं, एआसिं,
एईए, से. एईण-णं.

पं. एआअ, एआइ, एआए, एअत्तो, एआओ, एआउ,
(एअत्तो), एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो.
एआहिन्तो.
एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो,
एइत्तो, एईओ, एईसुन्तो.
एईउ, एईहिन्तो.

स. एआअ, एआइ, एआए, एआसु, एआसुं.
एईअ, एईआ, एईइ, एईए. एईसु, एईसुं.

एअ (एतद्) नपुंसकलिंग.

प. एअं, एस, इणं, इणमो. एआइं, एआइँ, एआणि.
बी. एअं ,, ,, ,,

बाकीनां रूप पुल्लिग प्रमाणे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इम, (इदम्) पुल्लिंग.

प.	अयं, इमो, इमे.	इमे.
बी.	इमं, इणं, णं.	इमे, इमा, णे, णा.
त.	इमेणं, इमेण, इमिणा, णेणं, णेण, णिणा.	इमेहि, इमेहिँ, इमेहिं, णेहि, णेहिँ, णेहिं, एहि, एहिँ, एहिं.
च. छ.	इमस्स, से, अस्स.	इमेसिं, इमाण, इमाणं, सिं.
पं.	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो, इमा.	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो, इमेहि, इमेहिन्तो, इमेसुन्तो.
स.	इमस्सि, इमम्मि, अस्सि, इह, इमंसि.	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं.

इमा, इमी (इदम्) स्त्रीलिंग.

प.	इमा, इमिआ, इमी, इमीआ.	इमाओ, इमाउ, इमा, इमीआ, इमीओ, इमीउ, इमी, [इमे].
बी.	इमं, इमिं, इणं, णं,	,, ,, ,,
त.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, णाअ, णाइ, णाए.	इमाहि, इमाहिँ, इमाहिं, इमीहि, इमीहिँ, इमीहिं, णाहि, णाहिँ, णाहिं, आहि, आहिँ, आहिं.
च. छ.	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, से. [इमीसे].	इमाण, इमाणं सिं, इमेसिं, इमासिं. इमीण, इमीणं,
पं.	इमाअ, इमाइ, इमाए,	इमत्तो, इमाओ, इमाउ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो,	इमाहिन्तो, इमासुन्तो,
	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो.	इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो.
स.	इमाअ, इमाइ, इमाए. इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए.	इमासु, इमासुं, इमीसु, इमीसुं, आसु, आसुं.

इम (इदम्) नपुंसकलिंग.

प. बी.	इदं, इणमो, इणं.	इमाइं, इमाइँ, इमाणि.

बाकीनां रूप पुल्लिंग प्रमाणे.

अमु (अदस्) आ, ते, पेलुं. पुल्लिंग.

प.	अह, अमू-	अमवो, अमउ, अमओ, अमुणो, अमू.
बी.	अमुं.	अमुणो, अमू.
त.	अमुणा.	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ.
च. छ.	अमुणो, अमुस्स.	अमूण, अमूणं.
पं.	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो.	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो.
स.	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुंसि.	अमूसु, अमूसुं.

स्त्रीलिंग.

प.	अह, अमू.	अमूओ, अमूउ, अमू.
बी.	अमुं.	„ „ „

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए.	अमूहि, अमूहिँ, अमूहिं.
च. छ.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए.	अमूण, अमूणं.
पं.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए.	
	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो.	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो.
स.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए.	अमूसु, अमूसुं.

नपुंसकलिंग.

प.	अह, अमुं.	अमूइँ, अमूइं, अमूणि.
बी.	अमुं.	अमूइँ, अमूइं, अमूणि.

अम्ह (अस्मद्) हुं. (त्रणे लिंगमां समान)

	एकवचन.	बहुवचन.
प.	हं, अहं, अहयं, म्मि, अम्हि, अम्मि.	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे.
बी.	मं, ममं, मिमं, अहं, णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह.	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे.
त.	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे, [मया].	अम्हेहिं, अम्हाहिं, अम्ह, अम्हे, णे.
च. छ.	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं.	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण-णं, ममाण-णं, महाण-णं, मज्झाण-णं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं.	मइत्तो, मइओ-उ-हिन्तो. ममत्तो, ममाओ-उ-हि-हिन्तो, ममा. महत्तो, महाओ-उ-हि-हिन्तो, महा, मज्झत्तो, मज्झाओ-उ-हि-हिन्तो, मज्झा	ममत्तो ममाओ,-उ-हि-हिन्तो, सुन्तो. ममेहि-हिन्तो-सुन्तो अम्हत्तो, अम्हाओ-उ-हि-हिन्तो-सुन्तो. अम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो.
स.	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हस्सिं-म्मि, अम्हंसि, ममस्सिं-म्मि, ममंसि, महस्सिं-म्मि, महंसि, मज्झस्सिं-म्मि, मज्झंसि, अम्हे, ममे, महे मज्झे, [मम्हिं].	अम्हसु-सुं, अम्हेसु-सुं, ममसु-सुं, ममेसु-सुं. महसु-सुं, महेसु-सुं, मज्झसु-सुं, मज्झेसु-सुं, अम्हासु-सुं.

तुम्ह (युष्मद्), तुं, (त्रणे लिंगमां समान.)

प.	तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं.	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे.
बी.	तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुए.	वो तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, उज्झे, तुय्हे, उय्हे, भे.
त.	भे, दि, दे, ते, तइ, तए. तुमं तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ.	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
च. } छ. }	तइ, तुं, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे,	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमो, तुमाइ, दि, दे,	तुब्भाण-णं, तुवाण-णं,
इ, ए, तुब्भ, तुम्ह,	तुम्हाण-णं, तुमाण-णं,
तुज्झ, उब्भ, उम्ह,	तुज्झाण-णं तुहाण-णं
उज्झ, उय्ह.	
पं. तइत्तो, तईओ-उ-हिन्तो,	तुब्भत्तो, तुब्भाओ-उ-हि-
तुवत्तो, तुवाओ-उ-हि-	हिन्तो-सुन्तो
हिन्तो, तुवा.	तुब्भेहि-हिन्तो-सुन्तो.
तुमत्तो, तुमाओ-उ-हि-	तुम्हत्तो, तुम्हाओ-उ-हि-
हिन्तो, तुमा.	हिन्तो-सुन्तो.
तुहत्तो, तुहाओ-उ-हि-	तुम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो.
हिन्तो, तुहा.	तुज्झत्तो, तुज्झाओ-उ-हि-
तुब्भत्तो, तुब्भाओ-उ-हि-	हिन्तो सुन्तो.
हिन्तो, तुब्भा.	तुज्झेहि-हिन्तो-सुन्तो.
तुम्हत्तो, तुम्हाओ-उ-हि-	तुय्हत्तो, तुय्हाओ-उ-हि-
हिन्तो-तुम्हा.	हिन्तो-सुन्तो.
तुज्झत्तो, तुज्झाओ-उ-हि-	तुय्हेहि-हिन्तो-सुन्तो.
हिन्तो-तुज्झा.	उय्हत्तो-उय्हाओ-उ-हि-
तुय्ह तुब्भ, तुम्ह,	हिन्तो-सुन्तो.
तुज्झ, तहिन्तो.	उय्हेहि-हिन्तो-सुन्तो.
	उम्हत्तो, उम्हाओ-उ-हि-
	हिन्तो-सुन्तो.
	उम्हेहि-हिन्तो-सुन्तो.
स. तुमे तुमए, तुमाइ,	
तइ, तए.	
तुम्मि,	तुसु-सुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुवम्मि, तुवस्सि, तुवंसि	तुवसु-सुं, तुवेसु-सुं.
तुमम्मि, तुमस्सि, तुमंसि.	तुमसु-सुं, तुमेसु-सुं.
तुहम्मि, तुहस्सि, तुहंसि.	तुहसु-सुं, तुहेसु-सुं.
तुब्भम्मि, तुब्भस्सि, तुब्भंसि.	तुब्भसु-सुं, तुब्भेसु-सुं.
तुम्हम्मि, तुम्हस्सि, तुम्हंसि.	तुम्हसु-सुं, तुम्हेसु-सुं.
तुज्झम्मि, तुज्झस्सि, तुज्झंसि.	तुज्झसु-सुं, तुज्झेसु-सुं.
	तुब्भासु-सुं, तुम्हासु-सुं.
	तुज्झासु-सुं.

उपयोगी रूपो.

अम्ह (अस्मद्).

प.	अहं, हं.	अम्हे, अम्हो.
बी.	मं, ममं.	,, ,,
त.	मए, मइ.	अम्हेहिं.
च. छ.	मे, मम, मह, मज्झ.	अम्हं, अम्हाण.
पं.	ममत्तो, ममाओ.	अम्हत्तो, अम्हाओ.
स.	मइ, मज्झे.	अम्हेसु.

तुम्ह (युष्मद्)

प.	तु, तुमं.	तुम्हे, तुज्झे.
बी.	,, ,,	,, ,,
त.	तए, तुमए.	तुब्भेहिं, तुम्हेहिं.
च.छ.	तुह, तुव.	तुब्भाण, तुम्हाण.
पं.	तुमत्तो, तुमाओ.	तुब्भत्तो, तुब्भाओ.
स.	तुमए, तए.	तुब्भेसु, तुम्हेसुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्दो.

अणगारिया स्त्री. (अनगारिता) साधुपणुं.

अणुग्गह पु. (अनुग्रह) उपकार, कृपा.

उवज्जिअ वि. (उपार्जित) उपार्जन करेलुं.

उवहि पु. स्त्री. (उपधि) माया, उपकरण, साधन.

जणद्दण पु. (जनार्दन) वासुदेवनुं नाम.

जराकुमार पु. (सम) वसुदेव राजानो पुत्र, वासुदेवनो मोटो भाई.

जरादेवी स्त्री. (सम) वसुदेवनी स्त्री.

जायव पु. (यादव) यदुवंशीय.

जेट्ठ वि. (ज्येष्ठ) मोटो, वृद्ध.

तिविह वि. (त्रिविध) त्रण प्रकारे (मन वचन कायावडे).

दिट्ठि स्त्री. (दृष्टि), दृष्टि, नजर.

दूर न. (स) दूर, छेटुं, आघे.

दोरिआ स्त्री. (दे. दवरिका) दोरी.

निवद्ध वि. (सम) बंधायेल.

निव्बंध पु. (निर्बन्ध) आग्रह.

पणाम पु. (प्रणाम) नमस्कार.

परंपरा स्त्री. (सम) परम्परा, अनुक्रम.

परिणय वि. (परिणत) परिपक्व.

पव्वज्जा स्त्री. (प्रवज्या) दीक्षा.

८४**पुहुवी** स्त्री. (पृथ्वी) पृथ्वी, भूमि.

बाहिर वि. (बाह्य) बहारनुं.

भूअ पु. न. (भूत) जन्तु, प्राणी.

भोग पु (सम) शब्दादि विषय, खावुं ते.

महप्प पु. (महात्मन्) महात्मा, योगी.

मित्ती स्त्री. (मैत्री) मैत्री, दोस्ती.

लट्ठ वि. (दे) सुंदर

वय पु. न. (वयस्) वय, उंमर.

वसण न. (वसन) रहेवुं, वस्त्र

विवरिअ } **विवरीअ** } वि (विपरीत) उलटुं, प्रतिकूल.

विहलिअ वि. (विह्वलित) मुंझायेल.

---

८४. अंते '**वी**' संयुक्त होय एवा स्त्रीलिंग नामोमां '**वी**'नी पूर्वे 'उ' मूकाय छे. उदा०

तणुवी (तन्वी)	मउवी (मृद्वी)
लहुवी (लघ्वी)	गुरुवी (गुर्वी)
पुहुवी (पृथ्वी)	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसाय पु. (विषाद) खेद, शोक.

वेर
वइर } न. (वैर) वेर, दुश्मनावट.

वुत्त वि. (उक्त) कहेलुं.

संजुअ वि. (संयुत) युक्त, सहित.

सजोग पु. (संयोग) संबंध, मेळाप.

सज्ज वि. (सम) तैयार.

समाण वि. (सत्) होवुं, थवुं. व. कृ.

सही स्त्री. (सखी) सखी, बेनपणी, सहियरी.

सामि पु. (स्वामिन्) स्वामी, नायक, अधिपति.

सेस वि. (शेष) बाकी.

अव्यय.

अइ
ऐ } (अयि) संभावनार्थमां, आमंत्रण सूचक.

इहरा
इहरहा } (इतरथा) अन्यथा, अन्य रीते.

ईसिं (ईषत्) अल्प, थोडुं.

एक्कसरिअं (दे) शीघ्र, जल्दी, संप्रति, हमणां.

णवर
णवरं } (दे) केवळ, फक्त, अनन्तर.

थु (दे) निन्दा सूचक,

बहुसो (बहुशः) अनेकवार.

मोरउल्ला
मुहा } (मुधा) मुधा, व्यर्थ.

वीसुं (विष्वक्) चारे तरफ, चोमेर.

हद्धि
हद्धी } (हा–धिक्) खेद सूचक, अनुताप.

धातुओ.

आइक्ख् (आ+चक्ष्) कहेवुं, उपदेश आपवो.

अक्कम् (आ+क्रम्) दबाववुं, आक्रमण करवुं.

अणुभव् (अनु+भव्) अनुभव करवो, जाणवुं.

आसास् (आ+श्वास) शान्ति आपवी, आश्वासन आपवुं.

आरंभ्
आढव्
आरभ् } (आ+रभ्) शरु करवुं.

अई
णी } (गम्) जवुं.

छिव्
छिह् } (स्पृश्) स्पर्श करवो.

जीह् (लज्ज्) लज्जा पामवी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झडू (शद्) सडवुं, पडवुं; झपट मारवी.

निअच्छ, **पुलोअ**, **पुलअ**, **निअ्** (दृश्) जोवुं.

निस्सस्, **नीसस्** (निर्+श्वस्) निश्वास लेवो.

पमाय् (प्र+माद्) प्रमाद करवो, भूलवुं.

पव्वय् (प्र+व्रज्) दीक्षा लेवी.

भास् (भाष्) बोलवुं.

विक्के (वि+क्री) वेचवुं

संपज्ज् (सम्+पद्) प्राप्त करवुं.

सोय्, **सोच्** (शुच्+शोच्) शोक करवो.

प्राकृत वाक्यो.

जइ से पिया न पव्वइओ होन्तो, तो लट्ठं होन्तं ।

तइय च्चिय पव्वज्जं गिण्हंतो ता इण्हिं एरिसं पराभवं नेव पाविंतो ।

सव्वेसिं गुणाणं बम्हचेरं उत्तममत्थि ।

गुरवो सया अम्ह रक्खन्तु ।

कण्हेण भयवं पुच्छिओ, सामि ! कत्तो मे मरणं भविस्सइ, सामिणा कहियं, जो एस 'ते जेट्ठ-भाया' वसुदेवपुत्तो जरादेवीए जाओ जराकुमारो नाम, इमाओ ते मच्चू, तओ जायवाण जराकुमारे सविसाया सोएण निवडिआ दिट्ठी, चिंतिअं इमिणा 'अहो ! कट्ठं, अहं वासुदेवपुत्तो होऊण सयलजणिट्ठं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि' त्ति, तओ आपुच्छिऊण जादवजणं जणद्दणरक्खणत्थं गओ वणवासं जराकुमारो ।

जइ रूवं होन्तं, ता सव्वगुणसंपया होन्ता ।

हे वीरजिणेसर ! तह कुणसु अम्ह पसायं जह न संसारे अम्हे निवडिमो ।

चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।

न मं मोत्तुं अन्नो उचिओ इमीए, ता मुंच एयं जुद्धसज्जो वा होहि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहूहिं वुत्तं जइ ते अइनिब्बंधो, तो संघसहिए अम्हे मेरुम्मि नेऊण चेइयाइं वंदावेहि, तीए (देवीए) भणियं, तुम्हे दो जणे अहं देवे तत्थ वंदावेमि ॥

८५ अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणय-वए अणगारियं पव्वइहिसि ।

किं मे कडं, किं च मे किच्चसेसं; किं च सक्कणिज्जं न समायरामि त्ति पच्चूहे सया झाएयव्वं ।

जं जेण जया जत्थ, जारिसं कम्मं सुहमसुहं उवज्जियं ।
तं तेण तया तत्थ, तारिसं कम्मं दोरियनिबद्धं व संपज्जइ ॥
तुं कुण धम्मं, जेण सुहं सो च्चिय चिंतेइ तुह सव्वं ।
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न ८६केणइ ॥१॥
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥२॥
जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ॥३॥
हसउ अ रमउ अ तुह सहिजणो, हसामु अ रमामु अ अहंपि ।
हससु अ रमसु अ तंपि, इअ भणिही मइ पिओ इण्हिं ॥४॥

---

८५ समाणे सत्तमी (सति सप्तमी) मां तृतीया के सप्तमी विभक्ति मूकाय छे.

८६ क (किम्) सर्वनामनां रूपोने 'चि, इ, ई,' (चित्) अने 'पि–वि' (अपि) प्रत्यय लगाडवाथी प्रश्नार्थ जतो रहीने अनिश्चयार्थ थाय छे.

कस्सइ, कासइ (कस्यचित्) कोईनुं
कस्सवि, कासवि (कस्यापि) कोइनुं पण.
केइ, केई (केचित्) कोइक.
केवि (केऽपि) कोइ पण.
केणइ (केनचित्) कोई वडे.
केणवि (केनापि) कोइपण वडे.
कंचि (कञ्चित्) कोइने.
कंपि (कमपि) कोइने पण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥५॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥६॥
एगो हं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥७॥
एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥८॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥९॥
अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१०॥

गुजराती वाक्यो.

१. **देवो अने असुरोना समुदायथी वंदायेला** एवा जिनेश्वरो अमारुं रक्षण करे.

२. जे मुंझायेलाने शान्ति आपे छे, **दुःखमां पडेलानो** उद्धार करे छे, **शरणे आवेलानुं** रक्षण करे छे, ते पुरुषोवडे पृथ्वी अलंकृत छे.

३. **अहिंसा, संजम, अने तप** ए धर्म जेओना हृदयमां होय छे तेओने देवो पण नमस्कार करे छे.

४. जे मनुष्य धर्मनो त्याग करीने केवल **काम अने भोगोने** सेवे छे, ते कोइपण काळमां सुख पामी शकतो नथी.

५. सर्व मंगळोमां पहेलुं मंगळ क्युं छे?

६. हे भगवन्! **धर्मनो उपदेश आपवाथी** तमोए मारी उपर अनुग्रह कर्यो छे.

७. स्वामीनी आज्ञामां **रहेवुं** तेमां ज तमारुं कल्याण छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८ ज्यारे पुण्यनो नाश थाय छे त्यारे **सर्व विपरीत** थाय छे.

९ हे प्रभो ! तमारा चरणनुंशरणुं लइने कयो मनुष्य संसार तरशे नहि ?

१० आ लोकमां जे **शुभ के अशुभ कर्म** कर्युं छे ते ज परलोकमां साथे आवे छे. तेथी तुं शुभकर्मनो संचय कर.

११ आ संसारमां कोनुं जीवन सफळ छे ?

१२ जे जीवते छते सज्जनो अने मुनिओ जीवता होय अने जे हंमेशां परोपकारी होय तेनुं (जीवन सफळ छे.)

१३ आ मारुं छे अने आ तारुं छे, ए प्रमाणे **हलका मनवाळाने** होय छे, पण महात्माओने तो आखुं जगत् पोतानुं ज छे.

१४ तुं कहे छे के आ चोपडी मारी छे अने तारो मित्र कहे छे के आ चोपडी एनी छे तो तमारामां सत्यवादी कोण छे ?

१५ ते मागसे आ छोकराओने अने पेली छोकरीओने वधां फळो आपी दीधां.

१६ राजा एकदम बोली उठ्यो के पेला माणसो कोण छे, कयांथी आवे छे अने मारी पासे तेओने शुं काम छे ?

पाठ २५ मो

संख्यादर्शक शब्दो.

१ **एग–एअ / एक्क–इक्क** (एक, एक

२ **दो / वे** (द्वि) बे

३ **ति** (त्रि) त्रण

४ **चउ** (चतुर्) चार

५ ×**पंच** (पञ्चन्) पांच

६ **छ** (षष्) छ

७ **सत्त** (सप्तन्) सात

८ **अट्ठ** (अष्टन्) आठ

९ **नव** (नवन्) नव

१० **दस / दह** (दशन्) दश

×आर्षमां 'पंच' नो 'पण', 'अट्ठ' नो 'अड', 'अट्ठारह 'नो 'अट्ठार' पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११	एगारह[८७] एगादस	(एकादशन्) अगियार	१५	पण्णरस पण्णरह	(पञ्चदशन्) पंदर
१२	दुवालस बारह बारस	(द्वादशन्) बार	१६	सोलस सोलह	(षोडशन्) सोल
१३	तेरह तेरस	(त्रयोदशन्) तेर	१७	सत्तरस सत्तरह	(सप्तदशन्) सत्तर
१४	चोद्दह चोद्दस चउद्दह चउद्दस	(चतुर्दशन्) चौद	१८	अट्ठारह अट्ठारस	(अष्टादशन्) अढार.

एग, एअ, एक्क, इक्क शब्दनां रूपो त्रणे लिंगमां वपराय छे. अने तेनां रूपो **'सव्व'** शब्दनां रूपो जेवां ज थाय छे. अने **'दो'** शब्दथी मांडीने **अट्ठारस** सुधीना संख्यावाचक शब्दोनां रूपो बहुवचनमां चाले छे. तेमज त्रणे लिंगमां समान ज थाय छे. **अट्ठारस** सुधीना संख्यावाचक शब्दोमां षष्ठीना बहुवचनमां **ण्ह** अने **ण्हं** प्रत्यय लागे छे.

पुल्लिंग

एग (एक)

प.	**एगो, एगे.**	**एगे.**
बी.	**एगं.**	**एगे, एगा.**
च. छ.	**एगस्स.**	**एगण्हं, एगण्ह, एगेसिं.**

बाकीनां रूपो **'सव्व'** जेवां.

---

[८७] संख्यावाचक शब्दमां असंयुक्त 'द' नो 'र' थाय छे अने 'दश'ना 'श' नो 'ह' विकल्पे थाय छे.

एआरह, एगारस (एकादश) — तेरह, तेरस (त्रयोदश).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीलिंग.

प.	एगा.	एगाओ, एगाउ, एगा.
बी.	एगं.	,, ,, ,,
च. छ.	एगाअ, एगाइ, एगाए.	एगासिं, एगेसिं. एगण्ह, एगण्हं

वाकीनां रूपो 'सव्वा' जेवां.

नपुंसकलिंग.

प. बी.	एगं.	एगाइं, एगाइँ, एगाणि.

वाकीनां रूपो 'सव्व' जेवां.

	दो–वे (द्वि) त्रणे लिंगमां.	ति (त्रि) त्रणे लिंगमां.
प. बी.	दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे.	तिण्णि (तओ).
त.	दोहि, दोहिँ, दोहिं. वेहि, वेहिँ. वेहिं.	तीहि, तीहिँ, तीहिं.
च छ	दोण्ह, दोण्हं, दुण्हं, दुण्ह. वेण्हं, वेण्ह विण्हं, विण्ह.	तिण्हं, तिण्ह.
पं.	दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो. वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो.	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो.
सं.	दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं.	तीसु, तीसुं.

	चउ (चतुर्)	पंच (पञ्चन्)
प.बी.	चत्तारो, चउरो, चत्तारि.	पंच.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त.	चऊहि, चऊहिँ, चऊहिं. चउहि, चउहिँ, चउहिं.	×पंचहि, पंचहिँ, पंचहिं.
च.छ.	चउण्हं, चउण्ह.	पंचण्हं, पंचण्ह.
पं.	चउत्तो, चऊओ, चऊउ. चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ, चउउ. चउहिन्तो, चउसुन्तो.	पंचत्तो, पचाओ, पंचाउ, पंचाहिन्तो, पंचासुन्तो.
स.	चऊसु, चऊसुं. चउसु, चउसुं.	पंचसु, पंचसुं.

छ (षष्)		सत्त (सप्तन्)
प.बी.	छ	सत्त
त.	छहि, छहिं, छहिँ.	सत्तहि, सत्तहिँ, सत्तहिं.
च छ.	छण्हं, छण्ह.	सत्तण्हं, सत्तण्ह.
पं.	छत्तो, छाओ, छाउँ, छाहिन्तो, छासुन्तो.	सत्तत्तो, सत्ताओ, सत्ताउ, सत्ताहिन्तो, सत्तासुन्तो.
स.	छसु, छसुं.	सत्तसु, सत्तसुं.

अट्ठ (अष्टन्)		नव (नवन्)
प.बी.	अट्ठ.	नव.
त.	अट्ठहि, अट्ठहिँ, अट्ठहिं.	नवहि, नवहिँ, नवहिं.
च.छ.	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं.	नवण्ह, नवण्हं.

×पंचेहि–हिँ–हिं, सत्तेहि–हिँ–हिं इत्यादि रूपो पण जोवामां आवे छे. बारसेहिं जोयणेहि ईसिपब्भारा पुढवी ॥ निशीथ. भा. १. पृ. २९.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं.	अट्ठत्तो, अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो.	नवत्तो, नवाओ, नवाउ, नवाहिन्तो, नवासुन्तो.
स.	अट्ठसु, अट्ठसुं.	नवसु, नवसुं.

आ प्रमाणे दह, दस आदिथी अट्ठारस सुधीनां रूपो जाणवां.

कइ (कति)= केटलां, तेनां रूपो बहुवचनमां थाय छे.

प. बी. कई.

त. कईहि, कईहिँ, कईहिं.

च. छ. कइण्हं, कइण्ह.

पं. कइत्तो, कईओ, कईउ, कईहिन्तो, कईसुन्तो.

स. कईसु, कईसुं

१९ एगूणवीसा× (एकोनविंशति) ओगणीस.

२० वीसा (विंशति) वीस.

२१ एगवीसा, एक्कवीसा, इक्कवीसा (एकविंशति) एकवीस.

२२ बावीसा (द्वाविंशति) बावीस.

२३ तेवीसा (त्रयोविंशति) तेवीस.

२४ चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति) चोवीस.

२५ पणवीसा (पंचविंशति)

२६ छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीस.

×आर्षमां अन्त्य 'आ' नो 'अ' पण थाय छे. तेथी, एगूणवीस, वीस, बावीस, चउवीस, पणवीस, छव्वीस, एगूणतीस, तीस, बत्तीस, तेत्तीस, छत्तीस, अट्ठतीस,–अडतीस, एगूणचत्तालीस, चत्तालीस, बायालीस, छायाल–छायालीस, अडयाल–अट्ठचत्तालीस, एगूणपन्नास, पन्नास, एगावन्न–एगपन्नास, छप्पन्न–छपन्नास, अट्ठावन्न–अडवन्न-अट्ठपन्नास वगेरे थाय छे आनां रूपो पुलिंग अने नपुंसकलिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां प्राकृतसाहित्यमां देखाय छे.

उदा० एगूणपन्नं राइंदियाइं जीविउं बी. ए. (वसुदे.-हिंदी. पृ. २७८)
चत्तालीसं जोयणा चूला मेरुम्मि. प. ए. (नि. पृ. २९)
वीसं गयदंतेसु, जयंति तीसं कुलगिरीसु. प. ए. (शाश्वतजिनस्तवे).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ सत्तावीसा, सगवीसा (सप्तविंशति) सत्तावीस.

२८ अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति) अट्ठावीस.

२९ एगूणतीसा, अउणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीस.

३० तीसा (त्रिंशत्) त्रीस.

३१ एगतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) एकत्रीस.

३२ बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीस.

३३ तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) तेत्रीस.

३४ चउतीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) चोत्रीस.

३५ पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पांत्रीस.

३६ छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीस

३७ सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) साडत्रीस.

३८ अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टात्रिंशत्) आडत्रीस

३९ एगूणचत्तालीसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचाळीस.

४० चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चाळीस.

४१ एगचत्तालीसा, एक्कचत्तालीसा, इक्कचत्तालीसा, एगयालीसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) एकताळीस.

४२ बायालीसा, बायाला, बेयालीसा, बेचत्तालीसा, बेआला, दुचत्तालीसा (द्वाचत्वारिंशत्) बेंताळीस.

४३ तिचत्तालीसा, तेआलीसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) तेंताळीस.

४४ चउचत्तालीसा, चोयालीसा, चउयालीसा, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चुंमाळीश.

४५ पणचत्तालीसा, पणयालीसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) पीस्ताळीस.

४६ छचत्तालीसा, छायालीसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) छेंताळीस.

४७ सत्तचत्तालीसा, सत्तयालीसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) सुडताळीस.

४८ अट्ठचत्तालीसा, अडयालीसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) अडताळीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९ *एगूणपण्णासा, अउणापण्णा, अउणपण्णा (एकोनपञ्चाशत्) ओगणपचास

५० पण्णासा, पंचासा (पञ्चाशत्) पचास.

५१ एगपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) एकावन.

५२ दुप्पण्णासा, बावण्णा (द्विपञ्चाशत्) बावन.

५३ तिपण्णासा, तेवण्णा (त्रिपञ्चाशत्) त्रेपन.

५४ चउपण्णासा, चोवण्णा, चउवण्णा (चतु:पञ्चाशत्) चोपन.

५५ पंचावण्णा, पणपण्णासा, पणपण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) पंचावन.

५६ छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्) छप्पन.

५७ सत्तपण्णासा, सत्तावण्णा (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन

५८ अट्ठावण्णा, अट्ठापण्णासा, अडवण्णा (अष्टपञ्चाशत्) अट्ठावन

५९ एगूणसट्ठि, अउणसट्ठि (एकोनषष्टि) ओगणसाठ.

६० सट्ठि (षष्टि) साठ.

६१ एगसट्ठि, एक्कसट्ठि, इक्कसट्ठि (एकषष्टि) एकसठ.

६२ बासट्ठि, बावट्ठि (द्विषष्टि) बासठ.

६३ तेसट्ठि, तेवट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ.

६४ चउसट्ठि, चोवट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) चोसठ.

६५ पणसट्ठि, पण्णट्ठि (पंचषष्टि) पांसठ.

६६ छासट्ठि, छावट्ठि (षट्षष्टि) छासठ.

६७ सत्तसट्ठि, सडसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसठ.

६८ अट्ठसट्ठि, अडसट्ठि (अष्टषष्टि) अडसठ.

६९ एगूणसत्तरि, अउणत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोसीत्तेर.

७० सत्तरि, सित्तरि, सयरि (सप्तति) सीत्तेर.

---

* ण्ण नो न्न थवाथी एगूणपन्नासा, पन्नासा, एगावन्ना, बावन्ना, तेवन्ना वगेरे पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१ एगसत्तरि* } (एकसप्तति)
एक्कसत्तरि } इकोतेर.
इक्कसत्तरि

७२ बावत्तरि } (द्विसप्तति)
बाहत्तरि } बोंतेर.
बिसत्तरि
बिहत्तरि

७३ तिसत्तरि } (त्रिसप्तति)तोंतेर.
तिहत्तरि
तेवत्तरि

७४ चउसत्तरि } (चतुःसप्तति)
चोवत्तरि } चूमोतेर.
चोसत्तरि

७५ पण्णसत्तरि } (पञ्चसप्तति)
पंचहत्तरि } पंचोतेर.

७६ छसत्तरि } (षट्सप्तति)
छस्सयरि } छोंतेर.

७७ सत्तसत्तरि } (सप्तसप्तति)
सत्तहत्तरि } सत्योतेर.

७८ अट्ठसत्तरि } (अष्टसप्तति)
अट्ठहत्तरि } अठ्योतेर.

७९ एगूणासीइ (एकोनाशीति)
अगण्याएंसी.

८० असीइ (अशीति) एंसी.

८१ एगासीइ } (एकाशीति)
एक्कासीइ } एकाशी.
इक्कासीइ

८२ बासीइ (द्व्यशीति) ब्यासी.

८३ तेसीइ } (त्र्यशीति)
तेआसीइ } त्यासी.

८४ चउरासीइ } (चतुरशीति)
चोरासीइ } चोराशी.
चुलसी

८५ पणसीइ } (पञ्चाशीति)
पंचासीइ } पंचासी.

८६ छासीइ (षडशीति) छासी.

८७ सत्तासीइ (सप्ताशीति)
सत्यासी.

८८ अट्ठासीइ (अष्टाशीति)
अठ्यासी.

८९ नवासीइ (नवाशीति) नेवासी.
एगूणनवइ } (एकोननवति)
एगूणणउइ } नेवासी.

९० नवइ } (नवति) नेवुं
नउइ

९१ एगणवइ } (एकनवति)
एक्कणवइ } एकाणुं.
इक्कणवइ
इक्कणउइ

९२ बाणउइ } (द्विनवति बाणुं.
बाणवइ

९३ तेणवइ } (त्रिनवति) त्राणुं.
तिणउइ

९४ चउणवइ } (चतुर्नवति)
चोणवइ } चोराणुं.

---

* आर्षमां 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' पण आवे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५ पंचाणउइ, पंचाणवइ, पण्णणवइ (पञ्चनवति) पंचाणुं.

९६ छण्णवइ, छण्णउइ (षण्णवति) छन्नुं.

९७ सत्ताणवइ, सत्तणवइ, सत्तणउइ (सप्तनवति) सत्ताणुं.

९८ अट्ठाणवइ, अट्ठाणउइ, अट्ठणवइ, अडणवइ (अष्टनवति) अट्ठाणुं.

९९ नवणउइ, नवणवइ (नवनवति) नव्वाणुं.

एगूणवीसा थी नवणवइ सुधीना शब्दोमां जेओ आकारान्त छे तेमनां रूपो 'रमा'नी जेवां थाय छे अने जे शब्दो इकारान्त छे तेमनां रूपो 'बुद्धि' नी जेवां जाणवां.

एगूणसय न. (एकोनशत) नव्वाणुं.

×सय न. (शत) सो.

दुसय, विसय, दो सयाइं न. (द्विशत) बसो.

तिसय, तिण्णि सयाइं न. (त्रिशत) त्रणसो.

चउसय, चत्तारि सयाइं न. (चतुःशत) चारसो.

पंचसय, पणसय न. (पञ्चशत) पांचसो.

छसय न. (षट्शत) छसो.

सत्तसय न. (सप्तशत) सातसो.

अट्ठसय, अडसय न. (अष्टशत) आठसो.

नवसय न. (नवशत) नवसो.

सहस्स न. (सहस्र) हजार.

दससहस्स, दहसहस्स न. (दशसहस्र) दश हजार.

अयुत, अजुअ न. (अयुत) दश हजार.

सयसहस्स न. (शतसहस्र) लाख.

लक्ख न. (लक्ष) लाख.

दसलक्ख न. (दशलक्ष) दश लाख.

कोडि स्त्री. (कोटि) एक करोड.

दसकोडि स्त्री. (दशकोटि) दश करोड.

सयकोडि स्त्री. (शतकोटि) सो करोड.

× सय, सहस्स अने लक्ख ए शब्दो प्रयोगने अनुसारे पुल्लिंगमां पण वपराय छे. उदा०—सोलस रायसहस्सा कमेण पूयंति रयणमाईहिं (नेमिचरिए. भव. ९. गा. १३४०). अट्ठ सहस्सा गा. ४८.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहस्सकोडि स्त्री. (सहस्रकोटि) हजार करोड.

लक्खकोडि स्त्री. (लक्षकोटि) लाख करोड.

कोडाकोडि स्त्री. (कोटाकोटि) कोडाकोडी, करोडने करोड वडे गुणवाथी जे संख्या आवे ते.

पलिओवम पु. न. (पल्योपम), पल्योपम, समय प्रमाण विशेष.

सागरोवम पु. न. (सागरोपम) सागरोपम, समय प्रमाण विशेष. दश कोडाकोडी पल्योपम प्रमाण काळविशेष.

अपूर्णांक शब्दो.

पाय पु. (पाद) चोथो भाग, पा.

अद्ध, **अड्ढ** पु. न. (अर्ध) अर्धु, अर्ध भाग.

पाओण, **पाऊण**, **पोण** वि. (पादोन) पोणुं, पा ओछुं.

सवाय वि. (सपाद) सवा, पा सहित.

सद्ध, **सड्ढ** वि. (सार्ध) दोढ, अर्ध सहित.

दिवड्ढ वि. (द्व्यपार्ध) दोढ.

अद्धतइय, **अड्ढाइय**, **अड्ढाइज्ज** वि. (अर्धतृतीय) अढी.

अद्धुट्ठ, **अड्डुट्ठ** वि. (अर्धचतुर्थ–अध्युष्ठ) साडा त्रण.

अद्धपंचम वि. (अर्धपञ्चम) साडा चार.

अद्धछट्ठ वि. (अर्धषष्ठ) साडा पांच.

अद्धसत्तम वि. (अर्धसप्तम) साडा छ.

अद्धट्ठम वि. (अर्धाष्टम) साडा सात.

अद्धनवम वि. (अर्धनवम) साडा आठ.

अद्धदसम वि. (अर्धदशम) साडा नव.

संख्यावाचक शब्दोनी पहेलां **सवाय–सड्ढ–सद्ध–पाओण–पाऊण–पोण** शब्द मूकवाथी पण अपूर्णांक शब्दो सिद्ध थाय छे.

सवायपंच–अ वि. (सपादपञ्च–क) सवा पांच.

सड्ढपंच–अ वि. (सार्धपञ्च–क) साडा पांच.

पाओणपंच–अ, **पाऊणपंच–अ**, **पोणपंच–अ** वि. (पादोन-पञ्च–क) पोणा पांच.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यापूरक शब्दो.

पढम-पढमिल्ल (प्रथम) १लुं.

बीअ-बिइअ-दुइय, दुइज्ज-दोच्च (द्वितीय) २ जुं.

तीअ-तइअ-तच्च, तिइज्ज-तिइय (तृतीय) ३ जुं.

चउत्थ-चोत्थ (चतुर्थ) ४ थुं.

तुरिअ (तुर्य) ४ थुं.

पंचम (पञ्चम) ५ मुं.

छट्ठ (षष्ठ) ६ ठुं.

सत्तम (सप्तम) ७ मुं.

अट्ठम (अष्टम) ८ मुं.

नवम (सम) ९ मुं.

दहम, दसम (दशम) १० मुं.

एक्कारस वगेरे संख्यावाचक नामो उपरथी संख्यापूरक शब्दो प्रयोगने अनुसारे '**अ-म-यम-इम**' प्रत्यय लगाडवाथी थाय छे, 'अ' प्रत्यय लगाडतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे. तेमज संस्कृत सिद्ध प्रयोग उपरथी पण प्राकृत नियमानुसार फेरफार थइ वपराय छे.

एक्कारस-म (एकादश) ११ मुं.

बारस-म (द्वादश) १२ मुं.

तेरस-म (त्रयोदश) १३ मुं.

चउद्दस-म चतुर्दश) १४ मुं.

पन्नरस-म, पंचदस-म (पञ्चदश) १५ मुं.

सोलस-म (षोडश) १६ मुं.

सत्तरस-म (सप्तदश) १७ मुं.

अट्ठारस-म (अष्टादश) १८ मुं.

एगूणवीस-इम (एकोनविंश-तितम) १९ मुं.

वीसइम (विंशतितम) २०मुं.

एक्कवीस-म-इम (एकविंश-तितम) २१मुं.

बावीस-इम (द्वाविंश-तितम) २२ मुं.

तेवीस-इम-(त्रयोविंश-तितम) २३ मुं.

चउवीस-इम (चतुर्विंश-तितम) २४ मुं.

पंचवीस-इम, पणवीस-इम (पञ्चविंश-तितम) २५ मुं.

छव्वीस-इम (षड्विंश-तितम) २६ मुं.

सत्तावीस-इम (सप्तविंश-तितम) २७ मुं.

अट्ठावीस-इम (अष्टाविंशतितम) २८ मुं.

एगूणतीस-इम (एकोनत्रिंश-त्तम) २९ मुं.

तीसइम (त्रिंशत्तम) ३० मुं.

एक्कतीस-इम (एकत्रिंश-त्तम) ३१ मुं.

 Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बत्तीस-इम (द्वात्रिंश-त्तम) ३२मुं.
तेत्तीस-इम (त्रयस्त्रिंश-त्तम) ३३मुं.
चउतीस इम (चतुस्त्रिंश त्तम) ३४ मुं.
पंचतीस-इम } (पञ्चत्रिंश-त्तम)
पणतीस-इम } ३५ मुं.
छत्तीस-इम (षट्त्रिंश-त्तम) ३६ मुं.
सत्ततीस-इम (सप्तत्रिंश-त्तम) ३७ मुं.
अट्ठतीस-इम (अष्टात्रिंश-त्तम) ३८ मुं.
एगूणचत्ताल } (एकोनचत्वारिंश
एगूणचालीस } -त्तम) ३९मुं.
-इम }
चत्ताल } (चत्वारिंश-त्तम)
चालीस-म } ४० मुं.
चत्तालीस-म }
एगचत्ताल (एकचत्वारिंश-त्तम) ४१ मुं.
बायालीस-इम (द्वाचत्वारिंश-त्तम) ४२ मुं.
तेयालीस-इम (त्रिचत्वारिंश-त्तम) ४३ मुं.
चउचत्तालीस-इम } (चतुश्चत्वा-
चउयालीस-इम } रिंश-त्तम) ४४ मुं.
पणयाल (पञ्चचत्वारिंश) ४५मुं.
छायालीस (षट्चत्वारिंश) ४६मुं.
सत्तचत्ताल } (सप्तचत्वारिंश)
सत्तचत्तालीस } ४७मुं.
अट्ठचत्ताल } (अष्टचत्वारिंश).
अडयालीस } ४८ मुं.
एगूणपन्नास (एकोनपञ्चाश) ४९मुं
पन्नास-म इम (पञ्चाश-त्तम) ५० मुं.
एगावन्न-म } (एकपञ्चाश-
एगपन्नास इम } त्तम) ५१मुं.
बावन्न-ण्ण (द्विपञ्चाश) ५२ मुं.
तिपंचास-इम (त्रिपञ्चाश-तम) ५३ मुं.
चउपण्ण-इम } (चतुःपञ्चाश
चउपन्नास इम } -त्तम) ५४मुं.
पंचावन्न (पञ्चपञ्चाश) ५५ मुं.
छप्पन्न (षट्पञ्चाश) ५६ मुं.
सत्तावन्न-ण्ण (सप्तपञ्चाश) ५७मुं.
अट्ठावन्न ण्ण (अष्टपञ्चाश) ५८मुं.
एगूणसट्ठ (एकोनषष्ट) ५९ मुं.
सट्ठिइम } (षष्टितम) ६०मुं.
सट्ठिअम }
एगसट्ठ (एकषष्ट) ६१ मुं.
बासट्ठ (द्वाषष्ट) ६२ मुं.
तिसट्ठ (त्रिषष्ट) ६३ मुं.
चउसट्ठ-ट्ठिम (चतुःषष्ट-ष्टितम) ६४ मुं.
पंचसट्ठ (पञ्चषष्ट) ६५ मुं.
छासट्ठ (षट्षष्ट) ६६ मुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्तसट्ठ (सप्तषष्ट) ६७मुं
अडसट्ठ-ट्ठिम (अष्टषष्ट-ष्टितम) ६८मुं.
एगूणसत्तर (एकोनसप्तत) ६९मुं.
सत्तर } (सप्ततितम) ७०मुं.
सत्तरिअम }
एगसत्तर (एकसप्तत) ७१मुं.
बावत्तर } (द्विसप्तत) ७२मुं.
बाहत्तर }
तिहत्तर (त्रिसप्तत) ७३मुं.
चउहत्तर (चतुःसप्तत) ७४मुं.
पंचहत्तर (पञ्चसप्तत) ७५मुं.
छहत्तर (षट्सप्तत) ७६मुं.
सत्तहत्तर (सप्तसप्तत) ७७मुं.
अट्ठहत्तर (अष्टसप्तत) ७८मुं.
एगूणासीय-यम (एकोनाशीत-तितम) ७९मुं.
असीइम (अशीतितम) ८०मुं.
एगासीइम (एकाशीतितम) ८१मुं.
बासीइम (द्व्यशीतितम) ८२मुं.
तेयासीइम (त्र्यशीतितम) ८३मुं.
चउरासीइम (चतुरशीतितम) ८४मुं.

पंचासीइम (पञ्चाशीतितम) ८५मुं.
छासीइम (षडशीतितम) ८६मुं.
सत्तासीइम (सप्ताशीत-तितम) ८७मुं.
अट्ठासीय-म (अष्टाशीत-तिम) ८८मुं.
एगूणनउय (एकोननवत) ८९मुं.
नउइय } (नवतितम) ९०मुं.
नवइयम }
एक्काणउय } (एकनवत) ९१मुं.
एक्काणवय }
बाणउय (द्विनवत) ९२मुं.
तेणउय (त्रिनवत) ९३मुं.
चउणउय (चतुर्नवत) ९४मुं.
पंचाणउय (पञ्चनवत) ९५मुं.
छन्नउय (षण्णवत) ९६मुं.
सत्ताणउय (सप्तनवत) ९७मुं.
अट्ठाणउय (अष्टनवत) ९८मुं.
नवणउय } (नवनवत-तितम) ९९मुं
नवणवइम }
सयमम (शततम) १००मुं.

ए प्रमाणे **एक्कुत्तरसय-एक्कोत्तरसय, दुरुत्तरसय-तिउत्तरसय** वगेरे संख्या उपरथी संख्यापूरक शब्दो पण करी लेवा.

'पढम' थी **'तिइय'** सुधीना संख्यापूरकोनुं स्त्रीलिंग **'आ'** लगाडवाथी थाय छे, बाकीना संख्यापूरक शब्दोनुं स्त्रीलिंग प्रायः अन्त्य **अ** नो **ई** करवाथी थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जेम-**पढमा-बीया-विइआ-तीया-तइया-चउत्थी-दसमी, एक्कारसी-चउद्दसी-चउद्दसमी-सत्तावीसी-सत्तावीसमी-तीसइमी-चालीसमी-एगसट्ठी-बावत्तरी-एगासीइमी-छन्नउई** वगेरे.

संख्यापूरक शब्दो विशेषण होवाथी तेनां रूपो पुल्लिंगमां **'देव'** प्रमाणे अने स्त्रीलिंगमां **'रमा'** अने **'इत्थी'** प्रमाणे समजवां.

संख्यावाचक शब्दो उपरथी आवृत्तिदर्शक क्रियाविशेषणो **'हुत्त'** (**कृत्वस्**) प्रत्यय लगाडवाथी थाय छे. तेमज आर्षमां **'क्खुत्तो-'खुत्तो'** प्रत्यय पण लगाडाय छे. **एग** नुं **सइ** अथवा **सइं** पण थाय, तेमज **द्वि** नो **दु**, **त्रि** नो **ति** अने **चतुर्** नो **चउ** थाय छे.

सइ-सइं, एगहुत्तं, एक्कसिं (सकृत्) एकवार.

दु-दोच्चं, दुक्खुत्तो (द्विः) बेवार.

ति-तच्चं, तिक्खुत्तो (त्रिः) त्रणवार.

चउ-चउक्खुत्तो (चतुः) चारवार.

पंचहुत्तं, पंचक्खुत्तो (पञ्चकृत्वः) पांचवार.

सयहुत्तं, सयक्खुत्तो (शतकृत्वः) सोवार.

सहस्सहुत्तं, सहस्सक्खुत्तो (सहस्रकृत्वः) हजारवार.

अणंतहुत्तं, अणंतक्खुत्तो, अणंतखुत्तो (अनन्तकृत्वः) अनंतवार.

प्रकार अर्थमां **हा** (**धा**) अने **विह** (**विध**) प्रत्यय लगाडाय छे.

एगहा अ. (एकधा),	**एगविह** वि. (एकविध) एक प्रकारे.
दुहा अ. (द्विधा),	**दुविह** वि. (द्विविध) बे प्रकारे.
तिहा अ. (त्रिधा),	**तिविह** वि. (त्रिविध) त्रण प्रकारे.
चउहा, **चउद्धा** } अ. (चतुर्धा),	**चउविह**, **चउव्विह** } वि. (चतुर्विध) चार प्रकारे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठहा अ. (अष्टधा), **अट्ठविह** वि. (अष्टविध) आठ प्रकारे
दसहा अ. (दशधा), **दसविह** वि. (दशविध) दश प्रकारे.
बहुहा अ. (बहुधा), **बहुविह** वि. (बहुविध) अनेक प्रकारे.
सयहा अ. (शतधा), **सयविह** वि. (शतविध) सो प्रकारे.
सहस्सहा अ. (सहस्रधा), **सहस्सविह** वि. (सहस्रविध) हजार प्रकारे.
नाणाविह वि. (नानाविध) जुदा जुदा प्रकारे.

शब्दो.

अइसय पु. (अतिशय) अतिशय, महिमा, प्रभाव.

अंग न. (अङ्ग) आचारांगादि बार, अंग, शरीर, शरीरावयव.

अंब पु. (आम्र) आंबानुं झाड, न. आम्रफल.

अज्झाय पु. (अध्याय) ग्रन्थनो अमुक भाग, प्रकरण, अध्याय.

अणिय न. (अनीक) सैन्य, लश्कर.

अणुओगद्दार न. ब. व. (अनुयोग-द्वार) सूत्रविशेष.

अद्धमागही स्त्री. (अर्धमागधी) अर्धमागधी भाषा.

अमावासा } **अमावस्सा** } स्त्री. (अमावास्या) अमावास्या, अमावस.

अरिह* पु. (अर्हन्) तीर्थंकर.

अहियगर वि. (अहितकर) अहित करनार.

आइ पु. (आदि) प्रथम, वगेरे, प्रधान.

आउह न. (आयुध) शस्त्र.

आसायणा स्त्री. (आशातना) विपरीत वर्तन, अपमान.

उवंग पु. न. (उपाङ्ग) अंगना अर्थनो विस्तार करनार सूत्र.

ओहि पु. स्त्री. (अवधि) मर्यादा, हद, त्रीजुं ज्ञान. (अतीन्द्रिय रूपी पदार्थोने जणावनारुं ज्ञान)

कत्तिअ पु. (कार्तिक) कार्तिक मास.

कयली } **केली** } स्त्री. (कदली) केळ.

कवल पु. (सम) कोळीओ, ग्रास.

कुच्छि पु. स्त्री. (कुक्षि) उदर, पेट.

कुरु पु. ब. व. (सम) देशनुं नाम छे.

कोसलिय वि. (कौशलिक) कोशला—अयोध्या नगरीमां उत्पन्न थयेल.

---

*अरिह शब्दनुं प० ए० नुं रूप अरिहा एवुं पण थाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खंड पु. न. (खण्ड) ककडो, पृथ्वीनो अमुक भाग.

खंडिय पु. (खण्डिक) छात्र, विद्यार्थी.

गुणट्ठाण न. (गुणस्थान) मिथ्या दृष्टि आदि चौद गुणस्थानक, गुणोनुं स्थान.

चंपअ पु. (चम्पक) चंपानुं झाड.

चइत्त पु. (चैत्र) चैत्रमास.

चक्कवट्टि पु. (चक्रवर्तिन्) चक्रवर्ती, छ खंडनो अधिपति.

छेयगंथ पु. (छेदग्रन्थ) निशीथादि छ सूत्र.

जंबूदीव पु. (जम्बूद्वीप) द्वीपनुं नाम छे.

जणवय पु. (जनपद) देश, जनस्थान.

जेट्ठ } वि. (ज्येष्ठ) महान्, सर्वथी मोटुं, श्रेष्ठ.
जिट्ठ }

भासा स्त्री. (भाषा) भाषा, वाक्य, वचन, वाणी.

मह } वि. (महत्) मोटुं, वृद्ध, श्रेष्ठ, विस्तीर्ण.
महंत }

तिहि पु. स्त्री. (तिथि) तिथि, दिन,

नंदिसुत्त न. (नन्दीसूत्र) सूत्रनुं नाम छे, जेनी अन्दर पांच ज्ञानोनुं स्वरूप छे.

निगम पु. (सम) व्यापारवाळुं स्थान, व्यापारीओनो समुदाय.

निहि पु. (निधि) खजानो, भंडार, चक्रवर्ति राजानी संपत्ति विशेष.

निव्वाण न. (निर्वाण) मोक्ष

पइन्न-ग पु. न. (प्रकीर्ण—क) सूत्रविशेष, वि. विखेरेलुं.

पज्जवसाण न. (पर्यवसान) अन्त, अवसान, छेडो.

पयंग पु. (पतंग) पतंगियुं.

पाइअ वि. (प्राकृत) स्वाभाविक, नीच, पामर, मूल. न. पाकृत भाषा.

पूरअ } वि. (पूरक) पूरण करनार.
पूरग }

पुव्व वि. (पूर्व) कालविशेष, ७० लाख ५६ हजार क्रोड वर्षोनो समूह, एक पूर्व.

भंत वि. (भगवत्—भदन्त—भ्राजत्—भवान्त—भयान्त) भगवान्—ऐश्वर्यवान्, कल्याणकारक, देदीप्यमान, संसार अने भयोना अंत करनार.

भगवई स्त्री. (भगवती) भगवती सूत्र, पांचमुं अंग.

भरह पु (भरत) भरतक्षेत्र, श्रीऋषभदेवना प्रथम पुत्र.

भारह न. (भारत) भरतक्षेत्र.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भसल पु. (भ्रमर) भ्रमर.

भस्संतया स्त्री. (भस्मान्तता) राख पणाने पामवुं, बळीने भस्म थवुं.

भिक्खायरिअ वि. (भिक्षाचरक) भिक्षाचर.

भोअ पु. न. (भोग) मनोज्ञ शब्दादि विषयो.

मणपज्जव पु. (मनःपर्यव) चतुर्थ ज्ञान (बीजाना मनना भावोने जणावनारुं ज्ञान)

मूलसुत्त न. (मूलसूत्र) सूत्रविशेष.

रुअ न. (रुत) शब्द, अवाज.

लोगंतिअ पु. (लोकान्तिक) देव-विशेष.

लोगवाल } (लोकपाल) इन्द्रनो
लोगपाल } दिक्पाल.

लिंब पु. (निंब) लींबडानुं झाड.

वायणा स्त्री. (वाचना) वाचना.

वारियर पु. (वारिचर) जलचर, मत्स्य.

वासहर पु. (वर्षधर) पर्वत विशेष.

विणट्ठ वि. (विनष्ट) नाश पामेल.

णं अ. (दे) वाक्यालंकारमां वपराय छे.

विणिद्दिट्ठ वि. (विनिर्दिष्ट) विशेषे करी कहेवायेल.

वियार पु. (विकार) विकार.

सउण पु. (शकुन) पक्षी.

सिप्प न (शिल्प) हुन्नर, चित्रकला वगेरे कला.

संतिण्ण क. भू. (सन्तीर्ण) पार पामेला, तरी गयेला.

संवच्छरिअ वि. (सांवत्सरिक) संवत्सर संबंधी, वार्षिक.

हत्थिणाउर न. (हस्तिनापुर) नगरनुं नाम छे.

हय पु. (सम) घोडो.

धातुओ.

अइवाय् (अति+पात्) जीवहिंसा करवी.

अभि-सिंच् (अभि+सिञ्च्) अभिषेक करवो.

पसव् (प्र+सू) जन्म आपवो, उत्पन्न करवुं.

पया (प्र+जनय्) प्रसव करवो, जन्म आपवी.

अणुया (अनु+या) अनुसरवुं.

वाय् (वाचय्) वांचवुं, भणवुं, भणाववुं.

विहे (वि+धा) करवुं, बनाववुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत वाक्यो.

उवज्झाओ चउण्हं समणाणं सुत्तस्स वायणं देइ ।

पंच पंडवा सिद्धगिरिम्मि निव्वाणं पावीअ ।

कामो कोहो लोहो मोहो मओ मच्छरो य छ वियारा जीवाण-महियगरा ।

अस्सिं उज्जाणे पणवीसा अंबा, छत्तीसा य लिंबा, एगासीई केलीओ, सडसट्ठी चंपआ अत्थि ।

सो समणो पव्वइओ अट्ठुट्ठेहिं सह खंडियसएहिं ।

नहे सत्तण्हं रिसीणं सत्त तारा दीसन्ति ।

समोसरणे भयवं महावीरो देवदाणवमणुअपरिसाए चउहिँ मुहेहिं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।

तिसला देवी चइत्तमासस्स सुक्कपक्खे तेरसीए तिहोए महावीरं पुत्तं पयाही ।

दसहिं दसहिँ सयं होइ, दसहिँ सएहिं सहस्सं ।
दसहिं सहस्सेहिँ अजुयं, दसहिं अजुएहि लक्खं च ॥१॥

उसभे अरिहा कोसलिए पढमराया, पढमभिक्खायरिए, पढमतित्थयरे वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासे वसित्ता, तेवट्ठि पुव्वसयसहस्साइं रज्जमणुपालेमाणे लेहाइयाओ सउणरुअपज्जवसाणाओ, बावत्तरिं कलाओ, चोवट्ठि महिलागुणे, सिप्पाणमेगसयं, एए तिन्नि पयाहियट्ठाए उवदिसइ, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिंचइ, ततो पच्छा लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए संवच्छरियं दाणं दाऊण पव्विइओ ।

जिणमए एगादस अंगाणि, बारस उवंगाणि, छ छेयगंथा, दस पइन्नगाइं, चत्तारि मूलसुत्ताइँ, नंदिसुत्त-अणुओगदाराइं च दोण्णि त्ति पणयालीसा आगमा संति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भंते! नाणं कइविहं पन्नत्तं, गोयमा! नाणं पंचविहं पन्नत्तं, तंजहा-मइनाणं सुअनाणं ओहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं च।

चत्तारि लोगपाला, सत्त य अणियाइं तिण्णि परिसाओ।
एरावणो गइंदो, वज्जं च महाउहं तस्स (सक्कस्स) ॥२॥
बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ।
पुरिसस्स महिलाए, अट्ठावीसं मुणेयव्वा ॥३॥
अट्ठावीसं लक्खा, अडयालीसं च तह सहस्साइं।
सव्वेसिंपि जिणाणं, जईण माणं विणिद्दिट्ठं ॥४॥
पढमे न पढिआ विज्जा, बिईए नज्जिअं धणं।
तईए न तवो तत्तो, चउत्थे किं करिस्सए ॥५॥
सत्तो सद्दे हरिणो, फासे नागो रसे य वारियरो।
किवणपयंगो रूवे, भसलो गंधेण विणट्ठो ॥६॥
पंचसु सत्ता पंच वि, णट्ठा जत्थागहिअपरमट्ठा।
एगो पंचसु सत्तो, पजाइ भस्संतयं मूढो ॥७॥
*कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं,
तओ महाचक्कवट्टिभोए, महप्पहावो।
जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई,
बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो ॥
चउदसवररयणनवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्स-
पवरजुवईण सुंदरवई,
चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी,
छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि भयवं+वेड्ढओ ॥८॥
तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया।
संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ +रासानंदियं ॥ युग्मम् ॥९॥

---

* आ बे स्तुतिओ 'शान्तिनाथ' भगवाननी छे.

+ वेड्ढओ (वेष्टकः) रासानंदियं (रासानन्दितम्) आ बे छंद विशेषनां नाम छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती वाक्यो

१ ते एकवीस वर्ष चारित्र पाळी समाधिपूर्वक मृत्यु पामी बारमा **देवलोकमां देव** थयो.

२ भगवान् महावीर **आसो मासनी अमावास्यानी** रात्रिए आठे कर्मोनो क्षय करी मोक्षे गया. त्यार पछी प्रभातमां **कार्तिक मासनी** एकमे **गौतमस्वामीने केवलज्ञान** थयुं. तेथी आ बे दिवसो जगत्मां श्रेष्ठ मनाय छे.

३ जैनो छ **द्रव्यो,** आठ **कर्मो,** जीव वगेरे नव **तत्त्व,** दश **यतिधर्म** अने चौद **गुणस्थानको** माने छे.

४ श्रावकोए जिनालयोनी चोराशी **आशातना** अने गुरुओनी तेत्रीस आशातनाओ **वर्जवी** जोइए.

५ जे **भरतक्षेत्रना** त्रण खंड जिते ते **वासुदेव** थाय, अने जे छ **खंड** जिते ते **चक्रवर्ती** थाय छे.

६ तीर्थंकरोने चार अतिशयो जन्मथी होय छे तेमज **कर्मक्षयथी** अगियार अतिशयो अने **देवोवडे करायेल** ओगणीस अतिशयो एम **चोत्रीस अतिशयोथी विराजित** तीर्थंकरो होय छे.

७ सर्व **अंग** अने **उपांग** वगेरे सूत्रोमां पांचमुं **भगवती अंग** श्रेष्ठ अने सर्वथी मोटुं छे.

८ चोसठ इन्द्रो मेरुपर्वत उपर तीर्थंकरनो जन्ममहोत्सव करे छे.

९ सिद्ध भगवंतो आठे कर्मोथी **रहित** होय छे.

१० **कुमारपाल** राजाए अढार **देशोमां जीवदया** पळावी हती.

११ श्री हेमचंद्रसूरिजीए **सिद्धहेमव्याकरणना** आटमा अध्यायमां **प्राकृत व्याकरण** आप्युं छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ आ जंबूद्वीपमां छ **वर्षधर** पर्वतो अने **भरत वगेरे** सात क्षेत्रो छे.

१३ **जीवो बे प्रकारे, गति चार प्रकारे, व्रतो पांच प्रकारे** अने **भिक्षुनी प्रतिमा बार प्रकारे** छे.

१४ आ पण्डिते आ व्याकरणना आठ अध्यायो बनाव्या छे अने दरेक अध्यायना चार चार पादो छे, तेना हुं सात अध्यायो अने आठमा अध्यायनां बे पादो भण्यो छुं.

१५ ते यक्षने बे मुख छे अने चार हाथ छे, तेमां एक हाथमां शंख छे, बीजा हाथमां गदा छे. त्रीजा हाथमां चक्र अने चोथा हाथमां बाण छे.

१६ आ पुस्तकना हुं पचीस पाठ भण्यो, एना चारेक हजार शब्दो याद कर्या, हजारेक वाक्यो कर्यां, हवे मने प्राकृत सुलभ थाय एमां शी नवाई ?

सूचना

पृष्ठ १६३. हेत्वर्थ कृदन्तनी पहेलां आ नियम लेवानो छे.

कर्मणि भूतकृदन्तने वंत प्रत्यय लगाडवाथी कर्तरि भूतकृदन्त थाय छे. जेम—

गय—गयवंतो (गतवान्) प० ए.

सुय—सुयवंतो (श्रुतवान्) प० ए.

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाइअसद्दकोसो.

अइसय पु. (अतिशय) अतिशय, महिमा, प्रभाव.

:×**अइक्कम्** (अति+क्रम्) उल्लंघन करवुं.

:×**अइ-वाय्** (अति+पात्) जीवहिंसा करवी.

×**अई** } (गम्) जवुं.
णी }

अईव अ. (अतीव) अत्यन्त.

अउअ } न. (अयुत) दशहजार,
अजुअ } संख्याविशेष.

अउज्झा स्त्री. (अयोध्या) अयोध्या नगरी.

अओ } अ. (अतः) एथी, ए
अतो } कारणने लीधे.

अंग न. (सम) अवयव, आचारांगादि बार अंग.

अंगण न. (सम) आंगणुं, चोक.

अंगार-ल } पु. (अङ्गार)
इंगार-ल } अंगारो, कोलसो.

अंगुली स्त्री. (सम) आंगळी.

अंजण न. (अञ्जन) काजळ, आंखमां आंजवानो सुरमो.

अंध वि. (सम) आंधळो.

:**अंब** पु. (आम्र) आम्रवृक्ष, न. आम्रफळ.

अकाल पु. (सम) असमय, समय विना.

अक्क पु. (अर्क) सूर्य.

×**अक्कम्** (आ+क्रम्) दबाववुं, आक्रमण करवुं.

अग्ग न. (अग्र) आगळ, शिखर.

अग्गओ अ. (अग्रतः) अग्र, पहेलो.

अग्गला स्त्री. (अर्गला) दरवाजानो अडगरो, भोगळ, बेडी.

अगार न. (सम) घर.

अग्गि पु (अग्नि) अग्नि.

×**अग्घ्** (अर्घ्) आदर करवो, सन्मान करवुं, कींमत करवी.

×**अग्घ्** (राज्) शोभवुं.

×**अच्च्** (अर्च्) पूजवुं.

अच्चण न. (अर्चन) पूजा.

अच्चणा स्त्री. (अर्चना) पूजा.

अच्चत्थ वि. (अत्यर्थ) अतिशय, पुष्कळ

अच्चंत पु. (अत्यन्त) घणुं, पुष्कळ.

अच्चय पु. (अत्यय) विनाश, विपरीत आचरण.

अच्चा स्त्री. (अर्चा) पूजा, सत्कार.

×**अच्छ्** (आस्) बेसवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छि पु. न. (अक्षि) आंख.
अच्छेर न. (आश्चर्य) विस्मय, चमत्कार.
अजिण्ण न. (अजीर्ण) अपचो.
अजीव पु. (सम) अजीव.
अज्ज अ. (अद्य) आज.
अज्झयण न. (अध्ययन) अध्ययन.
अज्झाय पु. (अध्याय) ग्रंथनो अमुक भाग, अधिकार विशेष.
अट्ठ, अत्थ पु. न. (अथ) धन, वस्तु, प्रयोजन, तात्पर्य, विषय.
×अड्, अट्ट् (अट्ट्) अटन करवुं, भटकवुं.
अडवि, अडवी स्त्री. (अटवि-वी) अटवी, जंगल, अरण्य.
अण अ. नही, अभाव.
अणंत वि. (अनन्त) अनंत, अपरिमित.
अणंतखुत्तो, अणंतक्खुत्तो अ. (अनन्तकृत्वस्) अनंतीवार.
अणंतरं अ. (अनन्तरम्) आंतरारहित, तुरत.
अणगारिया स्त्री, (अनगारिता) साधुपणुं.
अणत्थ, अणट्ठ पु. (अनर्थ) नुकशान, हानि.
अणाबाह वि. (अनाबाध) पीडारहित.

अणिय न. (अनीक) सैन्य, लश्कर.
अणुग्गह पु. (अनुग्रह) उपकार करवो, कृपा करवी.
×अणु-जाण् (अनु+ज्ञा) आज्ञा-आपवी.
×अणु-भव् (अनु+भू=भव्) अनुभव करवो, जाणवुं.
×अणु-या, अणु-जा (अनु+या) अनुसरवुं, पाछळ जवुं.
अणुसास् (अनु+शास्) शिखामण आपवी, उपदेश आपवो, आज्ञा आपवी.
अणेग वि. (अनेक) एकथी वधारे.
अण्णमण्णं अ. (अन्योऽन्यम्) परस्पर, एकबीजाने.
अण्णया अ. (अन्यदा) कालान्तरे, बीजी वखते.
अण्णह, अण्णहा अ. (अन्यथा) विपरीत, बीजी रीते.
अण्णहि, अण्णह, अण्णत्थ अ. (अन्यत्र) बीजे ठेकाणे.
अण्णाणि वि. (अज्ञानिन्) अज्ञानी, मूर्ख.
अतुल्ल, अउल्ल वि. (अतुल्य) असाधारण.
अत्थ पु. (अस्त) अस्ताचळ पर्वत, न. मृत्यु, अन्तर्धान.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अदु
अदुवा } अ. (अथवा) वा, अथवा.
अदुव

अद्धमागही स्त्री. (अर्धमागधी) अर्धमागधी भाषा.

अपि
अवि } अ. (अपि) पण, वा, शंका, सत्य.
पि
वि

×अप्प् } (अर्पय्) अर्पण करवुं,
पणाम् } भेट करवुं.

अप्प वि. (अल्प) थोडुं.

अप्पकेर वि. (आत्मीय) पोतानुं.

अभिभूअ वि. (अभिभूत) पराभूत, पराजित.

×अभि-नंद् (सम) प्रशंसा करवी.

×अभि-निक्खम् (अभि+निष्+क्रम्) संयमने माटे घेरथी नीकळवुं.

×अभि-सिंच् (अभि+सिञ्च्) अभिषेक करवो.

अब्भ न. (अभ्र) मेघ, वादळुं.

अब्भत्थणा स्त्री. (अभ्यर्थना) प्रार्थना, आदर, सत्कार.

×अब्भस् (अभ्यस्) अभ्यास-करवो, शीखवुं.

×अब्भुद्धर् (अभि+उद्+ध) उद्धार करवो.

अमर पु. (सम) देव.

अमरी स्त्री. (सम) देवी.

अमावासा } स्त्री. (अमावास्या)
अमावस्सा } अमावास्या, अमावस.

अमिअ } न. (अमृत) अमृत.
अमय }

अम्मो अ. (दे) आश्चर्य.

अयल पु. (अचल) पर्वत. वि. स्थिर, निश्चल.

अयि } (अयि) प्रश्न, समाधान,
ऐ } संबोधन, सान्त्वन.

अरण्ण } न. (अरण्य) वन,
रण्ण } जंगल.

अरइ स्त्री. (अरति) अप्रीति, सुखनो अभाव, ग्लानि.

अरिहंत
अरुहंत } पु (अर्हत्) तीर्थंकर, वि. पूज्य.
अरहंत

×अरिह् (अर्ह) लायक थवुं, योग्य थवुं, पूजा करवी.

अरुण पु. (सम) संध्याराग, सूर्य, सूर्यनो सारथि.

अलं अ. (सम) पर्याप्ति, पूर्ण, प्रतिषेध, अलम्.

अलंकिय वि. (अलंकृत) शोभित.

अलाहि अ. (दे) पर्याप्त, पूर्ण, प्रतिषेध, अलम्.

अलिय न. (अलीक) असत्य वचन.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×अल्ली (आ+ली) आश्रय करवो, आलिंगन करवुं, प्रवेश करवो.

अलोग पु. (अलोक) अलोक.

अवच्च न. (अपत्य) पुत्र.

अवज्झाण न. (अपध्यान) दुर्ध्यान, दुष्ट चिंतववुं.

अवण्णा स्त्री. (अवज्ञा) अपमान, तिरस्कार.

×अव–मन्न् (अव+मन्य) अवज्ञा करवी, अपमान करवुं.

अवमाण पु. (अपमान) अपमान, तिरस्कार,

अववाय पु. (अपवाद) निंदा, अपवाद,

अवरण्ह पु. (अपराह्ण) दिवसनो पाछलो भाग.

अवरा स्त्री. (अपरा) पश्चिमदिशा.

अवराह पु. (अपराध) गुनो, वांक,

×अवलंब् (सम) आश्रय लेवो.

×अविक्ख् }
अवक्ख् } (अप+ईक्ष्) अपेक्षा करवी, इच्छवुं.

×अवे (अप+इ) दूर थवुं, पाछा हठवुं.

×अवे (अव+इ) जाणवुं.

×अस् (सम) होवुं, थवुं.

असइ अ. (असकृत्) वारंवार.

असण न. (अशन) भोजन. खावुं ते.

असब्भ वि. (असभ्य) खराब, सभ्य नहीं.

असाय न. (असात) पीडा, दुःख.

असार वि. (सम) सार विनानुं, निरर्थक.

असुर पु. (सम) असुर.

असुरिंद पु. (असुरेन्द्र) असुरोनो इन्द्र.

अह अ (अथ) हवे, अधिकार, प्रश्न.

अहव }
अहवा } अ. (अथवा) किंवा, वा.

अहिअ वि. (अधिक) घणुं, वधारे.

×अहिज्ज् (अधि+इ) भणवुं, अभ्यास करवो.

अहिण्णु }
अहिज्ज } वि. (अभिज्ञ) निपुण, पंडित.

अहिलास पु. (अभिलाष) अनुराग, इच्छा.

अहुणा अ. (अधुना) संप्रति, हमणां.

अहो अ. (सम) शोक, करुणा, निंदा, विस्मय.

आ.

आइ पु. (आदि) प्रथम, वगेरे, प्रधान, पूर्व.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×**आइक्ख्** (आ+चक्ष्) कहेवुं, उपदेश आपवो, समजाववुं.

×**आइग्घ्** (आ+घ्रा) सुंघवुं

आइच्च पु. (आदित्य) सूर्य.

आउल वि. आकुल) व्याकुल, व्याप्त, दुःखी.

आउह न. (आयुध) शस्त्र.

आएस पु. (आदेश) हुकम, आज्ञा.

आगम पु. (सम) शास्त्र, सिद्धान्त.

आगय वि. (आगत) आवेल.

आगास पु. न. (आकाश) आकाश

×**आढा** } (आ+दृ) आदर करवो,
आदर् } मानवुं, आदरवुं.

आणा स्त्री. (आज्ञा) आदेश, हुकम.

आणाल पु. (आलान) हाथीने बांधवानो खूंटो.

×**आ-णे** (आ+नी) लाववुं.

×**आदिस्** (आ+दिश्) आदेश करवो, फरमाववुं.

×**आ-भोय्** (आ+भोगय्) देखवुं. विचारवुं, जाणवुं.

आयइ स्त्री. (आयति) भाविकाळ.

आयत्त वि. (सम) आधीन.

आयार पु. (आचार) आचार.

आयव पु. (आतप) आतप, तडको.

आयरिअ } पु. (आचार्य) आचार्य.
आइरिअ }

आयारंग न. (आचाराङ्ग) बार अङ्गमां पहेलुं अंग.

×**आ-रंभ्** }
आरभ् } (आ+रभ्) शरु करवुं.
आढव् }

आरंभ पु. (सम) आरंभ करवो, शरुआत करवी, जीववध.

×**आ-राह्** (आ+राध्) आराधना करवी, सेवा करवी.

आलाव पु. (आलाप) सूत्रनो आलावो, बोलवुं.

आ-लोय् (आ+लोक्) देखवुं, तपासवुं.

×**आलोय्** (आ+लोच्) आलोचना करवी, देखाडवुं, विचारवुं.

आलोयणा स्त्री. (आलोचना) देखाडवुं, प्रकट करवुं, गुरुने दोष कहेवा.

आवया स्त्री. (आपद्-दा) आपदा, पीडा.

आवासय } न. (आवश्यक) नित्य-
आवस्सय } कर्म, धर्मानुष्ठान.

आस पु. (अश्व) घोडो.

आसण न. (आसन) बेसवानुं आसन, स्थान.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आसन्न वि. (सम) समीप रहेल, न. नजीक.

आसम पु. (आश्रम) आश्रम.

×**आ-सास्** (आ+श्वासय्) शान्ति आपवी, आश्वासन देवुं.

आसायणा स्त्री. (आशातना) विपरीत वर्तन, अपमान.

आसिण पु. (आश्विन) आसो मास.

आहार पु. (आधार) आधार, आलंबन, आश्रय.

आहि पु. स्त्री. (आधि) मानसिक पीडा.

इ

इअ, इइ, ति, त्ति अ. (इति) एम, आ प्रमाणे, समाप्ति.

इंद पु. (इन्द्र) इन्द्र.

इंदिय न. (इन्द्रिय) स्पर्शनेन्द्रियादि पांच इन्द्रिय, (त्वचा, रसना, नाक, आंख, कान).

इंदु पु. (सम) चन्द्र.

इक्खु पु. (इक्षु) शेरडी.

इच्छ् (इष्-इच्छ्) इच्छवुं, चाहवुं.

इड्ढि, इद्धि, रिद्धि स्त्री. (ऋद्धि) वैभव, ऐश्वर्य, समृद्धि.

इत्थं अ. (सम) एवी रीते.

इत्थी, थी स्त्री. (स्त्री) स्त्री, नारी.

इयर वि. (इतर) अन्य, बीजो, दीन.

इयाणि, इयाणिं, दाणि, दाणिं अ. (इदानीम्) सम्प्रति. हमणां, आ वखते.

इव, मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ अ. (इव) पेठे, जेम जाणे, जेवी रीते.

इस्सरिअ, ईसरिअ न. (ऐश्वर्य) वैभव, प्रभुता.

इह, इहं अ. (इह) अहीयां, आ ठेकाणे.

इहरहा, इहरा अ. (इतरथा) अन्यथा, बीजी रीते.

ई

ईसर पु. (ईश्वर) ईश्वर, प्रभु.

ईसि, ईसिं, इसीं अ. (ईषद्) थोडुं, अल्प.

उ

उ अ. (सम) निंदा, तिरस्कार, आमंत्रण, विस्मय सूचन.

उअ अ. (दे) जुओ, देखो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×उंघ् (नि+द्रा) ऊंघवुं.

उल्लंघ् (स.) उल्लंघन करवुं.

उग्ग वि. (उग्र) तीव्र, प्रबळ.

उचिअ वि. (उचित) योग्य, लायक.

उच्च-अ वि. (उच्च-क) उन्नत, ऊंचुं.

उच्छाह पु. (उत्साह) उत्साह, शक्ति.

उज्जअ वि. (उद्यत) तत्पर.

×उज्जम् (उद्+यम्) उद्यम करवो, प्रयत्न करवो.

उज्जम पु. (उद्यम) उद्यम, महेनत.

उज्जयंत पु. (सम) गिरनार पर्वत.

उज्जाण न. (उद्यान) उद्यान, बगीचो.

उज्जोग पु. (उद्योग) प्रयत्न, उद्यम, हुन्नर.

×उज्झ् (सम) त्याग करवो, छोडवुं.

×उट्ठ / उट्ठा (उत्+स्था) उठवुं.

×उड्डे (उद्+डी) उडवुं.

उत्तम / उत्तिम वि. (सम) श्रेष्ठ.

उत्तर न. (सम) उत्तर, जवाब.

उत्तरा स्त्री. (सम) उत्तर दिशा.

उदग / दग न. (उदक) पाणी, जळ.

×उदे (उद्+इ) उदय पामवुं.

×उद्दाल् / अच्छिद् (आ+छिद्) छीनवी लेवुं.

×उन्नाम् / उल्लाल् (उद्+नामय्) ऊंचु करवुं, उपर फेरववुं.

×उप्पज्ज् (उत्+पद्य) उत्पन्न थवुं, उपजवुं.

उप्पल न. (उत्पल) कमळ.

उम्मत्त वि. (उन्मत्त) मत्त, गांडो.

×उम्मूल् (उद्+मूलय्) मूलथी उखेडवुं.

उवएस पु. (उपदेश) उपदेश.

×उवज्ज् (उत्पद्य) उत्पन्न थवुं, उपजवुं.

उवज्जिअ वि. (उपार्जित) पेदा करेलुं.

उवज्झाय / ऊज्झाय / ओज्झाय पु. (उपाध्याय) उपाध्याय, पाठक, अध्यापक.

×उव-दंस् (उप+दर्शय्) देखाडवुं.

×उव-दिस् (उप+दिश्) उपदेश आपवो.

×उव-भुंज् (उप+भुञ्ज्) भोगववुं, उपभोग करवो.

×उव-यर् (उप+कृ) उपकार करवो.

उवयार पु. (उपकार) उपकार, आदर, सेवा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवरि, उवरिं, अवरि, अवरिं अ. (उपरि) उपर, ऊर्ध्व.

×उव-वज्ज् (उप+पद्य) उत्पन्न थवुं.

×उव-सम् (उप+शम्) शान्त थवुं.

उवस्सय पु. (उपाश्रय) उपाश्रय, जैन साधुओनुं निवासस्थान.

उवहि पु. स्त्री. (उपधि) माया, उपकरण, साधन.

उवंग पु. न. (उपाङ्ग) अंगना अर्थने विस्तार करनार सूत्र, सूत्र विशेष.

उवाय पु. (उपाय) उपाय.

×उव्वह् (उद्+वह्) वहन करवुं, पालन करवुं.

×उव्विव् (उद्+विज्) उद्वेग करवो, खिन्न थवुं.

×उवे (उप+इ) पासे जवुं.

उसह, उसभ पु. (ऋषभ) प्रथम जिनेश्वरनुं नाम.

उसह, वसह पु. (वृषभ) बळद.

ए.

×ए (इ) जवुं, पामवुं.

×ए (आ+इ) आववुं.

एक्कसरिअं अ. (दे) शीघ्र, जलदी, हमणां.

एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ, एगया अ. (एकदा) एक वखते.

एण्हि, एत्ताहे अ. (इदानीम्) हमणां, आ वखते.

एत्थ, अत्थ अ. (अत्र) अहिं.

एरावण पु. (ऐरावण) इन्द्रनो हाथी.

एरिस वि. (ईदृश) एवुं, एवी रीतनुं, आवा प्रकारनुं.

एव, एवं अ. (एवम्) आ प्रमाणे.

एव, णइ, चेअ, चिअ, च, च्च, च्चिअ, च्चेअ अ. (एव) अवधारण, नक्की.

×एस् (आ+इष्) शोधवुं, शुद्ध भिक्षानी तपास करवी.

ओ.

×ओंघ् (नि+द्रा) ऊंघवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओसढ } न. (औषध) औषध.
ओसह }

ओह पु. (ओघ) समुदाय.

ओहि } पु. स्त्री. (अवधि) मर्यादा, हद, त्रीजुं अवधि ज्ञान, (रूपी पदार्थोने जणावनारुं अतीन्द्रिय ज्ञान.)
अवहि }

क.

कअ } वि. (कृत) करेलुं.
कड }

कइ } पु. (कवि) कवि.
कवि }

कउरव पु. (कौरव) कुरुदेशमां उत्पन्न थयेल, कौरव.

कउहा स्त्री. (ककुभ्) दिशा.

कए } अ. (कृते) वास्ते, माटे, लीधे.
कएण }
कएणं }

कंठ पु. (सम) गरदन, गळुं.

×**कंप्** (सम) कंपवुं, ध्रूजवुं.

कज्ज न. (कार्य) काम, काज.

कट्ठ न. (काष्ठ) लाकडुं.

कट्ठ न. (कष्ट) दुःख, संकट, कष्ट.

कढ् (क्वथ्) उकाळवुं, तपाववुं.

कणिट्ठ वि. (कनिष्ठ) नानुं, पु. नानो भाई.

कण्ह } पु. (कृष्ण) वासुदेव.
किण्ह }

कत्तिअ पु. (कार्तिक) कार्तिक मास.

कओ } अ. (कुतः) शाथी ? कयांथी ?
कत्तो }
कुदो }
कदो }

कत्थ } अ. (कुत्र–क्व) क्यां.
कह }
कहि }
कहिं }

×**कप्प्** (क्लृप्) समर्थ थवुं, कल्पवुं, छेदवुं.

कन्नगा स्त्री. (कन्यका) कन्या.

कन्ना स्त्री. (कन्या) कन्या, स्त्री.

कमल न. (सम) कमळ.

कयग्घ वि. (कृतघ्न) निमकहराम.

कम्म पु. न. (कर्मन्) काम, कर्म, ज्ञानावरणीयादि अष्ट कर्म.

कयण्णु वि. (कृतज्ञ) कृतज्ञ, उपकारने जाणनार, निमकहलाल.

कयली } स्त्री. (कदली) केळ.
केली }

कया अ. (कदा) कयारे.

कयाइ } अ. (कदाचित्) कोई वखते.
कयाइं }
कयाई }

×**कर्** (कृ) करवुं.

करण न. (सम) इंद्रिय, करवुं, हेतु.

×**करिस्** } (कृष्) खेडवुं, काढवुं, खेंचवुं.
कड्ढ् }

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलत्त पु. न. (कलत्र) स्त्री, भार्या.

कला स्त्री. (सम) कळा.

कलि पु. (सम) कलियुग, कजीओ, कलह.

कल्ल न. (कल्य) काले, गई काले, आवती काले.

कल्लिं } अ. (कल्ये) आवती काले.
कल्ले }

कल्लाण न. (कल्याण) कल्याण, शुभ.

कवड पु. न. (कपट) कपट, ठगाइ.

कवल पु. (सम) कोळियो, ग्रास.

कवि पु. (कपि) वांदरो.

कव्व न. (काव्य) काव्य.

कासइ } अ. (कस्यचित्) कोईनुं.
कस्सइ }

×**कह्** (कथ्) कहेवुं.

कहं } अ. (कथम्) केम, शी रीते, केवी रीते.
कह }

कहा स्त्री. (कथा) कथा, वार्ता.

काउस्सग्ग पु. (कायोत्सर्ग) कायानो त्याग, काउसग्ग.

काम पु. (सम) इच्छा.

कामधेणु स्त्री. (कामधेनु) कामधेनु गाय,

कायव्व वि. (कर्तव्य) करवा लायक.

काया स्त्री. (सम) देह.

काल पु. (सम) काळ, समय, वखत.

किअंत वि. (कियत्) केटलुं.

किंनर पु. (सम) किंनर, देव-विशेष.

किंतु अ. (सम) परन्तु, पण.

किच्च न. (कृत्य) काम.

×**किण्** (क्री) खरीदवुं.

किण्ह वि. (कृष्ण) श्याम वर्णवाळुं, काळुं.

किर }
इर } अ. (किल) संभावना, निश्चय, सत्य,
हिर } तिरस्कार दर्शक.
किल }

×**किलम्म्** (क्लम्) खिन्न थवुं.

किवण वि. (कृपण) कंजुस, लोभी.

किवा स्त्री. (कृपा) दया.

कुंभआर } पु. (कुम्भकार) कुंभार.
कुंभार }

कुगइ (कुगति) अशुभ गति, (नरक अने तिर्यग्गति)

कुच्छि पु. स्त्री. (कुक्षि) उदर, पेट.

कुज्झ् (क्रुध्-क्रुध्य) क्रोध करवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुडुंबि वि. (कुटुम्बिन्) कुटुंबवाळो, गृहस्थ.

कुढार पु. (कुठार) कुहाडो.

×कुण् (कृ) करवुं.

×कुप्प् (कुप्–कुप्य) कोप करवो.

कुमार } पु. (कुमार) कुमार.
कुमर }

कुमारत्तण न. (कुमारत्व) कुमारपणुं.

कुरु पु. ब. (सम) देशनुं नाम छे.

×कुव्व् (कृ–कुर्व्) करवुं, वनाववुं.

कुल पु. न. (सम) कुल, वंश.

केणइ अ. (केनचित्) कोई वडे.

केरिसी स्त्री. (कीदृशी) केवी, केवा प्रकारनी.

केवल पु. (सम) केवलज्ञान, वि. असाधारण, असहाय.

केवलं अ. (सम) केवल, फक्त, मात्र.

केवलि पु. (केवलिन्) केवली, केवलज्ञानी, सर्वज्ञ.

केसरि पु. (केशरिन्) सिंह.

कोसा स्त्री. (कोशा) वेश्यानुं नाम.

कोसलिअ वि. (कौशलिक) अयोध्यामां उत्पन्न थयेल.

कोह पु. (क्रोध) क्रोध.

ख

×खंड् (खण्डय्) तोडवुं, कटका करवा.

खंड पु. न. (सम) कटको, पृथ्वीनो अमुक भाग.

खंडिय (खण्डिक) छात्र, विद्यार्थी.

खंति स्त्री. (क्षान्ति) क्षान्ति, क्षमा, उपशम, सहनशीलता.

खंध पु. (स्कन्ध) खभो.

खग्ग पु. (खड्ग) तरवार.

×खण् (खन्) खोदवुं.

खण पु. (क्षण) क्षण, काळविशेष.

×खम् (क्षम्) क्षमा करवी, माफी मागवी, सहन करवुं.

×खल् (स्खल्) रोकवुं, अटकाववुं, पडवुं, भूलवुं, टपकवुं.

खमा स्त्री. (क्षमा) क्षमा, क्रोधनो अभाव, शान्ति, धीरज, पृथ्वी.

खमासमण पु. (क्षमाश्रमण) साधु, क्षमाप्रधान मुनि.

खल वि. (सम) दुष्ट, अधम, दुर्जन.

खलिअ वि. (स्खलित) पडेलुं, भूलेलुं; न. अपराध, गुनो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खसर पु. न. (दे० कसर) रोग-विशेष, खरजवुं, खस.

×खा } (खाद्) खावुं, जमवुं.
खाय् }

×खिंस् (सम) निन्दा करवी, गर्हा करवी.

×खिज्ज् (खिद्) खेद करवो, अफसोस करवो.

×खिव् (क्षिप्) फेंकवुं.

खिप्पं अ. (क्षिप्रम्) शीघ्र, जलदीथी.

खीण } वि. (क्षीण) क्षय पामेलुं, कंगाल, जीर्ण, दुर्बल.
झीण }
छीण }

खीर } न. (क्षीर) दूध.
छीर }

खु } अ. (खलु) निश्चय, वितर्क, संभावना, विस्मय.
हु }

×खुभ् } (क्षुभ्) क्षोभ पामवो, गभरावुं.
खुब्भ् }

खेत्त न. (क्षेत्र) क्षेत्र, खेतर.

ग

गइ स्त्री. (गति) गति, आधार, देवादि चार गति.

×गंठ } (ग्रन्थ्) गुंथवुं, बनाववुं, रचवुं.
×गंथ् }

गंगा स्त्री. (सम) नदीनुं नाम.

×गच्छ् (गम्) गमन करवुं, जवुं.

×गण् (सम) गणवुं.

गंभीर वि. (सम) गंभीर, ऊंडुं.

×गरिह् (गर्ह्) निंदवुं.

गयण न. (गगन) आकाश.

गण पु. (सम) समुदाय.

गणहर पु. (गणधर) गणधर, गणी.

गयंद } पुं. (गजेन्द्र) उत्तम हाथी, ऐरावण.
गइंद }

×गल् (गल्) गळी जवुं, सडवुं, नाश पामवुं, सरवुं. समाप्त थवुं.

गणि पु. (गणिन्) गणधर, गणी.

गब्भ पु. (गर्भ) गर्भ.

गव्व पु. (गर्व) मान, अभिमान.

गव्विअ वि. (गर्वित) अभिमानी, गर्विष्ठ.

×गवेस् (गवेषय्) गवेषणा करवी, तपासवुं.

गय पु. (गज) हाथी.

गरुल पु. (गरुड) पक्षिराज, गरुड पक्षी.

×गह् (ग्रह्) ग्रहण करवुं.

गरिट्ठ वि. (गरिष्ठ) घणुं मोटुं.

गरिहा स्त्री. (गर्हा) निंदा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गहिअ } वि. (गृहीत) ग्रहण
गहीअ } कराएल.

×**गा** (गै). गावुं.

गाण न. (गान) गावुं, गीत.

गाम पु. (ग्राम) गाम.

×**गिज्झ्** (गृध्र्—गृध्य) आसक्त थवुं, लम्पट थवुं.

×**गिण्ह्** (ग्रह्) ग्रहण करवुं.

×**गिला** (ग्लै) ग्लानि पामवी.: खिन्न थवुं, करमावुं.

गिह न. (गृह) घर.

गीयत्थ–ट्ठ पु. (गीतार्थ) सामाचारी जाणनार साधु.

गुंजिअ (गुञ्जित) गणगणाट.

गुण पु. (सम) गुण.

गुणट्ठाण न. (गुणस्थान) गुणोनुं स्थान, मिथ्यादृष्टि आदि चौद गुणस्थान.

गुणि वि. (गुणिन्) गुणवाळो.

गुरु पु. (सम) गुरु, वडिल.

गुरुअ } वि. (गुरुक) मोटुं,
गरुअ } घणुं भारे.

गुरुया स्त्री. (गुरुता) मोटाई.

गेह न. (सम) घर.

गोयम पु. (गौतम) श्री महावीर स्वामिना आद्य गणधर.

गोविसाण न. (गोविषाण) गायनुं शिंगडुं.

गोवाल पु. (गोपाल) गोवाल.

घ

घड पु. (घट) घडो.

घण पु. (घन) मेघ, वादल.

घय न. (घृत) घी.

घर न. (गृह) घर.

×**घोट्ट्** (पा) पीवुं.

च

च
य } अ. (च) अने.
अ

चइत्त पु. (चैत्र) चैत्र मास.

चंपअ पु. (चम्पक) चंपानुं झाड.

चंद } पु. (चन्द्र) चन्द्र.
चंद्र }

चंदण न. (चन्दन) चन्दन.

×**चक्कम्** (भ्रम्) भमवुं, भटकवुं.

×**चक्ख्** (आ+स्वाद्) स्वाद करवो, चाखवुं.

चक्कवट्टि पु. (चक्रवर्तिन्) चक्रवर्ती, छ खंडनो अधिपति.

चक्खु पु. न. (चक्षु) आंख, नेत्र.

चक्कवाय पु. (चक्रवाक) पक्षि विशेष.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चच्चर न. (चत्वर) चौटुं, बजार.

×**चड्** }
आ-रोह् } (आ+रुह्) चढवुं, वधवुं, आरूढ थवुं.

चय् (त्यज्) त्याग करवो.

×**चय्** }
तर् } (शक्) शक्तिमान थवुं.

×**चर्** (सम) चालवुं, चरवुं.

चरम }
चरिम } वि. (सम) छेल्लुं.

चरण न. (सम) चारित्र.

चरित्त न. (चरित्र) चरित्र, आचरण.

चरित्त }
चारित्त } न. (चारित्र) संयम, व्रत, विरति, सद्वृत्ति.

×**चल्** }
चल्ल् } (सम) चालवुं.

चलण पु. (चरण) पाद, पग.

×**चव्** (च्यु) चववुं, पडवुं.

×**चव्** (कथ्) कहेवुं, बोलवुं.

चवल वि. (चपल) चंचल, अस्थिर.

चवेडा }
चमेडा } स्त्री. (चपेटा) थप्पड, तमाचो.

चाइ वि. (त्यागिन्) दानी.

चिआ स्त्री. (चिता) चिता, चेह.

×**चिइच्छ्** }
चिगिच्छ् } (चिकित्स्) चिकित्सा करवी, दवा करवी.

×**चिंत्** }
परि-चिंत् } (सम) चिन्तवन करवुं, विचार करवो.

चिंता स्त्री. (सम) चिन्ता, विचार.

चिंतण न. (चिन्तन) विचारवुं.

चिंध }
चिण्ह } न. (चिह्न) चिन्ह, लांछन, निशानी, डाघ.

×**चिट्ठ** (स्था+तिष्ठ) उभा रहेवुं.

×**चिण्** (चि) एकठुं करवुं.

चिरं अ. (सम) दीर्घकाल सुधी.

×**चुक्** }
भुल्ल् } (भ्रंश्) भ्रष्ट थवुं, चुकवुं, पडवुं, भूल करवी.

×**चोपड्** }
मक्ख् } (म्रक्ष्) चोपडवुं, स्निग्ध करवुं.

×**चोर** (सम) चोरी करवी.

चीवंदण न. (चैत्यवन्दन) चैत्यने नमस्कार.

चोज्ज न. (चोद्य) आश्चर्य, प्रश्न.

चेइअ }
चइत्त } न. (चैत्य) व्यन्तरायतन, जिनालय, प्रतिमा.

चोरिअ न. (चौर्य) चोरी.

चोर पु. (सम) चोर.

छ

×**छड्ड्** (मुच्) मूकवुं, छोडवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×छज्ज् (राज्) शोभवुं.

छण पु. (क्षण) उत्सव.

छप्पअ पु. (षट्पद) भ्रमर.

छाया स्त्री. (सम) छाया, कान्ति, प्रतिबिंब, आतपनो अभाव.

छाही स्त्री. (छाया) छाया, आतपनो, अभाव.

×छिंद् (सम) छेदवुं.

×छिव् } (स्पृश्) स्पर्श करवो.
छिह् }

छुहा स्त्री. (क्षुधा) क्षुधा, भुख.

छुहा स्त्री. (सुधा) अमृत.

छेयगंथ पु. (छेदग्रन्थ) निशीथादि छ सूत्र.

ज

जइ पु. (यति) यति साधु.

जइ (यदि) यदि, जो.

जइण वि. (जैन) जिन संबन्धि, जैन, जिनभक्त.

जइणधम्म पु. (जैनधर्म) जिनेश्वरनो धर्म.

जँउणा स्त्री. (यमुना) नदीनुं नाम.

जओ }
जत्तो } अ. (यतः) ज्यांथी, कारण के.
जदो }

जं अ. (यत्) कारण के, केमके.

जंकिंचि अ. (यत्किञ्चित्) जे कांई.

जंत न. (यन्त्र) यंत्र, जंत्र, संचो.

जंतु पु. (सम) प्राणी, जीव.

×जंप् (कथ्, जल्प्) कहेवुं, बोलवुं.

जंवूदीव } पु. (जम्बूद्वीप) द्वीपनुं नाम छे.
जंवुद्दीव }

जक्ख पु. (यक्ष) यक्ष.

जग्ग् } (जागृ) जागवुं.
जागर् }

जडिल पु. (जटिल) तापस, जटाधारी.

जण पु. (जन) जन, माणस.

×जण् (जनय्) उत्पन्न करवुं, पेदा करवुं.

जणद्दण पु. (जनार्दन) वासुदेवनुं नाम.

जणय पु. (जनक) पिता, बाप.

जणवय पु. (जनपद) देश, जनस्थान.

जत्ता स्त्री. (यात्रा) यात्रा, तीर्थयात्रा.

जम्म पु. (जन्मन्) जन्म.

×जम्म् (जन्) उत्पन्न थवुं.

×जय् (जि–जय्) जय पामवो, जितवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×जय् (यत्) यत्न करवो, महेनत करवी.

जय पु. (सम) जय, जित.

जय } न. (जगत्) जगत्,
जग } दुनीआ, संसार.

जया अ. (यदा) ज्यारे.

×जर् (जॄ) जीर्ण थवुं, घरडा थवुं.

जल न. (सम) पाणी, जळ.

जलण पु. (ज्वलन) अग्नि.

जलोयर न. (जलोदर) जलोदर.

×जव् (जप्) जपवुं.

जह } अ. (यथा) जे प्रमाणे,
जहा } जेम.

जहि }
जहिं }
जह } अ. (यत्र) ज्यां.
जत्थ }

जहसत्ति अ. (यथाशक्ति) शक्ति प्रमाणे.

जा } अ. (यावत्) ज्यां सुधी,
जाव } अवधि, परिमाण, निश्चय.

×जा (जन्) उत्पन्न थवुं.

×जा (या) जवुं, गमन करवुं.

×जाण् } (ज्ञा) जाणवुं.
मुण् }

जाम पु. (याम) प्रहर.

जामायर } पु. (जामातृ) जमाइ.
जामाउ }

×जाय् (याच्) प्रार्थना करवी, मागवुं.

जाय वि. (जात) उत्पन्न थयेल.

जायव पु. (यादव) यदुवंशीय.

जाया स्त्री. (सम) स्त्री.

×जाव् } (यापय्) वीतावबुं,
जव् } शरीरनुं पालन करवुं.

जावज्जीव } न. (यावज्जीव)
जाजीव } जीवन पर्यंत.

जारिस वि. (यादृश) जेवुं, जेवा प्रकारनुं.

जाल न. (सम) जाळ, पाश.

जिअलोग पु. (जीवलोक) दुनीआ.

जिइंदिय वि. (जितेंद्रिय) जितेन्द्रिय.

×जिण् (जि) जितवुं.

जिण पु. (जिन) जिन, रागद्वेष रहित.

जिणबिंब न. (जिनबिंब) जिन-प्रतिमा.

जिणंद } पु. (जिनेन्द्र) जिनेन्द्र,
जिणिंद } तीर्थंकर

जिणेसर } पु. (जिनेश्वर)
जिणीसर } जिनेश्वर भगवान्, तीर्थंकर.

जिब्भा } स्त्री. (जिह्वा) जीभ.
जीहा }

×जीव् (जीव्) जीववुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव पु. (सम) जीव.

जीवदया स्त्री. (सम) जीवदया.

जीवियंत पु. (जीवितान्त) प्राणनो नाश.

जीवलोग पु. (जीवलोक) दुनिया

जीवहिंसा स्त्री. (जीवहिंसा) जीवोनो वध.

जीवाइ पु. (जीवादि) जीव, अजीव वगेरे नव तत्त्व.

जीवाउ पु. न. (जीवातु) जीवाडनारुं औषध, अन्न, जीवन.

जीविअ न. (जीवित) जीवन जीवतर.

×जीह् (लज्ज्) लज्जा पामवी

×जुंज्, **जुज्ज्** (युञ्ज्–युज्य) जोडवुं. युक्त करवुं.

जुज्झ् (युध्–युध्य) लडवुं, युद्ध करवुं.

जुद्ध न. (युद्ध) युद्ध, लडाइ.

जुत्त वि. (युक्त) उचित, योग्य, जोडेलुं.

जेट्ठ, **जिट्ठ** वि. (ज्येष्ठ) मोटुं, वृद्ध

×जेम् (भुञ्ज्) जमवुं, भोजन करवुं.

जोग्ग वि. (योग्य) योग्य, लायक.

जोग पु. (योग) व्यापार, योग.

×जोय् (दृश्) देखवुं, जोवुं.

×जोय् (द्योत्) प्रकाशवुं.

जोगि पु. (योगिन्) जोगी.

जोण्हा स्त्री. (ज्योत्स्ना) चन्द्रनो प्रकाश

जोव्वण न. (यौवन) तारुण्य, जुवानी.

जोह पु. (योध) योद्धो.

झ

×झड् (शद्) सडवुं पडवुं, झापट मारवी.

झडत्ति, **झडित्ति**, **झत्ति** अ. (झटिति) जल्दी, उतावळथी.

×झर् (क्षर्) झरवु, टपकवु.

×झा (ध्यै) ध्यान करवुं.

झाण न. (ध्यान) ध्यान.

झुणि पु. (ध्वनि) शब्द.

ठ

×ठव् (स्थापय्) स्थापन करवुं.

×ठा (स्था) ऊभा रहेवुं.

ठिअ वि. (स्थित) ऊभुं रहेल.

×डर्, **तस्** (त्रस्) त्रास पामवो, डरवुं.

×डंस्, **डस्** (दश्) डसवु, करडवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×डह् (दह्) दाझवुं, बळवुं, बाळवुं.

×डे (डी) उडवुं.

×ढक्क्, छाय् (छादय्) ढांकवुं, आच्छादन करवुं.

ढिक्क् (गर्ज्) बळदनुं गाजवुं.

ण

अण, णाइं अ. (न) नकार, अभाव, नही.

णउण, णउणो, णउणा, णउणाइ अ. (न पुनः) फरी नही.

×णज्ज् (ज्ञा) जाणवुं.

णत्थि अ. (नास्ति) नथी.

णमो अ. (नमस्) नमस्कार.

णवर, णवरं, णवरि अ. (दे०) केवल, फक्त, अनन्तर.

णाम अ. (नाम) संभावना, आमन्त्रण, अनुज्ञा, अनुमति.

णायव्व वि. (ज्ञातव्य) जाणवा योग्य.

णायार, णाउ वि. (ज्ञातृ) जाणनार.

णिच्चं अ. (नित्यम्) हंमेशां, सदा.

णिच्चसो अ. (नित्यशस्) सदा, निरन्तर.

×णी, णीण् (गम्) जवुं, गमन करवु.

णु अ. (नु) वितर्क, प्रश्न, सशय.

णूण, णूण अ. (नूनम्) निश्चय, तर्क, प्रयोजन, प्रश्न.

×णे (नी) लइ जवुं.

णेय वि. (ज्ञेय) जाणवा लायक.

णो अ. (नो) निषेध, अभाव, नहीं.

×ण्हव् (ह्नु) संताडवुं.

×ण्हा (स्ना) स्नान करवुं.

त

तए, तओ, तत्तो, तदो, तो अ. (ततः) तेथी, ते कारणथी, ते वार पछी.

×तच्छ्, छोल्ल् (तक्ष्) छोलवुं, कापवुं.

×तण्, तड्ड् (तन्) पाथरवुं, विस्तार करवो.

तणु स्त्री. (तनु) शरीर.

तत्त न. (तत्त्व) तत्त्व, रहस्य, परमार्थ.

तया, तइआ, ता, तो अ. (तदा) त्यारे, ते वखते.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×तर् (तॄ) तरवुं.
तरु पु. (सम) झाड.
तलाय न. (तडाग) तलाव.
×तव् (तप्) तपवुं.
तव पु. (तपस्) तप.
तवस्सि, तवंसि पु. (तपस्विन्) तपस्वी.
तह, तहा अ. (तथा) तेम ज, ते प्रमाणे.
तहि, तहिं, तह, तत्थ अ. (तत्र) त्यां, तेमां.
ता, ताव अ. (तावत्) त्यां, सुधी, हद, अवधि.
ता अ. (तर्हि) तो, ते वखते.
×ताड्, ताल् (ताडय्) ताडना करवी, मारवुं.
तारग वि. (तारक) तारनार, न. तारो.
तारा स्त्री. (सम) नक्षत्र, तारा.
ताव पु. (ताप) ताप, संताप, पीडा.
तावस पु. (तापस) तापस, योगी.
तारिस वि. (तादृश) तेवुं, तेवा प्रकारनुं.
तिअस पु. (त्रिदश) देव.
तिक्ख, तिण्ह वि. (तीक्ष्ण) तीखुं.
तिहुअण, तिहुवण न. (त्रिभुवन) त्रण लोक.
तिण्हा स्त्री. (तृष्णा) स्पृहा, वांछा, पिपासा.
तित्थ, तूह न. (तीर्थ) तीर्थ, पवित्र स्थान.
तित्थयर पु. (तीर्थंकर) तीर्थंकर.
तिमिर न. (सम) आंखनो रोग, अन्धकार, अज्ञान.
तिलअ-ग पु. (तिलक) तिलक.
तिव्व वि. (तीव्र) तीक्ष्ण, गरम, भयंकर.
तिविह वि. (त्रिविध) त्रण प्रकारे.
तिहि पु. स्त्री. (तिथि) तिथि, दिवस.
तु, उ अ. (तु) समुच्चय, अवधारण, निश्चय, पादपूरण.
×तुड्, तुट्ट् (त्रुट्-तुड्) त्रूटवु, खंडित थवुं.
×तुवर् (त्वर्) त्वरा करवी, उतावळा थवुं.
×तूस्, तुस्स् (तुष्-तुष्य) संतोष पामवो, खुशी थवुं.
तेयंसि पु. (तेजस्विन्) तेजस्वी.

थ

×थक्क् (स्था) ऊभा रहेवुं.
थिअ वि. (स्थित) ऊभुं रहेल, रहेलुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थिर वि. (स्थिर) निश्चळ.
थु अ. (दे) तिरस्कार.
थुइ स्त्री. (स्तुति) थोय, स्तुति स्तव.
×थुण् (स्तु) स्तुति करवी.
थूण } पु. (स्तेन) चोर.
थेण }
थेर वि. (स्थविर) वृद्ध, वृद्ध जन साधु.
थोक्क } वि. (स्तोक) अल्प, थोडुं.
थोव }
थेव }
थोत्त न. (स्तोत्र) स्तोत्र.

द

दइव-व्व } न. (दैव) दैव, भाग्य, अदृष्ट.
देव-व्व }
×दंड् (दण्डय्) शिक्षा करवी.
×दंस् (दंश्) डसवुं, करडवुं.
दंसण न. (दर्शन) चक्षु, जोवुं, सम्यग्दर्शन, मत, सामान्य ज्ञान, धर्मशास्त्र.
×दक्ख् } (दृश्) देखवुं, जोवुं.
दच्छ् }
दढ वि. (दृढ) मजबूत, निश्चल.
दत्त } वि. (दत्त) आपेलुं.
दिण्ण }
दप्प पु. (दर्प) अभिमान.
×दम् (सम) दमवुं, निग्रह करवो.
दया स्त्री. (सम) अनुकम्पा, करुणा.
दयालु वि. (सम) दयावान.
×दरिस् (दृश्-दर्श्) देखवुं.
दव्व } न. (द्रव्य) द्रव्य, सम्पत्ति.
दविअ }
×दा } (दा) दान आपवुं, देवुं.
दे }
दाण न. (दान) दान.
दाणव पु. (दानव) असुर, दैत्य.
दार पु. न. (सम) स्त्री, महिला.
दाव् } (दर्शय) देखाडवुं, बतावबुं.
दंस् }
दक्खव् }
दरिस् }
दाढा (दंष्ट्रा) दाढा.
दाहिणिल्ल } वि. (दाक्षिणात्य) दक्षिण दिशानुं.
दक्खिणिल्ल }
दाहिणा } स्त्री. (दक्षिणा) दक्षिण दिशा.
दक्खिणा }
दिक्खा (दीक्षा) दीक्षा, संयम, (पापव्यापारना त्यागरूप).
दिग्घ } वि. (दीर्घ) दीर्घ, लांबुं.
दीह }
दीहर }

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिट्ठि स्त्री. (दृष्टि) दर्शन, आंख, नजर.

×**दिप्प्** (दीप्) दीपवुं, प्रकाशवुं.

दिवस } पु. न. (दिवस) दिन, दिवस.
दिवह }

दिवा } अ. (दिवा) दिवसे.
दिआ }

दिसा स्त्री. (दिश्–शा) पूर्वादि दिशा.

दीण वि. (दीन) गरीब.

दीणत्तण न. (दीनत्व) गरीबाई.

दीव पु. (दीप) दीवो.

दुआर }
दार } न. (द्वार) दरवाजो.
वार }

दुक्कर वि. (दुष्कर) दुःखे करीने करी शकाय ते, कष्टसाध्य.

दुक्ख } न. (दुःख) दुःख.
दुह }

×**दुगुच्छ्** }
दुगुंछ् } (जुगुप्स्) घृणा करवी, निंदा करवी.
जुगुच्छ् }

दुज्जण पु. (दुर्जन) दुर्जन, दुष्ट पुरुष.

दुज्जोहण पु. (दुर्योधन) नाम छे.

दुद्ध न. (दुग्ध) दूध.

×**दूम्** (दू–दावय्) दुःख आंपवुं, संताप उपजाववो.

दुरिय न. (दुरित) पाप.

×**दूस्** } (दुष्–दुष्य) दोषित करवुं.
दुस्स् }

×**दुह्** } (दुह्) दोहवुं.
दोह् }

दुहि } वि. (दुःखिन्) दुःखी.
दुक्खि }

दुहिअ } वि. (दुःखित) पीडित, दुःखी.
दुक्खिअ }

दुहिआ }
धूआ } स्त्री. (दुहितृ) दीकरी.
धीआ }

दूर न. (सम) दूर.

×**देक्ख्** (दृश्) देखवुं, जोवुं.

देव पु. (सम) देव.

देविंद पु. (देवेन्द्र) देवोनो इन्द्र.

देवालय पु. न. (सम) देवनुं मंदिर.

देवी स्त्री. (सम) देवी, उत्तम स्त्री.

देसअ वि. (देशक) देखाडनार.

देसणा स्त्री. (देशना) देशना, उपदेश.

देह पु. न. (सम) शरीर.

देसविरइ स्त्री. (देशविरति) देशथी पापव्यापारनो त्याग, देश-विरति.

दोरिआ स्त्री. (दवरिका) रस्सी, दोरी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोवई स्त्री. (द्रौपदी) पांडवोनी भार्या.

दोस पु. (दोष) दोष, दुर्गुण, अपराध, पाप.

द्रह पु. (ह्रद) द्रह, ह्रद, मोटुं सरोवर.

ध

धअ, झअ पु. (ध्वज) ध्वज, धजा.

धण न. (धन) धन, द्रव्य.

धणवंत वि. (धनवान्) धनवाळो.

धन्न न. (धान्य) अनाज, धान्य.

धन्न वि. (धन्य) प्रशंसा योग्य.

धम्म पु. (धर्म) धर्म, फरज.

धम्मिट्ठ वि. (धर्मिष्ठ) अतिशय धार्मिक.

×धर् (धृ) धारण करवुं,

×धरिस् (धृष्) सामा थवुं, हिंमत करवी, होड बकवी.

धवल वि. (सम) सफेद, श्वेत.

×धा, धाअ्, धाव् (धाव्) दोडवुं.

धि, धी अ. (धिक्) निंदा, धिक्कार.

धिइ स्त्री. (धृति) धीरज, धैर्य.

धिद्धि, धिद्धी अ. (धिक्-धिक्) धिक्-धिक्, निंदा.

×धुण्, धुव् (धू) ध्रुजाववु, हलाववु.

धुत्त वि. (धूर्त) ठग, छेतरनार.

धेणु स्त्री. (धेनु) गाय.

न

नई स्त्री. (नदी) नदी.

नंदिसुत्त न. (नन्दिसूत्र) आ नामनुं सूत्र छे.

नक्क पु. (दे) नाक, नासिका.

नक्खत्त न. (नक्षत्र) नक्षत्र, तारो.

नग्ग वि. (नग्न) नग्न, वस्त्र-रहित.

नच्च् (नृत्-नृत्य) नाचवुं.

नच्च न. (नृत्य) नाच.

× नज्झ् (नह्य) बांधवुं.

×नट्ट् (नट्) नाचवुं.

नट्टअ पु. (नर्त्तक) नट.

×नम्, नव् (नम्) नमवुं, नमस्कार करवो.

×नमंस् (नमस्य) नमस्कार, करवो.

नमोक्कार, नमुक्कार पु. (नमस्कार) नमन, प्रणाम.

नय पु. (सम) नय, नीति.

नयर न. (नगर) नगर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरय } पु. (नरक) नारकी,
निरय } नरकस्थान.

नरिंद पु. (नरेन्द्र) राजा.

×**नस्स्** } (नश्–नश्य) नाश
नास् } पामवुं.

नहयल पु. न. (नभस्तल) आकाशतळ.

नाण न. (ज्ञान) ज्ञान.

नाणि वि. (ज्ञानिन्) ज्ञानवाळो.

नाम न. (नामन्) नाम, संज्ञा.

नाय पु. (न्याय) न्याय, नीति.

नायउत्त पु. (ज्ञातपुत्र) श्रीमहावीरस्वामीनुं नाम.

नारी स्त्री. (सम) स्त्री.

नावा स्त्री. (नौ) नौका, होडी.

×**नासव** } (नाशय्) नाश करवो.
पलाव }
नास् } भगाडवुं.

×**निअ** } (दृश्) जोवुं.
निअच्छ् }

निअम पु. (नियम) निश्चय, लीधेली प्रतिज्ञा.

×**निंद्** (सम) निंदवुं.

निंदा स्त्री. (सम) निंदा.

निक्कारण वि. (निष्कारण) कारण रहित, अहेतुक, कारणविना.

×**निगिण्ह्** } (नि+ग्रह्) पकडवुं.
निग्गह् } निग्रह करवो, शिक्षा करवी, अटकाववुं.

निगम पु. (सम) व्यापारवाळुं स्थान, व्यापारीओनो समुदाय.

निग्गुण वि. (निर्गुण) गुणरहित.

निच्च वि. (नित्य) अविनश्वर, शाश्वत.

निच्चल वि. (निश्चळ) स्थिर, अचल, द्रढ.

×**निज्जर्** (निर्+जॄ) क्षय करवो, नाश करवो, कर्मनो क्षय करवो.

निज्जरा स्त्री. (निर्जरा) कर्मनो क्षय

×**निज्झर्** (क्षि) क्षय पामवुं.

निट्ठुर वि. (निष्ठुर) निष्ठुर, निर्दय पुरुष.

×**निण्हव्** (नि+ह्नु) संताडवुं, छुपाववुं, अपलाप करवो.

निद्दय वि. (निर्दय) दयारहित.

निद्दा स्त्री (निद्रा) निद्रा.

×**निप्पज्ज्** } (निष्पद्य) निष्पन्न
निप्फज्ज् } थवुं, सिद्ध थवुं, नीपजवुं.

निप्फल वि. (निष्फल) फलरहित, निरर्थक.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निव्वंध पु. (निर्वंध) आग्रह.
निवद्ध वि. (सम) बंधायेल.
×निम्माण् } (निर्+मा) बनाववुं,
निम्मव् } रचवु.
निमेस पु. (निमेष) पलकारो, मटकुं.
निय वि. (निज) पोतानु'.
नियाण न. (निदान) नियाणुं, कारण, हेतु.
निव पु. (नृप) राजा.
निवइ पु. (नृपति) राजा.
×निवड् (नि+पत्) नीचे पडवु'.
×निवट्ट् } (नि+वर्त्) पाछा
निअट्ट् } फरवु'.
निवास पु. (सम) रहेठाण, आश्रय.
निव्वाण न. (निर्वाण) मोक्ष.
×निव्विज्ज् (निर्+विद्) निर्वेद पामवो, विरक्त थवुं.
निसा स्त्री. (निशा) रात्री.
निहस पु. (निकष) कसोटी.
×नीसर् }
निस्सर् }
निहर् } (निस्+सर्) नीकळवु'.
नीहर् }
×नीसस् } (निःश्वस्) निश्वास-
निस्सस् }
झंख् } लेवो, नीसासो लेवो.

नीसंद पु. (निःस्यन्द) रसनु' झरणुं, गळवु' ते
×ने (नी) लइ जवुं, दोरवुं.
नेउर } न. (नूपुर) पगनुं
निउर } आभरण, नूपुर.
नेत्त पु. न. (नेत्र), नेत्र आंख.
नेमित्तिअ वि. (नैमित्तिक) निमत्त-शास्त्र जाणनार.
नेह पु. (स्नेह) स्नेह, राग.
निहि त्रि. (निधि) खजानो, भंडार, चक्रवर्ती राजानी संपत्ति विशेष.

प.

पइ अ. (प्रति) व्याप्ति, आभिमुख्य, विरोध, सामीप्य.
पइट्ठा स्त्री. (प्रतिष्ठा) प्रतिष्ठा, कीर्ति, आदर.
पइण्णा स्त्री. (प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा.
पइदिण न. (प्रतिदिन) दररोज, सदा.
पइन्न-ग पु. न. (प्रकीर्ण-क) सूत्र विशेष, वि. विखरेलुं.
पउण वि. (प्रगुण) होंशीयार.
:×पउस्स् } (प्र+द्विष्) द्वेष करवो.
पउस् }
पओग पु. (प्रयोग) प्रयोग, जीव-व्यापार.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंकअ न. (पङ्कज) कमल.

पंजर न. (सम) पांजरुं.

पंडव पु. (पाण्डव) पांडु राजाना पुत्रो, पांडवो.

पंडिअ पु. (पण्डित) पंडित.

पक्क } वि. (पक्व) पाकेलुं.
पिक्क }

पक्ख पु. (पक्ष, पखवाडियुं, अर्धो मास.

पक्खि पु. (पक्षिन्) पक्षी.

पच्चक्ख वि. (प्रत्यक्ष) साक्षात्, देखीतुं, आंख आगळनुं.

पच्चक्खाण न. (प्रत्याख्यान) त्याग करवानी प्रतिज्ञा, नियम.

पच्चूस-ह पु. (प्रत्यूष) प्रभात, काल.

पच्चोणी स्त्री. (दे) सन्मुख आववुं.

पच्छ वि. (पथ्य) हितकारी वस्तु.

पच्छा अ. (पश्चात्) पछी, अनन्तर, पाछळनुं.

पच्छायाव पु. (पश्चात्ताप) अनुताप, पस्तावो.

पज्जवसाण न. (पर्यवसान) अन्त, अवसान, छेडो.

पज्जाय पु. (पर्याय) पर्याय, रूपांतर.

पज्जुण्ण पु. (प्रद्युम्न) कामदेव, विष्णुनो पुत्र.

×**पज्जुवास्** (पर्युपास्) सेवाभक्ति.

×**पट्ठव** } (प्र+स्थापय्) मोकलवुं,
पट्ठाव } प्रस्थान करवुं, प्रारंभ करवो.

×**पड्** (पत्) पडवुं, पतित थवुं.

×**पडिक्कम्** (प्रति+क्रम्) निवृत्त थवुं, पाछा फरवुं.

×**पडिक्कमण** न. (प्रतिक्रमण) प्रतिक्रमण, आवश्यक क्रिया, पापथी पाछा फरवुं.

पडिमा स्त्री. (प्रतिमा) मूर्ति, प्रतिबिंब.

पडियार पु. (प्रतिकार) इलाज, बदलो.

पडिवक्ख पु. (प्रतिपक्ष) शत्रु.

×**पडिवज्ज्** (प्रति+पद्य) स्वीकार करवो, अंगीकार करवो.

पडिवया } स्त्री. (प्रतिपद्)
पाडिवया } एकम, पडवो.

×**पढ्** (पठ) भणवुं.

पढण न. (पठन) भणवुं.

पढम वि. (प्रथम) प्रथम, आद्य.

पणाम पु. (प्रणाम) नमस्कार.

पण्ण न. (पर्ण) पांदडुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×पण्णव् } (प्र+ज्ञापय्) प्ररूपणा
पन्नव् } करवी, उपदेश आपवो.

पण्णा स्त्री. (प्रज्ञा) बुद्धि.

पण्ह पु. (प्रश्न) प्रश्न, सवाल.

×पत्ति } (प्रति+इ) विश्वास
पत्तिअ } करवो, आश्रय करवो.

×पत्तिआव (प्रति+आयय्) विश्वास करावयो, प्रतीति करावववी.

×पत्थ् } (प्र+अर्थय्) प्रार्थना
पच्छ् } करवी.

पत्थिअ वि. (प्रार्थित) याचना करायेल.

पभाय } पु. न. (प्रभात)
पहाय } प्रभात.

×प–भाव् (प्र+भावय्) प्रभावना करवी.

×प–मज्ज् (प्र+मृज) प्रमार्जना करवी, साफ करवुं.

×पमज्ज् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो, भूलवुं.

×प–माय् (प्र+मद्–माद्) प्रमाद करवो, भूलवुं.

पमाय पु. (प्रमाद) प्रमाद, भूल, चूक.

×पम्हस् (वि+स्मृ) भूलवुं, विस्मरण थवुं.

×पय् (पच्) पकाववुं, रांधवुं

पय पु. न. (पद) पद, शब्दसमूह, विभक्ति अन्तवाळुं पद.

पयंग पु. (पतङ्ग) पतंगीयुं.

पयत्थ पु (पदार्थ) पदार्थ, शब्दनो अर्थ.

×पया (प्र+जनय्) जन्म आपवो, उत्पन्न करवुं.

पया स्त्री. (प्रजा) प्रजा, संतान.

×प–यास् (प्रका+श्) प्रकाशवुं.

पयास पु (प्रकाश) प्रकाश.

पयासग वि. (प्रकाशक) प्रकाश करनार.

पर वि. (सम) अन्य, श्रेष्ठ.

परंपरा स्त्री. (सम) परम्परा, अनुक्रम, हार.

परक्कम पु. न. (पराक्रम बल, शक्ति, सामर्थ्य.

परदार पु. न. (सम) पर स्त्री.

परदारा स्त्री. (सम) पर स्त्री.

परप्पर } वि. (परस्पर)
परुप्पर } एकबीजाने, अन्यो-
परोप्पर } अन्य.

परमपय न. (परमपद) मोक्ष, उत्कृष्ट पद.

पराभव पु. (सम) पराभव, हारी जवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×**परिआल** (वेष्टय्) लपेटवुं, वींटवुं.

×**परिक्ख्** } (परि+ईक्ष्) परीक्षा
परिच्छ् } करवी, तपासवुं.

परिक्खण न. (परीक्षण) परीक्षा करवी.

×**परिचय्** } (परि+त्यज्) परि-
परिच्चय् } त्याग करवो.

परिच्चत्त } वि. (परित्यक्त)
परिचत्त } त्याग करायेल

परिणय वि. (परिणत) परिपक्व.

परिणीय वि. (परिणीत) परणेल.

×**परि-तप्प्** (परि+तप्य) पश्चात्ताप करवो, गरम थवुं.

×**परिदेव्** (सम) विलाप करवो.

×**परि-निव्वा** (परि+निर्+वा) शांत थवुं, सर्व कर्मरहित थवुं.

×**परिव्वय्** (परि+व्रज्) दीक्षा लेवी.

परिसर पु. (सम) समीप.

परिसा (पर्षद्-परिषद्) सभा.

×**परि-हा** (परि+धा) पहेरवुं, धारण करवुं.

परिहा स्त्री. (परिखा) खाइ.

परोवयार पु. (परोपकार) परनो उपकार.

×**पलाव्** (नाशय्) नसाडवुं, भगाडवुं.

×**पलोट्ट्** (प्र+लुट्) लोटवुं, आळोटवुं.

×**पलोट्ट्** } (पर्यस्) फेंकवुं, पल-
पलट्ट् } टवुं, विपरीत
पल्हत्थ् } थवुं.

प-वट्ट् } (प्र+वर्त्) प्रवर्तवुं,
प-यट्ट् } प्रवृत्ति करवी.

पवण पु. (पवन) पवन, वायु.

पवयण न. (प्रवचन) आगम, सिद्धांत.

पविट्ठ वि. (प्रविष्ट) प्रवेश करेल.

पवित्तया स्त्री. (पवित्रता) पवित्रपणुं.

पवासि-सु पु. (प्रवासि) मुसाफर.

×**पव्वय्** (प्र+व्रज्) प्रवज्या लेवी. दीक्षा लेवी.

×**प-वज्ज्** (प्र+पद्य) स्वीकार करवो.

पव्वज्जा स्त्री. (प्रवज्या) दीक्षा.

पव्वय (पर्वत) पर्वत.

पसत्त पु. (प्रसक्त) प्रसक्त, आसक्त.

×**प-संस्** (प्र+शंस्) प्रशंसा करवी.

×**प-सम्** पु. (प्र+शम्) शान्ति करवी.

प-सव् (प्र+सू) प्रसव करवो, जन्म आपवो, उत्पन्न करवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पसाय पु. (प्रसाद) महेरबानी, दया, कृपा.

पसु पु. (पशु) पशु.

पहार पु. (प्रहार) प्रहार.

पहाव पु. (प्रभाव) प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य.

पहावग वि. (प्रभावक) प्रभावक, प्रभावना करनार, उन्नति करनार.

पहिअ पु. (पथिक) मुसाफर.

पहु पु. (प्रभु) प्रभु, स्वामी.

×**पहुप्प्** (प्र+भू) समर्थ थवुं.

×**पा** (पा) पीवुं, पान करवुं.

पाइअ } **पागय** } वि. (प्राकृत) प्राकृत-भाषा, स्वाभाविक, नीच, साधारण.

×**पाउब्भव्** (प्रादुस्+भू) प्रकट थवुं.

पाउस पु. (प्रावृष्)वर्षाऋतु, चोमासुं.

पाण पु. न. (प्राण) इंद्रिय विगेरे दश प्राणो. (पांच इन्द्रिय, त्रणबल, श्वासोच्छ्वास, आयुः)

पाणाइवाय पु. (प्राणातिपात) जीव हिंसा, प्राणोनो नाश.

पाणि पु. (प्राणिन्) जीव, प्राणी.

पाणि पु. (सम) हाथ.

पाणिय न. (पानीय) जल.

पाणिवह पुं. (प्राणिवध) जीव वध.

पाय पु. (पाद) पग, पाद, श्लोकनो चोथो भाग.

पाय पु. (पात) पडवुं.

पायड } **पयड** } वि. (प्रकट) प्रकट, खुल्लुं.

पायसो अ. (प्रायशस्) प्रायः, घणुं करीने.

पारद्धि पु. (पापर्द्धि) पारधी, शिकारी, स्त्री. मृगया.

×**पारं-गच्छ्** (पारङ्गच्छ्) पार पामवुं.

पारेवअ } **पारावअ** } पु. (पारापत) पारेवो.

×**पाल्** (पालय्) पालन करवुं.

पालग वि. (पालक) पालनार.

×**पाव्** (प्र+आप्) पामवुं, मेळववुं.

पाव वि. (पाप) नीच, पापी, न. पापकर्म.

×**पास्** } **पस्स्** } (दृश्+पश्य) देखवुं, जोवुं.

पास न. (पार्श्व) समीप, पासे.

पाहुड न. (प्राभृत) उपहार, भेट.

पिच्छी } **पुहुवी** } स्त्री. (पृथ्वी) पृथ्वी, भूमि.

पिय वि. (प्रिय) प्रिय, वहालुं. पु. पति, धणी, स्वामी.

पिव् } **पिज्ज्** } (पा—पिब्) पीवुं

पिवासा स्त्री. (पिपासा) तरस, तृषा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीइ स्त्री. (प्रीति) प्रेम.

×पीड् } पील } (पीड्) पीडवुं, दुःख देवुं, कनडवुं.

पीडा } पीला } स्त्री. (सम) पीडा, दुःख.

×पीण् (प्रीण्) प्रेम उपजाववो, खुश करवुं.

पुच्छ् (पृच्छ्) पुछवुं.

×पूज् } पूय् } (पूजय्) पजा करवी.

पुज्ज वि. (पूज्य) पजवा योग्य.

पुढवी } पुहवी } स्त्री. (पृथिवी) पृथ्वी, भूमि.

×पुण् (पू) पवित्र करवुं.

पण } पुणा } पुणाइ } पुणो } उण } अ. (पुनर्) पाछुं, फरीथी.

पुणरुत्तं अ. (दे) वारंवार.

पुण्ण न. (पुण्य) पुण्य, धर्म, शुभकर्म, वि. पवित्र.

पुण्णिमा स्त्री. (पूर्णिमा) पूनम.

पुत्त पु. (पुत्र) पुत्र.

पुत्थय } पोत्थय } पु. न. (पुस्तक) पुस्तक.

पुप्फ न. (पुष्प) फूल.

×पुर् (पूरय्) पूरण करवुं, भरवुं.

पुरओ अ. (पुरतस्) आगळ.

पुरं अ. (पुरस्) पहेलां, समक्ष.

पुरिस पु. (पुरुष) पुरुष.

×पुलोअ } पुलअ } (दृश्) जोवुं.

पुव्व } पुरिम } वि. (पूर्व) पहेलुं, अगाउनुं, आद्य.

पुव्व वि. (पूर्व) ७० लाख, ५६ हजारक्रोड वर्षनुं एक पूर्व, काळ विशेष.

पुव्वा स्त्री. (पूर्वा) पूर्वदिशा.

पुव्वण्ह पु. (पुर्वाह्ण) दिवसनो– पूर्व भाग.

पूरअ वि. (पूरक) पूरण करनार.

×पूस् } पुस्स् } (पुष्+पुष्य) पोषण करवुं.

×पेक्ख् } पिक्ख् } पेच्छ् } (प्र+ईक्ष्) जोवुं.

पोम्म } पउम } न. (पद्म) कमल.

पोरुस } पोरिस } पउरिस } न. (पौरुष) पुरुषार्थ, पुरुषत्व.

फ

फरुस वि. (परुष) कठिन, कर्कश.

फल न. (सम) फळ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×फाड्
फाल् } (पाटय्) फाडवुं, चीरवुं.

×फास्
फरिस् } (स्पृश्) स्पर्श करवो.

फास पु. (स्पर्श) स्पर्श.

×फुट्ट्
फुड् } (स्फुट्-भ्रंश्) विकसवुं, फुटवुं, भांगवुं, खीलवुं.

फुल्ल न. (सम) पुष्प, फूल.

×फेड् (स्फेटय्) विनाश करवो, दूर करवु.

×बंध् (सम) बन्धन करवुं, बांधवु.

बंधण न. (बन्धन) बेडी, अटकाव, बांधवुं.

बंधव पु. (बान्धव) बंधु, मित्र.

बंधु पु. (सम) बांधव, मित्र.

बम्भयारि वि. (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचय पालनार.

बंभचेर
बम्हचरिअ
बम्हचेर } न. (ब्रह्मचय) ब्रह्मचर्य.

बल न. (सम) शक्ति, सामर्थ्य.

×बव्
बुव् } (ब्रू) बोलवुं.

बलिट्ठ वि. (बलिष्ट) सर्वथी बलवान्.

बहि-हिं
बहिया
बाहिं
बाहिर } अ. (बहिस्) बहार.

बहिर वि. (बधिर) बहेरुं.

बहु-अ
बहुग } वि. (बहु-क) घणुं, वधारे.

बहुसो अ. (बहुशस्) अनेक वार.

बाल पु. (सम) बालक.

×बाह् (बाध्) पीडवुं, कनडवुं.

बाला स्त्री. (सम) कुमारी, छोकरी, जुवान स्त्री.

बाहा स्त्री. (बाहु) हाथ, भुजा.

बाहिर
बज्झ } वि. (बाह्य) बहारनुं.

बाहु पु. (सम) हाथ, भुजा.

बिंब न. (सम) बिंब, प्रतिमा.

×बीह् (भी) बीवुं, भय पामवुं.

×बुक्क् (गर्ज्) गजना करवी, गाजवुं.

×बुज्झ (बुध्+बुध्य) बोध थवो, ज्ञान मेळववुं, जागवुं, समजवुं.

×बुड्ड् (मस्ज्) डुबी जवुं.

बुद्धि स्त्री. (सम) बुद्धि.

बुह पु. (बुध) पंडित.

×बुहुक्ख् (बुभुक्ष्) खावानी इच्छा करवी.

बोल्ल् (कथ्) बोलवुं.

×बोह् (बोध्) बोध थवो, जाणवुं.

बोहि स्त्री. (बोधि) शुद्ध धर्मनी प्राप्ति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ

×**भंज्** (सम) भांगवुं, तोडवुं.

भंत वि. (भगवत्–भदन्त–भ्राजत्–भवान्त–भयान्त) भगवान् ऐश्वर्यवान्, कल्याणकारक, देदीप्यमान, संसार अने सकल भयोनो अंत करनार.

भगवई स्त्री. (भगवती) पांचमुं–अंग, भगवतीसूत्र.

भगवंत / **भयवंत** पु. (भगवान्) भगवान्, पूज्य.

×**भज्ज्** (भ्रस्ज्) भुंजवुं, बाळवुं.

भज्जा स्त्री. (भार्या) स्त्री.

भट्ठ वि. (भ्रष्ट) भ्रष्ट, पतित.

भड पु. (भट) लडवैयो.

×**भण्** (भण्) भणवु.

भत्तार / **भत्तु** पु. (भर्तृ) स्वामी, पति, भर्तार. वि. पोषक.

भत्ति स्त्री. (भक्ति) भक्ति, सेवा, चाकरी.

भद्द / **भद्र** वि. (भद्र) कल्याण करनार, सुखी, वहालुं, मायाळु. न. कल्याण, मंगल.

×**भम्** / **भम्म्** (भ्रम्) भमवुं, भटकवुं.

भमंत वि. (भ्रमत्) भमतुं.

भय न. (सम) बीक, धास्ती.

भरह पु. (भरत) श्रीऋषभनाथना ज्येष्ठ पुत्र, न. भारतक्षेत्र.

×**भव्** (भू) होवुं, थवुं.

भव पु. (सम) भव, संसार.

भविअ वि. (भविक–भव्य) भव्य जीव, मोक्षार्थी जीव, संसारी.

भव्व / **भविअ** वि. (भव्य) भव्य जीव, योग्य, सुन्दर.

×**भस्** / **बुक्क्** (भष्) भसवुं, श्वाननुं भुंकवुं.

भसल / **भमर** पु. (भ्रमर) भमर.

भस्स / **भप्प** पु. (भस्मन्) राख.

भस्संतया स्त्री. (भस्मान्तता) राख थई जवुं, बळीने भस्म थवुं.

×**भा** (भा) दीपवुं, प्रकाशवुं.

भाणु पु. (भानु) सूर्य.

भायर / **भाउ** पु. (भ्रातृ) भाई.

भार पु. (सम) भार, बोजो.

भारह न. (भारत) भरतक्षेत्र.

भाल न. (सम) ललाट.

भाव पु. (सम) भाव, भावना, अभिप्राय, वस्तु, पदार्थ.

×**भास्** (भाष्) बोलवुं.

×**भास्** / **भिस्** (भास्) शोभवुं. प्रकाशवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भासा स्त्री. (भाषा) भाषा, वाणी, वचन.

भावि वि. (भाविन्) थनारुं.

×भिद् (भिद्) भेदवुं, चीरवुं, फाडवुं.

भिक्खायरिअ वि. (भिक्षाचरक) भिक्षाचर, भिक्षु.

भिक्खु पु. (भिक्षु) भिक्षुक, साधु.

भिच्च पु. (भृत्य) नोकर.

भिल्ल पु. (सम) भिल्ल.

×भुंज् (सम) जमवुं.

भुयग पु. (भुजग) सर्प.

×भुल्ल् (भ्रंश्) भूलवुं, चूकवुं.

भूअ पु. न. (भूत) जंतु, प्राणी.

×भूस् (भूषय्) शोभाववुं, शणगारवुं.

भूसण न. (भूषण) आभूषण.

भोइ / **भोगि** वि. (भोगिन्) भोगासक्त, विलासी.

भोग / **भोअ** पु न. (भोग) मनोज्ञ शब्दादि विषयो, खावुं ते, उपभोग.

भोयण न. (भोजन) भोजन.

म

मइ स्त्री. (मति) बुद्धि.

मउड पु. न. (मुकुट) मुगट.

मंगल न. (सम) श्रेयः, कल्याण, शुभ.

×मंत् (मन्त्रय्) विचार करवो.

नि-मंत् (निमन्त्रय्) निमंत्रण करवुं, बोलाववुं.

मंत पु. न. (मन्त्र) मन्त्र, विचार, गुप्त वात.

मंति पु. (मन्त्रिन्) मन्त्री.

मंद वि. (सम) धीमुं, आलसु, अल्प.

मंदर पु. (सम) मेरु पर्वत.

मंदिर (सम) मंदिर, जिनालय, घर.

मक्कड पु. (मर्कट) मांकडुं.

मक्खिआ / **मच्छिआ** स्त्री. (मक्षिका) माखी.

×मग्ग् (मार्गय्) मागवुं, शोधवुं.

मग्ग पु. (मार्ग) रस्तो.

मच्चु पु. (मृत्यु) मरण, मोत.

मच्छर पु. (मत्सर) ईर्ष्या, द्वेष.

×मज्ज् / **मच्च्** (मद्) मद करवो, अभिमान करवुं.

मज्ज न. (मद्य) मद्य, दारु, मदिरा.

मज्जाया स्त्री. (मर्यादा) सीमा, हद, व्यवस्था.

मज्झ न. (मध्य) वचमां, आंतरे, अन्दर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मज्झण्ह पु. (मध्याह्न) दिवसनो, मध्यभाग.

मट्टिआ स्त्री. (मृत्तिका) माटी.

मण पु. (मनस्) मन, चित्त.

मणपज्जव पु. (मनःपर्यव) चतुर्थ ज्ञान (बीजाना मनना भावोने जणावनारुं ज्ञान.)

मणंसि वि. (मनस्विन्) प्रशस्त मनवालो.

मणा / **मणयं** / **मणिअं** } अ. (मनाक्) अल्प, थोडुं,

मणि पु. (सम) मणि.

मन्नु पु (मन्यु) क्रोध.

मणूस पु (मनुष्य) मनुष्य.

मणोरह पु. (मनोरथ) मनोरथ, इच्छा.

मणोज्ज / **मणोण्ण** } वि. (मनोज्ञ) सुन्दर.

मत्त वि. (सम) मदयुक्त, उन्मत्त.

मत्थय पु. न. (मस्तक) मस्तक, माथुं.

×**मन्न्** (मन्–मन्य) मानवुं. विचारवुं.

मय पु (मद) अभिमान, गर्व.

मय / **मुअ** } वि. (मृत) मरी गयेल

मयण पु. (मदन) कामदेव.

×**मर्** (मृ) मरवुं.

मरण न. (सम) मृत्यु, मरवुं.

×**मरिस्** (मृश्) विचारवुं.

×**मरिस्** (मृष्) सहन करवुं, क्षमा आपवी.

महप्प पु. (महात्मन्) महात्मा

महावीर पु. (सम) चोवीसमा तीर्थंकर.

महासई स्त्री. (महासती) उत्कृष्ट शीलवाळी स्त्री.

महिवाल पु. (महिपाल) राजा.

महिला स्त्री. (सम) स्त्री, नारी.

महु न. (मधु) मध

महुर वि. (मधुर) मधुर, सुन्दर, मिष्ट, मीठुं.

महोच्छव / **महोसव** / **महुस्सव** / **महूसव** } पु. (महोत्सव) मोटो उत्सव.

मह / **महंत** } वि. (महत्) मोटुं, विशाल.

महोसहि स्त्री. (महौषधि) श्रेष्ठ औषधि.

मा / **माइं** } अ. (मा) मा, नहीं.

मिच्छा अ. (मिथ्या) असत्य, जुठुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माउसिआ } स्त्री. (मातृष्वसृ)
माउच्छा } मासी, मातानी व्हेन.

×**माण्** (मानय्) सन्मान करवुं, आदर करवो.

माण पु. (मान) अभिमान, गर्व.

माणि वि. (मानिन्) अभिमानी, गर्विष्ठ.

मायरा }
माआ } स्त्री. (मातृ) माता,
माउ } मा, जननी.
माइ }

माया स्त्री. (सम) कपट, छल.

माला स्त्री. (सम) माळा.

मास पु. (सम) महिनो, मास.

मास } न. (मांस) मांस.
मंस }

माहप्प पु. न. (माहात्म्य) महिमा, मोटाइ, प्रभाव.

माहण } पु. (ब्राह्मण) ब्राह्मण.
वंभण }

मिअंक } पु. (मृगाङ्क) चन्द्र.
मयंक }

मिग } पु. (मृग) हरण.
मअ }

मित्त पु. न. (मित्र) मित्र.

मित्ती स्त्री. (मैत्री) मित्रता, दोस्ती.

मीसिअ वि. (मिश्रित) मिश्रत करेलुं.

मळेलुं.

×**मिला** (म्लै) खिन्न थवुं, करमावु

×**मुंच्** } (मुच्-मुञ्च्) मूकवु,
मुय् } छोडवु.

मुक्ख } पु. (मूर्ख) मूर्ख,
मुरुक्ख } अज्ञानी.

मुक्खत्थि वि. (मोक्षार्थिन्) मोक्षनो अर्थी.

×**मुज्झ्** (मुह्-मुह्य) मुंझावुं, मोह-पामवो, घेला थवुं.

मुण् (ज्ञा) जाणवुं.

मुणि पु. (मुनि) मुनि, साधु.

मुणिंद पु. (मुनीन्द्र) आचार्य.

मुसा }
मूसा } अ. (मृषा) मिथ्या,
मोसा } खोटुं.

मुह न. (मुख) मुख, मोढुं.

मुहल-र वि. (मुखर) वाचाळ.

मुहा } अ. (मुधा) व्यर्थ,
मोरउल्ला } फोगट.

मूग वि. (मूक) मूंगो.

मूढ वि. (सम) मूढ, मूर्ख, अज्ञानी.

मूल न. (सम) मूल, कारण, आदि कारण.

मूसावाय } पु. (मृषावाद) अ-
मुसावाय } सत्य भाषण, जुठु
मोसावाय } बोलवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरु पु. (सम) मेरु पर्वत.

×**मेल्ल्** (मुच्) मूकवुं, छोडवुं.

मेह पु. (मेघ) मेघ.

मोक्ख / **मुक्ख** पु. (मोक्ष) मोक्ष.

मोग्गर पु. (मुद्गर) मोगर.

मोण / **मउण** न. (मौन) मौन, खामोशी, वाणीनो संयम, मुनिपणुं.

मोर पु. (मयूर) मोर.

र

रउद्द / **रोद्द** वि. (रौद्र) दारुण, भयंकर, भीषण.

×**रंज्** (सम) खुशी करवुं.

×**रक्ख्** (रक्ष्) रक्षण करवु.

रक्खण न. (रक्षण) रक्षण करवुं.

रक्खस पु. (राक्षस) राक्षस.

रज्ज न. (राज्य) राज्य.

रत्त वि. (रक्त) लाल, आसक्त, रागी, वहालुं.

×**रम्** (सम) रमवुं, आनंद मानवो.

रमणी स्त्री. (सम) स्त्री, सुन्दरी.

×**रय्** (रच्य्) रचवुं, गोठववुं, बनाववुं.

रय वि. (रत) आसक्त, आनंद पामेलुं, खुशी थयेलुं.

रयण पु. न. (रत्न) रत्न.

रयय न. (रजत) रूपुं.

×**रव्** (रु) शब्द करवो, अवाज करवो.

रवि पु. (सम) सूर्य.

रहस्स वि. (रहस्य) गुप्त, गुह्य.

रह पु. (रथ) रथ.

रहिअ वि. (रहित) रहित, वर्जित.

राइ / **रत्ति** स्त्री. (रात्रि) रात्रि.

×**राय्** / **वि-राय्** (राज्–वि+राज्) शोभवुं, विराजवुं.

राहु पु. (सम) ग्रह विशेष.

रिउ / **उउ** स्त्री. (ऋतु) वसंतादि छ ऋतु.

रिउ पु. (रिपु) शत्रु.

रिच्छ पु. (ऋक्ष) रींछ.

रुअ न. (रुत) शब्द.

×**रुंध्** / **रुज्झ्** / **रुंभ्** (रुध्) रोकवुं.

रुक्क-ग्ग वि. (रुग्ण) रोगी.

रुक्ख पु. न. (वृक्ष) झाड.

×**रुच्च्** / **रोय्** (रुच्) रुचवुं, पसंद पडवुं.

रुप्पिणी स्त्री. (रुक्मिणी) विष्णुनी स्त्री.

×**रुव्** / **रोव्** (रुद्) रोवुं, रुदन करवुं.

×**रुह्** / **रोह्** (रुह्) उगवुं, वधवुं. आरोहण करवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूव पु. न. (रूप) देह, कान्ति, सुन्दरता, आकृति, रूप.

×रूस् } **रुस्स्** } (रुष्-रुष्य) क्रोध करवो, रोष करवो.

×रेह् (राज्) शोभवुं.

×रोमन्थ् } **वग्गोल्** } (रोमन्थय्) वागोळवुं.

रोग पु. (सम) रोग, व्याधि.

रोस पु. (रोष) रोष, क्रोध.

ल

लक्खण न. (लक्षण) चिह्न, नाम, कारण.

लग्ग वि. (लग्न) संबद्ध, लागेलुं.

लच्छी स्त्री. (लक्ष्मी) लक्ष्मी.

×लज्ज् (लस्ज्-लज्ज्) लज्जा पामवी, शरमावुं.

लट्ठ वि. (दे) सुन्दर.

लट्ठि पु. (यष्टि) लाकडी, लाठी.

ललाड } **णडाल** } न. (ललाट) भाल, कपाळ.

ललिय वि. (ललित) सुन्दर, मनोहर.

×लव् (लप्) बोलवुं, कहेवुं.

×लह् } **लभ्** } (लभ्) मेळववुं, पामवुं.

लहु-अ वि. (लघु-क) तुच्छ, नानुं.

×लिंप् (सम) लींपवुं, चोपडवुं.

लिंब पु. (निम्ब) लींवडानुं झाड.

×लिह् (सम) चाटवु.

लिह् } **×लेह्** } (लिख) लखवु.

×लुण् (लू) कापवुं.

लुद्ध वि. (लुब्ध) लोभी, लोलुप, आसक्त.

×लुब्भ् (लुभ्य) लोभ करवो.

×लुह् (मृज्) धोवुं, साफ करवुं, लुछवुं.

लेह पु. (लेख) लेख, लखाण.

लोग पु. (लोक) लोक, दुनिया.

लोगवाल पु. (लोकपाल) इन्द्रनो दिक्पाल.

लोगंतिअ पु. (लोकान्तिक) देव विशेष.

लुंठिअ वि. (लुण्ठित) बलात्कारथी लई लेवुं, लुंटी लेवुं.

व

व } **वा** } अ. (वा) वा, अथवा, के.

वइर } **वज्ज** } पु. न. (वज्र) वज्र, इन्द्रनुं शस्त्र.

×वंच् (सम) ठगवुं, छेतरवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×**वच्छ्** (वाञ्छ) वांछवुं, इच्छवुं.
वंद् (सम) वंदन करवुं, नमवुं.
वक्क न. (वाक्य) वाक्य.
×**वक्खाण्** (व्याख्यानय्) व्याख्यान करवुं, स्पष्ट समजाववु.
वक्खाण न. (व्याख्यान) वखाण, विशेष कथन.
वग्ग पु. (वर्ग) वर्ग, समूह.
वग्घ पु. (व्याघ्र) वाघ.
×**वच्च्** (व्रज्) जवुं.
वच्छ पु. (वृक्ष) झाड.
वच्छ पु. (वत्स) बालक, वाछरडो.
वच्छल वि. (वत्सल) रागी, स्नेही.
वच्छल्ल न. (वात्सल्य) वात्सल्य-पणुं, अनुराग.
×**वज्ज्** (वर्जय्) त्याग करवो.
×**वज्जर्** (कथ्) कहेवुं.
×**वट्ट्** (वृत्-वर्त्) वर्तवुं, होवुं.
×**वड्ढ्** (वृध्-वर्ध्) वधवुं.
वणस्सइ } स्त्री. (वनस्पति) वनस्पति.
वणप्फइ }
वणिआ } स्त्री. (वनिता) स्त्री.
विलया }
×**वण्ण्** } (वर्णय्) वखाणवुं, वर्णन करवुं.
वन्न् }

वण्हि पु. (वह्नि) अग्नि.
वत्ता स्त्री. (वार्ता) वात, कथा.
वत्तार } वि. (वक्तृ) वक्ता, बोलनार.
वत्तु }
वत्थ न. (वस्त्र) वस्त्र.
वत्थु न. (वस्तु) पदार्थ, चीज.
वम्मह पु. (मन्मथ) कामदेव.
×**वय्** (वद्) बोलवुं.
वय पु. न. (व्रत) व्रत, नियम.
वयण न. (वचन) वचन.
वयणिज्ज वि. (वचनीय) वाच्य, निंदवा लायक.
वर् (वृ-वॄ) वरवुं, पसंद करवुं.
वर वि. (सम) वर, श्रेष्ठ.
वराय वि. (वराक) गरीब.
×**वरिस्** (वृष्) वरसवुं, वृष्टि करवी.
वरिस } पु न. (वर्ष) वृष्टि, संवत्सर, साल, मेघ, वरसाद, वरस.
वास }
वरिसा } स्त्री. (वर्षा) चोमासुं.
वासा }
×**वलग्ग्** (आ+रुह्) चढवुं, वळगवुं.
ववसाय पु. (व्यवसाय) व्यापार, कार्य, उद्यम.
×**वस्** (सम) वसवुं, रहेवुं.
वसइ } स्त्री. (वसति) वसति, स्थान, आश्रय.
वसहि }

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसंत पु. (सम) वसन्त ऋतु.

वसण न. (व्यसन) कष्ट, दुःख.

×**वसीकुण** } (वशी+कृ) वशमां
वसीकर् } करवुं

वसीहूअ वि. (वशीभूत) वश थयेल.

×**वह्** (सम) वहेवुं, लइ जवुं.

वह पु. (वध) वध.

वहू स्त्री. (वधू) वहू, भार्या.

×**वागर्** (वि+आ+कृ) कहेवुं,
बोलवुं, प्रतिपादन करवुं.

वागरण } न. (व्याकरण) व्या-
वायरण } करण, शास्त्र,
वारण } उपदेश, उत्तर.

वाणिज्ज न. (वाणिज्य) व्यापार.

वाणी स्त्री. (सम) वाणी, वचन.

वाम वि. (सम) डाबुं, प्रतिकूल.

वाय् (वाचय्) वांचवुं, भणवुं
भणाववुं.

वायणा स्त्री. (वाचना) वाचना.

वायस पु. (सम) कागडो.

वाया (वाच्—चा) वाणी, वाचा.

वारियर पु. (वारिचर) जळचर,
मत्स्यादि.

वावार पु. (व्यापार) व्यापार,
व्यवसाय.

वावारि वि. (व्यापारिन्) व्यापारी.

वावी स्त्री. (वापी) वावडी.

वास पु. न. (वर्ष) वरस द, वरस,
भारत आदि क्षेत्र.

वासहर पु. (वर्षधर) पर्वत
विशेष.

वासुदेव पु. (सम) वासुदेव,
अर्धचक्रवर्ती, त्रिखंडाधीश.

वाह पु. (व्याध) शीकारी.

×**वाहर्** (वि+आ+हृ) बोलवुं,
कहेवुं, बोलाववुं.

वाहि पु. (व्याधि) व्याधि, रोग,
पीडा

विउस पु. (विद्वस्) विद्वान.

×**विउव्व्** (वि+कृ) बनाववुं, करवुं
विकुववुं.

विओग पु. (वियोग) वियोग.

विंद } न. (वृन्द) समुदाय.
वुंद }

विंछिअ } पु. (वृश्चिक) वींछी.
विञ्चुअ }

विंझ पु. (विन्ध्य) विन्ध्याचल
पर्वत,

×**विक्किण्** } (वि+क्री) वेचवुं
विक्के } वदलो करवो.

×**विज्ज्** (विद्+विद्य) होवुं, थवुं.

विज्जत्थि पु. (विद्यार्थिन्) भण-
नार, विद्यार्थी.

विज्जा स्त्री. (विद्या) विद्या,
शास्त्र ज्ञान.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विज्जाहर पु. (विद्याधर) विद्याधर, विद्यावाळो.

×विज्झ् } (व्यध्—विध्य) वींधवुं,
वध् } वेध करवो.

×विढव् (अर्ज्) उपार्जन करवुं, मेळववुं, पेदा करवुं.

विणट्ठ वि. (विनष्ट) नाश पामेल.

विणय पु. (विनय) विनय.

विणा अ. (विना) वगर, सिवाय.

विणिद्दिट्ठ त्रि. (विनिर्दिष्ट) विशेषे करीने कहेवायेल.

×विण्णव् (वि+ज्ञपय्) विनंती करवी, प्रार्थना करवी.

विण्णाण न. (विज्ञान) सद्बोध, कळा, विशिष्ट, ज्ञान.

विब्भल } वि. (विह्वल) विह्वल,
विहल } मुंझायेल.

विमाण पु न. (सम) विमान.

विम्हय पु. (विस्मय) आश्चर्य

वियंभिय वि. (विजृम्भित) विकास पामेल, फेलायेल.

वियक्खण वि. (विचक्षण) होंशीयार, कुशळ.

वियणा } स्त्री (वेदना) वेदना,
वेयणा } पीडा, दुःख.

वियार पु. (विचार) विचार, तत्त्वनिर्णय.

वियार पु. (विकार) विकार, विकृत.

विरल वि. (सम) अल्प, थोडुं.

विरहिअ वि. (विरहित) रहित, शून्य, विरहवाळुं.

विरुद्ध वि. (सम) विपरीत, प्रतिकूळ, उलटुं.

विरूव वि. (विरूप) कदरूप, कुरूप.

विरोह पु. (विरोध) विरुद्धता.

विवत्ति स्त्री. (विपत्ति) दुःख.

विवरीअ } वि. (विपरीत)
विवरिअ } उलटुं, प्रतिकूल

विवाय पु. (विवाद) चर्चा, वाग्युद्ध.

×विवाह् (वि+वाहय्) लग्न करवा.

विविह त्रि. (विविध) अनेक प्रकार, बहुविध.

विवेग पु. (विवेक) विचार, वहेंचणी, भेद.

विस पु. न. (विष) विष, झेर.

विसम वि. (विषम) सखत, तीक्ष्ण, आकरुं.

विसय पु. (विषय) पांचे इन्द्रियोना शब्दादि विषयो, विषय.

विसाय पु. (विषाद) खेद, शोक.

विसाल वि. (विशाल) मोटुं.

×वि-सीय् (वि+सीद्) खेद करवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसेस पु. न. (विशेष) विशेष, प्रकार, भेद, असाधारण.

विहव पु. (विभव) समृद्धि, ऐश्वर्य.

विहवि वि. (विभविन्) समृद्धिवाळो.

विहलिय वि. (विह्वलित) मुंझायेल.

विहि पु. (विधि) विधि, अनुष्ठान.

विहीण } **विहूण** } वि. (विहीन) वर्जित, रहित.

विहुर वि. (विधुर) दुःखी, व्याकुल.

×**वि-हे** (वि+धा) करवुं, बनाववुं.

वीणा स्त्री. (सम) वीणा.

वीयराग } **वियराग** } पु. वि. (वीतराग) रागरहित, जिन.

वीसत्थ वि. (विश्वस्त) विश्वासवाळुं.

×**वीसर्** } **विस्सर्** } (वि+स्मृ) भूली जवुं, वीसरवुं.

वीसस् (वि+श्वस्) विश्वास करवो, भरोसो करवो.

वीसाम पु. (विश्राम) विश्रान्ति, विराम.

वीसुं अ. (विष्वक्) समन्तात्, चारे बाजु.

×**बुक्क्** } **भस्** } (भष्) भसवुं.

वुट्ठि स्त्री. (वृष्टि) वृष्टि, वरसाद.

वुड्ढत्तण न. (वृद्धत्व) वृद्धपणुं.

×**वेढ्** (वेष्ट्) वींटवुं, लपेटवुं.

वुड्ढि स्त्री. (वृद्धि) वृद्धि, चढती.

वुत्त वि. (उक्त) कहेलुं.

वेज्ज पु. (वैद्य) वैद्य.

वेरुलिअ } **वेडूरिअ** } **वेडुज्ज** } पु. न. (वैडूर्य) वैडूर्य रत्न.

वेयावच्च } **वेयावडिअ** } न. (वैयावृत्य) सेवा, शुश्रूषा.

वेर } **वइर** } न. (वैर) शत्रुता.

वेरग्ग न. (वैराग्य) वैराग्य.

×**वेव्** (वेप्) कंपवुं.

×**वोल्** (गम्) जवुं, गुजारवुं, उलंघन करवुं, वीतावबुं.

×**वोल्** (अति+क्रम्) उलंघवुं.

वेसवण } **वेसमण** } पु. (वैश्रवण) कुबेर, यक्षराज.

वेसा स्त्री. (वेश्या) वेश्या.

वोसिर् (वि+उत्+सृज्) त्याग करवो, छोडवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स.

सइ, सया अ. (सदा) हंमेशां, निरन्तर.

सइ, सइं अ. (सकृत्) एकवार.

सई स्त्री. (सती) सती स्त्री.

सउण पु. (शकुन) पक्षी, न. काकदर्शन आदि निमित्त.

संकला स्त्री. (शृङ्खला) सांकळ.

संघ पु. (सम) संघ, समुदाय, श्रमणादि चतुर्विध संघ,

×सं-जम् (सं+यम्) संयम लेवो, प्रयत्न करवो, बांधवुं.

संजम पु. (संयम) संयम, चारित्र, हिंसादि पापोंथी निवृत्ति.

×सं-जय् (सं+यत्) सारी प्रवृत्ति करवी.

×सं-जल् (सं+ज्वल्) जलवुं, क्रोध करवो, आक्रोश करवो

संजुअ वि. (संयुत) युक्त, सहित.

संजोग पु. (संयोग) संबंध, मेलाप.

संतोस पु. (सन्तोष) सन्तोष.

×सं-दिस् (सं+दिश्) सन्देशो कहेवो, समाचार कहेवा.

×सं-धू, सं-धा (सं+धा) सांधवुं, जोडवुं, चाहवुं.

संपइ अ. (सम्प्रति) हाल, हमणां.

×सं-पज्ज् (सम्पद्य) प्राप्त करवुं. पामवुं.

×सं-प-मज्ज् (सम्+प्र+मृज्) साफ करवुं, निर्मळ करवु.

संपत्ति स्त्री. (सम) संपदा, ऋद्धि.

संफास पु. (संस्पर्श) स्पर्श.

संबंध पु. (सम्बन्ध) संसर्ग, संग, जोडाण, सगुं.

×सं-भर्, सम्हर् (सं+स्मृ) स्मरण करवुं, याद करवुं,

संवेग पु. (सम) संसारथी वैराग्य, मोक्षाभिलाष.

संसग्ग पु. (संसर्ग) संग, सम्बन्ध.

संसार पु (सम) संसार.

सइन्न, सिन्न, सेन्न न. (सैन्य) सैन्य, लश्कर.

सक्क पु. (शक्र) इन्द्र.

×सक्क् (शक्) समर्थ थवुं,

सक्खं अ. (साक्षात्) प्रत्यक्ष, प्रगट.

सगास न. (सकाश) समीप, पासे.

सग्ग पु. (स्वर्ग) स्वर्ग, देवलोक.

सच्च न. (सत्य) साचुं, यथार्थ वचन.

सच्चवय वि. (सत्यवद) सत्यवादी; साचुं बोलनार.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सज्ज वि. (सम) तैयार.
सज्जण पु. (सज्जन) सत्पुरुष
सज्जा, सेज्जा स्त्री. (शय्या) शयन, पथारी.
सज्झाय पु. (स्वाध्याय) सूत्रनो अभ्यास, परावर्तन आदि करवुं.
×**सद्** (सद्) सडवुं, खेद करवो.
सडिअ वि. (शटित) सडेलुं.
सढ वि. (शठ) लुच्चो.
सणिअं अ. (शनैस्) धीमेथी.
सद्द पु. (शब्द) शब्द.
×**सद्दह्** (श्रद्+धा) श्रद्धा करवी.
सद्ध, सड्ढ पु. (श्राद्ध) श्रावक, श्रद्धालु.
सद्धा, सड्ढा स्त्री. (श्रद्धा) श्रद्धा, धर्मरुचि.
सद्धिं (सार्धम्) साथे.
सत्त न. (सत्त्व) बळ, पराक्रम.
सत्ति स्त्री. (शक्ति) सामर्थ्य, पराक्रम.
सत्तु पु (शत्रु) शत्रु.
सत्तुंजय पु. (शत्रुञ्जय) सिद्धगिरिजी, यात्रानुं धाम छे.
सत्तुंजई, सेत्तुंजी स्त्री. (शत्रुञ्जयी) नदीनुं नाम छे.
सत्थ पु. (सार्थ) सार्थ, समुदाय.
सत्थ न. (शस्त्र) शस्त्र, हथीआर.
सत्थ न. (शास्त्र) शास्त्र, आगम.
सन्ना स्त्री. (संज्ञा) चेष्टा, ज्ञान.
×**सन्नाम्** (आ+दृ) आदर करवो.
सप्प पु. (सर्प) सर्प.
सप्पाण वि. (सप्राण) प्राणो सहित.
सब्भाव पु. (सद्भाव) सारो भाव, अस्तित्व, भावार्थ.
समंता, समंतेण अ. (समन्तात्) चारे बाजु, सर्व तरफ.
समण पु. (श्रमण) श्रमण, साधु.
समणोवासय–ग पु. (श्रमणोपासक) श्रावक, साधुओनो उपासक.
समत्त वि. (समस्त) संपूर्ण, बधुं.
समत्थ वि. (समर्थ) समर्थ, शक्तिवाळो.
समय पु. (सम) समय, काळ, वखत अवसर, शास्त्र.
×**समाण्, समाव्** (सम्+आप्) समाप्त करवुं, पूर्ण करवुं.
समाण वि. (समान) सदृश, तुल्य, सरखुं.
समाण वि. (सत्) व. कृ. विद्यमान, थतुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समायरण न. (समाचरण) आचरण, आचरवुं, करवुं.

×समायर् (सम्+आ+चर्) करवुं, आचरण करवुं.

×समारंभ् (समा+रंभ्) शरू करवुं, हिंसा करवी.

समाहि पु. स्त्री. (समाधि) चित्तनी स्वस्थता, मननी शांति.

समिद्धि } **सामिद्धि** } स्त्री. (समृद्धि) समृद्धि, आबादी, चढती.

समीव वि. (समीप) पासे, नजीक.

समीहिअ वि. (समीहित) इष्ट, वांछित.

समोसरण } **समवसरण** } पु. न. (समवसरण) समोसरण.

सम्मं अ. (सम्यक्) सारी रीते.

सम्मत्त न. (सम्यक्त्व) सत्य तत्त्व उपर श्रद्धा, सम्यग्दर्शन.

सयं } **सइ** } अ. (स्वयम्) पोते, पोतानी मेळे.

सयण पु. (स्वजन) कुटुम्बी, ज्ञातिवर्ग.

सययं अ. (सततम्) निरन्तर.

सयल वि. (सकल) पूर्ण, सर्व.

सयायार पु. (सदाचार) उत्तम आचार.

×सर् (सृ) सरकवुं, खसवुं, जवुं.

×सर् (स्मृ) स्मरण करवुं, याद करवुं, संभाळवुं,

सर पु. (शर) बाण.

सर पु. न. (सरस्) सरोवर.

सरण न. (शरण) शरण, आश्रय.

सरणत्त न. (शरणत्व) शरणपणुं.

सरस्सई स्त्री. (सरस्वती) वाणी, वाग् देवी.

सरिच्छ } **सरिक्ख** } वि. (सदृक्ष) सरखुं, समान.

सरोय न. (सरोज) कमळ.

सरोरुह न. (सरोरुह) कमल.

×सलह् (श्लाघ्) प्रशंसा करवी.

सलाहा स्त्री. (श्लाघा) वखाण, प्रशंसा.

×सव् (शप्) शाप देवो, सोगन देवा.

×सव् (सू) जन्म आपवो.

सवण न. (श्रवण) सांभळवुं.

सव्वओ } **सव्वतो** } **सव्वत्तो** } अ. (सर्वतस्) सर्व प्रकारे, चारे तरफथी.

सव्वत्थ } **सव्वहि** } **सव्वह** } अ. (सर्वत्र) सर्व ठेकाणे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वण्णु पु. (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ भगवान्, सर्व जाणनार.

सव्वविरइ स्त्री. (सर्वविरति) पांचे महाव्रतोनुं पालन, सर्व पाप व्यापारनो त्याग.

सव्वया अ. (सर्वदा) सदा, हंमेशां.

सव्वहा अ. (सर्वथा) सर्व प्रकारे.

ससा / **सुसा** स्त्री. (स्वसृ) व्हेन.

ससंक पु. (शशाङ्क) चन्द्र.

×**सह्** (सम) सहन करवुं.

×**सह्** (राज्) शोभवुं.

सह अ. (सम) साथे.

सहल / **सभल** वि. (सफल) फलसहित, सफल, सार्थक,

सहा स्त्री. (सभा) सभा.

सहाव पु. (स्वभाव) प्रकृति.

सही स्त्री. (सखी) सहचरी.

साउ वि. (स्वादु) मधुर, स्वादवाळुं.

स / **साण** पु. (श्वन्) कूतरो.

सामि पु. (स्वामिन्) स्वामी, नायक.

सामन्न वि. (सामान्य) साधारण.

सामाइअ न. (सामायिक) सामायिक, बे घडी समतामां रहेवुं.

साय न. (सात) सुख.

सार वि. (सम) श्रेष्ठ उत्तम.

सारहि पु. (सारथि) सारथी.

सावग पु. (श्रावक) श्रावक.

साविगा स्त्री. (श्राविका) श्राविका.

सासण न. (शासन) शासन, शास्त्र, आज्ञा, शिक्षण.

सासय वि. (शाश्वत) नित्य, अविनश्वर.

सासू स्त्री. (श्वश्रू) सासु.

×**साह्** (कथ्) कहेवुं.

×**साह्** (साध्) साधवुं, सिद्ध करवुं.

साहम्मिअ वि. (साधर्मिक) समान धर्मवाळो.

साहा स्त्री. (शाखा) शाखा.

साहु पु. (साधु) साधु, मोक्षमार्ग साधनार.

साहिज्ज / **साहज्ज** / **साहेज्ज** न. (साहाय्य) मदद.

सिंघ / **सीह** पु. (सिंह) सिंह.

×**सिंच्** (सम) छांटवुं, भीनुं करवुं.

×**सिज्ज्** (स्विद्-स्विद्य) परसेवो थवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×**सिज्झ्** (सिध्+सिध्य) सिद्ध थवुं.

×**सिणिज्झ्** (स्निह्य) स्नेह राखवो.

सिद्ध पु. (सम) सिद्ध, सिद्ध भगवान.

सिद्धालय न. (सम) सिद्धोनु स्थान.

×**सिढिल्** (शिथिलय्) शिथिल करवुं.

सिद्धि स्त्री. (सम) सिद्धि, मोक्ष.

सिणेह पु. (स्नेह) स्नेह, प्रेम.

सिप्प न. (शिल्प) कारीगरी, चित्रादि–विज्ञान.

सिरी स्त्री. (श्री) लक्ष्मी.

×**सिलाह्** (श्लाघ्) प्रशंसा करवी.

×**सिलेस्** (श्लिष्) भेटवुं, आलिंगन करवु.

×**सिव्व्** (सिव्-सीव्य) सीववुं, सांधवुं.

सिविण } **सुविण** } **सिमिण** } **सुमिण** } पु. न. (स्वप्न) स्वप्न.

सिव न. (शिव) कल्याण, भद्र, मोक्ष.

सिसु पु. (शिशु) बालक.

×**सिह्** (स्पृह्) चाहवुं, इच्छवुं.

सिहर न. (शिखर) शिखर.

सीय वि. (शीत) ठंडुं, सुस्त, आलसु.

सीया स्त्री. (सीता) रामनी स्त्री.

सीयल वि. (शीतल) शीत स्पर्शवाळुं.

सीयाल पु. (शीतकाल) शीयाळो.

सील न. (शील) शीयळ, उत्तमाचार.

×**सीस्** } **सिस्स्** } (शिष्) हिंसा करवी, बाकी राखवुं, विशेष करवुं.

×**सीस्** (कथय्) कहेवुं.

सीस पु. (शिष्य) शिष्य.

सीस पु. न. (शीर्ष) मस्तक, माथुं.

सुअ पु. (सुत) पुत्र.

सुक वि. (शुक्ल) शुकल वर्णवाळुं, धोळुं.

सुट्ठु अ. (सुष्ठु) सारी रीते.

×**सुण्** } **हण्** } (श्रु) सांभळवुं.

सुण्हा } **सुसा** } **ण्हुसा** } स्त्री. (स्नुषा) पुत्रवधू.

सुत्त न. (सूत्र) सूत्र.

सुर पु. (सम) देव.

सुत्त वि. (सुप्त) सुतेल.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

×सुमर् (स्मृ) स्मरण करवुं, संभाळवुं.

सुरहि वि. (सुरभि) सुगंधी युक्त, सुगंधी.

×सुव् / **सोव्** (स्वप्) ऊंघवु, सूवुं, विश्रान्ति लेवी.

सुवण्ण न. (सुवर्ण) सुवर्ण.

सुविज्ज पु. (सुवैद्य) सारो वैद.

सुवे अ. (श्वस्) आवती काले.

सुसाण / **मसाण** न. (श्मशान) मसाण.

×सुह् (सुखय्) सुखी करवुं.

सुह न. (सुख) सुख.

सुह न. (शुभ) मंगल, कल्याण.

सुहा स्त्री. (सुधा) अमृत.

सुहि वि. (सुखिन्) सुखी.

×सूय् (सूचय्) सूचना करवी.

सूर पु. (शूर) शूर, पराक्रमी.

सूरि पु. (सूरिन्) आचार्य.

सूल पु. न. (शूल) शूल, रोग विशेष, शस्त्र विशेष.

×सूस् / **सुस्स्** (शुष्-शुष्य) सुकावुं, सुकाई जवुं.

सेणा स्त्री. (सेना) सेना.

सेणावइ पु. (सेनापति) सेनानो स्वामी.

×सेव् (सम) सेवा करवी.

सेवा स्त्री (सम) सेवा, चाकरी, भक्ति.

सेस वि. (शेष) बाकी, शेष.

×सोय् / **सोच्** (शुच्-शोच्) शोक करवो.

सोक्ख न. (सौख्य) सुख.

सोग-अ पु. (शोक) शोक, दिलगिरी.

सोत्त न. (श्रोत्र) कर्ण, कान.

सोम पु. (सम) चन्द्र.

×सोल्ल् (पच्) पकाववुं, रांधवुं.

×सोह् (शोभ्) शोभवुं.

×सोह् (शोधय्) शुद्धि करवी, गवेषणा करवी.

सोहण वि. (शोभन) सुन्दर.

सोहा स्त्री (शोभा) शोभा, दीप्ति.

ह

×हक्क् (नि+सिध्) निषेध करवो.

हत्थ पु. (हस्त) हाथ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हत्थिणाउर न. (हस्तिनापुर) नगरनुं नाम.

हत्थि पु. (हस्तिन्) हाथी.

हद्धि }
हद्धी } अ. (हाधिक्) खेद, पश्चाताप.

×हण् (हन्) हणवुं, मारवुं.

हय पु. (सम) घोडो.

×हर् (हृ) हरण करवुं, लइ जवुं.

×हरिस् (हृष्-हर्ष्) हर्ष थवो, खुशी थवुं.

×हव् (हु) होम करवो.

×हव् }
भव् }
हुव् } (भू+भव्) होवुं. थवुं.

×हस् (सम) हसवुं.

हालिअ पु. (हालिक) खेडुत.

हिअय }
हिअ } न. (हृदय) हृदय, मन, अन्तःकरण.

×हिंड् (सम) जवुं, भमवुं.

हिरी स्त्री. (ह्री) लज्जा.

×हिंस् (सम) हिंसा करवी.

×हील् (हेलय्) हीलना करवी, तिरस्कार करवो, निंदा करवी.

×हुण् (हु) होम करवो.

हेट्ठ न. (अधस्) नीचे.

हेम न. (हेमन्) सुवर्ण.

हेमचंद पु. (हेमचन्द्र) श्री हेमचन्द्र सूरिजी.

×हो (भू) होवुं, थवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजराती-प्राकृत-शब्दकोष.

अ

अग्नि **अग्गि** पु. (अग्नि)

अंग **अंग** न. (सम)

अंजन **अंजण** न. (अञ्जन)

अजीव **अजीव** पु. (अजीव)

अज्ञानी **अण्णाणि** वि. (अज्ञानिन्)

अतिशय **अइसय** पु. (अतिशय)

अत्यंत **अच्चंत** वि. (अत्यन्त)

अदत्त **अदत्त, अदिण्ण** वि. (अदत्त)

अदृष्ट **दइव्व, दइव** न. (दैव)

अधर्म **अहम्म** पु (अधर्म)

अध्याय **अज्झाय** पु. (अध्याय)

अध्ययन **अज्झयण** न. (अध्ययन)

अनर्थ **अणत्थ-ट्ठ** पु. (अनर्थ)

अनंतवार **अणंतखुत्तो** अ. (अनन्तकृत्वस्)

अनाज **धन्न** न. (धान्य)

अनुग्रह **अणुग्गह** पु. (अनुग्रह)

अनुग्रह करवो **अणुगिण्ह्, अणुग्गह्** (अनु+ग्रह्)

अनुसरवुं **अणु-सर्** (अनु+सृ)

अने **अ, च-य,** अ. (च)

अंधकार **तिमिर** न. (सम) **तम** पु. न. (तमस्)

अन्यथा **अन्नह-हा** अ. (अन्यथा)

अपमान करवुं **अव मन्न्** (अव+मन्य)

अभिमन्यु **अहिमन्नु, अहिमज्जु-ज्जु** पु. अभिमन्यु)

अभिमान **मय** पु. (मद)

अभ्यास **अब्भास** पु. (अभ्यास)

अमर **अमर** पु. (सम)

अमारा सरखा **अम्हारिस** वि. (अस्मादृश)

अमावास्या **अमावस्सा** स्त्री. (अमावास्या)

अमृत **अमय, अमिय** न. (अमृत)

अरिहंत **अरिहंत, अरहंत, अरुहंत** पु. (अर्हत्)

अलंकृत **अलंकिअ** वि. (अलंकृत)

अशुभ (कर्म) **असुह** न. (अशुभ)

असत्य **असच्च** न. (असत्य)

मुसावाय, मूसावाय, मोसावाय पु. (मृषावाद)

असार **असार** वि. (सम)

अहीं **अत्थ, एत्थ** अ. (अत्र)

अहिंसा **अहिंसा** स्त्री. (सम)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ

आकाश **आगास** पु. न. (आकाश)

आखुं–बधुं **सयल** वि. (सकल)

सव्व वि. (सर्व)

आंख **चक्खु** पु. न. (चक्षुष्)

नेत्त पु. न. (नेत्र)

आगम **आगम** पु. (सम)

आगळ **अग्ग** न. (अग्र) **पुरओ** अ. (पुरतस्)

आचार **आयार** पु. (आचार)

आचार्य **आयरिअ, आइरिअ** पु. (आचार्य) **सूरि** पु. (सूरिन्)

आज्ञा **आणा** स्त्री. (आज्ञा)

आदेश **आएस** पु. (आदेश)

आधि **आहि** पु. स्त्री. (आधि)

आनंद उपजाववो **पीण्** (प्रीण्)

आंधळो **अंध** वि. (सम)

आपवुं **दा, दे** (दा)

आभूषण **भूसण** न. (भूषण)

आयुष्य **आउस, आउ** पु. न. (आयुष्)

आराधवुं **आ-राह्** (आ+राध्)

आरंभ **आरंभ** पु. (सम)

आलोचना **आलोयणा** स्त्री. (आलोचना)

आवतुं **आगच्छंत** व. कृ. (आगच्छत्)

आवृत्ति करवी **परा-वट्ट्** (परा+वर्त्)

आवेलुं **आगय** क. भू. (आगत)

आशातना **आसायणा** स्त्री. (आशातना)

आशा राखवी **अविक्ख्, अवेक्ख्** (अप+ईक्ष्)

आश्चर्य **अच्छेर** न. (आश्चर्य)

आश्रय **आहार** पु. (आधार)

आसक्त **आसत्त** वि. (आसक्त)

रय वि. (रत)

आसो मास **आसिण** पु. (आश्विन)

आहार **आहार** पु. (सम)

इ

इनाम **पाहुड** न. (प्राभृत)

पारितोसिअ वि. (पारितोषिक)

इन्द्र **इन्द** पु. (इन्द्र) **सक्क** पु. (शक्र)

ईश्वर **ईसर** पु. (ईश्वर)

उ

उग्र **उग्ग** वि. (उग्र)

उडवुं **उड्डे** (उद्+डी)

उत्तम **उत्तम, उत्तिम** वि. (उत्तम)

वर वि. (सम)

उत्कृष्ट **उक्किट्ठ** वि. (उत्कृष्ट)

उत्साह **उच्छाह** पु. (उत्साह)

उद्धार करवो **उद्धर्** (उद्+धृ)

उद्यम **उज्जोग** पु. (उद्योग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उद्यम करवो **उज्जम्** (उद्+यम्)

उन्हाळो **गिम्ह** पु. (ग्रीष्म)

उपर **उवरि, उवरिं** अ. (उपरि)

उपदेश **उवएस** पु. (उपदेश)

उपदेश करवो **उव+दिस्** (उप+दिश्)

उपांग **उवंग** पु. न. (उपाङ्ग)

उपाय **उवाय** पु. (उपाय)

उपाध्याय **उवज्झाय, ऊज्झाय, ओज्झाय** पु. (उपाध्याय)

उभा रहेवुं **ठा** (स्था)

उलंघवुं **अइक्कम्** (अति+क्रम्)

ऋद्धि **इड्ढि, इद्धि; रिद्धि** स्त्री. (ऋद्धि)

ऋषि **रिसि** पु. (ऋषि)

ए

एकदम **सहसा** अ. (सम) **एक्कसरिअं** अ. (दे)

एथी **अओ** अ. (अतः)

ए प्रमाणे एम **त्ति, इइ, इअ** अ. (इति)

क

कंठ **कंठ** पु. (कण्ठ)

कन्या **कन्ना, कन्नगा** स्त्री. (कन्या –कन्यका)

कंपवुं **कंप्** (कम्प्)

कपाल **भाल** न. (सम) **ललाड, णडाल** न. (ललाट)

कमल **पोम्म, पउम** न. (पद्म

कमावुं **अज्ज्, विढव्** (अर्ज्)

करवा लायक **कायव्व** वि. (कर्तव्य)

करडवुं **डस्, डह्** (दंश्)

करवुं **कर्, कुण्** (कृ)

करवुं **समायरण** न. (समाचरण) **करण** न. (सम)

कर्म **कम्म** न. (कर्मन्)

कर्मक्षय **कम्मक्खय** पु. (कर्मक्षय)

कल्याण **कल्लाण** न. (कल्याण)

कसोटी **निहस** पु. (निकष)

कांइ पण **किंपि, किमवि** अ. (किमपि)

कागडो **वायस** पु. (सम)

कापवुं **छिंद्** (छिद्)

कामदेव **मयण** पु. (मदन) **काम** पु. (सम)

काम **कज्ज** न. (कार्य)

कारण **कारण** न. (सम) **निमित्त** न. (सम) **हेउ** पु. (हेतु)

कार्य **कज्ज** न. (कार्य)

काळ **काल** पु. (सम) **समय** पु. (सम)

काव्य **कव्व** न. (काव्य)

कीर्ति **जस** पु. (यशस्)

कुबेर **वेसवण, वेसमण** पु. (वैश्रवण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमारपणुं **कुमारत्तण** न. (कुमारत्व)

कुरूप **विरूव** वि. (विरूप)

कुतरो **स, साण** पु. (श्वन्)

कृत्य **किच्च** न. (कृत्य)

कृपण **किवण, किविण** वि. (कृपण)

कृपा **किवा** स्त्री. (कृपा)

कृष्ण **किण्ह, कण्ह** पु. (कृष्ण) **विण्हु** पु. (विष्णु)

केवलज्ञान **केवलनाण** न. (केवलज्ञान)

केवली **केवलि** पु. (केवलिन्)

कोई पण **कोवि** अ. (कोपि)

कोईनुं **कासइ** अ. (कस्यचित्)

कोई वखते **कया** अ. (कदा)

क्रोध–कोप **कोह** पु. (क्रोध) **कोव** पु. (कोप)

कोप करवो **कुप्प्** (कुप्य्)

कौरव **कउरव** पु. (कौरव)

क्यां **कत्थ, कह, कहि, कहिं** अ. (कुत्र)

क्यांथी **कत्तो, कओ, कदो, कुदो, कुओ** अ. (कुतः)

क्षमा **खमा** स्त्री. (क्षमा) **खंति** स्त्री. (क्षान्ति)

क्षय करवो **निज्जर्** (निर्+जृ)

क्षेत्र **खेत्त** न. (क्षेत्र)

ख

खंड **खंड** पु. न. (खण्ड)

खावुं **भुंज्** (भुञ्ज्)

खुशी करायेल **मोइअ** प्रे.क.भू.(मोदित)

खुशी थयेल **मुइअ** क. भू. (मुदित)

तुस्सिअ–तूसिअ क. भू. (तुष्ट)

खेडवुं } **करिस्** (कृष्)
खेंचवुं }

खेडुत **हालिअ** पु. (हालिक)

ग

गणधर **गणहर** पु. (गणधर)

गति **गइ** स्त्री. (गति)

गंभीर **गंभीर** वि. (सम)

गमवुं **रुच्च्, रोय्** (रुच्)

गरीब **दीण** वि. (दीन)

गरुड **गरुल** पु. (गरुड)

गांडो **मत्त** वि. (सम)

गायन **गाण** न. (गान)

गिरनार **उज्जयंत** पु. (उज्जयन्त)

गुंथवुं **गंथ्, गंठ्** (ग्रन्थ्)

गुणस्थानक **गुणट्ठाण** न. (गुणस्थान)

गुरु **गुरु, गुरुअ** पु. (गुरु)

गौतम **गोयम** पु. (गौतम)

ग्रहण करवुं **गिण्ह्, गह्** (ग्र)

घ

घणुं **वहु, वहुअ** वि. (बहु) **अईव** अ. (अतीव)

घर **घर** न. (गृह) **गेह** न. (गेह)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घरेणां **भूषण** न. (भूषण)
घी **घय** न. (घृत)
घोडो **आस** पु. (अश्व)

च

चक्रवर्ती **चक्कवट्टि** पु. (चक्रवर्तिन्)
चंद्र **मियंक, मयंक** पु. (मृगाङ्क) **चंद, चंद्र,** पु. (चन्द्र) **इंदु** पु. (इन्दु)
चरण **चलण** न. (चरण)
चरित्र **चरित्त** न. (चरित्र)
चारित्र **संजम** पु. (संयम) **चरित्त** न. (चारित्र) **चरण** न. (चरण)
चाहवुं **इच्छ्** (इष्–इच्छ्)
चित्त **चित्त** न. (चित्त) **हिअय, हिअ** न (हृदय)
चिह्न **चिंध, चिण्ह** न. (चिह्न)
चैत्यवंदन **चीवंदण** न. (चैत्यवन्दन)
चोमासुं **वरिसा–वासा** स्त्री. (वर्षा)
चोर **चौर** पु. (चौर)
चोरी **चोरिअ** न. (चौर्य)

छ

छांटवुं **सिंच्** (सिञ्च्)
छाया **छाही, छाया** . (छाया)
छीनवीलेवुं **उद्दाल्** (आ+छिद्)
छेल्लुं **चरम, चरिम** वि. (चरम)
छोडवुं **मुंच्** (मुञ्च्)
छोकरी **वाला** स्त्री. (सम)
छोकरो **बाल** पु. (सम)

ज

जगत **जग, जय** न (जगत्)
जंगल **रण्ण, अरण्ण** न. (अरण्य)
जन्म **जम्म, जम्मण** पु. न. (जन्मन्)
जंबूद्वीप **जंबुद्दीव, जंबूदीव** पु. (जम्बूद्वीप)
जरूर **अवस्स** अ. (अवश्यम्)
जळ **जल** न. (सम)
जाणनार **णायार, णाउ,** वि. (ज्ञातृ)
जाणवुं **बोह्, बुज्झ्** (बुध्–बुध्य)
जाळ **जाल** न. (सम)
जितवुं **जिण्** (जि)
जिनबिंब **जिणबिंब** (जिनबिम्ब)
जिनालय **जिणालय** न. (जिनालय)
जिनेश्वर **जिणेसर, जिणीसर,** पु. (जिनेश्वर)
जीभ **जिब्भा, जीहा** स्त्री. (जिह्वा)
जीर्ण **खीण, छीण, झीण** वि. (क्षीण)
जीव **जीव** पु. (सम)
जीवदया **जीवदया** स्त्री. (सम)
जीवन **जीवण, जीविअ** न. (जीवन–जीवित)
जीवहिंसा **जीवहिंसा** स्त्री. (सम)
जीव वगेरे **जीवाइ** पु. (जीवादि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीववुं **जीव्, जिव्** (जीव्)
जीवाडनार **जीवाउ** पु.न. (जीवातु)
जुवानी **जोव्वण** न. (यौवन)
जेम **इव, विव, व्व** अ. (इव)
जेवुं **जारिस** वि. (यादृश)
जैन धर्म **जइणधम्म** पु. (जैनधर्म)
जोवुं **पास्, पस्स्** (पश्य्)
देक्ख् (दृश्)
ज्ञातपुत्र **नायपुत्त, नायउत्त** पु. (ज्ञातपुत्र)
ज्ञान **नाण, णाण** न. (ज्ञान)
ज्यां **जहिं, जहि, जह, जत्थ** अ. (यत्र)
ज्यारे **जया** अ. (यदा)

झ

झाड **वच्छ** पु. (वृक्ष) **तरु** पु. (सम)
झेरवाळुं **विसमीसिअ** वि. (विषमिश्रित)

ड

डुबवुं **णिमज्ज्, णुमज्ज्** (नि+मस्ज्)

त

तत्त्व **तत्त** न. (तत्त्व)
तत्त्वज्ञान **तत्तनाण** न. (तत्त्वज्ञान)
तत्त्ववार्ता **तत्तवत्ता** स्त्री. (तत्त्व-वार्ता)
तथा **तह, तहा** अ. (तथा)
तप **तव** पु. (तपस्).
तपास करवी **मग्ग्** (मार्गय्)
तरफ **पइ** अ. (प्रति)
तरवुं **तर्** (तृ)
तळाव **तलाग, तलाय** न. (तडाग)
तापस **तावस** पु. (तापस)
तारनार **तारग** वि. (तारक)
तारो **तारग** न. (तारक) **तारा** स्त्री. (सम)
तिलक **तिलग** पु. (तिलक)
तीर्थ **तित्थ, तूह** न. (तीर्थ)
तीर्थंकर **तित्थयर** पु. (तीर्थंकर)
तुटेलुं **तुडिअ** क. भू. (त्रुटित)
ते ज **स च्चिय, तं च्चिय** अ. (स एव, तदेव)
तेथी **तओ** अ. (ततः)
तेवुं **तारिस** वि. (तादृश)
तो पण **तहवि** अ. (तथापि)
त्यां **तहिं, तहि, तह, तत्थ** अ. (तत्र)
त्याग करवुं **चय्** (त्यज्)
त्यागी **चाइ** वि. (त्यागिन्)
त्यार पछी **तओ** अ. (ततः)
त्यारे **तया** अ. (तदा)

थ

थोडुं **थोक्क, थोव, थेव** वि. (स्तोक)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द

दक्षिण दिशानुं **दाहिणिल्ल, दक्खिणिल्ल** वि. (दाक्षिणात्य)
दंड करवो **दंड्** (दण्डय्)
दर्शन **दंसण** न. (दर्शन)
दही **दहि** न. (दधि)
दान **दाण** न. (दान)
दिवस **दिवस, दिवह** पु. न. (दिवस)
दिवसे **दिवा, दिआ** अ. (दिवा)
दिशा **दिसा** स्त्री. (दिशा)
दीक्षा **दिक्खा** स्त्री. (दीक्षा)
दीवो **दीव** पु. (दीप)
दुःख **दुह, दुक्ख** न. (दुःख)
दुखी **दुहि, दुक्खि** वि. (दुःखिन्)
दुर्जन **दुज्जण** पु. (दुर्जन)
दुष्कर्म **पावकम्म** न. (पापकर्मन्)
दूध **दुद्ध** न. (दुग्ध)
दूर करवुं **अव-णे** (अप+नी)
देव **देव** पु. (सम)
देवलोक **देवलोग** पु. (देवलोक)
देश **जणवय** पु. (जनपद)
देशना **देसणा** स्त्री. (देशना)
द्रव्य **दविअ, दव्व** न. (द्रव्य) **धण** न. (धन) **अट्ठ, अत्थ** पु. (अर्थ)
द्वेष **मच्छर** पु. (मत्सर)

ध

धन **धण** न. (धन)
धर्म **धम्म** पु. (धर्म)
धर्मिजन **धम्मिट्ठ** पु. (धर्मिष्ठ)
धान्य **धन्न** न. (धान्य)
धारण करवुं **परि-हा, परि-धा** (परि+धा)
धिक्कार पडो **धिद्धि, धिद्धी, धिधी** अ. (धिक्-धिक्) **धि, धी** अ. (धिक्)
धीरज **धिइ** स्त्री. (धृति)
धीमे धीमे **सणियं** अ. (शनैस्)
ध्यान **झाण** न. (ध्यान)
ध्वजा **धअ, झअ** पु. (ध्वज)

न

नगर **नयर** न. (नगर)
नट **नड** पु. (नट)
नणंद **नणंदा** स्त्री. (ननान्दृ)
नमवुं **नम्-नव्** (नम्)
नमस्कार करवो **नमस्** (नमस्य)
नरक **निरय, नरय** पु. (नरक)
नहीतर **अन्नह-अन्नहा** अ. (अन्यथा)
नाखवुं **पक्खिव्** (प्र+क्षिप्)
नाचवुं **नच्च्** (नृत्य)
नाटक **नाडग, नट्ट** न. (नाटक-नाट्य)
नाव **नावा** स्त्री. (नौ)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाश **नास** पु. (नाश)
नाश पामवुं **नस्स्, नास्** (नश्य)
नाश करवो **नास्** (नाशय्)
नित्य **सासय** वि. (शाश्वत)
निंदवुं **निंद्** (निन्द्) **गरिह्** (गर्ह्)
निमित्तिओ **नेमित्तिअ** वि. (नैमित्तिक)
नियाणुं **नियाण** न. (निदान)
निर्जरा **निज्जरा** स्त्री. (निर्जरा)
निर्वेद पामवो **निव्विज्ज्** (निर्+विद्)
निश्चल **निच्चल** त्रि. (निश्चल)
निकलवुं **निस्सर्, नीहर्** (निस्सर्)
नीति **नाय** पु. (न्याय) **नय** पु. (सम) **नीइ** स्त्री. (नीति)
नीतिशास्त्र **नीइसत्थ** न. (नीतिशास्त्र)
नृत्य **नच्च** न. (नृत्य)
नेत्र **नेत्त** पु.त्रन. (नेत्र)
नेमि जिनेश्वर **नेमि** पु. (सम)
न्याय **नाय** पु. (न्याय)
न्यायमार्ग **नायमग्ग** पु. (न्याय-मार्ग)

प

पकडवुं **गिण्ह्** (ग्रह्)
पक्षी **पक्खि** पु. (पक्षिन्)
पछी **पच्छा** अ. (पश्चात्)
पंडित **अहिण्णु** वि. (अभिज्ञ)
पंडिअ पु. (पण्डित) **बुह** पु. (बुध)
पडेलुं **पडिअ** क. भू. (पतित)
पण **अवि, पि, वि.** अ. (अपि) **किंतु** अ. (सम)
पथ्य **पच्छ** वि. (पथ्य)
परलोक **परलोअ, परलोग** पु. (परलोक)
परम **परम** वि. (सम)
परस्त्री **परदारा** स्त्री. (सम)
परस्पर **अण्णण्ण, अण्णोण्ण, अण्णमण्ण, अण्णुण्ण** त्रि. (अन्योऽन्य)
परीक्षा करवी **परिक्ख्, परिच्छ्** (परि+ईक्ष्)
परोपकारी **परोवयारि** त्रि. (परोपकारिन्)
पर्याय **पज्जाय** पु. (पर्याय)
पळावबुं **रक्खाव, पालाव** प्रे० (रक्षय्–पालय्)
पवन **पवण** पु. (पवन) **वाउ** पु. (वायु)
पर्वत **पव्वय, गिरि** पु. (पर्वत–गिरि)
पर्षदा **परिसा** स्त्री. (पर्षद्–परिषद्)
पशु **पसु** पु. (पशु)
पश्चात्ताप **पच्छायाव** पु. (पश्चात्ताप)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पसंद पडवुं **रुच्च्, रोय्** (रुच्)
प्रहर **जाम, पहर** पु. (याम–प्रहर)
पहेलां **पुरं–पुरा** अ. (पुरस्–पुरा)
पाकेलुं **पक्क** वि. (पक्व)
पाठशाला **पाढसाला** स्त्री. (पाठशाला)
पाणी **जल** न. (सम) **वारि** न. (सम) **उदग–दग** न. (उदक)
पाप **पाव** न. (पाप) **दुरिअ** न. (दुरित)
पापी **पाव** पु. (पाप)
पामवुं **पाव्** (प्र+आप्)
पार पामवुं **पारंगच्छ्** (पारङ्गच्छ्)
पाळवुं **पाल्** (पालय्)
पाळनार **पालग** वि. (पालक)
पालन करातुं **पालिज्जंत** कर्म. व. (पाल्यमान)
पिता **पिअर, पिउ** पु. (पितृ) **जणअ** पु. (जनक)
पीडवुं **पील्, पीड्** (पीडय्)
पीवुं **पा, पिव्** (पा–पिब्)
पुत्र **पुत्त** पु. (पुत्र) **सुअ** पु. (सुत)
पुरुष **पुरिस** पु. (पुरुष) **माणव** पु. (मानव) **जण** पु. (जन)
पुष्प **पुप्फ** न. (पुष्प)
पुस्तक **पुत्थय, पोत्थय** पु. न. (पुस्तक) **गंथ** पु. (ग्रन्थ)
पूछवुं **पुच्छ्** (पृच्छ्)
पूजन **अच्चण** न. (अर्चन)
पूजवुं **अच्च्** (अर्च्)
पृथ्वी **पुढवी, पुहवी** स्त्री. (पृथिवी) **पिच्छी** स्त्री (पृथ्वी)
पेदा करवुं **अज्ज्** (अर्जय्–अर्ज्)
पोतानुं **निअ** वि. (निज) **अप्पकेर** वि. (आत्मीय)
प्रकाश **पयास** पु. (प्रकाश)
प्रकाशवुं **प–यास्** (प्र+काश्)
प्रकाशनार **पयासग** वि. (प्रकाशक)
प्रजा **पया** स्त्री. (प्रजा)
प्रतिमा **पडिमा** स्त्री. (प्रतिमा)
प्रतिक्रमण **पडिक्कमण** न. (प्रतिक्रमण)
प्रद्युम्न **पज्जुण्ण** पु. (प्रद्युम्न)
प्रभाव **पहाव** पु. (प्रभाव)
प्रभात **पच्चूस–ह** पु. (प्रत्यूष)
प्रभातमां **पए** अ. (प्रगे)
प्रभु **पहु** पु. (प्रभु)
प्रमाद **पमाय** पु. (प्रमाद)
प्रयोग **पओग** पु. (प्रयोग)
प्रवृत्ति करवी **पवट्ट्, पयट्ट्** (प्र+वर्त्)
प्रवेश करवो **प–विस्** (प्र+विश्)
प्रश्न **पण्ह** पु. (प्रश्न)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाश **नास** पु. (नाश)
नाश पामवुं **नस्स्, नास्** (नश्य)
नाश करवो **नास्** (नाशय्)
नित्य **सासय** वि. (शाश्वत)
निंदवुं **निंद्** (निन्द्) **गरिह्** (गर्ह्)
निमित्तिओ **नेमित्तिअ** वि. (नैमित्तिक)
नियाणुं **नियाण** न. (निदान)
निर्जरा **निज्जरा** स्त्री. (निर्जरा)
निर्वेद पामवो **निव्विज्ज्** (निर्+विद्य)
निश्चल **निच्चल** वि. (निश्चल)
निकळवुं **निस्सर्, नीहर्** (निस्सर्)
नीति **नाय** पु. (न्याय) **नय** पु. (सम) **नीइ** स्त्री. (नीति)
नीतिशास्त्र **नीइसत्थ** न. (नीतिशास्त्र)
नृत्य **नच्च** न. (नृत्य)
नेत्र **नेत्त** पु.त्रन. (नेत्र)
नेमि जिनेश्वर **नेमि** पु. (सम)
न्याय **नाय** पु. (न्याय)
न्यायमार्ग **नायमग्ग** पु. (न्याय-मार्ग)

प

पकडवुं **गिण्ह्** (ग्रह्)
पक्षी **पक्खि** पु. (पक्षिन्)
पछी **पच्छा** अ. (पश्चात्)
पंडित **अहिण्णु** वि. (अभिज्ञ)
पंडिअ पु. (पण्डित) **बुह** पु. (बुध)
पडेलुं **पडिअ** क. भू. (पतित)
पण **अवि, पि, वि.** अ. (अपि) **किंतु** अ. (सम)
पथ्य **पच्छ** वि. (पथ्य)
परलोक **परलोअ, परलोग** पु. (परलोक)
परम **परम** वि. (सम)
परस्त्री **परदारा** स्त्री. (सम)
परस्पर **अण्णण्ण, अण्णोण्ण, अण्णमण्ण, अण्णुण्ण** वि. (अन्योऽन्य)
परीक्षा करवी **परिक्ख्, परिच्छ्** (परि+ईक्ष्)
परोपकारी **परोवयारि** वि. (परोपकारिन्)
पर्याय **पज्जाय** पु. (पर्याय)
पळाववुं **रक्खाव, पालाव** प्रे० (रक्षय्–पालय्)
पवन **पवण** पु. (पवन) **वाउ** पु. (वायु)
पर्वत **पव्वय, गिरि** पु. (पर्वत–गिरि)
पर्षदा **परिसा** स्त्री. (पर्षद्–परिषद्)
पशु **पसु** पु. (पशु)
पश्चात्ताप **पच्छायाव** पु. (पश्चात्ताप)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पसंद पडवुं **रुच्च्, रोय्** (रुच्)
प्रहर **जाम, पहर** पु. (याम–प्रहर)
पहेलां **पुरं–पुरा** अ. (पुरस्–पुरा)
पाकेलुं **पक्क** वि. (पक्व)
पाठशाला **पाढसाला** स्त्री. (पाठशाला)
पाणी **जल** न. (सम) **वारि** न. (सम) **उदग–दग** न. (उदक)
पाप **पाव** न. (पाप) **दुरिअ** न. (दुरित)
पापी **पाव** पु. (पाप)
पामवुं **पाव्** (प्र+आप्)
पार पामवुं **पारंगच्छ्** (पारङ्गच्छ्)
पाळवुं **पाल्** (पालय्)
पाळनार **पालग** वि. (पालक)
पालन करातुं **पालिज्जंत** कर्म. व. (पाल्यमान)
पिता **पिअर, पिउ** पु. (पितृ) **जणअ** पु. (जनक)
पीडवुं **पील्, पीड्** (पीडय्)
पीवुं **पा, पिव्** (पा–पिव्)
पुत्र **पुत्त** पु. (पुत्र) **सुअ** पु. (सुत)
पुरुष **पुरिस** पु. (पुरुष) **माणव** पु. (मानव) **जण** पु. (जन)
पुष्प **पुप्फ** न. (पुष्प)
पुस्तक **पुत्थय, पोत्थय** पु. न. (पुस्तक) **गंथ** पु. (ग्रन्थ)
पूछवुं **पुच्छ्** (पृच्छ्)
पूजन **अच्चण** न. (अर्चन)
पूजवुं **अच्च्** (अर्च्)
पृथ्वी **पुढवी, पुहवी** स्त्री. (पृथिवी) **पिच्छी** स्त्री (पृथ्वी)
पेदा करवुं **अज्ज्** (अर्जय्–अर्ज्)
पोतानुं **निअ** वि. (निज) **अप्पकेर** वि. (आत्मीय)
प्रकाश **पयास** पु. (प्रकाश)
प्रकाशवुं **प–यास्** (प्र+काश्)
प्रकाशनार **पयासग** वि. (प्रकाशक)
प्रजा **पया** स्त्री. (प्रजा)
प्रतिमा **पडिमा** स्त्री. (प्रतिमा)
प्रतिक्रमण **पडिक्कमण** न. (प्रतिक्रमण)
प्रद्युम्न **पज्जुण्ण** पु. (प्रद्युम्न)
प्रभाव **पहाव** पु. (प्रभाव)
प्रभात **पच्चूस–ह** पु. (प्रत्यूष)
प्रभातमां **पए** अ. (प्रगे)
प्रभु **पहु** पु. (प्रभु)
प्रमाद **पमाय** पु. (प्रमाद)
प्रयोग **पओग** पु. (प्रयोग)
प्रवृत्ति करवी **पवट्ट्, पयट्ट्** (प्र+वर्त्)
प्रवेश करवो **प–विस्** (प्र+विश्)
प्रश्न **पण्ह** पु. (प्रश्न)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत व्याकरण **पाइअवागरण** न. (प्राकृतव्याकरण)

प्राण **पाण** पु. न. बहुवचनमां (प्राण)

प्राणान्त **जीवियंत** पु. (जीवितान्त)

प्राणी **पाणि** पु. (प्राणिन्) **जंतु** पु. (जन्तु)

प्राप्ति **पत्ति** स्त्री. (प्राप्ति)

प्रिय **पिय** वि. (प्रिय)

प्रीति **पीइ** स्त्री. (प्रीति)

फ

फल **फल** न. (सम)

फाडवुं **फाड्, फाल्** (पाटय)

फेंकवुं **खिव्** (क्षिप्)

फोगट **मुहा** अ. (मुधा) **मोरउल्ला** अ. (दे)

ब

बचाववुं **रक्ख्** (रक्ष्)

बधुं **सयल** वि. (सकल) **सव्व** वि. (सर्व)

बंधन **बंधण** न. (बन्धन)

बंधु **बंधु** पु. (बन्धु)

बहार **बाहिं, बाहिरं** अ. (बहिस्)

बहु **बहु, बहुअ** वि. (बहु) **अईव** अ. (अतीव)

बहेन **बहिणी, भगिणी** स्त्री. (भगिनी)

बहेरो **बहिर** वि. (बधिर)

बाग **उज्जाण** न. (उद्यान)

बाळक **बाल** पु. (सम)

बाळवुं **डह्** (दह्)

बारणुं **दुआर, दार, बार** न. (द्वार)

बीजुं **अन्न** वि. (अन्य)

बुद्धि **बुद्धि** स्त्री. (सम)

बुद्धिशाली **मइमंत** वि. (मतिमत्)

बेसवुं **उव-विस्** (उप+विश्)

बोध पामवो **बुज्झ्** (बुध्-बुध्य)

बोधि **बोहि** स्त्री. (बोधि)

ब्रह्मचर्य **बम्हचेर, बम्हचरिय बंभचेर** न. (ब्रह्मचर्य)

ब्राह्मण **माहण, बंभण** पु. (ब्राह्मण)

भ

भगवान **भगवंत, भयवंत** पु. (भगवत्)

भगवती अंग **भगवई-अंग** न. (भगवती-अङ्ग)

भजवुं **सेव्** (सम)

भणवुं **भण्, पढ्** (भण्, पठ्)

भमर **भसल, भमर** पु. (भ्रमर)

भमवुं **भम्** (भ्रम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भय **भय** न. (सम)
भय पामवुं **बीह्** (भी)
भरतक्षेत्र **भरहखेत्त** न. (भरतक्षेत्र)
भरवुं **भर्** (भृ-भर्)
भव्यजीव **भव्वजीव** पु. (भव्यजीव)
भसवुं **भस्, बुक्क्** (भष्)
भाई **भायर, भाउ** पु. (भ्रातृ)
भाव **भाव** पु. (सम)
भिक्षु **भिक्खु** पु. (भिक्षु)
भूल **खलिअ** न. (स्खलित)
भेटणुं **पाहुड** न. (प्राभृत)
भोग **भोग** पु. न. (सम)
भोगववुं **भुंज्** (भुञ्ज्)
भोजन **भोयण** न. (भोजन)

म

मकान **पासाअ** पु. (प्रासाद) **घर** न. (गृह)
मंगल **मंगल** न. (सम)
मदद **साहज्ज, साहेज्ज** न. (साहाय्य)
मंदिर **मंदिर** न. (सम) **चेइअ, चइत्त** न. (चैत्य)
मध **महु** न. (मधु)
मध्य **मज्झ** न. (मध्य)
मंत्र **मंत** पु. न. (मन्त्र)
मंत्री **मंति** पु. (मन्त्रिन्)
मरण **मरण** न. (सम)
मर्यादा **मज्जाया** स्त्री. (मर्यादा)
महात्मा **महप्प** पु. (महात्मन्)
महामंत्री **महामंति** पु. (महामन्त्रिन्)
महोत्सव **महोच्छव, महूसव, महोसव** पु. (महोत्सव)
मागवुं **जाय्** (याच्)
माछलुं **मच्छ** पु. (मत्स्य)
माटे **कए, कएण, कएणं** अ. (कृते)
माणस **जण** पु. (जन) **मणूस** पु. (मनुष्य)
माता **मायरा, माउ** स्त्री. (मातृ)
माथुं **मत्थय** (मस्तक) **सिर** न. (शिरस्) **सीस** पुन. (शीर्ष)
मांदुं **रुक्ण, रुग्ग** वि. (रुग्ण)
मान **माण** पु. (मान)
मानवुं **मन्न्** (मन्य)
माया **माया** स्त्री. (सम)
मारवुं **ताड्, ताल्** (ताडय्)
मार्ग **मग्ग** पु. (मार्ग)
माळा **माला** स्त्री. (सम)
मांस **मास, मंस** न. (मांस)
मित्र **मित्त** पु. न. (मित्र)
मिथ्या **मिच्छा** अ. (मिथ्या)
मुक्त **मुक्क, मुत्त** वि. (मुक्त)
मुख **मुह** न. (मुख)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुंगुं **मूग, मूअ** वि. (मूक)
मुंझायेल **विहलिअ, विहल** वि. (विह्वलित–विह्वल)
मुंझावुं **मुज्झ्** (मुह्य)
मुनि **मुणि** पु. (मुनि)
मुसाफर **पहिअ** पु. (पथिक)
मूर्ख **मुक्ख, मुरुक्ख** पु. (मूर्ख)
मृत्यु **मच्चु** पु. (मृत्यु)
मेघ **मेह** पु. (मेघ)
मेळववुं **लह्** (लभ्)
मेरु पर्वत **मेरु** पु. (सम) **मदर** पु. (सम)
मोक्ष **मोक्ख, मुक्ख** पु. (मोक्ष)
मोक्षपद **मोक्खपय** न. (मोक्षपद)
मोर **मोर** पु. (मयूर)

य

यतिधर्म **जइधम्म** पु. (यतिधर्म)
यंत्र **जंत** न. (यन्त्र)
युद्ध **जुद्ध** न. (युद्ध)
योगी **जोगि** पु. (योगिन्)

र

रक्षण करवुं **रक्ख्** (रक्ष्)
रक्षण **रक्खण** न. (रक्षण)
रचवुं **रय्** (रचय्)
रजा **अणुण्णा** स्त्री. (अनुज्ञा)
रस्तो **मग्ग** पु. (मार्ग)
रहित **रहिअ** वि. (रहित)
विरहिअ वि. (विरहित)
रहेवुं **वस्** (सम)
रहेवुं **वसण** न. (वसन)
राक्षस **रक्खस** पु. (राक्षस)
राख **भप्प, भस्स** पु.न. (भस्मन्)
राग **राग** पु. (सम)
राजा **नरिंद, नरेंद** (नरेन्द्र) **निवइ** पु. (नृपति)
राज्य **रज्ज** न. (राज्य)
राणी **महिसी** स्त्री. (महिषी)
रात्रि **राइ, रत्ति** स्त्री. (रात्रि)
रिंछ **रिच्छ, रिक्ख** पु. (ऋक्ष)
रिद्धि **रिद्धि, इड्ढि** स्त्री. (ऋद्धि) **समिद्धि, सामिद्धि** स्त्री. (समृद्धि)
रुक्मिणी **रुप्पिणी** स्त्री. (रुक्मिणी)
रूपुं **रयय** न. (रजत)

ल

लई जवुं **ने** (नी)
लक्षण **लक्खण** न. (लक्षण)
लक्ष्मण **लक्खण** पु. (लक्ष्मण)
लक्ष्मी **लच्छी** स्त्री. (लक्ष्मी)
लज्जा पामवी **लज्ज्** (सम)
लडवैयो **भड** पु. (भट) **वीर** पु. (वीर)
लडवुं **जुज्झ्** (युध्–युध्य)
लता **लया** स्त्री. (लता)
लाववुं **आ–णे** (आ+नी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लुच्चो **सढ** (शठ)
लेख **लेह** पु. (लेख)
लोक **लोग, लोअ** पु. (लोक)
जण पु. (जन)
लोटवुं **पलोट्ट्** (प्र+लुठ्)
लोभ **लोह** पु. (लोभ)
लोभी **लोद्धअ** पु. (लुब्धक)

व

वखत **समय** पु. (सम) **काल** पु. (सम)
वचन **वयण** पु. न. (वचन)
वडील **गुरु, गुरुअ** वि. (गुरु)
वंदन करवुं **वंद्** (वन्द्)
वंदायेल **वंदिअ** क. भू. (वन्दित)
वध करवो **हिंस्** (सम)
वधवुं **वड्ढ्** (वर्ध्)
वन **रण्ण, अरण्ण** न. (अरण्य)
वण न. (वन)
वनस्पति **वणस्सइ, वणप्फइ** स्त्री. (वनस्पति)
वरसवुं **वरिस्** (वर्ष्)
वरसाद **वरिस, वास** पु. न. (वर्ष)
वर्जवुं **वज्ज्** (वर्ज्)
वर्ष **वरिस, वास** पु. न. (वर्ष)
वर्षधर **वासहर** पु. (वर्षधर)
वसती **वसहि, वसइ** स्त्री. (वसति)
वसंत ऋतु **वसंत** पु. **वसंतरिउ** स्त्री. (वसन्त-ऋतु)
वस्त्र **वत्थ** न. (वस्त्र)
वहु **वहू** स्त्री. (वधू)
वहेलुं **पुव्व-पढम** वि. (पूर्व-प्रथम)
वाघ **वग्घ** पु (व्याघ्र)
वाचाल **मुहर** वि. (मुखर)
वाणी **वाणी** स्त्री. (सम) **वाया** स्त्री. (वाच्-वाचा)
वात्सल्य **वच्छल्ल** न. (वात्सल्य)
वांदरो **कवि** पु. (कपि)
वादळ **मेह** पु. (मेघ)
वार्ता **वत्ता** स्त्री. (वार्ता)
वासुदेव **वासुदेव** पु. (सम)
विगेरे **आइ** पु. (आदि)
विचार करवो **मरिस्** (मृश्) **मंत्** (मन्त्रंय्)
विद्याधर **विज्जाहर** पु. (विद्याधर)
विद्यार्थी **विज्जत्थि** पु. (विद्यार्थिन्)
विद्वान **विउस** वि. (विद्वस्)
विधाता **धायार, धाउ** पु. (विधाता)
विधि **विहि** पु. (विधि)
विनय **विणय** पु. (विनय)
विना **विणा** अ. (विना)
विपरीत **विवरीअ, विवरिअ** वि. (विपरीत)
विमान **विमाण** पु. न. (विमान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वियोग **विओग** पु. (वियोग)

विराजित **विराजिअ** क. भू. (विराजित)

विरुद्ध **विरुद्ध** वि. (सम)

विवाद **विवाय** पु. (विवाद)

विश्रान्ति लेवी **वीसम्, विस्सम्** (वि+श्रम्)

विश्वास राखवो **वीसस्, विस्सस्** (वि+श्वस्)

विष **विस** पु. न. (विष)

विहार करवो **वि-हर्** (वि+हृ)

विह्वल **विब्भल, विहल** वि. (विह्वल)

वीतराग **वीयराग** पु. (वीतराग)

वीर **वीर पु.** (सम)

वृद्धपणुं **वुड्ढत्तण** न. (वृद्धत्व)

वृष्टि करवी **वरिस्** (वर्ष्)

वेचवुं **विक्किण्, विक्क** (वि+क्री)

वेदना **वेयणा, वियणा** स्त्री. (वेदना)

वेश्या **वेसा** स्त्री. (वेश्या)

वैद्य **वेज्ज** पु (वैद्य)

वैयावच्च **वेआवच्च** न. (वैयावृत्य)

वैराग्य **वेरग्ग** पु. (वैराग्य)

व्याकरण **वागरण, वायरण, वारण** न. (व्याकरण)

व्याख्यान **वक्खाण** न. (व्याख्यान)

व्याधि **वाहि** पु (व्याधि)

व्यापार **वावार** पु. (व्यापार)

व्रत **वय** पु. न. (व्रत)

श

शत्रु **सत्तु** पु. (शत्रु) **रिउ** पु. (रिपु)

शब्द **सद्द** पु. (शब्द)

शयन **सज्जा-सेज्जा** स्त्री (शय्या)

शरणुं **सरण** न. (शरण)

शरीर **शरीर** न (शरीर) **देह** पु. न. (देह)

शरु करवुं **आ-रंभ्, आरभ्, आढव्** (आ+रभ्)

शस्त्र **सत्थ** न. (शस्त्र)

शान्ति **संति** स्त्री. (शान्ति)

शान्ति जिन **संति** पु. (शान्ति)

शा माटे **किं** (किम्)

शिखर **सिहर** न. (शिखर)

शियाळ **सिगाल** पु. (शृगाल)

शिष्य **सीस** पु. (शिष्य)

शील **सील** न. (शील)

शुभकर्म **सुह** न. (शुभ)

शोधवुं **मग्ग्** (मार्गय्)

शोभवुं **सोह्** (शोभ्) **वि-राय्** (वि+राज्)

श्मशान **सुसाण, मसाण** न. (श्मशान)

श्रद्धा **सद्धा, सड्ढा** स्त्री. (श्रद्धा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धा राखवी **सद्दह्** (श्रद्+धा)
श्रवण **सवण** न. (श्रवण)
श्रावक **सावग** पु. (श्रावक)
श्रेष्ठ **मह, महंत** वि. (महत्)

स

संघ **संघ** पु. (सम)
संचय करवो **सं-चिण्** (सं+चि)
संतोष **संतोस** पु. (सन्तोष)
संयम **संजम** पु. (संयम)
संसार **संसार** पु. (सम)
संसारचक्र **संसारचक्क** न. (संसार-चक्र)
सखी **सही** स्त्री. (सखी)
सज्जन **सज्जण** पु. (सज्जन)
सत्य **सच्च** न. (सत्य)
सत्यमार्ग **सच्चमग्ग** पु. (सत्यमार्ग)
सत्यवादी **सच्चवय** वि. (सत्यवद्)
सफळ **सहल, सभल** वि. (सफल)
सभा **सहा** स्त्री. (सभा)
समर्थ **समत्थ** वि. (समर्थ)
समवसरण **समोसरण, समवसरण** न. (समवसरण)
समाधि **समाहि** स्त्री. (समाधि)
समान **समाण** वि. (समान) **सरिस** वि. (सदृश) **सरिच्छ, सरिक्ख** वि. (सदृक्ष)
समुदाय **विंद, वुंद** पु. न. (वृन्द) **वग्ग** पु. (वर्ग)
समुद्र **समुद्द** पु. (समुद्र) **सागर** पु. (सम)
सम्यक्त्व **सम्मत्त** न. (सम्यक्त्व) **दंसण** न. (दर्शन)
सरस्वती **सरस्सई** स्त्री. (सरस्वती)
सरोवर **सर** पु. न. (सरस्)
सर्प **सप्प** पु. (सर्प)
सर्वज्ञ **सव्वण्णु** वि. (सर्वज्ञ)
सर्व ठेकाणे **सव्वत्थ, सव्वहि, सव्वह** अ. (सर्वत्र)
सर्वथी मोटुं **जेट्ठ, जिट्ठ** वि. (ज्येष्ठ)
सहन करवुं **खम्** (क्षम्) **सह्** (सम)
सांभळवुं **सुण्** (श्रु)
सांभळीने **सुणिऊण** सं.भू. (श्रुत्वा)
साक्षात् **पच्चक्ख** वि. (प्रत्यक्ष) **सक्खं** अ. (साक्षात्)
साथे **सह** अ. (सम) **सद्धिं** अ. (सार्धम्)
साधर्मिक **साहम्मिअ** वि. (साधर्मिक)
साधु **साहु** पु. (साधु) **भिक्खु** पु. (भिक्षु) **जइ** पु. (यति) **समण** पु. (श्रमण)
सारी रीते **सुट्ठु** अ. (सुष्ठु) **सम्मं** अ. (सम्यक्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारो वैद्य **सुविज्ज** पु. (सुवैद्य)
सिंह **सिंघ, सीह** पु. (सिंह)
सिद्ध **सिद्ध** पु. (सम)
सिद्ध थवुं **सिज्झ्** (सिध्य)
सिद्धराज **सिद्धराय** पु. (सिद्धराज)
सिद्धहेम **सिद्धहेम** न. (सिद्धहेम)
सिद्धाचल **सेत्तुंज** पु. (शत्रुञ्जय)
सिद्धगिरि पु. (सम)
सिवाय **विणा** अ. (विना)
सुंघवुं **आइग्घ्** (आ+घ्रा)
सुंदर **सोहण** वि. (शोभन)
मणोज्ज-मणोण्ण वि. (मनोज्ञ)
सुकावुं **सूस्, सुस्स्** (शुष्य)
सुख **सुह** न. (सुख)
सुखपूर्वक **सुहेण** (सुखेन) तृ. ए.
सुखी **सुहि** वि. (सुखिन्)
सूत्र **सुत्त** न. (सूत्र) **सुअ** न.
(श्रुत) **सत्थ** न. (शास्त्र)
सुवर्ण **सुवण्ण** न. (सुवर्ण)
सेना **सेणा** स्त्री. (सेना)
सेवा **सेवा** स्त्री. (सम)
सोनी **सुवण्णगार** पु. (सुवर्णकार)
सोनुं **हेम** न. (हेमन्)
स्तुति **थुइ** स्त्री. (स्तुति)
स्तुति करवी **थुण्** (स्तु)
स्त्री **इत्थी, थी** स्त्री. (स्त्री)
स्तोत्र **थोत्त** न. (स्तोत्र)
स्थिर **थिर** वि. (स्थिर)
स्नेह **नेह, सिणेह** पु. (स्नेह)
स्वप्न **सिमिण, सिविण, सुमिण,**
सुविण पु. न. (स्वप्न)
स्वर्ग **सग्ग** पु. (स्वर्ग)
स्वाध्याय **सज्झाय** पु. (स्वाध्याय)
स्वामी **सामि** पु. (स्वामिन्)

ह

हणवुं **हण्** (हन्)
हणायेल **हय** क. भू. (हत)
हमणां **अहुणा** अ. (अधुना)
हंमेश **सइ, सया** अ. (सदा)
हरवुं **हरण** न. (सम)
हलकुं **लहु, लहुअ** त्रि. (लघु)
तुच्छ वि. (सम)
हाथ **हत्थ** पु. (हस्त)
हाथी **हत्थि** पु. (हस्तिन्)
हार **हार** पु. (सम)
हित **हिअ** वि. (हित)
हुकम करवो **आ-दिस्** (आ+दिश्)
हृदय **हिअय, हिअ** न. (हृदय)
हेमचंद्रसूरी **हेमचंदसूरि** पु.
(हेमचन्द्रसूरिन्)
होंशियार **अहिण्णु** वि. (अभिज्ञ)
निउण वि. (निपुण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिशिष्ट. १

संधिना नियमो

स्वरसंधि.

(१.) प्राकृतमां भिन्न भिन्न बे पदोना स्वरोनी संधि विकल्पे थाय छे. आ बे पदो सामासिक होवा जोइए. कोई ठेकाणे असामासिक बे पदोमां पण संधि थाय छे. (प्राकृतमां ज्यां संधि थाय छे, त्यां संस्कृतना नियम प्रमाणे संधि करवी, एटले के सजातीय स्वर पछी सजातीय स्वर आवे तो बंने स्वरो मळी जइ दीर्घ स्वर थाय छे. तेमज अ के आ पछी ह्रस्व के दीर्घ इ के उ आवे तो बे स्वरोने बदले पछीना स्वरोनो गुण थाय छे.) (टिप्पण ६.)

अ+अ=आ–नयराहिवो, नयरअहिवो (नगराधिपः).
अ+आ=आ–विसमायवो, विसमआयवो (विषमातपः).
आ+अ=आ–पूयावसरो, पूयाअवसरो (पूजावसरः).
आ+आ=आ–गंगाणणं, गंगाआणणं (गङ्गाननम्).
इ+इ=ई–अरीसू, अरिइसू (अरीषुः).
इ+ई=ई–मुणीसो, मुणिईसो (मुनीशः).
ई+इ=ई–पुहवीणो, पुहवीइणो (पृथिवीनः).
ई+ई=ई–पुहवीसरो, पुहवीईसरो (पृथिवीश्वरः).
उ+उ=ऊ–भाणूदओ, भाणुउदओ (भानूदयः).
उ+ऊ=ऊ–गुरूसाहो, गुरुऊसाहो (गुरूत्साहः).
ऊ+उ=ऊ–सासूवयारो, सासूउवयारो (श्वश्रूपकारः).
ऊ+ऊ=ऊ–वहूसवो, वहूऊसवो (वधूत्सवः).
अ+इ=ए–वासेसी, वासइसी (व्यासर्षिः).

---

(१) पदयोः सन्धिर्वा ॥ १-५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ+ई=ए-**नरेसो, नरईसो** (नरेशः).

आ+इ=ए-**महेसी, महाइसी** (महर्षिः).

आ+ई=ए-**महेसरो, महाईसरो** (महेश्वरः).

अ+उ=ओ-**गूढोअरं, गूढउअरं** (गूढोदरम्).

अ+ऊ=ओ-**वसंतोसवो, वसन्तऊसवो** (वसन्तोत्सवः).

आ+उ=ओ-**गंगोदगं, गंगाउदगं** (गङ्गोदकम्).

आ+ऊ=ओ-**महोसवो, महाऊसवो** (महोत्सवः).

असमासमां—**इहावेक्खइ, इह अवेक्खइ** (इहापेक्षते).

तत्थागओ, तत्थ आगओ (तत्रागतः).

(२) एक ज पदमां बे स्वरो साथे आवे तो संधि थती नथी. जेम **हसइ, हसेइत्था, देवाओ.** पण केटलेक ठेकाणे एक ज पदमां संधि थाय छे. (टि. ६.)

होहिइ, होही (भविष्यति).	दाहिइ, दाही (दास्यति).
काहिइ, काही (करिष्यति).	बिइओ, बीओ (द्वितीयः).

(३) समासमां स्वरोनुं ह्रस्व अने दीर्घविधान एटले ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर प्रयोगने अनुसारे थाय छे. (कोई ठेकाणे नित्य अने कोई ठेकाणे विकल्पे थाय छे). (टि. ८३.)

ह्रस्वनो दीर्घ—**अंतावेई** (अन्तर्वेदिः).

सत्तावीसा (सप्तविंशतिः).

पईहरं, पइहरं (पतिगृहम्).

वारीमई, वारिमई (वारिमती).

वेलूवणं, वेलुवणं (वेणुवनम्).

दीर्घनो ह्रस्व—**जँउणयडं, जँउणायडं** (यमुनातटम्).

गोरिहरं, गोरीहरं (गौरीगृहम्).

---

(२) क्वचिद् एकपदेऽपि (वृत्तौ) १-५ । (३) दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ ॥ १-४.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नइसोत्तं, नईसोत्तं (नदीश्रोत.).

वहुमुहं, वहूमुहं (वधूमुखम्).

(४) ह्रस्व के दीर्घ **इ–ई** के **उ–ऊ** पछी विजातीय स्वर आवे तो संधि थाय नहि, तेमज **ए** के **ओ** पछी कोईपण स्वर आवे तो संधि थती नथी. (टि. १३. ८२.).

वंदामि, अज्जवइरं (वन्दामि–आर्यवज्रम्).
पहावलिअरुणो (प्रभावल्यरुणः).
वहूअवगूढो (वध्वावगूढः).
नहुल्लिहणे आबंधंतीइ (नखोल्लेखने–आबध्नन्त्याः).
जिणे आगच्छइ (जिनः आगच्छति).
आलक्खिमो एण्हिं (आलक्षयामह इदानीम्).
अहो अच्छरिअं (अहो आश्चर्यम्).

(५) 'इ' आदि पुरुषबोधक प्रत्यय पछी स्वर आवे तो संधि थाय नहि. (टि. २३.).

होइ इह (भवति–इह).

(६) व्यंजन सहित स्वरमांथी व्यंजननो लोप थये छते शेष स्वरनी पूर्वना स्वर साथे संधि थाय नहि. कोई ठेकाणे संधि देखवामां पण आवे छे. (टि. २५.).

निशाअरो (निशाचरः).
रयणिअरो (रजनिचरः).
पयावई (प्रजापतिः).
कुंभआरो, कुंभारो (कुम्भकारः).
सुउरिसो, सूरिसो (सुपुरुषः).
लोहआरो, लोहारो (लोहकारः).

---

(४) न युवर्णस्यास्वे ॥ १–६ । एदोतोः स्वरे ॥ १–७ ।
(५) त्यादेः ॥ १–९ । (६) स्वरस्योद्वृत्ते ॥ १–८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७) स्वर पर छतां पूर्वना स्वरनो प्रयोगने अनुसारे प्रायः लोप थाय छे. (पाठ २. नि. २)

तिअसीसो (त्रिदशेशः), **दिणीसरो** (दिनेश्वरः).
नीसासूसासा (निःश्वासोच्छ्वासौ), **जिणिंदो** (जिनेन्द्रः).

(८) '**त्यद्**' आदि सर्वनाम अने अव्ययनी पछी आवेला **त्यद्** आदि सर्वनाम के अव्ययना आदिस्वरनो प्रायः लोप थाय छे. (टि. ५८.).

अम्हे+एत्थ=अम्हेत्थ (वयमत्र). **सो+इमो=सोमो** (सोऽयम्).
जइ+अहं=जइहं (यद्यहम्). **अज्ज+एत्थ=अज्जत्थ** (अद्यात्र).

(९) **अपि** (अवि) अव्यय कोई पण पदनी पछी आवे तो तेना आदिनो '**अ**' विकल्पे लोपाय छे. (टि. ४०.).

तं+अपि=तंपि, तमवि (तदपि).
किं+अपि=किंपि, किमवि (किमपि).
केण+अवि=केणवि, केणावि (केनापि).
कहं+अपि=कहंपि, कहमवि (कथमपि).

(१०) पदान्तमां स्वरनी पछी '**इति**' ने बदले '**त्ति**' मुकाय छे, पण पदान्ते स्वर न होय तो '**ति**' मुकाय छे, तेमज वाक्यनी आदिमां **इति** ने बदले '**इअ**' मुकाय छे. (टि. ५६.).

तह+इति=तहत्ति (तथेति).
पिओ+इति=पिओत्ति, पिउत्ति (प्रिय इति).

---

(७) लुक् ॥ १–१० । (८) त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् ॥ १–४० ।
(९) पदादपेर्वा ॥ १–४१
(१०) इतेः स्वरात् तश्च द्विः ॥ १–४२. इतौ तो वाक्यादौ ॥ १–९१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुत्तं+इति=जुत्तंति (युक्तमिति). किं+इति=किंति (किमिति).
इअ विअसिअकुसुमसरो (इति विकसित–कुसुमशरः)

व्यंजनसंधि.

(११) 'अ' नी पछी विसर्ग आवे तो पूर्वना स्वर सहित 'ओ' थाय, तेम ज तस् प्रत्ययने स्थाने 'त्तो–दो' विकल्पे थाय छे. (टि. ७३).

सव्वओ (सर्वतः). पुरओ (पुरतः)
मग्गओ (मार्गतः). भवओ (भवतः). संतो (सन्तः).
तओ, तत्तो, तदो (ततः). जओ, जत्तो, जदो (यतः).
कओ, कत्तो, कदो, कुओ, कुदो (कुतः) अन्नओ, अन्नत्तो, अन्नदो (अन्यतः).

(१२) (अ) पदान्तमां 'म्' होय तो पूर्व अक्षर उपर अनुस्वार थाय छे. तेम ज ते 'म्' नी पछी स्वर आवे तो अनुस्वार विकल्पे थाय छे. ज्यारे अनुस्वार न थाय त्यारे 'म्' मां पछीनो स्वर मळी जाय छे. (पा. ७. नि. २.).

देवं (देवम्). नाणं (ज्ञानम्).
उसभं अजिअं च वंदे–उसभमजिअं च वंदे (ऋषभमजितं च वन्दे).

(आ) कोई ठेकाणे अन्त्य व्यंजननो पण अनुस्वार थाय छे.

सक्खं (साक्षात्). जं (यत्). तं (तत्).
वीसुं (विष्वक्). पिहं (पृथक्). सम्मं (सम्यक्).

(१३) शब्दनी अंदर रहेला ङ्–ञ्–ण्–न् नो अनुस्वार थाय छे. (टि. ८.).

ङ–पंती (पङ्क्तिः) परंमुहो (पराङ्मुखः).

---

(११) अतो डो विसर्गस्य ॥ १–३७ । त्तो दो तसो वा ॥ २–१६० ।
(१२) मोऽनुस्वारः ॥ १–२३ । वा स्वरे मश्च ॥ १–२४ ।
(१३) ङ–ञ–ण–नो व्यञ्जने ॥ १–२५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ञ्–कंचुओ (कञ्चुकः). लंछणं (लाछञ्नम्).
ण्–छंमुहो (षण्मुखः). उक्कंठा (उत्कण्ठा).
न्–संझा (सन्ध्या). विंझो (विन्ध्यः).

(१४) 'वक्र' आदि शब्दोमां प्रथमस्वर–द्वितीयस्वर अने तृतीयस्वर उपर प्रयोगानुसारे (नित्य के विकल्पे) अनुस्वार थाय छे.

प्रथमस्वर उपर–वंकं (वक्रम्). अंसु (अश्रु). तंसं (त्र्यस्रम्). दंसणं (दर्शनम्). विंछिओ (वृश्चिकः). मंजारो / मज्जारो (मार्जारः)

द्वितीयस्वर उपर–वयंसो (वयस्यः). मणंसी (मनस्विन्)

तृतीयस्वर उपर–अवरिं (उपरि). अणिउंतयं / अइमुंतयं / अइमुत्तयं (अतिमुक्तकम्).

(१५) शब्दनी अंदर रहेला अनुस्वारनो वर्गीय व्यंजन पर छतां ते वर्गनो अनुनासिक विकल्पे थाय छे. (टि. ३७.).

ङ्–पंको, पङ्को (पङ्कः). संखो, सङ्खो (शङ्खः).
अंगणं, अङ्गणं (अङ्गनम्). लंघणं, लङ्घणं (लङ्घनम्).

ञ्–कंचुओ, कञ्चुओ (कञ्चुकः). लंछणं, लञ्छणं (लाञ्छनम्).
अंजिअं, अञ्जिअं (अञ्जितम्). संझा, सञ्झा (सन्ध्या).

ण्–कंटओ, कण्टओ (कण्टकः). उक्कंठा, उक्कण्ठा (उत्कण्ठा).
कंडं, कण्डं (काण्डम्). संढो, सण्ढो (षण्ढः).

न्–अंतरं, अन्तरं (अन्तरम्). पंथो, पन्थो (पान्थः).
चंदो, चन्दो (चन्द्रः). बंधवो, बन्धवो (बान्धवः).

म्–कंपइ, कम्पइ (कम्पते). वंफइ, वम्फइ (काङ्क्षति).
कलंबो, कलम्बो (कदम्बः). आरंभो, आरम्भो (आरम्भः).

---

(१४) वक्रादावन्तः ॥ १–२६ । (१५) वर्गेऽन्त्यो वा ॥ १–३० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत शब्दो उपरथी

प्राकृतमां थता सामान्य स्वरोना फेरफारो.

दीर्घस्वरनो ह्रस्वस्वर

(१६) संस्कृत शब्दनी अंदर संयुक्त व्यंजननी पूर्वे दीर्घस्वर होय तो प्राकृतमां प्रायः ह्रस्व थाय छे. एटले के संयुक्त व्यंजननी पूर्वे 'आ' नो अ, 'ई' नो इ, 'ऊ' नो उ, 'ए' नो इ, 'ओ' नो उ थाय छे. (टि. ११.).

आ=अ-अंबं (आम्रम्). तंबं (ताम्रम्). अस्सं (आस्यम्).
ई=इ-मुणिंदो (मुनीन्द्रः). तित्थं (तीर्थम्).
ऊ=उ-गुरुल्लावो (गुरूल्लापः). चुण्णो (चूर्णः).
ए=इ-नरिंदो (नरेन्द्रः). मिलिच्छो (म्लेच्छः).
ओ=उ अहरुट्ठो (अधरोष्ठः). नीलुप्पलं (नीलोत्पलम्).

ह्रस्वस्वरनो दीर्घस्वर.

(१७) य-र-व-श-ष-स ए व्यंजनो श-ष के स नी साथे पूर्व के पछी जोडायेलां होय तो ते व्यंजनोनो नियमानुसारे लोप थाय त्यारे शेष रहेला श-ष-स द्वित्व थता नथी. परन्तु तेनी पूर्वेनो स्वर प्रायः दीर्घ थाय छे. (टि. ४५.).

श्य-आवासयं (आवश्यकम्). पासइ (पश्यति).
श्र-वीसामो (विश्रामः). मीसं (मिश्रम्).
र्श-संफासो (संस्पर्शः).
श्व-आसो (अश्वः). वीससइ (विश्वसिति).
श्श-मणासिला (मनश्शिला). दूसासणो (दुश्शासनः).
ष्य-सीसो (शिष्यः) मणूसो (मनुष्यः).
र्ष-कासओ (कर्षकः) वासो (वर्षः).

---

१६) ह्रस्वः संयोगे ॥ १-८४ ।

(१७) लुप्तय-र-व-श-ष-सां 'श-ष-सां' दीर्घः ॥ १-४३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष्व–वीसुं (विष्वक्).
ष्य–नीसित्तो (निष्षिक्तः).
स्य–सासं (शस्यम्).   कासइ (कस्यचित्).
स्र–वीसंभो (विस्रम्भः)   वीससा (विस्रसा).
स्व–विकासरो (विकस्वरः).   नीसो (निःस्वः)
स्स–नीसहो (निस्सहः).   नीसरइ (निस्सरति).

अपवाद—कोई ठेकाणे आ नियम लागतो नथी, त्यारे ४३ नियमानुसारे शेष रहेल 'श–ष–स' प्रयोगानुसारे द्वित्व थाय छे.

कस्सइ (कस्यचित्),   निस्सरइ (निःसरति).

आ नो अ

(१८) अव्ययोमां तेमज **उत्खात** आदि शब्दोमां अने **घञ्** प्रत्यय निमित्तथी वृद्धि थयेल जे 'आ' तेनो विकल्पे 'अ' थाय छे. (टि. ४६).

अव्ययोमां—जह–जहा (यथा).   तह, तहा (तथा).
अहव–अहवा (अथवा).   व, वा (वा).
ह, हा (हा).

उत्खातादि—

उक्खयं–उक्खायं (उत्खातम्)	चमरो, चामरो (चामरः).
ठविओ, ठाविओ (स्थापितः).	पययं, पाययं (प्राकृतम्).
हलिओ, हालिओ (हालिकः).	कुमरो, कुमारो (कुमारः).

घञ् प्रत्ययान्त—

पवहो, पवाहो (प्रवाहः).	पहरो, पहारो (प्रहारः).
पयरो, पयारो (प्रचारः).	पत्थवो, पत्थावो (प्रस्तावः).

इ नो ए

(१९) संयुक्त व्यंजननी पूर्वे 'इ' होय तो विकल्पे ए थाय छे. (टि. ७४.).

पेण्डं, पिण्डं (पिण्डम्).   सेन्दूरं, सिन्दूरं (सिन्दूरम्).
धम्मेल्लं, धम्मिल्लं (धम्मिल्लम्). वेण्हू, विण्हू (विष्णुः).
कोई ठेकाणे 'ए' थतो नथी चिन्ता (चिन्ता).

---

(१८) वाऽव्ययोत्खातादावदातः ॥ १–६७ । घञ्वृद्धेर्वा ॥ १–६८ ।
(१९) इत एद्वा ॥ १–८५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उ नो ऊ

(२०) **उत्साह** अने **उत्सन्न** शब्द छोडीने जे शब्दोमां '**त्स-च्छ**' होय तो तेनी पूर्वेना 'उ' नो 'ऊ' थाय छे.

ऊसुओ (उत्सुकः).	**ऊसित्तो** (उत्सिक्तः).
ऊसवो (उत्सवः).	
ऊससइ (उच्छ्वसिति).	**ऊसासो** (उच्छ्वासः).
उच्छाहो (उत्साहः).	**उच्छन्नो** (उत्सन्नः).

उ नो ओ

(२१) संयुक्त व्यंजननी पूर्वेना 'उ' नो 'ओ' थाय छे. (टि. ७४.).

तोण्डं (तुण्डम्).	**लोद्धओ** (लुब्धकः).
मोण्डं (मुण्डम्).	**मोग्गरो** (मुद्गरः).
पोक्खरं (पुष्करम्).	**पोग्गलं** (पुद्गलम्).
कोट्टिमं (कुट्टिमम्).	**कोन्तो** (कुन्तः)
पोत्थओ / **पोत्थयं** (पुस्तकम्).	**वोक्कंतं** (व्युत्क्रान्तम्).

ऋ नो अ-रि-इ-उ

(२२) (अ) शब्दनी आदिमां (व्यंजन पछी) 'ऋ' होय तो 'अ' थाय, तेम ज आदिमां केवल 'ऋ' होय तो 'रि' थाय छे. (टि. ५१.).

घयं (घृतम्).	**कयं** (कृतम्).	**मओ** (मृगः).
तणं (तृणम्).	**वसहो** (वृषभः).	**घट्ठो** (घृष्टः).
रिद्धि (ऋद्धिः).	**रिच्छो** (ऋक्षः).	

(आ) '**कृप**' आदि शब्दोमां 'ऋ' नो 'इ' थाय छे.

---

(२०) अनुत्साहोत्सन्ने त्सच्छे ॥ १-११४ ।

(२१) ओत् संयोगे ॥ १-११६ ।

(२२) ऋतोऽत् ॥ १-१२६ । रिः केवलस्य ॥ १-१४० ।

(आ) इत् कृपादौ ॥ १-१२८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किवा (कृपा)	भिंगो (भृङ्गः)	किवाणं (कृपाणम्)
हिययं (हृदयम्)	भिङ्गारो (भृङ्गारः)	विञ्चुओ (वृश्चिकः)
दिट्ठं (दृष्टम्)	सिंगारो (शृङ्गारः)	वित्तं (वृत्तम्)
सिट्ठं (सृष्टम्)	सिआलो (शृगालः)	वित्ती (वृत्तिः)
पिच्छी (पृथ्वी)	घिणा (घृणा)	हिअं (हृतम्)
भिऊ (भृगुः)	घुसिणं (घुसृणम्)	वाहित्तं (व्याहृतम्)
समिद्धी (समृद्धिः)	किच्छं (कृच्छ्रम्)	इसी (ऋषिः)
इद्धी (ऋद्धिः)	निवो (नृप.)	विइण्हो (वितृष्णः)
गिद्धी (गृद्धिः)	किच्चा (कृत्वा)	छिहा (स्पृहा)
किसो (कृशः)	धिई (धृतिः)	सइ (सकृत्)
किसाणू (कृशानुः)	किविणो (कृपणः)	उक्किट्ठं (उत्कृष्टम्)
	निसंसो (नृशंसः)	

(इ.) 'ऋतु' आदि शब्दोमां तेमज सामासिक शब्द अने गौण शब्दमां 'ऋ' नो 'उ' दाय छे.

उऊ (ऋतुः)	निहुअं (निभृतम्)	वुड्ढी (वृद्धिः)
पुट्ठो (स्पृष्टः)	निउअं (निवृतम्)	उसहो (ऋषभः)
पुहई (पृथिवी)	विउअं (विवृतम्)	मुणालं (मृणालम्)
पउत्ती (प्रवृत्तिः)	संवुअं (संवृतम्)	उज्जू (ऋजुः)
पाउसो (पावृष्)	वुत्तन्तो (वृत्तान्तः)	जामाउओ (जामातृकः)
पाउओ (प्रावृतः)	निव्वुअं (निर्वृतम्)	माऊओ (मातृकः)
भुई (भृतिः)	निव्वुई (निर्वृतिः)	माउआ (मातृका)
पहुडी (प्रभृतिः)	वुन्दं (वृन्दम्)	भाउओ (भ्रातृकः)
पाहुडं (प्राभृतम्)	वुन्दावणो (वृन्दावनः)	पिउओ (पितृकः)
परहुओ (परभृतः)	वुड्ढो (वृद्धः)	पुहुवी (पृथ्वी)

माउमंडलं (मातृमण्डलम्).

माउहरं–माउघरं (मातृगृहम्).

(इ)–उद् ऋत्वादौ ॥ १–१३१ । गौणान्त्यस्य ॥ १–१३४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिउहरं-पिउघरं	(पितृगृहम्).
माउसिआ	(मातृष्वसा).
पिउसिआ	(पितृष्वसा).
पिउवणं	(पितृवनम्).
पिउवई	(पितृपतिः).

(२३) 'दृश्' ना 'दृ' नो 'रि' थाय, तेमज **ऋण-ऋजु-ऋषभ-ऋतु-ऋषि** आ शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' विकल्पे थाय छे. (टि. ५१.).

सरिसो (सदृशः). **सरिच्छो** (सदृक्षः). **सरि** (सदृक्). **एआरिसो** (एतादृशः). **एआरिच्छो** (एतादृक्षः). **एयारि** (एतादृक्).

भवारिसो (भवादृशः)
भवारिच्छो (भवादृक्षः)
भवारि (भवादृक्)
जारिसो (यादृशः)
जारिच्छो (यादृक्षः)
जारि (यादृक्)
तारिसो (तादृशः)
तारिच्छो (तादृक्षः)
तारि (तादृक्)
केरिसो (कीदृशः)
केरिच्छो (कीदृक्षः)
केरि (कीदृक्)
एरिसो (ईदृशः)
एरिच्छो (ईदृक्षः)
एरि (ईदृक्)
अन्नारिसो (अन्यादृशः)
अन्नारिच्छो (अन्यादृक्षः)
अन्नारि (अन्यादृक्)
अम्हारिसो (अस्मादृशः)
अम्हारिच्छो (अस्मादृक्षः)
अम्हारि (अस्मादृक्)
तुम्हारिसो (युष्मादृशः)
तुम्हारिच्छो (युष्मादृक्षः)
तुम्हारि (युष्मादृक्)
सरिरूवो (सदृग्रूपः)
सरिवण्णो (सदृग्वर्णः)

रिणं-अणं (ऋणम्).
रिजू-रिऊ-रिज्जू-उज्जू (ऋजुः).

---

(२३) दृशः क्विप्-टक्-सकः ॥ १-१४२ । ऋणर्ज्वृषभर्त्वृषौ वा ॥ १-१४१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिसहो–उसहो (ऋषभः).
रिऊ–उऊ (ऋतुः).
रिसी–इसी (ऋषिः).

(२४) 'ऌ' स्वरनो 'इलि' थाय छे. (पृ० नि. २.).

क्लिलिन्नो (क्लृन्नः). किलित्तो (क्लृप्तः).

ऐ नो ए तथा अइ.

(२५) शब्दनी अन्दर 'ऐ' नो 'ए' थाय तेमज 'दैत्य' आदि शब्दोमां 'अइ' थाय छे. (टि. ६७.).

सेला (शैला)	केलासो (कैलाशः)
सेन्नं (सैन्यम्)	वेज्जो (वैद्यः)
तेलुक्कं (त्रैलोक्यम्)	केढवो (कैटभः)
एरावणो (ऐरावणः)	वेहव्वं (वैधव्यम्)

'दैत्य' आदि शब्दो.

दइच्चो (दैत्यः)	वइदब्भो (वैदर्भः)
सइन्नं (सैन्यम्)	वइस्साणरो (वैश्वानरः)
अइसरिअं (ऐश्वर्यम्)	कइअवं (कैतवम्)
भइरवो (भैरवः)	वइसाहो (वैशाखः)
दइअवं (दैवतम्)	वइसालो (वैशालः)
वइआलीअं (वैतालीयम्)	सइरं (स्वैरम्)
वइएसो (वैदेशः)	चइत्तं (चैत्यम्)
वइएहो (वैदेहः)	

औ नो ओ तथा अउ.

(२६) शब्दनी अन्दर 'औ' नो 'ओ' थाय तेमज 'पोर' आदि शब्दोमां 'अउ' थाय छे. (टि. ६६.).

---

(२४) ऌत इलिः क्लृप्त–क्लृन्ने ॥ १–१४५ ।

(२५) ऐत एत् ॥ १–१४८ । अइर्दैत्यादौ च ॥ १–१५१ ।

(२६) औत ओत् ॥ १–१५९ । अउः पौरादौ च ॥ १–१६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोमुई (कौमुदी) | कोसबी (कौशाम्बी)
जोव्वणं (यौवनम्) | कोंचो (कौञ्चः)
कोत्थुहो (कौस्तुभः) | कोसिओ (कौशिकः)

'पौर' आदि शब्दो.

पउरो (पौरः) | गउडो (गौडः)
कउच्छेअयं (कौक्षेयकम्) | मउली (मौलिः)
कउरवो (कौरवः) | मउणं (मौनम्)
कउसलं (कौशलम्) | सउरा (सौराः)
पउरिसं (पौरुषम्) | कउला (कौलाः)
सउहं (सौधम्)

विशेष—

सुन्देरं (सौन्दर्यम्). दुवारिओ (दौवारिकः)
पुलोमी (पौलोमी). गारवं–गउरवं (गौरवम्)
नावा (नौ) वगेरे थाय छे.

प्राकृतमां थता सामान्य व्यंजनना फेरफारो.

(२७) संस्कृत शब्दना अन्त्य व्यंजननो प्राकृतमां लोप थाय, तेमज सामासिक शब्दोमां प्रयोगने अनुसारे नित्य के विकल्पे लोप थाय छे. (टि. २८).

जाव (यावत्). ताव (तावत्).
जसो (यशस्). तमो (तमस्).
पुण (पुनर्). जम्मो (जन्मन्).
अंतरप्पा (अन्तरात्मा).
अंतग्गय }
अंतगय } (अन्तर्गत).
सभिक्खू (सद्भिक्षुः) सज्जणो–सजणो (सज्जनः).

(२७) अन्त्यव्यञ्जनस्य ॥ १–११ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एअगुणा (एतद्गुणाः) **तग्गुणा** (तद्गुणाः)

(२८) **'विद्युत्'** शब्द वर्जीने व्यंजनान्त स्त्रीलिंगमां अन्त्य व्यंजनने बदले **'आ'** के **'या'** थाय, तेमज व्यंजनान्त स्त्रीलिंगमां अन्त्य **'र्'**नो **'रा'** थाय छे अने **'शरद्'** आदि शब्दोमां अन्त्य व्यंजननो 'अ' थाय छे. (पा. २१. नि. २-३-४.).

सरिआ, सरिया (सरित्). **पाडिवआ, पाडिवया** (प्रतिपद्).
संपआ, संपया (सम्पत्).
गिरा (गिर्). **पुरा** (पुर्). **धुरा** (धुर्).
सरओ (शरद्). **भिसओ** (भिषक्).

विशेष—**छुहा** (क्षुध्). **दिसा** (दिक्).
आउसो-आउं (आयुः). **अच्छरसा-अच्छरा** (अप्सरस्).
कउहा (ककुभ्). **धणुहं-धणू** (धनुः) थाय छे.

(२९) शब्दनी अन्दर स्वरनी पछी असंयुक्त जे **"क-ग-च-ज-त-द-प-य-व"** ते व्यंजनोनो प्राकृतमां प्रायः लोप थाय छे. पण अवर्णथी पर **'प'** आवे तो **'व'** थाय छे. तेम ज अवर्णनी पछी अवर्ण आवे तो **'अ'** नो **'य'** थाय छे. कोई ठेकाणे **क** नो **ग** थाय छे. (टि. २४.).

'क'- लोओ (लोकः)	**तित्थयरो** (तीर्थकरः)
'ग'- नओ (नगः)	**नयरं** (नगरम्)
'च'- सई (शची)	**कायमणी** (काचमणिः)
'ज'- रययं (रजतम्)	**पयावई** (प्रजापतिः)
'त'- पायालं (पातालम्)	**जई** (यतिः).

---

(२८) स्त्रियाम् आद्-अविद्युतः ॥ १-१५ । रो रा ॥ १-१६ । शरदादेरत् ॥ १-१८ ।

(२९) क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् ॥ १-१७७ । नावर्णात् पः १-१७९ । अवर्णो यश्रुतिः ॥ १-१८० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'द'- मयणो (मदनः)	गया (गदा)
'प'- रिऊ (रिपुः)	सुउरिसो (सुपुरुषः)
'य'- विओओ (वियोगः)	पओगो (प्रयोगः)
'व'- लायण्णं (लावण्यम्)	कई (कविः)
पनो व-सावो (शापः)	सवहो (शपथः)
पावो (पापः)	
कनो ग-सावगो (श्रावकः).	लोगो (लोकः)

(३०) शब्दनी अन्दर स्वरनी पछी असंयुक्त जे **"ख-घ-थ-ध-भ"** तेनो **'ह'** थाय, तेमज **'ट'** नो **'ड'**, **'ठ'** नो **'ढ'**, **'ड'** नो **'ल'**, **'प'** नो **'व'**, **'फ'** नो **'भ-ह'**, **'ब'** नो **'व'** थाय अने **'श-ष'** नो बधे **'स'** थाय छे. (टि. ३५.).

'ख'- मुहं (मुखम्)	साहा (शाखा)
'घ'- मेहो (मेघः)	माहो (माघः)
'थ'- नाहो (नाथः)	कहेइ (कथयति)
'ध'- साहू (साधुः)	बोहइ (बोधति)
'भ'- सहा (सभा)	सोहइ (शोभते)
'ट'- घडो (घटः)	घडइ (घटति)
'ठ'- मढो (मठः)	पढइ (पठति)
'ड'- गरुलो (गरुडः)	पीलेइ (पीडयति)
'प'- उवमा (उपमा)	तवइ (तपति)
'फ'-सभलं, सहलं } (सफलम्)	सभरी, सहरी } (शफरी)
'ब'- सवलो (शबलः)	अलावू (अलाबुः)

---

(३०) ख-घ-थ-ध-भाम् ॥ १-८७ । टो डः ॥ १-१९५ । ठो ढः ॥ १-१९९ । डो लः ॥ १-२०२ । पो वः ॥ १-२३१ । फो भ-हौ ॥ १-२३६ । बो वः ॥ १-२३७ । श-षोः सः ॥ १-२६० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ष { सेसो (शेषः) | विसेसो (विशेषः)
सद्दो (शब्दः) | कसाओ (कषायः)

(३१) शब्दनी अन्दर संख्यावाचक शब्दमां असंयुक्त 'द' नो 'र' थाय छे. अने 'दश–पाषाण' शब्दमां 'श–ष' नो 'ह' विकल्पे थाय छे. (टि. ८६.).

एआरह } (एकादश). | तेरह } (त्रयोदश).
एगारस | तेरस

दह, दस (दश). | पाहाणो } (पाषाणः).
| पासाणो

(३२) शब्दनी अन्दर स्वरनी पछी असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे. तेमज शब्दनी आदिमां 'न' होय तो विकल्पे 'ण' थाय छे.
(टि. २६.).

दाणं (दानम्) | नाणं } (ज्ञानम्) | नरो } (नरः)
धणं (धनम्) | णाणं | णरो

(३३) शब्दनी आदिमां 'य' होय तो 'ज' थाय छे, तेमज उपसर्गनी पछी 'य' आवे तो कोई ठेकाणे 'ज' थाय छे. (टि. २९.).

जमो (यमः) | संजमो (संयमः)
जसो (यशः) | संजोगो (संयोगः)
जाइ (याति) | अवजसो (अपयशः)

(३४) अनुस्वारनी पछी 'ह' आवे तो 'ह' नो 'घ' विकल्पे थाय छे.

सिंघो } (सिंहः) | संघारो } (संहारः)
सीहो | संहारो

---

(३१) संख्या-गद्गदे रः ॥ १-२१९ । दश–पाषाणे हः ॥ १-२६२ ।

(३२) नो णः ॥ १-२२८ । वादौ ॥ १-२२९ ।

(३३) आदेर्यो जः ॥ १-२४५ ।

(३४) हो घोऽनुस्वारात् ॥ १-२६४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई ठेकाणे अनुस्वार न होय तो पण 'ह' नो 'घ' थाय छे. (टि. ६३.). दाघो (दाहः)

संयुक्त व्यंजनना फेरफारो.

(३५) संयुक्त व्यंजननो प्रथम अक्षर जो 'क्-ग्-ट्-ड्-त्-द्-प्-श्-ष्-स्' अने ≍क-)(प होय तो लोप थाय छे. (टि. ४३.).

(३६) लोप थया पछी शेष व्यंजन, तेमज संयुक्त व्यंजनने स्थाने आदेशभूत व्यंजन शब्दनी आदिमां न होय तो द्वित्व थाय (बेवडाय) छे. (टि. ४३.).

(३७) जे व्यंजन बेवडाय छे ते व्यंजन जो वर्गनो बीजो के चोथो अक्षर होय तो द्वित्वना प्रथम अक्षरनो अनुक्रमे ते वर्गना बीजानो पहेलो अने चोथानो त्रीजो मुकाय छे. एटले 'ख्ख' नो 'क्ख', 'घ्घ' नो 'ग्घ', 'छ्छ' नो 'च्छ', 'झ्झ' नो 'ज्झ', 'ठ्ठ' नो 'ट्ठ', 'ढ्ढ' नो 'ड्ढ', 'थ्थ' नो 'त्थ', 'ध्ध' नो 'द्ध', 'फ्फ' नो 'प्फ', 'भ्भ' नो 'ब्भ' थाय छे. (टि. १९-४३.).

'क्'- भुत्तं (भुक्तम्)	'प्'- सुत्तो (सुप्तः)
'ग्'- दुद्धं (दुग्धम्)	'श्'- निच्चलो (निश्चलः)
'्'- छप्पओ (षट्पदः)	'ष्'- निट्ठुरो (निष्ठुरः)
'ड्'- खग्गो (खड्गः)	'स्'- नेहो (स्नेहः)
'त्'- उप्पलं (उत्पलम्)	≍क दुक्खं (दुःखम्)
'द्'- मोग्गरो (मुद्गरः)	)(प अंतप्पाओ (अन्तःपातः)

---

(३५) क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स≍क-)(पामूर्ध्वं लुक् ॥ २-७७ ।

(३६) अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ॥ २-८९ ।

(३७) द्वितीय-तुर्ययोरुपरि पूर्वः ॥ २ ९० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपवाद—

(३८) दीर्घस्वर तथा अनुस्वार पछी शेषव्यंजन तेमज आदेशभूत व्यंजननुं द्वित्व थाय नहीं तेमज **'र–ह'** पण द्वित्व थता नथी.

(टि. ४३.).

दीर्घस्वर- **फासो** (स्पर्शः) अनुस्वारात्–**तंसं** (त्र्यस्रम्)

ईसरो (ईश्वरः) **अंसू** (अश्रु)

आणा (आज्ञा) **संझा** (सन्ध्या)

र- **सुन्देरं** (सौन्दर्यम्) **बंभचेरं** (ब्रह्मचर्यम्)

ह- **विहलो** (विह्वलः) **काहावणो** (कार्षापणः)

(३९) समासमां द्वित्व विकल्पे थाय छे. (टि. ८१.).

देवत्थुई–देवथुई (देवस्तुतिः)

नइग्गामो–नइगामो (नदीग्रामः)

कुसुमप्पयरो–कुसुमपयरो (कुसुमप्रकरः)

(४०) संयुक्त व्यंजनने छेडे **'म–न–य–ल–व–ब–र'** होय तो तेनो तथा संयुक्त व्यंजननो पहेलो व्यंजन **'ल–व–ब–र'** होय तो लोप थाय छे.

ज्यां बन्ने व्यंजननो लोप थतो होय त्यां प्रयोगने अनुसारे बेमांथी एकनो लोप करवो. (टि. ४४.) उदा०

कव्वं (काव्यम्). **पक्कं** (पक्वम्). **सण्हं–लण्हं** (श्लक्ष्णम्). **दारं–वारं** (द्वारम्).

---

(३८) न दीर्घानुस्वारात् ॥ २–९२ । र–होः ॥ २–९३ ।

(३९) समासे वा ॥ २–९७ ।

(४०) अधो म–न–याम् । २–७८ । सर्वत्र ल–व–रामवन्द्रे ॥ २–७९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्'– सरो (स्मरः)	'व्'– पक्कं (पक्वम्)
'न्'– नग्गो (नग्नः)	'ब'– सद्दो (शब्दः)
य'– वाहो (व्याधः)	'र्'– चक्कं (चक्रम्)
ल'– सण्हं / लण्हं } (श्लक्ष्णम्)	,, अक्को (अर्कः)
,, वक्कलं (वल्कलम्)	'र्'– वग्गो (वर्गः)

(४१) शब्दनी अन्दर 'क्ष' नो 'क्ख' थाय छे अने कोइ ठेकाणे 'च्छ–ज्झ' पण थाय छे. तेमज आदिमां होय तो 'ख–छ–झ' थाय छे. (टि. ५०.)

खओ (क्षयः)	सरिच्छो (सदृक्षः)
खमइ (क्षमते)	लच्छी (लक्ष्मीः)
खीरं / छीरं } (क्षीरम्)	खीणं / छीणं / झीणं } (क्षीणम्)
रिच्छो / रिक्खो } (ऋक्षः)	झिज्जइ (क्षीयते)
	वच्छो (वक्षः)

(४२) संज्ञावाचक शब्दनी अन्दर 'ष्क' अने 'स्क'नो 'क्ख' थाय छे अने आदिमां होय तो 'ख' थाय छे. (टि. ४९.)

'ष्क'– पोक्खरिणी (पुष्करिणी). 'स्क'–अवक्खंदो (अवस्कन्दः).
,, निक्खं (निष्कम्). ,, खंधो (स्कन्धः).

(४३) 'चैत्य' शब्द वर्जीने शब्दनी अन्दर 'त्य' नो 'च्च' थाय छे अने आदिमां 'त्य' नो 'च' थाय छे. (टि. १८.)

---

(४१) क्षः खः क्वचित्तु छ-झौ ॥ २–३ ।
(४२) ष्क-स्कयोर्नाम्नि ॥ २–४ ।
(४३) त्योऽचैत्ये ॥ २–१३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नच्चइ (नृत्यति)	चयइ (त्यजति)
सच्चं (सत्यम्)	चाओ (त्यागः)
पच्चओ (प्रत्ययः)	चइत्तं (चैत्यम्)

(४४) शब्दनी अन्दर प्रयोगने अनुसारे कोइ ठेकाणे 'त्व' नो 'च्च', 'थ्व' नो 'च्छ', 'द्व' नो 'ज्ज' अने 'ध्व' नो 'ज्झ' थाय छे (टि. ७६).

'त्व'- किच्चा (कृत्वा)	'द्व'- विज्जं (विद्वान्)
,, सोच्चा (श्रुत्वा)	'ध्व'- बुज्झा (बुद्ध्वा)
,, नच्चा (ज्ञात्वा)	,, सज्झसं (साध्वसम्)
'थ्व'-पिच्छी (पृथ्वी)	,, झओ (ध्वजः)

(४५) ह्रस्व स्वरनी पछी 'थ्य-श्च-त्स-प्स' आवे तो 'च्छ' थाय छे. (टि. ५३)

'थ्य'- पच्छं (पथ्यम्)	'त्स'- उच्छाहो (उत्साहः)
,, मिच्छा (मिथ्या)	,, संवच्छरो (संवत्सरः)
'श्च'- पच्छा (पश्चात्)	'प्स'- जुगुच्छइ (जुगुप्सति)
,, अच्छेरं (आश्चर्यम्)	,, अच्छरा (अप्सराः)

(४६) शब्दनी अन्दर 'द्य-य्य-र्य' होय तो 'ज्ज' थाय छे तेमज आदिमां होय तो 'ज' थाय छे. (टि. ५२).

'द्य'- मज्जं (मद्यम्)	'य्य'- सज्जा (शय्या)
,, वेज्जो (वैद्यः)	
,, अवज्जं (अवद्यम्)	'र्य'- भज्जा (भार्या)
,, जुइ (द्युति)	,, पज्जाओ (पर्यायः)

---

(४४) त्व-थ्व-द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् ॥ २-१५ ।

(४५) ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले ॥ २-२१ ।

(४६) द्य-य्य-र्यां जः ॥ २-२४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४७) शब्दनी अन्दर 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छे अने आदिमां होय तो 'झ' थाय छे तेमज 'ह्य' नो विकल्पे 'य्ह' पण थाय छे.

'ध्य'– बुज्झइ (बुध्यति)	'ह्य'– मुज्झइ (मुह्यति)
,, सिज्झइ (सिध्यति)	,, नज्झइ (नह्यति)
,, झायइ (ध्यायति)	,, गुज्झ / गुय्ह (गुह्यम्)
,, झाणं (ध्यानम्)	,, सज्झो / सय्हो (सह्यः)
,, संझा (सन्ध्या)	
,, विंझो (विन्ध्या)	

(४८) 'धूर्त' आदि शब्द वर्जीने 'र्त' नो 'ट्ट' थाय छे. (टि. ६९).

पयट्टइ (प्रवर्तते)	धुत्तो (धूर्तः)
संवट्टिअं (संवर्तितम्)	कित्ती (कीर्तिः)
नट्टओ (नर्त्तकः)	वत्ता (वार्ता)
केवट्टो (कैवर्तः)	पवत्तणं (प्रवर्तनम्)

(४९) शब्दनी अन्दर 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे अने आदिमां होय तो 'ठ' थाय छे. (टि. ६४).

उष्ट्र–इष्टा–सन्दष्ट आ शब्दोमां 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थतो नथी.

पुट्ठो (स्पृष्टः)	उट्टो (उष्ट्रः)
कट्ठं (कष्टम्)	
अणिट्ठं (अनिष्टम्)	इट्टा (इष्टा)
लट्ठी (यष्टिः)	संदट्टो (सन्दष्टः)

---

(४७) साध्वस–ध्य–ह्यां झः ॥ २–२६ । ह्ये ह्योः । २–१२४ ।

(४८) र्तस्याऽधूर्त्तादौ ॥ २–३० ।

(४९) ष्टस्यानुष्ट्रेष्टा–सन्दष्टे ॥ २–३४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५०) शब्दनी अंदर 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' के 'न्न' थाय छे.
आदिमां 'न' के 'ण' थाय छे. (टि. ५१.)

'म्न'-पज्जुण्णो, पज्जुन्नो (प्रद्युम्नः)	'ज्ञ'-विण्णाणं, विन्नाणं (विज्ञानम्)
,, निण्णं, निन्नं (निम्नम्)	,, नाणं, णाणं (ज्ञानम्)

अपवाद—'ज्ञ' (ज-ञ) ना 'ञ' नो लोप पण विकल्पे थाय छे.

पज्जा, पण्णा (प्रज्ञा)	मणोज्जं, मणोण्णं (मनोज्ञम्)
अज्जा, अण्णा (आज्ञा)	जाणं, णाणं (ज्ञानम्)

(५१) शब्दनी अंदर 'स्त' होय तो 'त्थ' थाय छे. अने आदिमां
होय तो 'थ' थाय छे. (टि. ६२.)

हत्थो (हस्तः)	थोत्तं (स्तोत्रम्)
नत्थि (नास्ति)	थुई (स्तुतिः)
सत्थि (स्वस्ति)	थवो (स्तवः)

अपवाद—समस्त अने स्तम्ब शब्दमां स्तनो 'त्थ' के 'थ'
थतो नथी.

समत्तो (समस्तः) तंबो (स्तम्बः)

(५२) शब्दनी अन्दर 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे. अने
आदिमां होय तो 'प' थाय छे. (टि. ७०)

'ड्'-कुप्पलं. (कुड्मलम्) 'क्म'-रुप्पिणी (रुक्मिणी)

---

(५०) म्न-ज्ञोर्णः ॥ २-४२ । ज्ञो ञः ॥ २-८३ ।
(५१) स्तस्य थोऽसमस्त-स्तम्बे ॥ २-४५ ।
(५२) ड्म-क्मोः ॥ २-५२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५३) शब्दनी अन्दर 'स्प' अने 'ष्प'नो प्फ थाय छे. अने आदिमां होय तो 'फ' थाय छे. (टि. ३८).

'ष्प'-पुप्फं (पुष्पम्)	'स्प-फासो (स्पर्शः)
,, -निप्फावो (निष्पापः)	,,-फंदणं (स्पन्दनम्)
'स्प'-विहप्फई (बृहस्पतिः)	,,-फद्धा (स्पर्द्धा)

कोइ ठेकाणे 'फ' थतो नथी, त्यारे पूर्वोक्त नियमानुसारे 'प्प' थाय छे.

निप्पहो (निष्प्रभः) परोप्परं (परस्परम्)

(५४) शब्दनी अन्दर 'ह्व' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे अने आदिमां होय तो 'भ' थाय छे. (टि. ५४.)

जिब्भा, जीहा (जिह्वा). विब्भलो, विहलो (विह्वलः).

(५५) शब्दनी अन्दर 'न्म' नो 'म्म' थाय छे. अने 'ग्म' नो 'म्म' विकल्पे थाय छे. (टि. ३६).

'न्म'-जम्मो (जन्म)	'ग्म'-जुम्मं, जुग्गं (युग्मम्)
'न्म'-वम्महो (मन्मथः)	'ग्म'-तिम्मं, तिग्गं (तिग्मम्)

(५६) शब्दनी अन्दर रहेला 'श्म-ष्म-स्म-ह्म' नो 'म्ह' थाय छे. अने पक्ष्म शब्दना 'क्ष्म' नो पण 'म्ह' थाय छे. कोइ ठेकाणे 'ह्म' नो 'म्भ' पण थाय छे. (टि. ६०).

---

(५३) ष्पस्पयोः फः ।। २-५३ ।

(५४) ह्वो भो वा ।। २-५७ ।

(५५) न्मो मः ।। २-६१ । ग्मो वा ।। २-६२ ।

(५६) पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मां म्हः ।। २-७४ ।

२४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'श्म'– कम्हारा (कश्मीराः). | कुम्हाणो (कुश्मानः).
'ष्म'– गिम्हो (ग्रीष्मः). | उम्हा (ऊष्मा).
'स्म'– विम्हओ (विस्मयः). | अम्हारिसो (अस्मादृशः).
'ह्म'– वम्हा (ब्रह्मा). | वम्हचेरं / वंभचेरं (ब्रह्मचर्यम्)
,, वम्हणो / वंभणो (ब्राह्मणः) | पम्हं (पक्ष्म).

कोइ ठेकाणे 'म्ह' थतो नथी.

रस्सी (रश्मिः) सरो (स्मरः)

(५७) शब्दनी अन्दर रहेला 'श्न–ष्ण–स्न–ह्न–ह्ण–क्ष्ण' नो अने 'सूक्ष्म' शब्दना 'क्ष्म' नो 'ण्ह' थाय छे, तेमज 'ह्ल' नो 'ल्ह' थाय छे. (टि. ६१)

'श्न'– पण्हो (प्रश्नः). | सिण्हो (शिश्नः).
'ष्ण'– विण्हू (विष्णुः). | कण्हो (कृष्णः)
'स्न'– जोण्हा (ज्योत्स्ना). | ण्हाइ (स्नाति).
'ह्न'–वण्ही (वह्निः). | जण्हू (जह्नुः).
'क्ष्ण'– सण्हं (श्लक्ष्णम्). | तिण्हं (तीक्ष्णम्).
'क्ष्म'– सण्हं (सूक्ष्मम्). | 'ह्ल'– अल्हाओ (आह्लादः).
,, पल्हाओ (प्रह्लादः).

(५८) शब्दनी अन्दर 'द्र' संयुक्त व्यंजन होय तो 'द्र' ना 'र्' नो लोप विकल्पे थाय छे. (टि ७५)

चन्दो–चंद्रो (चन्द्रः). भद्दो–भद्रो (भद्रः).
रुद्दो–रुद्रो (रुद्रः). समुद्दो–समुद्रो (समुद्रः).

---

(५७) सूक्ष्म–श्न–ष्ण–स्न–ह्न–ह्ण–क्ष्णां ण्हः ॥ २७५ । ह्लो ल्हः ॥ २–७६ ।

(५८) द्रे रो न वा ॥ २–८० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५९) शब्दनी अन्दर 'र्ह' नो **'रिह'** थाय छे, तमज **श्री-ह्री-कृत्स्न-क्रिया** आ शब्दोमां संयुक्त अन्त्याक्षरनी पूर्वे **'इ'** मूकाय छे. (टि. ६८-७२).

अरिहंतो (अर्हन्)	**सिरी** (श्रीः)
अरिहइ (अर्हति)	**हिरी** (ह्रीः)
गरिहा (गर्हा)	**कसिणो** (कृत्स्नः)
वरिहो (वर्हः)	**किरिया** (क्रिया)

(६०) शब्दनी अन्दर 'र्श' के 'र्ष' नो **'रिस'** विकल्पे थाय छे अने **तप्त-वज्र** शब्दमां पण संयुक्त अन्त्य अक्षरनी पूर्वे **'इ'** आगम विकल्पे मूकाय छे. (टि. ७१).

र्श - **आयरिसो**, **आयंसो** (आदर्शः)	**तविअं**, **तत्तं** (तप्तम्)
दरिसणं, **दंसणं** (दर्शनम्)	**वइरं**, **वज्जं** (वज्रम्)
र्ष - **वरिसा**, **वासा** (वर्षा)	
वरिसइ, **वासेइ** (वर्षति)	

(६१) शब्दनी अन्दर संयुक्त व्यंजननो अन्त्याक्षर **'ल'** होय तो तेनी पूर्वे **'इ'** मूकाय छे. (टि. ७७).

किलिन्नो (क्लिन्नः)	**गिलाइ**, **गिलायइ** (ग्लायति)
सिलिट्ठं (श्लिष्टम्)	**मिलाइ**, **मिलायइ** (म्लायति)
सिलोगो (श्लोकः)	
किलेसो (क्लेशः)	

---

(५९) र्ह-श्री-ह्री-कृत्स्न-क्रिया-दिष्टयास्वित् ॥ २-१०४
(६०) र्श-र्ष-तप्त-वज्रे वा ॥ २-१०५ ।
(६१) लात् ॥ २-१०६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोइ ठेकाणे 'इ' आगम आवतो नथी.

सुक्कपक्खो (शुक्लपक्षः)

कमो (क्लमः) | विप्पवो (विप्लवः)

(६२) स्याद्-भव्य-चैत्य तेमज चौर्य अने तेना जेवा शब्दोमां संयुक्त जे व्यंजन तेना अन्त्याक्षरनी पूर्वे 'इ' मूकाय छे (टि ८०).

सिया (स्यात्)	र्य-भारिआ (भार्या)
सिआवाओ (स्याद्वादः)	वीरिअं (वीर्यम्)
भविओ (भव्यः)	थेरिअं (स्थैर्यम्)
चेइयं (चैत्यम्)	गंभीरिअं (गाम्भीर्यम्)
र्य-चोरिअं (चौर्यम्)	सूरिओ (सूर्यः)
आयरिओ (आचार्यः)	सोरिअं (शौर्यम्)
वम्हचरिअं (ब्रह्मचर्यम्)	सुंदरिअं (सौन्दर्यम्)

(६३) अन्ते 'वी' संयुक्त व्यंजन होय एवा स्त्रीलिंग नामोमां 'वी' नी पूर्वे 'उ' मूकाय छे. (टि. ८४)

तणुवी (तन्वी)	पुहुवी (पृथ्वी)
लहुवी (लघ्वी)	मउवी (मृद्वी)
गुरुवी (गुर्वी)	बहुवी (बह्वी)

(६४) जो अव्ययने अन्ते 'त्र' होय तो तेने बदले 'हि-ह-त्थ' मूकाय छे. (टि. ४२).

जहि, जह, जत्थ (यत्र)	कहि, कह, कत्थ (कुत्र)
तहि, तह, तत्थ (तत्र)	अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

---

(६२) स्याद्-भव्य-चैत्य-चौर्यसमेषु यात् ॥ २-१०७ ।

(६३) तन्वीतुल्येषु ॥ २-११३ ।

(६४) त्रपो हि-ह-त्थाः ॥ २-१६१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिंगानुशासन

(६५) **प्रावृष्-शरद्-तरणि** ए शब्दो पुल्लिंगमां वपराय छे.
(टि. ६५).

पाउसो (प्रावृट्)	**सरओ** (शरद्)
तरणी (तरणिः)	

(६६) **दामन्-शिरस्-नभस्** ए शब्दो विना **'स'** कारान्त अने **'न'**-कारान्त नामो पुल्लिंगमां वपराय छे. (टि. ७९).

सान्त-जसो (यशः)	**नान्त-जम्मो** (जन्म)
पओ (पयः)	**नम्मो** (नर्म)
तमो (तमः)	**मम्मो** (मर्म)
उरो (उरः)	
तेओ (तेजः)	

दामं (दाम). **सिरं** (शिरः). **नहं** (नभः).

नीचेना शब्दोनो कोई ठेकाणे नपुंसकलिंगमां पण प्रयोग देखाय छे.

सेयं (श्रेयः)	**वयं** (वयः)	**सुमणं** (सुमनः)
सम्मं (शर्म)	**चम्मं** (चर्म)	**कम्मं** (कर्म)

(६७) **अक्षि** (नेत्र) वाचक शब्दो अने **'वचन'** आदि शब्दो पुल्लिंगमां विकल्पे वपराय छे, तेमज **गुण** वगेरे शब्दो नपुंसकलिंगमां विकल्पे वपराय छे. (टि. २७.)

---

(६५) प्रावृट्-शरत्तरणयः पुंसि ॥ १-३१ ।

(६६) स्नमदामशिरो-नभः ॥ १-३२ ।

(६७) वाऽक्ष्यर्थ-वचनाद्याः ॥ १-३३ । गुणाद्याः क्लीबे वा ॥ १-३४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छी } (अक्षिणी)
अच्छिइं }

चक्खू } (चक्षुषी)
चक्खूइं }

नयणा } (नयने)
नयणाइं }

लोअणा } (लोचने)
लोअणाइं }

वयणा } (वचनानि)
वयणाइं }

विज्जुणा } (विद्युता)
विज्जूए }

माहप्पो } (महात्म्यम्)
माहप्पं }

दुक्खा } (दुःखानि)
दुक्खाइं }

गुण आदि शब्दो—

गुणाइं } (गुणाः)
गुणा }

बिन्दूइं } (बिन्दवः)
बिन्दुणो }

कररुहं } (कररुहः)
कररुहो }

देवाणि } (देवाः)
देवा }

खग्गं } (खड्गः)
खग्गो }

रुक्खाइं } (वृक्षाः)
रुक्खा }

(६८) **'इमन्'** छेडे होंय एवा शब्दो तेमज **'अञ्जलि'** वगेरे शब्दो स्त्रीलिंगमां विकल्पे वपराय छे.

एसा महिमा } (एष महिमा).
एस महिमा }

एसा अञ्जली } (एष अञ्जलिः).
एस अञ्जली }

अच्छी } (अक्षि).
अच्छि }

पिट्ठी } (पृष्ठम्).
पिट्ठ }

एसा गरिमा } (एष गरिमा).
एस गरिमा }

पण्हा } (प्रश्नः).
पण्हो }

चोरिआ } (चौर्यम्).
चोरिअं }

---

(६८) वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् । १–३५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारक-विभक्त्यर्थ

जेम संस्कृतमां छ कारक छे, तेम अहीं प्राकृतमां पण सर्व व्यवस्थाओ संस्कृतने अनुसारे जाणवी, तेमां विशेषता नीचे प्रमाणे छे.

(६९) प्राकृतमां द्विवचनने स्थाने बहुवचन थाय छे, द्वित्व अर्थ जणाववाने माटे वहुवचनांत नामनी साथे विभक्त्यंत '**द्वि**' शब्दनो प्रयोग थाय छे.

दोण्णि कुणन्ति-दुवे कुणन्ति (द्वौ कुरुतः).
दुण्णि नरा वोल्लिन्ति (द्वौ नरौ कथयतः)
हत्था (हस्तौ). **पाया** (पादौ). **नयणा** (नयने).

(७०) चतुर्थी विभक्तिने स्थाने षष्ठी विभक्ति थाय छे, पण तेने माटे तादर्थ्यमां चतुर्थी एकवचनने स्थाने छट्ठी विभक्ति विकल्पे थाय छे, तेमज तादर्थ्यमां चतुर्थीनुं एकवचनरूप संस्कृतनी जेम ज थाय छे. (टि. ३४).

मुणिस्स मुणीणं वा देइ (मुनये मुनिभ्यो वा ददाति).
नमो देवस्स देवाणं वा (नमो देवाय देवेभ्यो वा).
नमो नाणस्स (नमो ज्ञानाय). **नमो गुरुस्स** (नमो गुरवे).
तादर्थ्यमां **देवस्स-देवाय** (देवाय-देवार्थम्).

(७१) द्वितीया-तृतीया-पंचमी अने सप्तमीने स्थाने कोइ ठेकाणे छट्ठी विभक्ति पण वपराय छे.

द्वितीयाने स्थाने—**सीमाधरस्स वन्दे** (सीमाधरं वन्दे)
तृतीयाने स्थाने—**धणस्स लुद्धो** (धनेन लुब्धः)
,, **तेसिं एअमणाइण्णं** (तैरेतदनाचीर्णम्).

---

(६९) द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ३-१३० ।
(७०) चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ ३-१३१ । तादर्थ्यङेर्वा ॥ ३-१३२ ।
(७१) क्वचिद् द्वितीयादेः ॥ ३-१३४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचमीने स्थाने—**चोरस्स बीहइ** (चौराद् बिभेति)

,, छट्ठी—**परलोगस्स भीओ** (परलोकाद् भीतः)

सप्तमीने स्थाने—**पिट्ठीए केसभारो** (पृष्ठे केशभारः)

(७२) कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने स्थाने सप्तमी विभक्ति थाय छे, तेमज पंचमीने स्थाने कोई ठेकाणे तृतीया अने सप्तमी पण थाय छे. (टि. ७८).

द्वितीयाने स्थाने सप्तमी—**गामे वसामि** (ग्रामं वसामि)

,, **नयरे न जामि** (नगरं न यामि)

तृतीयाने स्थाने सप्तमी—**तेसु अलंकिआ पुहवी** (तैरलङ्कृता पृथिवी)

पंचमीने स्थाने तृतीया—**चोरेण बीहइ** (चौराद् बिभेति)

,, सप्तमी—**अंतेउरे रमिउं आगओ राया** (अन्तःपुराद् रन्त्वाऽऽगतो राजा)

(७३) सप्तमीने स्थाने कोई ठेकाणे द्वितीया थाय छे.

विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं (विद्युदुद्योते स्मरति रात्रिम्)

आर्षमां तृतीया पण थाय छे.

तेणं कालेणं तेणं समएणं (तस्मिन् काले तस्मिन् समये)

---

(७२) द्वितीया-तृतीययोः सप्तमी ॥ ३-१३५ । पञ्चम्यास्तृतीया च ॥ ३-१३६ ।

(७३) सप्तम्या द्वितीया ॥ ३-१३७ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातुओनां रूपोनुं परिशिष्टः—२.

१. प्राकृत व्याकरणमां आपेला अदन्त धातुओमां जे 'अ' कार छे. ते उच्चारणने माटे छे, तेथी ते धातुओने व्यञ्जनान्त मानीने कार्य करवुं. एथी **हुव, हव** विगेरे धातुओ व्यञ्जनान्त होवाथी भूतकालमां 'ईअ' प्रत्यय लगाडाय छे, तेथी **हुवीअ, हवीअ, हसीअ** विगेरे रूपो थाय छे.

२. कर्मणि अङ्ग, प्रेरक धातुओनां कर्तरि अने कर्मणि अङ्ग जो व्यञ्जनान्त धातु उपरथी बनेल होय तो भूतकालमां 'ईअ' प्रत्यय लगाडाय छे अने स्वरान्त ऊपरथी बनेल होय तो ते अङ्गने [3]**सी-ही-हीअ** प्रत्यय लागे छे,

(षड्भाषाचन्द्रिकामां आ प्रमाणे प्रयोगो करेला छे.)

भूतकालनां रूपो

कर्मणि अङ्ग—**कर्-करीअ-करीअईअ.**

करिज्ज-करिज्जईअ

हो-होईअ-होईअसी-ही-हीअ.

होइज्ज-होइज्जसी-ही-हीअ.

कर्मणि अने भावे रूपो

४. सिद्धहेम व्याकरणना अष्टम अध्याय (प्राकृत) मां कर्मणि भावे रूपोना **'ईअ-इज्ज'** प्रत्ययो भविष्यकाल अने क्रियातिपत्तिनां

---

१. षड्भाषाचन्द्रिकासूत्र ॥३-१-१॥ अकार उच्चारणार्थः पृ० १८५।

२. षड्भाषा० सूत्र ॥२-४-९१॥ पृ० २२६।

३. आ प्रत्ययोनो दीर्घस्वर षड्भाषाचन्द्रिकामां ह्रस्व करेल छे, **होसि-हि-हिअ.** ॥२-४-२२॥ पृ० १८९।

४. षड्भाषा० सूत्र ॥ **ईअ-इज्जौ यकः** ॥ २-४-९१. ॥ पृ-२२५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपोमां लगाडेल नथी पण षड्भाषाचन्द्रिकामां *भविष्यकाल अने क्रियातिपत्तिमां 'ईअ-इज्ज' प्रत्यय लगाडीने रूपो करवामां आव्यां छे.

कर्मणि अङ्ग—कर्-करीअ, करिज्ज.
हो-होईअ, होइज्ज.

त्रीजा पुरुष एकवचननां रूपो,

वर्त०—करीअइ-करिज्जइ.
होईअइ-होइज्जइ.

भूत०—करीअईअ, करिज्जईअ.
होईअसी-ही-हीअ, होइज्जसी-ही-हीअ.
कृ-का-काईअ-काईअसी ही-हीअ.
काइज्ज-काइज्जसी-ही-हीअ.

विधि-आज्ञार्थ०—कर्-करीअउ, करिज्जउ.
करीएउ, करिज्जेउ.
हो-होईअउ, होइज्जउ.
होईएउ, होइज्जेउ.

भवि० हैमव्याकरण प्रमाणे :—

कर्-करिहिइ, करेहिइ,
हो-होहिइ, विगेरे कर्तरिवत्.

षड्भाषा प्रमाणे :—

कर्-करीइहिइ, करीएहिइ.
करिज्जिहिइ, करिज्जेहिइ.

---

* तेमज आर्षमां पण कोइ स्थले ईअ-इज्ज नो प्रयोगो देखाय छे. जेम-साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे न जाणइ-संहरिष्ये इति जानाति, संह्रियमाणो न जानाति-कप्पसुत्ते ॥ सू. ३० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो–होईइहिइ, होइएहिइ.
होइज्जिहिइ, होइज्जेहिइ.
कृ=का–काईअ–काईइहिइ, काईएहिइ.
काइज्ज–काइज्जिहिइ, काइज्जेहिइ.

क्रियातिपत्ति–हैमव्याकरण प्रमाणे :—

कर्–करन्तं, करमाणं.
हो–होन्तं, हुन्तं, होमाणं.

षड्भाषा प्रमाणे :—

कर्–*करीअन्त, करीअमाण.
करिज्जन्त, करिज्जमाण.
हो–होईअन्त, होईअमाण.
होइज्जन्त, होइज्जमाण.

प्रेरक कर्तरि अङ्ग :—

कर्=कार–कारे–काराव–करावे.

प्रेरक कर्तरिमां त्रीजापुरुषना एकवचननां रूपो.

वर्तमान–कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ.

भूतकाल–[५]कारईअ, कारीअ, कारेईअ, करावईअ, करावीअ, करावेईअ.

हो–होअ, होए, होआव, होआवे,[६] होअवि.

वर्त०–होअइ, होएइ, होआवइ, होआवेइ, होअविइ.

---

* षड्भाषाचन्द्रिकामां क्रियातिपत्तिमां 'न्त' अने 'माण' प्रत्ययो लगाडी रूपो आपेला छे. सू० ॥ २–४–४१ ॥ पृ. १९३ ।

५. षड्भाषासूत्र–अदेल्लुक्यादेरत आः ॥ २–४–१५ ॥ पृ. २३७ ।

६. षड्भाषा० सूत्र–गुर्वादेरविर्वा ॥ २–४–१२ ॥ पृ. २३३–२३५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूत०— होअसी-ही-हीअ.
हाएसी-ही-हीअ.
होआवसी-ही-हीअ.
होआवेसी-ही-हीअ.
होअविसी-ही-हीअ.

विधि-आज्ञार्थ—कर्-कारउ, कारेउ,
करावउ, करावेउ.

हो-होअउ, होएउ.
होआवउ, होआवेउ, होअविउ.

भविष्य—कारिहिइ, कारेहिइ, कराविहिइ, करावेहिइ.
होइहिइ, होएहिइ, होआविहिइ,
होआवेहिइ, होअविहिइ.

क्रियातिपत्तिः—

कर्-[७]कारन्तो, कारेन्तो,
करावन्तो, करावेन्तो.
कारमाणो, कारेमाणो,
करावमाणो, करावेमाणो.

हो-होअन्तो, होएन्तो,
होआवन्तो, होआवेन्तो, होअविन्तो.
होअमाणो, होएमाणो,
होआवमाणो, होआवेमाणो, होअविमाणो.

---

७. षड्भाषामां कारन्त, कारेन्त, होअन्त, होएन्त, विगेरे प्रयोगो करेला छे. पृ-१९३-२३६.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरक कर्मणि:—

प्रेरक कर्मणि अङ्ग

कर्-करावीअ, कराविज्ज, कारीअ, कारिज्ज.
हो-होआवीअ, होआविज्ज, होईअ, होइज्ज.

वर्त०—करावीअइ, कराविज्जइ.
कारीअइ, कारिज्जइ.
होआवीअइ, होआविज्जइ.
होईअइ, होइज्जइ.

भूत०—करावीअईअ, कराविज्जईअ.
कारीअईअ, कारिज्जईअ.
[8]होआवीअसी-ही-हीअ,
होआविज्जसी-ही-हीअ.
होईअसी-ही-हीअ,
होइज्जसी-ही-हीअ.

विधि-आज्ञार्थ :—

करावीअउ, कराविज्जउ, कारीअउ, कारिज्जउ.
होआवीअउ, होआविज्जउ, होईअउ, होइज्जउ.

भविष्य०-कराविहिइ, कारिहिइ.
होआविहिइ, होहिइ. वगेरे कर्तरिवत् ।

क्रिया०-कराविन्तो, कराविमाणो.
कारन्तो, कारमाणो. वगेरे कर्तरिवत्
होआविन्तो, होआविमाणो.
होन्तो, होमाणो.

---

८. षड्भाषा चन्द्रिका-पृ-२४४.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ षड्भाषाचन्द्रिकामां 'इअ इज्ज' प्रत्यय लगाडी भविष्य अने क्रियातिपत्तिनां रूपो आपेलां छे.

ते आ प्रमाणे :—

कर्–करावीइहिइ, करावीएहिइ.
कराविज्जिहिइ, कराविज्जेहिइ.
कारीइहिइ, कारीएहिइ.
कारीज्जिहिइ, कारिज्जेहिइ.

हो–होआवीइहिइ, होआवीएहिइ.
होआविज्जिहिइ, होआविज्जेहिइ.
होईइहिइ, होईएहिइ.
होइज्जिहिइ, होइज्जेहिइ.

क्रियातिपत्ति–कर्–करावीअन्त, करावीअमाण.
कराविज्जन्त, कराविज्जमाण.
कारीअन्त, कारीअमाण.
कारिज्जन्त, कारिज्जमाण.

हो–होआवीअन्त, होआवीअमाण.
होआविज्जन्त, होआविज्जमाण.
होईअन्त, होईअमाण.
होइज्जन्त, होइज्जमाण.

ज्ज–ज्जा नां रूपो सम्बन्धी सूचना

१. वर्तमानकाल भविष्यकाल अने विधि–आज्ञार्थमां व्यंजनान्त अने स्वरान्त बन्ने प्रकारना धातुओमां प्रत्ययोने स्थाने 'ज्ज–ज्जा'

---

१ षड्भाषा० सूत्र ॥ २–४–१४ ॥ पृष्ठ–२४४ ।

१–२. हैमसूत्रम्–वर्तमाना भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा. ॥ ३–१७७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूकाय छे, स्वरान्त धातु होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययोनी पूर्वे पण 'ज्ज-ज्जा' मूकाय छे.

२. 'ज्ज-ज्जा' प्रत्ययनी पूर्वे अ होय तो अ नो ए थाय छे.
वर्तमान—

जेम हस्+अ=हस-हसेज्ज, हसेज्जा.
हो-होज्ज, होज्जा, होज्जइ, होज्जाइ.
होअ-होएज्ज, होएज्जा
होएज्जइ, होएज्जाइ. विगेरे.

+केटला एकना मते सर्वकालना सर्वप्रत्ययोने स्थाने ज्ज-ज्जा आवे छे.

होज्ज-होज्जा=भवति, भवेत्, भवतु, अभवत्, अभूत्, बभूव, भूयात्, भविता, भविष्यति, अभविष्यत् इत्यर्थः

३. विध्यर्थमां :—

हैमव्या० प्रमाणे सर्व पु० सर्वत्र० मां 'ज्जइ' प्रत्यय अने षड्भाषा प्रमाणे 'ज्जइ-ज्जाइ' प्रत्ययो लगाडीने प्रयोगो करेला छे.

०—हस्-हसेज्जइ, हसिज्जइ.
हो-होज्जइ.
होअ-होएज्जइ, होइज्जइ.

मध्ये च स्वरान्ताद् वा ॥ ३-१७८ ॥ ज्जा-ज्जे ॥ ३-१५९ ॥

षड्भाषासूत्रम्-लङ्-लटोश्च जजारौ ॥ २-४-३९ ॥ पृ. १८६ ।

मध्ये चाजन्तात् ॥ २-४-४० ॥ पृ-१८६ ।

+ हैमसूत्रम्-८-३-१७७ ॥ इत्यस्य वृत्तौ. ।

३. हैमसूत्र० ज्जात्सप्तम्या इर्वा ॥ ८-३-१६५ ॥
षड्भाषा सूत्र० 'त्विज्जाल्लिङ् ॥ २-४-३४ ॥ पृ-१९२ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षड्०—हस्-हसेज्जइ-ज्जाइ, हसिज्जइ-ज्जाइ.
हो-होज्जइ-ज्जाइ.
होअ-होएज्जइ-ज्जाइ, होइज्जइ-ज्जाइ.

४. षड्भाषामां भविष्यकालमां 'हि' राखीने प्रत्ययने स्थाने ज्ज-ज्जा ना प्रयोगो आपेला छे.

जेम—हव्+अ=हव-हविहिज्ज-ज्जा, हवेहिज्ज-ज्जा.
हो-होहिज्ज-ज्जा.

हैमव्याकरणप्रमाणे—हवेज्ज-ज्जा, होज्ज-ज्जा.

५. षड्भाषामां क्रियातिपत्तिमां स्वरान्त धातुमां 'न्त-माण' प्रत्ययनी पूर्वे अने प्रत्ययने स्थाने 'ज्ज-ज्जा' नां रूपो आपेलां छे.

जेम—हो-होज्जन्त, होज्जमाण, होज्जामाण.
होज्ज-होज्जा. पक्षे होन्त, होमाण.
हव+अ=हव-हवेज्ज, हवेज्जा-हवन्त, हवमाण.

हैम व्याकरण प्रमाणे—

हो-होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो.
हव-हवेज्ज, हवेज्जा, हवन्तो, हवमाणो.

६. हैम व्याकरणमां स्वरान्त धातुमां प्रत्ययोनी पूर्वे 'ज्ज-ज्जा' ए प्रत्ययना अ नो इ-ए करेल नथी. पण षड्भाषामां वर्तमानकालमां 'ज्ज-ज्जा' ना अ नो मि-मो-मु विगेरे प्रत्ययोनी पूर्वे नियमने अनुसारे आ-इ-ए पण करेल छे, बीजे कोई ठेकाणे करेल नथी.

जेम :—होज्जमि, होज्जामि, होज्जेमि ।
होज्जमो, होज्जामो, होज्जिमो, होज्जेमो.

---

४. षड्भाषासूत्रम्—एच्च क्त्वा-तुं-तव्य-भविष्यति ॥२-४-१९॥ पृ-१९१ ।
भविष्यति हिरादिः ॥ २-४-२५ ॥ पृ-१९० ।

५. षड्भाषासूत्रम्—माणन्तौ ल् च लृङः ॥ २-४-४१ ॥ पृ. १९३ ।

६. षड्भाषा-सूत्रम् ॥ २-४-१७ ॥ पृ. १८८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ प्रमाणे षड्भाषामां प्रयोगो करेला होवाथी भविष्यकालमां पण प्रत्ययोनी पूर्वे 'ज्ज-ज्जा' ना अ नो इ के ए प्रयोगने अनुसारे थइ शके छे. तेथी :—

होज्जिहिइ, होज्जेहिइ विगेरे रूपो पण थाय छे.

कर्मणिमां 'ज्ज-ज्जा' नां रूपो :—

आ 'ज्ज-ज्जा'ना प्रयोगो कर्मणि अने प्रेरक कर्मणिमां प्रत्ययोने स्थाने ज वपराएला देखाय छे, तेथी प्रत्ययोनी पूर्वे ज्ज-ज्जा ना प्रयोगो प्राय: करवा नहि.

कर्मणि अंग-हो-होईअ, होइज्ज.
हस्-हसीअ, हसिज्ज.
वर्तमान-होईएज्ज-ज्जा, होइज्जेज्ज-ज्जा.
हसीएज्ज-ज्जा, हसिज्जेज्ज-ज्जा.
विधि-आज्ञार्थ :- „ „
भवि० क्रिया०-होज्ज-होज्जा.
हसेज्ज-हसेज्जा. कर्तरिवत्.

७. षड्भाषा प्रमाणे :—

भविष्य-होईएहिज्ज-ज्जा, होईइहिज्ज-ज्जा.
होइज्जेहिज्ज-ज्जा, होइज्जिहिज्ज-ज्जा.
हसीएहिज्ज-ज्जा, हसीइहिज्ज-ज्जा.
हसिज्जेहिज्ज-ज्जा, हसिज्जिहिज्ज-ज्जा.
क्रिया०-होईएज्ज-ज्जा, होइज्जेज्ज-ज्जा.
हसीएज्ज-ज्जा, हसिज्जेज्ज-ज्जा.

---

७. षड्भाषा सूत्रम्-ईअ-इज्जौ यक: ॥ २-४-९१ ॥ पृ. २२५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. प्रेरक कर्तरिमां ज्ज-ज्जानां रूपो.

हो-होअ-होए, होआव, होआवे, होअवि.
हस्-हास-हासे, हसाव, हसावे.

वर्तमान०—

हो-होएज्जइ-होएज्जाइ.
होआवेज्जइ-होआवेज्जाइ.
होअविज्जइ-होअविज्जाइ. विगेरे.
होएज्ज-ज्जा, होआवेज्ज-ज्जा, होअविज्ज-ज्जा.
हस्-हासेज्ज-ज्जा, हसावेज्ज-ज्जा.

विधि-आज्ञार्थ०—

हो-होएज्जउ, होएज्जाउ,
होआवेज्जउ, होआवेज्जाउ.
होअविज्जउ, होअविज्जाउ. विगेरे.
होएज्ज-ज्जा, होआवेज्ज-ज्जा, होअविज्ज-ज्जा.
हस्-हासेज्ज-ज्जा, हसावेज्ज-ज्जा.

विधि-सर्व पु० सर्व व० मां—

×हो-होएज्जइ, होएज्जाइ,
होआवेज्जइ, होआवेज्जाइ,
होअविज्जइ, होअविज्जाइ.
हस्-हासेज्जइ, हासेज्जाइ,
हसावेज्जइ, हसावेज्जाइ.

भविष्य०—होएज्जहिइ, होएज्जाहिइ,
होआवेज्जहिइ, होआवेज्जाहिइ,
होअविज्जहिइ, होअविज्जाहिइ.

× परिशिष्ट २. पृ. ३८३. नि. ३. जुओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होएज्ज-ज्जा, होआवेज्ज-ज्जा, होअविज्ज-ज्जा.
हस्-हासेज्ज-ज्जा, हसावेज्ज-ज्जा.

+षड्भाषा चन्द्रिका मते. (पृ० २३५).

हो-होएहिज्ज-ज्जा, होआवेहिज्ज-ज्जा,
होअविहिज्ज-ज्जा.
हस्-हासिहिज्ज-ज्जा, हासेहिज्ज-ज्जा,
हसाविहिज्ज-ज्जा, हसावेहिज्ज-ज्जा.

क्रिया०—होएज्ज-होएज्जा,
होआवेज्ज-होआवेज्जा
होअविज्ज-होअविज्जा.
हस्-हसेज्ज-ज्जा, हसावेज्ज-ज्जा.

षड्भाषा प्रमाणे:—

स्वरान्त धातुमां 'न्त-माण' प्रत्ययनी पूर्वे ज्ज-ज्जा आवे त्यारे होएज्जन्त, होएज्जमाण, होएज्जामाण.
होआवेज्जन्त, होआवेज्जमाण, होआवेज्जामाण,
होअविज्जन्त, होअविज्जमाण, होअविज्जामाण.

प्रेरक कर्मणिमां ज्ज-ज्जानां रूपो.

प्रत्ययोने स्थाने 'ज्ज-ज्जा' ना प्रयोगो करवा.

प्रेरक कर्मणि अङ्ग.

हो-होआवीअ, होआविज्ज, होईअ, होइज्ज.
हस्-हसावीअ, हसाविज्ज, हासीअ, हासिज्ज.

वर्त० विधि-आज्ञार्थ :—

हो-होआवीएज्ज-ज्जा, होईएज्ज-ज्जा.
होआविज्जेज्ज-ज्जा, होइज्जेज्ज-ज्जा.

+ परिशिष्ट. २. पृ. ३८४. नि. ४. ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्-हसावीएज्ज-ज्जा, हासीएज्ज-ज्जा.
हसाविज्जेज्ज-ज्जा, हासिज्जेज्ज-ज्जा.

भवि० क्रिया० —होज्ज-ज्जा, होएज्ज-ज्जा, होआविज्ज-ज्जा.
हासेज्ज-ज्जा, हसाविज्ज-ज्जा. कर्तरिवत्.

षड्भाषा प्रमाणे :—

भवि :—हो-होआवीइहिज्ज-ज्जा, होआवीएहिज्ज-ज्जा.
होआविज्जिहिज्ज-ज्जा, होआविज्जेहिज्ज-ज्जा.
होईइहिज्ज-ज्जा, होईएहिज्ज-ज्जा.
होइज्जिहिज्ज-ज्जा, होइज्जेहिज्ज-ज्जा.

हस्—हसावीइहिज्ज-ज्जा, हसावीएहिज्ज-ज्जा.
हसाविज्जिहिज्ज-ज्जा, हसाविज्जेहिज्ज-ज्जा.
हासीइहिज्ज-ज्जा, हासीएहिज्ज-ज्जा.
हासिज्जिहिज्ज-ज्जा, हासिज्जेहिज्ज-ज्जा.

क्रिया०—

हो-होआवीएज्ज-ज्जा, होआविज्जेज्ज-ज्जा.
होईएज्ज-ज्जा, होइज्जेज्ज-ज्जा.

हस्-हसावीएज्ज-ज्जा, हसाविज्जेज्ज-ज्जा.
हासीएज्ज-ज्जा, हासिज्जेज्ज-ज्जा.

× ॥ इअ परिसिट्ठं ॥

× पृ. ३७९ मां आ टिप्पण लेवानुं छे.

आर्षमां—क्रियातिपत्तिमां ईअ-इज्ज प्रत्ययोनो प्रयोग पण देखाय छे. जेम-जइ बाहुबलिणा माणो न करिज्जंतो, तया तेण सिग्घं केवलनाणं पावीअमाणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ सिरिपाइअ-गज्ज-पज्ज-माला ॥

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीर-वद्धमाणसामिस्स ।

(१)

॥ मंगलं ॥

॥ पंच नमुक्कारमहामंतो ॥

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो;
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

चत्तारि मंगलं-

अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥

चत्तारि लोगुत्तमा-

अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि सरणं पवज्जामि—

अरिहंते सरणं [1]पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥

(२)

[2]सीयावण्णणं (शिविकावर्णनम्)

सीया उवणीया जिण–वरस्स, जरमरणविप्पमुक्कस्स ।
ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥ १ ॥

सिबियाइ मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचिंचइयं
सीहासणं महरिहं, सपायपीढं जिणवरस्स ॥२॥

आलइयमालमउडो, भासुरबुंदी वराभरणधारी ।
खोमियवत्थनियत्थो, जस्स य मुल्लं सयसहस्सं ॥३॥

छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सुंदरेण जिणो ।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ४ ॥

सीहासणे निविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहि पासेहिं ।
वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥५॥

पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं, सा हट्ठरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरा गरुलनागिंदा ॥६॥

पुरओ सुरा वहंति, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
अवरे वहंति गरुला, नागा पुण उत्तरे पासे ॥७॥

वणखंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपयवणं वा ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥९॥

वरपडहभेरिझल्लरि–संखसयसहस्सेहिं तूरेहिं ।
गयणयले धरणियले, तूरनिनाओ परमरम्मो ॥१०॥

ततविततं घणझुसिरं, आउज्जं चउव्विहं बहुविहियं ।
वाइंति तत्थ देवा, बहूहिं आनट्टगसएहिं ॥११॥

आचाराङ्ग–द्वितीयश्रुतस्कन्धे.

(३)

[3]इंदियविसयभावणा (इंद्रियविषयभावना)

न सक्का न सोउं सद्दा, सोत्तविसयमागया ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥१॥

न सक्का रूवमद्दट्ठुं, चक्खुविसयमागयं ।
रागदोसा य जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥२॥

न सक्का गंधमग्घाउं, नासाविसयमागयं ।
रागदोसा य जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥३॥

न सक्का रसमस्साउं, जीहाविसयमागयं ।
रागदोसा य जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥४॥

न सक्का फासमवेएउं, फासविसयमागयं ।
रागदोसा य जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥५॥

आचाराङ्ग–द्वितीयश्रुतस्कन्धे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

[४]निम्ममो भिक्खू चरे–

कयरे धम्मे अक्खाए, माहणेण मतीमता ।
अंजु धम्मं जहातच्चं, जिणाणं तं सुणेह मे ॥१॥

माहणा खत्तिया वेस्सा, चंडाला अदु बोक्कसा ।
एसिया वेसिया सुद्दा, जे य आरंभणिस्सिया ॥२॥

परिग्गहनिविट्ठाणं, वेरं तेसिं पवड्ढइ ।
आरंभसंभिया कामा, न ते दुक्खविमोयगा ॥३॥

आघायकिच्चमाहेउं, नाइओ विसएसिणो ।
अन्ने हरंति तं वित्तं, कम्मी कम्मेहिं किच्चति ॥४॥

माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते तव ताणाय, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥५॥

एयमट्ठं संपेहाए, परमट्ठाणुगामियं ।
निम्ममो निरहंकारो, चरे भिक्खू जिणाहियं ॥६॥

सूत्रकृताङ्ग–द्वितीयश्रुतस्कन्धे.

(५)

[१]पुक्खरिणीवण्णण (पुष्करिणीवर्णनम्)

से जहाणामए पुक्खरिणी सिया, बहुउदगा [२]बहुसेया [३]बहुपुक्खला [४]लद्धट्ठा [५]पुंडरीकिणी [६]पासादिया दरिसणिया [७]अभिरूवा [८]पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया [९]बुइया, [१०]आणुपुव्वुट्ठिया [११]ऊसिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[12]रुइला वण्णमंता गंधमंता फासमंता पासादिया दरिसणिया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए वुइए, आणुपुव्वुट्ठिए उस्सिए रुइले वन्नमंते गंधमंते रसमंते पासादीए जाव पडिरूवे ।

[13]सव्वावंति च णं तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया वुइया आणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला जाव पडिरूवा, सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए वुइए आणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे ।। १ ।।

सूत्रकृताङ्ग–द्वितीयश्रुतस्कन्धे.

(६)

[6]नमिपव्वज्जा (नमिप्रव्रज्या)

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसंतमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ।।१।।

जाइं सरित्तु भयवं, सयंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिनिक्खमइ नमी राया ।।२।।

से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ।।३।।

मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ।।४।।

कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥५॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥६॥

किण्णु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥७॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥८॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥९॥

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ॥१०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥११॥

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयवं अन्तेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥१३॥

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किं च णं ।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किं च णं ॥१४॥

चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥१६॥

× × ×

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४५॥

हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवण्ण–रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,
इच्छा हु (उ) आगाससमा अणन्तया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥५०॥

अच्छेरगमब्भुदये, भोए *चयसि पत्थिवा! ।
असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ॥५१॥

---

* जहित्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥५२॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥५३॥

अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गइपडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥५४॥

अवउज्झिऊण माहण-रूवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥५६॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥

इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा (पेच्चा) होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दइ सक्को ॥५९॥

तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥

नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं च *वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

* वइदेही ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

७वयछक्कं (व्रतषट्कम्)

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं ।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥९॥

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे णो वि घायए ॥१०॥

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥११॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूआ, नो वि अन्नं वयावए ॥१२॥

मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ ।
अविस्सासो य भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं ।
अन्नं वा गिण्हमाणं वा, नाणुजाणंति संजया ॥१५॥

अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए, भेआययणवज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विडमुब्भेइयं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं ।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ॥१९॥

जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ॥२०॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे ॥२४॥

एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥

दशवैकालिकसूत्रे ।

(८)

रावणस्स पच्छायावो (रावणस्य पश्चात्तापः)

दट्ठूण जणयतणया, सेन्नं लङ्काहिवस्स अइबहुयं ।
चिन्तेइ वुण्णहियया, न य जिणइ इमं सुरिन्दो वि ॥२१॥

सा एवं उस्सुयमणा, सीया लङ्काहिवेण तो भणिया ।
पावेण मए सुन्दरि ! हरिया छम्मेण विलवन्ती ॥२२॥

गहियं वयं किसोयरि ! अणंतविरियस्स पायमूलम्मि ।
अपसन्ना परमहिला, न भुञ्जियव्वा मए निययं ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुमरन्तेण वयं तं, न मए रमिया तुमं विसालच्छी ! ।
रमिहामि पुणो सुन्दरि ! संपइ आलम्बणं छेत्तं ॥२४॥

पुप्फविमाणारूढा, पेच्छसु सयलं सकाणणं पुहइं ।
भुञ्जसु उत्तमसोक्खं, मज्झ पसाएण ससिवयणे ! ॥२५॥

सुणिऊण इमं सीया, गग्गरकण्ठेण भणइ दइवयणं ।
निसुणेहि मज्झ वयणं, जइ मे नेहं समुव्वहसि ॥२६॥

घणकोववसगएण वि, पउमो भामण्डलो य संगामे ।
एए न घाइयव्वा, लङ्काहिव ! अहिमुहावडिया ॥२७॥

ताव य जीवामि अहं, जाव य एयाण पुरिससीहाणं ।
न सुणेमि मरणसद्दं, उच्चयणिज्जं अयण्णसुहं ॥२८॥

सा जंपिऊण एवं, पडिया धरणीयले गया मोहं ।
दिट्ठा य रावणेणं, मरणावत्था पयलियंसू ॥२९॥

मिउमाणसो खणेणं, जाओ परिचिन्तिउं समाढत्तो ।
कम्मोयएण बद्धो, कोवि सिणेहो अहो गुरुओ ॥३०॥

धिद्धि त्ति गरहणिज्जं, पावेण मए इमं कयं कम्मं ।
अन्नोन्नपीइपमुहं, विओइयं जेणिमं मिथुणं ॥३१॥

ससिपुण्डरीयधवलं, निययकुलं उत्तमं कयं मलिणं ।
परमहिलाए कएणं, वम्महअणियत्तचित्तेणं ॥३२॥

धिद्धी अहो अकज्जं, महिला जं तत्थ पुरिससीहाणं ।
अवहरिऊण वणाओ, इहाणिया मयणमूढेण ॥३३॥

नरयस्स महावीही, कढिणा सग्गग्गला अणयभूमी ।
सरिय व्व कुडिलहियया, वज्जेयव्वा हवइ नारी ॥३४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा पढमदिट्ठ सन्ती, अमएण व मज्झ फुसइ अङ्गाइं ।
सा परमसत्तचित्ता, उच्चयणिज्जा इहं जाया ॥३५॥

जइ वि य इच्छेज्ज ममं, संपइ एसा विमुक्कसब्भावा ।
तह वि य न जायइ धिई, अवमाणमुदूमियमणस्स ॥३६॥

भाया मे आसि जया, विभीसणो निययमेव अणुकूलो ।
उवएसपरो तइया, न मणो पीइं समल्लीणो ॥३७॥

बद्धा य महासुहडा, अन्ने वि विवाइया पवरजोहा ।
अवमाणिओ य रामो, संपइ मे केरिसी पीई ॥३८॥

जइ वि समप्पेमि अहं, रामस्स किवाए जणयनिवतणया ।
लोओ दुग्गहहियओ, असत्तिमन्तं गणेही मे ॥३९॥

इह सीहगरुडकेऊ, संगामे रामलक्खणे जिणिउं ।
परमविभवेण सीया, पच्छा ताणं समप्पे हं ॥४०॥

न य पोरुसस्स हाणी, एव कए निम्मला य मे कित्ती ।
होह(हि)इ समत्थलोए, तम्हा ववसामि संगामं ॥४१॥

पउमचरिए.

(९)

दयावीरमेहरहनरिंदो—

अन्नया य मेहरहो उम्मुक्कभूसणाऽऽहरणो पोसहसालाए पोसहजोग्गासणनिसण्णो—

सम्मत्तरयणमूलं, जगजीवहियं सिवालयं फलयं ।
राईणं परिकहेइ, दुक्खविमुक्खं तहिं धम्मं ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एयम्मि देसयाले, भीओ पारेवओ [१]थरथरंतो ।
पोसहसालमइगओ, 'रायं! सरणं ति सरणं'ति ॥२॥

'अभओ'त्ति भणइ राया, 'मा भाहि'त्ति भणिए ठिओ अह सो ।
तस्स य अणुमग्गओ पत्तो, [२]भिडिओ सो वि मणुयभासी ॥३॥

नहयलत्थो रायं भणइ–मुयाहि एयं पारेवयं, एस मम भक्खो ।

मेहरहेण भणियं–न एस दायव्वो सरणागतो.

भिडिएण भणियं–नरवर! जइ न देसि मे तं, खुहिओ कं सरणमुवगच्छामि! त्ति.

मेहरहेण भणियं–जह जीवियं तुब्भं पियं निस्संसयं तहा सव्वजीवाणं ।

भणियं च–हंतूण परप्पाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं ।
अप्पाणं दिवसाणं, कएण नासेइ अप्पाणं ॥४॥

दुक्खस्स उव्वियंतो, हंतूण परं करेइ पडियारं ।
पाविहिति पुणो दुक्खं, बहुययरं तन्निमित्तेण ॥५॥

एवं अणुसिट्ठो भिडिओ भणइ–

कत्तो मे धम्ममणो [३]भुक्खदुक्खद्दियस्स !

मेहरहो भणइ–अण्णं मंसं अहं तुहं देमि भुक्खपडिघायं, विसज्जेह पारेवयं, भिडिओ भणइ–नाहं सयं मयं मंसं खामि, [४]फुरफुरेंतं सत्तं मारेउं मंसं अहं खामि.

मेहरहेण भणियं–

जत्तियं पारावओ तुलइ, तत्तियं मंसं मम सरीराओ गेण्हाहि.

'एवं भवउ'त्ति भणइ (भिडिओ) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिडियवयणेण य राया पारेवयं तुलाए चडावेऊण, बीय-पासे निययं मंसं छेत्तण चडावेइ ।

जह जह [५]छुभेइ मंसं, तह तह पारावओ बहु तुलेइ ।
इअ जाणिऊण राया, आरुहइ सयं तुलाए उ ॥६॥

हा ! ह ! त्ति नरवरिंदा !, कीस इमं साहसं ववसियं ? ति ।
उप्पाइयं खु एयं, न तुलइ पारेवओ बहुयं ॥७॥

एयम्मि देसयाले देवो दिव्वरूवधारी दरिसेइ अप्पाणं, भणइ-रायं ! लाभा हु ते सुलद्धा जंसि एवं दयावंतो. पूयं काउं खमावेत्ता गतो ॥

वसुदेवहिंडीए प्रथमखण्डे द्वितीयभागे.

(१०)

महेसरदत्तकहा-

[१]तामलित्तीनयरीते महेसरदत्तो सत्थवाहो । तस्स पिया समुद्दनामो वित्तसंचयसारक्खण-परिवुड्ढिलोभाभिभूओ मओ मायाबहुलो महिसो जाओ तम्मि चेव विसए। मायावि से [२]उवहिनियडिकुसला बहुला नाम [३]चोक्खवाइणी पइसोगेण मया सुणिया जाया तम्मि चेव नयरे ।

महेसरदत्तस्स भारिया गंगिला गुरुजणविरहिए घरे सच्छंदा इच्छिएण पुरिसेण सह कयसंकेया [४]पओसे तं [५]उदिक्खमाणी चिट्ठइ । सो य तं पएसं साउहो उवगओ महेसरदत्तस्स चक्खुभागे पडिओ । तेण पुरिसेण अत्तसंरक्खणनिमित्तं महेसरदत्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तक्किओ [६]विवाडेउं । तेण लहुहत्थयाए गाढप्पहारीकओ नाइदूरं गंतूण पडिओ । चिंतेइ–अहो ! अणायारस्स फलं पत्तो अह मंद–भागो । एवं च अप्पाणं निंदमाणो जायसंवेगो मतो गंगिलाए उयरे दारगो जाओ । संवच्छरजायओ य महेसरदत्तस्स पिओ पुत्तो' त्ति

तम्मि य समए पिउकिच्चे सो महिसो णेण किणेऊण मारिओ । सिद्धाणि य [७]वंजणाणि, पिउमंसाणि, दत्ताणि जणस्स । बितियदिवसे तं मंसं मज्जं च आसाएमाणो [८]पुत्तमुच्छंगे काऊण तीसे [९]माउसुणिगाए मंसखंडाणि खिवइ । सा वि ताणि परितुट्ठा भक्खइ । साहू य मासखवणपारणए त गिहमणुपविट्ठो, पस्सइ य महेसरदत्तं परमपीतिसंपउत्तं तदवत्थं च [१०]ओहिणा आभोएऊण चिंतिअमणेणं–अहो ! अन्नाणयाए एस सत्तुं उच्छंगेण वहइ, पिउमंसाणि य खायइ, सुणिगाए देइ मंसाणि । 'अकज्जं'ति य वोत्तूण निग्गओ ! । महेसरदत्तेण चिंतियं–कीस मन्न साहू अगहियभिक्खो 'अकज्जं'ति य वोत्तूण निग्गओ ? । आगओ य साहुं गवेसंतो, [११]विवित्तपएसे दट्ठूण, वंदिऊण पुच्छइ–भयवं ! किं न गहियं भिक्खं मम गेहे ! जं वा कारणमुदीरियं तं कहेह । साहुणा भणिओ–सावग ! ण ते मंतुं कायव्व । पिउरहस्सं कहियं, भज्जारहस्सं सत्तुरहस्सं च [१२]साभि-ण्णाणं जहावत्तमक्खायं । तं च सोऊण जायसंसारनिव्वेओ तस्सेव समीवे मुक्कगिहवासो पव्वइओ ॥

वसुदेवहिंडीए प्रथमखण्डे प्रथमभागे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)

गामेयगोदाहरणं–

एगम्मि नगरे एगा महिला, सा भत्तारे मए कट्ठाईणि विता [1]विक्कीयाइणि, [2]घिच्छामो त्ति ता [3]अजीवमाणी खुड्डगं पुत्तं घेत्तुं गामं गया, सो दारओ वड्ढंतो मायरं पुच्छइ–कहिं मम पिया ?, तीए सिट्ठं जहा मओ इति, तओ सो पुणो पुच्छइ–केण पगारेण सो [4]जीवियाइओ ?, सा भणइ–[5]ओलग्गाए, तो [6]खाइं अहं पि ओलग्गामि, सा भणइ–न जाणिहिसि ओलग्गिउं, तओ पुच्छइ कहं ओलग्गिज्जइ; भणिओ–विणयं करेज्जासि, केरिसो विणओ ?, भणइ–[7]जोक्कारो कायव्वो, नीयं चंकमियव्वं [8]छंदाणुवत्तिणा होयव्वं, तओ सो नगरं पहाविओ, अंतरा अणेण वाहा मयाण गहणत्थं [9]निलुक्का दिट्ठा, तओ सो [10]वड्डेणं सद्देणं तेसिं जोक्कारो त्ति भणइ, तेण सद्देण मया [11]पलाया, तओ तेहिं रुट्ठेहिं सो घेत्तुं पहओ, [12]सब्भावो अणेण कहिओ, ततो तेहिं भणियं जया एरिसं पेच्छेज्जासि, तया निलुक्कंतेहिं नीयं आगंतव्वं, न य उल्लविज्जइ, सणियं वा, तओ अग्गे गच्छंतेण रयगा दिट्ठा, तओ निलुक्कंतो सणियं सणियं एइ. तेसिं च रयगाणं पोत्तगा हीरंति, ते ठाणं बंधिऊण रक्खंति, सो निलुक्कंतो एइ, एस चोरो त्ति तेहिं गहिओ बंधिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, तेहिं भणियं–एवं भणिज्जासि–सुद्धं नीरयं निम्मलं च भवतु, ऊसं पडउ, तओ सो नयरसंमुहं एइ, एगत्थ बीयाणि वाविज्जंति, तेण भणियं–भट्टा ! सुद्धं नीरयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवउ, ऊसो य पडउ, तओ तेहिं किमकारणवेरिओ एवं भासइ ? त्ति, गहिओ बंधिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य–एरिसे कज्जे एवं भण्णइ–बहुं एरिसं भवतु, [१३]भंडं भरेह एयस्स, तओ पुणो नयरसंमुहं एइ, एगत्थ [१४]मडयं नीणिज्जंतं दट्ठुं भणइ–बहुं एरिसं भवउ, भंडं भरेह एयस्स, तत्थ वि गहिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणिओ य एरिसे कज्जे एवं वुच्चइ, एरिसेणं अच्चंतवियोगो भवउ, अन्नत्थ विवाहे भणइ–अच्चंतविओगो भवउ, तत्थ वि पिट्टिओ, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य एरिसे कज्जे एवं भण्णइ–निच्चं एरिसयाणि पेच्छिंतया होह, सासयं एयं भवउ, ततो गच्छंतो एगत्थ [१५]नियलबद्धं दंडियं दट्ठूण एवं भणइ–निच्चं एरिसयाणि पेच्छंतया होह, सासयं च भे एयं हवउ, तत्थ वि गहिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य–एरिसे कज्जे एवं भणिज्जासि-एयाओ भे लहुं मुक्खो हवउ त्ति, ततो गच्छंतो एगत्थ केइ मित्ता [१६]संघाडयं करिंते पिच्छइ तत्थ भणइ–एयाओ भे लहु मोक्खो भवउ, तओ तत्थ वि पिट्टिओ, सब्भावे कहिए मुक्को, गओ नयरे, तत्थ एगस्स दंडि(ग)कुलपुत्तस्स [१७]अल्लीणो सो सेवंतो अच्छइ, अन्नया दुब्भिक्खे तस्स कुलपुत्तस्स [१८]अंबखल्लिया (जवागू) सिद्धिल्लिया, तस्स भज्जाए सो भण्णइ–जाहि महाजणमज्झाओ सद्दावेहि जेण भुंजइ, सीयला अपाओग्गा भविस्सइ, तेण गंतुं महायणमज्झे वड्डेणं सद्देणं भणिओ–एहि एहि सीयली किर होइ अंबखल्लिया, सो लज्जितो, घरं गएण [१९]अंबाडिओ भणितो य–एरिसे कज्जे नीयमागंतूण कण्णे कहिज्जइ, अन्नया घरं पलित्तं तस्स भज्जाए भणितो-लहुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सद्दावेह ठक्कुरं ति, तत्तो सो तत्थ गओ सणियं सणियं आसन्नं होऊण कण्णे कहेइ, जाव सो तत्थ गच्छा सणियं सणियं आसन्नं होऊण अक्खाउं पयट्टो, ताव घरं सव्वं [20]झामियं, तत्थ वि अंबाडिओ, भणिओ य—एरिसे कज्जे न आगम्मइ, न वि अक्खाइज्जइ, किंतु अप्पणा चेव पाणियं वा गोमुत्तं वा आदिं काउं गोरसं पि छुब्भइ ताव जाव विज्झाइ, अन्नया अस्स दंडिपुत्तगस्स ण्हाइऊण [21]धूविंतस्स धूमो निग्गच्छइ त्ति गोमुत्तं छूढं गोमुत्ताइयं च ॥

आवश्यकसूत्रवृत्तौ.

(१२)

सिसुवालकहा [शिशुपालकथा]

वसुदेवसुसाए सुओ, दमघोसणराहिवेण मद्दीए ।
जाओ चउब्भुओऽब्भुय-बलकलिओ कलहपत्तट्ठो ॥१॥

दट्ठूण तओ जणणी, चउब्भुयं पुत्तमब्भुयमणग्घं ।
भयहरिसविम्हयमुही, पुच्छइ नेमित्तियं सहसा ॥२॥

णेमित्तएण मुणिऊण, साहियं तीइ हट्ठहिययाए ।
जह एस तुब्भ पुत्तो, महाबलो दुज्जओ समरे ॥३॥

एयस्स य जं दट्ठूण, होइ साभावियं भुयाजुगलं ।
होही तओ चिय भयं, सुतस्स ते नत्थि संदेहो ॥४॥

सावि भयवेविरंगी, पुत्तं दंसेइ जाव कण्हस्स ।
ताव चिय तस्स ठियं, पयइत्थं वरभुयाजुगलं ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो कण्हस्स पिउच्छा, पुत्तं पाडेइ पायपीढंमि ।
अवराहखामणत्थं, सो वि सयं से खमिस्सामि ॥६॥
सिसुवालो वि हु जुव्वण,-मएण नारायणं असब्भेहिं ।
वयणेहिं भणइ सो वि हु,-खमइ खमाए समत्थो वि ॥७॥
अवराहसए पुण्णे, वारिज्जंतो ण चिट्ठइ जाहे ।
कण्हेण तओ छिन्नं, चक्केणं उत्तमंगं से ॥८॥

सूत्रकृताङ्गसूत्रवृत्तौ.

(१३)

कमलामेला

[1]बारवईए बलदेवपुत्तस्स निसढस्स पुत्तो सागरचंदो नाम कुमारो, रूवेण य उक्किट्ठो सव्वेसिं [2]संबाईणं इट्ठो । तत्थ य बारवईए वत्थव्वस्स चेव अण्णस्स रण्णो कमलामेला नाम धूआ उक्किट्ठसरीरा । सा य [3]उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स वरिल्लिया । इओ य नारओ सागरचंदस्स कुमारस्स सगासं आगओ । अब्भुट्ठिओ । उवविट्ठं समाणं पुच्छइ-भयवं ! किंचि अच्छेरयं दिट्ठं ?। आमं दिट्ठं । कहिं ?। इहेव बारवईए नयरीए कमलामेला नामं दारिया । कस्सइ दिन्निया ?। आमं । कस्स ? । उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स । तओ सो भणइ-कहं मम ताए समं संजोगो होज्जा ?। 'न याणामु'त्ति भणित्ता गओ। सो य सागरचंदो तं सोउं न वि आसणे न वि सयणे धिइं लहइ । तं दारियं [4]फलए पासंतो नामं च गिण्हंतो अच्छइ, नारओ वि कमलामेलाए अंतियं गओ । ताए पुच्छिओ-किंचि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छेरयं दिट्ठं ? । नारओ भणइ–दुवे दिट्ठाणि, रूवेण सागरचंदो, विरूवत्तणेण धणदेवो । तओ सागरचंदे मुच्छिया धणदेवे विरत्ता । नारएण आसासिआ । तेण गंतु सागरचंदस्स आइक्खियं, जहा 'इच्छइ'त्ति । ततो य सागरचंदस्स माया अन्ने य कुमारा [5]अद्दन्नामरति नूणं सागरचंदो । संबो आगओ जाव पिच्छइ सागरचंदं विलवमाणं । ताहे अणेण [6]पच्छओ धाइऊण अच्छीणी दोहि वि हत्थेहिं छाइयाणि । सागरचंदेण भणियं कमलामेले ! । संबेण भणियं–नाहं कमलामेला, कमलामेलो हं । सागरचंदेण भणियं–आमं, तुमं चेव कमलामेलं दारियं मेलेहिसि । ताहे तेहिं कुमारेहिं संबो भणिओ–कमलामेलं मेलेहि सागरचंदस्स । न मन्नइ । तओ मज्जं पाएऊण [7]अब्भुवगच्छाविओ । तओ विगयमओ चिंतइ–अहो ! मए [8]आलो अब्भुवगओ, किं सक्का इयाणिं निव्वहिउं ? ति, पज्जुन्नं पन्नत्तिं विज्जं मग्गइ । तेण दिन्ना । तओ जम्मि दिवसे धणदेवस्स विवाहो तम्मि दिवसे विज्जाए [9]पडिरूवं विउव्विऊणं कमलामेला अवहरिया, रेवए उज्जाणे नीया । संबप्पमुहा कुमारा उज्जाणं गंतुं नारयस्स रहस्सं भिंदित्ता कमलामेलं सागरचंदं परिणावित्ता तत्थ किड्डंता अच्छंति । विज्जापडिरूवगं पि विवाहे वट्टमाणे अट्टट्टहासं काऊणं उप्पइयं । तओ जाओ खोभो । न नज्जइ 'केणइ हरिय त्ति ?। नारओ पुच्छिओ भणइ-दिट्ठा रेवइए उज्जाणे केण वि विज्जाहरेण अवहरिया । तओ सबलवाहणो नारायणो निग्गओ । संबो विज्जाहररूवं काऊण जुज्झिउं संपलग्गो । सव्वे [10]दसाराइणो पराइया । तओ नारायणेण सद्धिं लग्गो । तओ जाहे णेणं णायं 'रुट्ठो ताउ'त्ति तओ से चलणेसु पडिओ । कण्हेण [11]अंबाडियो । तओ संबेण भणियं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एसा अम्हेहिं गवक्खेण अप्पाणं मुयंती दिट्ठा । तओ कण्हेण उग्गसेणो अणुगामिओ । पच्छा इमाणि भोगे भुंजमाणाणि विहरंति । अन्नया भयवं अरिट्ठनेमिसामी समोसरिओ । तओ सागरचंदो कमलामेला य सामिसगासे धम्मं सोऊण गहियाणुव्वयाणि संवुत्ताणि । तओ सागरचंदो अट्ठमी-चउद्दसीसुं सुन्नघरे वा सुसाणे वा एगराइयं पडिमं ठाइ । धणदेवेणं एयं नाऊणं [12]तंबियाओ सूईओ घडाविआओ । तओ सुन्नघरे पडिमं ठियस्स वीससु वि अंगुलीनहेसु [13]अक्को (क्खो) डियाओ । तओ सम्मसहियासमाणो वेयणाभिभूओ कालगतो देवो जाओ । ततो बिइअदिवसे गवेसिंतेहिं दिट्ठो । अक्कंदो जाओ । दिट्ठाओ सूईओ । गवेसिंतेहिं [14]तंबकुट्टगसगासे उवलद्धं–धणदेवेण काराविआओ । रूसिया कुमारा धणदेवं मग्गंति । दुण्हं पि बलाणं जुद्धं संपलग्गं । तओ सागरचंदो देवो अंतरे ठाऊणं उवसामेइ । पच्छा कमलामेला भयवओ सगासे पव्वइया ।

बृहत्कल्पपीठिकायाम् ।

---

(१४)

वुड्ढा तरुणा य मंतिणो–

परिणयबुद्धी वुड्ढा पावायारे नेव पवत्तइ, अत्थ कहा–

एगस्स रन्नो दुविहा मंतिणो, तरुणा वुड्ढा य । तरुणा भणंति एए वुड्ढा मइभंसपत्ता न सम्मं मंतिन्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता अलमेएहिं। अम्हे चेव पहाणा। अन्नया तेसिं परिच्छा-निमित्तं राया भणइ, भो सचिवा! जो मम सीसे [1]पण्हिपहारं दलयइ, तस्स को दंडो कीरइ?। तरुणेहिं भणियं, किमेत्थ जाणियव्वं। तस्स सरीरं तिलं तिलं कप्पिज्जइ, [2]सुहुयहुयासणे वा छु[3]ब्भइ। तओ रन्ना वुड्ढा पुच्छिया। तेहिं एगंते गंतूण मंतियं, [4]आसंधयप्पहाणा महादेवी चेव एवं करेइ, ता तीए पूया चेव कीरइ। एयमेयत्थं वत्तव्वं ति निच्छिऊण भणियं, जं माणुसमेरिसं महासाहसमायरइ, तस्स सरीरं [5]ससीसवायं कंचणरयणालंकारेहिं अलंकिज्जइ। तुट्ठेण भणियं रन्ना, साहु विन्नायं ति, सच्चदंसिणो त्ति रन्ना ते चेव पमाणं कय त्ति "यतो वृद्धा नाहितेषु प्रवर्तन्ते, ततो वृद्धानुगेन भवितव्यम्, सोऽप्येवमेव पापे न प्रवर्तते, केन हेतुना? इत्याह-साङ्गत्यजनिताः गुणाः प्राणिनां स्युः। अत एवोक्तम्"

उत्तमजणसंसग्गी, [6]सीलदरिद्दं पि कुणइ सीलड्ढं।
जह मेरुगिरिविलग्गं, तणं पि कणयत्तणमुवेइ ॥१॥

धर्मरत्नप्रकरणे।

(१५)

विणओ सव्वगुणाणं मूलं--

मगहमंडलमंडणभूओ धणधन्नसमिद्धो सालिग्गामो नाम गामो। तत्थ [1]पुप्फसालगाहावई (तस्स य) फलसालो नाम पुत्तो अहेसि। [2]पयइभद्दओ पयइविणीओ परलोगभीरू य। तेण धम्मस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्थपाढयाओ सुयं। जो उत्तमेसु विणयं पउंजइ, सो जम्मंतरे उत्तमुत्तमो होइ। तओ सो ममेस जणओ उत्तमो त्ति सव्वायरेण तस्स विणए पवत्तो। अन्नया दिट्ठो जणओ गामसामिस्स विणयं पउंजंतो। तओ एत्तो वि इमो उत्तमो त्ति जणयमापुच्छिऊण पवत्तो [3]गामसामिमोलग्गिउं। कयाइ तेण सद्धिं गओ रायगिहं। तत्थ गामाहिवं [4]महंतयस्स पणामाइ कुणमाणमालोइऊण इमाओ वि एस पहाणो त्ति ओलग्गिओ महंतयं। तं पि सेणियस्स विणयपरायणमवलोइऊण सेणियमोलग्गिउमारद्धो, अन्नया तत्थ भगवं वद्धमाणसामी समोसढो। सेणिओ सबलवाहणो वंदिउं निग्गओ। तओ फलसालो भगवंतं समोसरणलच्छीए [5]समाइच्छियं [6]नियच्छंतो पविम्हिओ। नूणमेस सव्वुत्तमो, जो एवं नरिंददेविंददाणविंदेहिं वंदिज्जइ ता अलमन्नेहिं। एयस्स चेव विणयं करेमि। तओ अवसरं पाविऊण [7]खग्गखेडगकरो चलणेसु निवडिऊण विन्नविउं पवत्तो। भयवं! अणुजाणह, अहं से ओलग्गामि। भगवया भणियं, भद्द! नाहं खग्गफलगहत्थेहिं ओलग्गिज्जामि, किंतु [8]रओहरणमुहपोत्तियापाणीहिं, जहा एए अन्ने ओलग्गंति। तेण भणियं जहा तुब्भे आणवेह, तहेवोलग्गामि। तओ जोग्गो त्ति भगवया पव्वाविओ, सुगइं च पाविओ। एवं विणीओ धम्मारिहो होइ त्ति॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१६)

कुमारवालभूवालस्स जीवहिंसाइचाओ-

इय जीवदयारूवं, धम्मं सोऊण तुट्ठचित्तेण ।
रन्ना भणियं मुणिनाह ! साहिओ सोहणो धम्मो ॥१॥

एसो मे अभिरुइओ, एसो चित्तंमि मज्झ विणिविट्ठो ।
एसो च्चिय परमत्थेण, घडए जुत्तीहिं न हु सेसा ॥२॥

मन्नंति इमं सव्वे, जं उत्तमअसणवसणपमुहेसु ।
दिन्नेसु उत्तमाइं, इमाइं लब्भन्ति परलोए ॥३॥

एवं सुहदुक्खेसु, कीरंतेसु परस्स इह लोए ।
ताइं चिय परलोए, लब्भंति अणंतगुणियाइं ॥४॥

जो कुणइ नरो हिंसं, परस्स जो जणइ जीवियविणासं ।
विरएइ सोक्खविरहं, संपाडइ संपयाभंसं ॥५॥

सो एवं कुणमाणो, परलोए पावए परेहिंतो ।
बहुसो जीवियनासं, सुहविगमं संपओच्छेयं ॥६॥

जं उप्पइ तं लब्भइ, पभूयतरमत्थ नत्थि संदेहो ।
ववि एसु कोद्दवेसुं, लब्भंति हि कोद्दवा चेव ॥७॥

जो उण न हणइ जीवे, तो तेसिं जीवियं सुहं विभवं ।
न हणइ तत्तो तस्स वि, तं न हणइ को वि परलोए ॥८॥

ता भद्देण व नूनं, कयाणुकंपा मए वि पुव्वभवे ।
जं लंघिऊण वसणाइं, रज्जलच्छी इमा लद्धा ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता संपइ जीवदया, जावज्जीवं मए विहेयव्वा ।
मंसं न भक्खियव्वं, परिहरियव्वा य पारद्धी ॥१०॥

जो देवयाण पुरओ, कीरइ आरुग्गसंतिकम्मकए ।
पसुमहिसाण विणासो, निवारियव्वो मए सो वि ॥११॥

बालो वि मुणइ एवं, जीववहेणं न लब्भइ सग्गो ।
किं पन्नगमुहकुराओ, होइ पीऊसरसवुट्ठी ॥१२॥

तो गुरुणा वागरियं, नरिंद ! तुह धम्मबंधुरा बुद्धी ।
सव्वुत्तमो विवेगो, अणुत्तरं तत्तदंसित्तं ॥१३॥

जं जीवदयारम्मे, धम्मे कल्लाणजणणकयकम्मे ।
सग्गापवग्गपुरमग्ग – दंसणे, तुह मणं लीणं ॥१४॥

तओ रन्ना रायाएसपेसणेण सव्वगामनगरेसु अमारिघोसणापडहवायणपुव्वं पवत्तिया जीवदया ।

गुरुणा भणिओ राया, महाराय ! दुप्पचया पाएण मंसगिद्धी ।
धन्नो तुमं भायणं सकलकल्लाणाणं जेण कया मंसनिवित्ती ।

× × ×

संपयं मज्जवसणदोसे सुणसु–

नच्चइ गायइ पहसइ, पणमइ परिभमइ मुयइ वत्थं पि ।
तूसइ रूसइ निक्का–रणंपि मइरामउम्मत्तो ॥१॥

जणणिं पि पिययमं पिययमं पि, जणणिं जणो विभावन्तो ।
मइरामएण मत्तो, गम्मागम्मं न याणेइ ॥२॥

न हु अप्पपरविसेसं, वियाणए मज्जपाणमूढमणो ।
बहु मन्नइ अप्पाणं, पहुं पि निब्भत्थए जेण ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वयणे पसारिए साणया, विवरब्भमेण मुत्तंति ।
पहपडियस्स सवस्स व, दुरप्पणो मज्जमत्तस्स ॥४॥
धम्मत्थकामविग्घं, विहणियमइकित्तिकंतिमज्जायं ।
मज्जं सव्वेसिं पि हु, भवणं दोसाण किं वहुणा ? ॥५॥
जं जायवा ससयणा, सपरियणा सविहवा सनयरा य ।
निच्चं सुरापसत्ता, खयं गया तं जए पयडं ॥६॥
एवं नरिंद ! जाओ, मज्जाओ जायवाण सव्वखओ ।
ता रन्ना नियरज्जे, मज्जपवित्ती वि पडिसिद्धा ॥७॥

कुमारपालप्रतिबोधे.

(१७)

पाइअ-सुभासिअ-पज्जाणि-

न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेण, कुसचीरेण न तावसो ॥१॥
समयाए समणो होइ, बम्भचेरेण बंभणो ।
नाणेण य मुणी होइ, तवेणं होइ तावसो ॥२॥
कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३॥

धम्मो-

जत्थ य विसयविरागो, कसायचाओ गुणेसु अणुराओ ।
किरियासु अप्पमाओ, सो धम्मो सिवसुहोवाओ ॥४॥
जाएण जीवलोगे, दो चेव नरेण सिक्खियव्वाइं ।
कम्मेण जेण जीवइ, जेण मओ सुग्गइं जाति ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मेण कुलप्पसूई, धम्मेण य दिव्वरूवसंपत्ती ।
धम्मेण धणसमिद्धी, धम्मेण सवित्थरा कीत्ती ॥६॥
मा सुअह जग्गिअव्वे, पलाइअव्वंमि कीस वीसमह ।
तिन्नि जणा अणुलग्गा, रोगो अ जरा य मच्चू अ ॥७॥
सग्गो ताण घरंगणे सहयरा, सव्वा सुहा संपया ।
सोहग्गाइगुणावली विरयए, सव्वंगमालिंगणं ॥
संसारो न दुरुत्तरो सिवसुहं, पत्तं करंभोरुहे ।
जे सम्मं जिणधम्मकम्मकरणे, वट्टंति उद्धारया ॥८॥

दाणं–

नो तेसिं कुवियं व दुक्खमखिलं, आलोयए सम्मुहं,
नो मिल्लेइ घरं कमंकवडिया, दासि व्व तेसिं सिरी ।
सोहग्गाइगुणा चयंति न गुणा–ऽऽबद्ध व्व तेसिं तणुं,
जे दाणंमि समीहियत्थजणणे, कुव्वंति जत्तं जणा ॥९॥
ववसायफलं विहवो, विहवस्स फलं सुपत्तविणिओगो ।
तयभावे ववसाओ, विहवो वि अ दुग्गइनिमित्तं ॥१०॥

लच्छी

विगुणमवि गुणड्ढं, रूवहीणं पि रम्मं,
जडमवि मइमंतं, मंदसत्तं पि सूरं ।
अकुलमवि कुलीणं, तं पयंपंति लोया,
नवकमलदलच्छी, जं पलोएइ लच्छी ॥११॥
जाई रूवं विज्जा, तिण्णि वि निवडंतु कंदरे विवरे ।
अत्थु च्चिअ परिवड्ढउ, जेण गुणा पायडा हुंति ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीलं

अलसा होइ अकज्जे, पाणिवहे पंगुला सया होइ ।
परतत्तिसु बहिरा, जच्चंधा परकलत्तेसु ॥१३॥
जो वज्जइ परदारं, सो सेवइ नो कयाइ परदारं ।
सकलत्ते संतुट्ठो, सकलत्तो सो नरो होइ ॥१४॥
वरं अग्गिमि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मुणा मरणं ।
मा गहिअव्वयभंगो, मा जीअं खलिअसीलस्स ॥१५॥

भावो

जा दव्वे होइ मई, अहवा तरुणीसु रूववंतीसु ।
सा जइ जिणवरधम्मे, करयलमज्झे ठिआ सिद्धी ॥१६॥
तक्कविहूणो विज्जो, लक्खणहीणो अ पंडिओ लोए ।
भावविहूणो धम्मो, तिन्नि वि नूणं हसिज्जंति ॥१७॥
वंझं त्रिंति जहित्थ सत्थपढणं, अत्थाववोहं विणा,
सोहग्गेण विणा मडप्पकरणं, दाणं विणा संभमं ।
सब्भावेण विणा पुरंधिरमणं, नेहं विणा भोयणं,
एवं धम्मसमुज्जमं पि विबुहा, सुद्धं विणा भावणं ॥१८॥

दया–

किं तए पढिआए, पयकोडीए पलालभूआए ।
जत्थित्तियं न नायं, परस्स पीडा न कायव्वा ॥१९॥
इक्कस्स कए निअजीविअस्स, बहुआओ जीवकोडीओ ।
दुक्खे ठवंति जे केइ, ताणं किं सासयं जीअं ? ॥२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जं आरुग्गमुदग्गमप्पडिहयं, आणेसरत्तं फुडं,
रूवं अप्पडिरूवमुज्जलतरा, कित्ती धणं जुव्वणं ।
दीहं आउ अवंचणो परिअणो, पुत्ता सुपुण्णासया,
तं सव्वं सचराचरंमि वि जए, नूणं दयाए फलं ॥२१॥

सच्चं–

सच्चेण फुरइ कित्ती, सच्चेण जणंमि होइ वीसासो ।
सग्गापवग्गसुहसं–पयाउ जायंति सच्चेण ॥२२॥
पलए वि महापुरिसा, पडिवन्नं अन्नहा न हु कुणंति ।
गच्छंति न दीणयं (खलु), कुणंति न हु पत्थणाभंगं ॥२३॥
जेण परो दूमिज्जइ, पाणिवहो होइ जेण भणिएण ।
अप्पा पडइ अणत्थे, न हु तं जंपंति गीअत्था ॥२४॥

पुण्णं–

संगामे गयदुग्गमे हुयवहे, जालावलीसंकुले,
कंतारे करिवग्घसीहविसमे, सेले बहूवद्दवे ।
अंबोहिंमि समुल्लसंतलहरी–लंघिज्जमाणंबरे,
सव्वो पुव्वभवज्जिएहि पुरिसो, पुन्नेहि पालिज्जए ॥२५॥

ज्ञानादि–

नाणं मोहमहंधयारलहरी–संहारसूरुग्गमो,
नाणं दिट्ठअदिट्ठइट्ठघडणा–संकप्पकप्पद्दुमो ।
नाणं दुज्जयकम्मकुंजरघडा–पंचत्तपंचाणणो,
नाणं जीवअजीववत्थुविसर–स्सालोयणे लोयणं ॥२६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहा खरो चन्दणभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स ।
एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स भागी न हु सुग्गईए ॥२७॥

सुच्चा जाणइ कल्लाणं, सुच्चा जाणइ पावगं ।
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥२८॥

तं रूवं जत्थ गुणा, तं मित्तं जं निरंतरं वसणे ।
सो अत्थो जो हत्थे, तं विन्नाणं जहिं धम्मो ॥२९॥

पइण्णगगाहा–

ताव चिअ होइ सुहं, जाव न कीरइ पिओ जणो को वि ।
पिअसंगो जेण कओ, दुक्खाण समप्पिओ अप्पा ॥३०॥

न हु होइ सोइअव्वो, जो कालगओ दढं समाहीए ।
सो होइ सोइअव्वो, तवसंजमदुब्बलो जो उ ॥३१॥

जं चिअ विहिणा लिहिअं, तं चिअ परिणमइ सयललोअस्स ।
इअ जाणिऊण धीरा, विहुरे वि न कायरा हुंति ॥३२॥

पत्ते वसंतमासे, रिद्धिं पावंति सयलवणराई ।
जं न करीरे पत्तं, ता किं दोसो वसंतस्स ॥३३॥

उइअंमि सहस्सकरे, सलोयणो पिच्छइ सयललोओ ।
जं न उलूओ पिच्छइ, सहस्सकिरणस्स को दोसो ॥३४॥

गयणंमि गहा सयणंमि, सुविणया सउणया वणग्गेसु ।
तह वाहरंति पुरिसं, जह दिट्ठं पुव्वकम्मेहिं ॥३५॥

कत्थइ जीवो बलवं, कत्थइ कम्माइं हुंति बलिआइं ।
जीवस्स य कम्मस्स य, पुव्वनिबद्धाइं वेराइं ॥३६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवस्स मत्थए पाडिऊण, सव्वं सहंति कापुरिसा ।
देवो वि ताण संकइ, जेसिं तेओ परिप्फुरइ ॥३७॥

जीअं मरणेण समं, उप्पज्जइ जुव्वणं सह जराए ।
रिद्धी विणाससहिआ, हरिसविसाओ न कायव्वो ॥३८॥

अवगणइ दोसलक्खं, इक्कं मंनेइ जं कयं सुकयं ।
सयणो हंससहावो, पिअइ पयं वज्जए नीरं ॥३९॥

संतगुणकित्तणेण वि, पुरिसा लज्जंति जे महासत्ता ।
इअरा अप्पस्स पसंसणेण, हियए न मायंति ॥४०॥

संतेहिं असंतेहिं अ, परस्स किं जंपिएहिं दोसेहिं ।
अच्छो जसो न लब्भइ, सो वि अमित्तो कओ होइ ॥४१॥

विहलं जो अवलंबइ, आवइपडिअं च जो समुद्धरइ ।
सरणागयं च रक्खइ, तिसु तेसु अलंकिआ पुहवी ॥४२॥

सह जागराण सह सुआणाणं, सह हरिससोअवंताणं ।
नयणाणं व धन्नाणं, आजम्मं निच्चलं पिम्मं ॥४३॥

विणए सिस्सपरिक्खा, सुहडपरिक्खा य होइ संगामे ।
वसणे मित्तपरिक्खा, दाणपरिक्खा य दुक्काले ॥४४॥

आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेण नासए बंभं ।
संकाए सम्मत्तं, पव्वज्जा अत्थगहणेण ॥४५॥

दीसइ विविहच्छरिअं, जाणिज्जइ सुअणदुज्जण–विसेसो ।
अप्पाणं च कलिज्जइ, हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥४६॥

सत्थं हिअयपविट्ठं, मारइ जणे पसिद्धमिणं ।
तं पि गुरुणा पउत्तं, जीवावइ पिच्छ अच्छरिअं ॥४७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जणणी जम्मुप्पत्ती, पच्छिमनिद्दा सुभासिआ गुट्ठी ।
मणइट्ठं माणुस्सं, पंच वि दुक्खेहिं मुच्चंति ॥४८॥

जं अवसरे न हूअं, दाणं विणओ सुभासिअं वयणं ।
पच्छा गयकालेणं, अवसररहिएण किं तेण ? ॥४९॥

उवभुंजिउं न याणइ, रिद्धिं पत्तो वि पुण्णपरिहीणो ।
विमले वि जले तिसिओ, जीहाए मंडलो लिहइ ॥५०॥

आकड्ढिऊण नीरं, रेवा रयणायरस्स अप्पेइ ।
न हु गच्छइ मरुदेसे, सच्चं भरिआ भरिज्जंति ॥५१॥

सा साई तंपि जलं, पत्तविसेण अंतरं गुरुअं ।
अहिमुहि पडिअं गरलं, सिप्पिउडे मुत्तियं होइ ॥५२॥

केसिंचि होइ वित्तं, चित्तं अन्नेसिमुभयमन्नेसिं ।
चित्तं वित्तं पत्तं, तिण्णि वि केसिंचि धन्नाणं ॥५३॥

कत्थ वि दलं न गंधो, कत्थ वि गंधो न होइ मयरंदो ।
इक्ककुसुमंमि महुयर ! दो तिण्णि गुणा न दीसंति ॥५४॥

कत्थ वि जलं न छाया, कत्थ वि छाया न सीअलं सलिलं ।
जलछायासंजुत्तं, तं पहिअ ! सरोवरं विरलं ॥५५॥

कत्थ वि तवो न तत्तं, कत्थ वि तत्तं न सुद्धचारित्तं ।
तवतत्तचरणसहिआ, मुणिणो वि अ थोव संसारे ॥५६॥

दुक्खाण एउ दुक्खं, गुरुआण जणाण हिअयमज्झंमि ।
जंपि परो पत्थिज्जइ, जंपि य परपत्थणाभंगो ॥५७॥

किं किं न कयं, को को न पत्थिओ, कह कह न नामिअं सीसं ? ।
दुब्भरउअरस्स कए, किं न कयं किं न कायव्वं ॥५८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवंति खग्गछिन्ना, पव्वयपडिआवि के वि जीवंति ।
जीवंति उदहिपडिआ, चट्टुच्छिन्ना न जीवंति ॥५९॥

जं अज्जिअं चरित्तं, देसूणाए अ पुव्वकोडीए ।
तं पि कसाइयमित्तो, हारेइ नरो मुहुत्तेण ॥६०॥

तं नत्थि घरं तं नत्थि, राउलं देउलं पि तं नत्थि ।
जत्थ अकारणकुविआ, दो तिन्नि खला न दीसंति ॥६१॥

अइतज्जणा न कायव्वा, पुत्तकलत्तेसु सामिए भिच्चे ।
दहिअं पि महिज्जंतं, छंडइ देहं न संदेहो ॥६२॥

वल्ली नरिंदचित्तं, वक्खाणं पाणिअं च महिलाओ ।
तत्थ य वच्चंति सया, जत्थ य धुत्तेहिं निज्जंति ॥६३॥

अवलोअइ गंथत्थं, अत्थं गहिऊण पावए मुक्खं ।
परलोए देइ दिट्ठी, मुणिवरसारिच्छिया वेसा ॥६४॥

दो पंथेहिं न गम्मइ, दोमुहसूई न सीवए कंथं ।
दुन्नि न हुंति कया वि हु, इंदियसुक्खं च मुक्खं च ॥६५॥

वसणे विसायरहिया, संपत्तीए अणुत्तरा हुंति ।
मरणे वि अणुव्विग्गा, साहससारा य सप्पुरिसा ॥६६॥

अणुवट्टिअस्स धम्मं, मा हु कहिज्जाहि सुट्ठु वि पियस्स ।
विच्छाय होइ मुहं, विज्झायग्गिं धमंतस्स ॥६७॥

रयणिं अभिसारिआओ, चोरा परदारिआ य इच्छंति ।
तालायरा सुभिक्खं, बहुधन्ना केइ दुब्भिक्खं ॥६८॥

जं किंचि पमाएणं, न सुट्ठु भे वट्टियं मए पुव्विं ।
तं भे खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाओ अ ॥६९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणसुट्ठिअस्स वयणं, घयपरिसित्तो व्व पावओ भाइ ।
गुणहीणस्स न सोहइ, नेहविहूणो जह पईवो ॥७०॥

अइबहुयं अइबहुसो, अइप्पमाणेण भोयणं भुत्तं ।
हाएज्ज व वामेज्ज व, मारेज्ज व तं अजीरंतं ॥७१॥

जंपेज्ज पियं विणयं, करिज्ज वज्जेज्ज पुत्ति ! परनिंदं ।
वसणे वि मा विमुंचसु, देहच्छाय व्व नियनाहं ॥७२॥

किं लट्ठुं लहिही वरं पिययमं, किं तस्स संपज्जिही,
किं लोयं ससुराइयं नियगुण–ग्गामेण रंजिस्सए ।
किं सीलं परिपालिही पसविही, किं पुत्तमेवं धुवं,
चिंता मुत्तिमई पिऊण भवणे, संवट्टए कन्नगा ॥७३॥

धम्मारामखयं खमाकमलिणी–संघायनिग्घायणं,
मज्जायातडिपाडणं सुहमणो–हंसस्स निव्वासणं ।
वुड्ढिं लोहमहण्णवस्स खणणं, सत्ताणुकंपाभुवो,
संपाडेइ परिग्गहो गिरिनई-पूरो व्व वड्ढंतओ ॥७४॥

हा कुंदिंदुसमुज्जलो कलुसिओ, तायस्स वंसो मए,
बंधूणं मुहपंकएसु य ह हा, दिन्नो मसीकुच्चओ ।
ही तेलुक्कमकित्तिपंसुपसरे–णुध्धूलियं सव्वओ;
धिद्धी ? भीमभवुब्भवाण भवणं, दुक्खाण अप्पा कओ ॥७५॥

ऊसस–नीसस–रहियं, गुरुणो सेसं वसे हवइ दव्वं ।
तेणाणुण्णा जुज्जइ, अण्णह दोसो भवे तस्स ॥७६॥

न सा सहा, जत्थ न संति वुड्ढा,
वुड्ढा न ते, जे न वयंति धम्मं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मो न सो, जत्थ य नत्थि सच्चं,
सच्चं न तं, जं छलणाणुविद्धं ॥७७॥

जोएइ य जो धम्मे, जीवं विविहेण केणइ नएण ।
संसार-चारग-गयं, सो नणु कल्लाणमित्तो त्ति ॥७८॥

जिणपूआ मुणिदाणं; एत्तियमेत्तं गिहीण सच्चरियं ।
जइ एआओ भट्ठो, ता भट्ठो सव्वकज्जाओ ॥७९॥

नरस्साभरणं रूवं, रूवस्साभरणं गुणो ।
गुणस्साभरणं नाणं, नाणस्साभरणं दया ।८०॥

अइरोसो अइतोसो, अइहासो दुज्जणेहिं संवासो ।
अइउब्भडो य वेसो, पंच वि गरुयं पि लहुअंति ॥८१॥

अभूसणो सोहइ बंभयारी, अकिंचणो सोहइ दिक्खधारी ।
बुद्धिजुओ सोहइ रायमंती, लज्जाजुओ सोहइ एगपत्ती ॥८२॥

न धम्मकज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणिहिंसा परमं अकज्जं ।
न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ॥८३॥

जूए पसत्तस्स धणस्स नासो, मंसे पसत्तस्स दयाइ नासो ।
मज्जे पसत्तस्स जसस्स नासो, वेसापसत्तस्स कुलस्स नासो ॥८४॥

हिंसापसत्तस्स सुधम्मनासो, चोरीपसत्तस्स सरीरनासो ।
तहा परत्थीसु पसत्तयस्स, सव्वस्स नासो अहमा गई य ॥८५॥

दाणं दरिद्दस्स, पहुस्सा खंती; इच्छानिरोहो य सुहोइयस्स ।
तारुण्णए इंदिय-निग्गहो य, चत्तारि एआणि सुदुक्कराणि ॥८६॥

विविहसत्थाओ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'पाइअगज्ज–पज्जमाला' मां आवेला कठिन शब्दोना अर्थ

(१)

पवज्जामि (प्रपद्ये) हुं स्वीकार करुं छुं.

(२)

१. शिबिकावर्णनमां प्रभुश्रीमहावीरस्वामीनी दीक्षाना प्रसंगमां शिबिकानुं वर्णन करेल छे.

पज्जंक–१. सीया (शिबिका) शिबिका। **ओसत्त०** ×(अवसक्त) लागेलां। २–**०चिचइयं** (मण्डितम्) शोभित। ३–**आलइय०** (आलगित) धारण करेलां, **०मउडो** (मुकुट:) मुगुट, **०बुंदी** (दे०) शरीर, **खोमिय०** (क्षौमिक) कपास के शणनुं बनेलुं वस्त्र, **०नियत्थो** (दे०) परिहित= पहेरेलुं। ४–**छट्ठेण उ भत्तेण** (षष्ठेन तु भक्तेन) बे उपवासवडे। **लेसाहिं** (लेश्याभि:) आत्माना परिणामोवडे। **सक्कीसाणा** (शक्रेशानौ) शक्रेन्द्र अने इशानेन्द्र। ५–**वीयंति** (वीजयत:) वींझे छे। ९–**सिद्धत्थवणं** (सिद्धार्थवनम्) सरसवनुं वन. **कणयार०** (कर्णिकार) कणेरनुं झाड। ११–**ततविततं घण०** (ततविततं घन०) वीणा वगेरे चारे जातना वाजींत्रो.

(३)

१. इन्द्रियविषयभावनामां कर्ण, चक्षु, नासिका जीह्वा अने स्पर्शन आ पांचे इन्द्रियोना विषयनी भावना देखाडेल छे.

पज्जंक–१. सक्का (शक्नुयात्) शक्तिमान थाय, **सोतविसयं** (श्रोत्रविषयम्) कर्णेन्द्रियना विषयने। **रागदोसा** (रागद्वेषौ) राग अने

×आवा चिह्नवाळा शब्दो समासमां छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वेष। ३–**अग्घाउं** (अघ्रातुम्) नहि सुंघवाने. ४–० **अस्साउं** (अस्वादितुम्) स्वाद नहि लेवाने। ५–०**अवेएउं** (अवेदयितुम्) वेदन नहि करवाने।

(४)

१. पूज्य **श्रीसुधर्मास्वामीजी** भगवान् **श्रीजंबूस्वामीने** उद्देशीने उपदेश आपे छे के="आरंभ परिग्रहादिमां आसक्त लोकोनो संग त्याग करी साधुओए निर्ममत्वभावे रहेवुं जोइए." ते बतावेल छे.

पज्जंक–१. मतीमता (मतिमता) केवलज्ञानी प्रभु श्रीमहावीर-स्वामीए, **अंजु** (ऋजु) 'माया–प्रपंच रहित' सरल. **जहातच्चं** (यथातथ्यम्) सत्यार्थ–'सत्यार्थने तमे सांभळो.'। २–**अदु** (दे० अथवा) के, **बोक्कसा** (दे०) वर्णशंकर जातिविशेष. **एसिया** (एषिकाः) पारधी विगेरे जीवहिंसको. **वेसिया** (वैशिकाः) वणिक विगेरे. ३–०**संभिया** (सम्भृताः) पापारंभोथी पुष्ट थयेलां कामो। ४–**आघाय-किच्चमाहेउं** (आघातकृत्यमाधाय) अग्नि–संस्कार–जलांजलिदान–पितृपिंड वगेरे मरणक्रिया करीने. **नाइओ** (ज्ञातयः) स्वजनो. **कम्मी** (कर्मवान्) पापारंभवाळो. **किच्चती** (कृत्यते) छेदाय छे, ५–**ओरसा** (औरसाः) स्वपुत्र–पोतानो पुत्र. **ताणाय** (त्राणाय) रक्षण माटे. ६–**संपेहाए** (सम्प्रेक्ष्य) जोइने। **परमट्ठाणुगामियं** (परमार्थानुगामिकम्) मोक्ष अने संयममां साथे रहेनारा सम्यग्दर्शन आदिने जोइने **जिणाहियं** (जिनाहितम्–जिनाख्यातम्) जिनेश्वरोए प्रतिपादन करेला मार्गमां.

(५)

१. पुष्करिणीना वर्णनमां–घणा कमलोथी विभूषित जलाशयनुं वर्णन करेल छे

२. **बहुसेया** (बहुसेया) घणो कादव छे जेमां. ३. **बहुपुक्खला** (बहुपुष्कला–बहुसम्पूर्णा) घणा जलथी भरेली. ४. **लद्धट्ठा** (लब्धार्था) सार्थकतावाळी. ५. **पुंडरीकिणी** (सम.) श्वेत कमलवाळी. ६. **पासादियां** (प्रासादीया–प्रासादिता) प्रासादयुक्त, प्रसन्नताजनक. ७. **अभिरूवा**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अभिरूपा) राजहंसादि पक्षियुक्त, सुंदर. ८. **पडिरूवा** (प्रतिरूपा) प्रतिबिम्बित, अतिशय रूप सहित. ९ **वुइया** (उक्तानि) कहेलां छे. १०. **आणुपुव्वुट्ठिया** (आनुपूर्व्युत्थितानि) विशिष्ट रचनापूर्वक रहेलां. ११. **ऊसिया** (उच्छ्रितानि) पाणी अने कादवनो त्याग करी उपर रहेलां. १२. **रुइला** (रुचिलानि) उत्तम कान्तिवाला. १३. **सव्वावंति** (सर्वस्याः) सर्व ते पुष्करिणीना ते ते प्रदेशोमां.

(६)

१. नमिप्रव्रज्यामां—मिथिला नगरीनो तेमज सकल राज्य—ऋद्धिनो त्याग करी स्वयंबुद्ध थयेला **नमिराजर्षि**नी साथे **शक्रेन्द्र**नो संवाद बतावेल छे.

पज्जंक—१ **सरई** (स्मरति) पूर्वभवना जन्मने स्मरण करे छे। ४-**ओरोहं** (अवरोधम्) अंतःपुरने, **चिच्चा** (त्यक्त्वा) त्याग करीने, **एगन्तं** (एकान्तम्) द्रव्यथी एकान्त=निर्जन उद्यानादिस्थान, भावथी एकान्त=हुं एकलो ज छुं, मारुं कोई नथी, हुं कोईनो नथी। ९. **सीयच्छाए** (शीतच्छाये) शीतल छायावाळो। १०—**अत्ता** (आर्ताः) पीडित थयेला। १४ **मो** (अस्माकम्) जे अमारुं कंई पण नथी। १६—**अणुपस्सओ** (अनुपश्यतः) हुं एकलो ज छु ए प्रमाणे जोनारने। ४६-**मणिमुत्तं** (मणिमुक्तम्) इन्द्रनील आदि मणिओ अने मोतीओ। **दूसं** (दूष्यम्) विविध जातनां वस्त्रो। ४९—**विज्जा** (विदित्वा) जाणीने। ५१—**अब्भुदए** (अद्भुतान्) विस्मय करनारा। ५३—**आसीविस०** (आशिविष) दाढोमां विषवाळो सर्प। ५४—**माया** (मायया) मायावडे=' मायाथी सुगतिनो प्रतिघात थाय छे.", **दुहओ** (द्विधा) आ लोक अने परलोकनो। ५५—**वग्गुहिं** (वाग्भिः) वाणीओ वडे। ५६—**निरक्किया** (निराकृता) दूर करी छे। ५८—**भन्ते** (भदन्त ! भगवन् !) हे पूज्य—हे भगवन् **निरओ** (निरजाः) कर्मरहित। ६०—०**तिरीडी** (किरीटी) मुगुटने धारण करनार। ६१-**सक्खं** (साक्षात्) प्रत्यक्ष, **वेदेही** (वैदेही) विदेह देशना राजा, **सामण्णे पज्जु०** (श्रामण्ये पर्युपस्थित) चारित्रने विषे उद्यमवाला थया.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

१. व्रतषट्कनी अंदर प्राणातिपात–मृषावाद–अदत्तादान–मैथुन–परिग्रह अने रात्रिभोजन अे छना त्यागनो उपदेश आपवापूर्वक छ व्रतोनुं वर्णन देखाडेल छे.

पज्जंक–१० **जाणं** (जाणन्) जाणतो, **घायए** (घातयेत्) हणावे। १३–**अविस्सासो** (अविश्वास्यः) अविश्वासपात्र बने छे १४–**चित्तमंतं** (चित्तवन्तम्) जीववाळी वस्तुने, **उग्गहंसि अजाइया** (अवग्रहेऽयाचित्वा) जेनी वसतीमां रहेला होय तेनी रजा विना, १६–**दुरहिट्ठियं** (दुरधिष्ठितम्) **दुःसेवं**=दुःखे करीने सेवी शकाय "जिन-वचनने जाणनार भव्यजीव अब्रह्मने अनंत संसारनुं कारण जाणी प्रायः तेमां प्रवृत्ति करतो नथी." **भेयाययण०** (भेदायतन) संयमनो नाश करे एवा स्थानने त्याग करनारा. १७. **०समुस्सयं** (समुच्छ्रयम्) महादोषोनुं स्थान. १८–**विडमुब्भेइयं** (विडमुद्भेद्यम्) बिडम्=प्रासुक="गोमुत्र अग्नि वगेरेथी" शुद्ध करेल लूण. उद्भेद्यम्=अप्रासुक=समुद्रादिकनुं मीठुं, **फाणिअं** (फाणितम्) ढीलोगोळ–काक्व। १९. **सन्निहिं कामे** (सन्निधिं कामयेत्) संचय=संग्रहने इच्छे। २०. **पायं** (पात्रम्) पात्र. **पायपुंछणं** (पादप्रोञ्छनम्) रजोहरण। २४. **राओ** (रात्रौ) रात्रिमां, **एसणिअं** (एषणीयम्) शुद्ध आहार="शुद्ध आहारनी गवेषणा शी रीते करे."

८

पज्जंक–२१ **वुण्ण०** (दे०) त्रस्त–भीत. २२–**छम्मेण** (छद्मना) कपटवडे। २६–**गग्गर०** (गद्गद) भराइ आवेल–रुंधाई गयेल। २८–**उज्झयणिज्जं अयण्णसुहं** (उत्त्यजनीयम्–अकर्णसुखम्) त्याग करवा लायक, कर्णने सुख न थाय तेवुं। २९–**पयलियंसू** (प्रगलिताश्रुः) झरता छे आंसु जेने='आंसुने पाडती'। ३२–**अणियत्त०** (अनिवृत्त) पराधीन–'कामने आधीन थयेल'। ३४–**सग्गग्गला** (स्वर्गार्गला) देवलोकने रोकवामां भोगळ समान। ३८–**विवाइया** (विपादिता) मराया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९

१. **थरथरंतो** (दे०) कम्पमान–कंपतो, २. **भिडिओ** (दे०) श्येन पक्षी–सींचाणो । ३. **भुक्खदुक्खद्दियस्स** (बुभुक्षादुःखार्दितस्य) क्षुधाना दुःखथी पीडायेला । ४. **फुरफुरेंतं** (पोस्फुरायमाणम्) थरथरतां बहु ज कंपतां । ५. **छुभेइ** (क्षिपति) नांखे छे ।

१०

१. **तामलित्ती०** (ताम्रलिप्ती) एक प्राचीन नगरी । **सारक्खण** (संरक्षण) २. **उवहि-नियडिकुसला** (उपधिनिकृतिकुशला) माया कपट करवामां कुशल । ३. **चोक्खवाइणी** (चोक्षवादिनी) शौच धर्म-वादिनी । ४. **पओसे** (प्रदोषे) सन्ध्याकाले । ५. **उदिक्खमाणी** (उदीक्षमाणा) राह जोती । ६. **विवाडेउं** (विपातयितुम्) मारी नांखवाने. ७. **वंजणाणि** (व्यञ्जनानि) शाक आदि स्वादिष्ट वस्तु । ८. **उच्छंगे** (उत्सङ्गे) खोळामां । ९. **माउसुणिगाए** (मातृशुनिकाया:) "माता मरीने कूतरी तरीके उत्पन्न थयेली छे तेथी"–कूतरीपणे उत्पन्न थयेली माताने. १०. **ओहिणा आभोएऊण** (अवधिना–आभोगयित्वा) अवधिज्ञानवडे जोइने ११. **विवित्तपएसे** (विविक्तप्रदेशे) एकान्त प्रदेशमां "स्त्री–पशु–नपुंसक रहित एवा एकान्त स्थानमां रहेला मुनिने जोइने ।" १२. **साभि-ण्णाणं जहावत्तं** (साभिज्ञानं यथावृत्तम्) निशानी सहित जेवुं बन्युं हतुं ।

११

१. (**विक्कीयाइणि** विक्रीतवती) "लाकडां वगेरे" वेचती. २. **घिच्छामो** (गर्हितास्म:) अमे निन्दाने पात्र थया. ३. **अजीवमाणी** (अजीवन्ती) "तेथी ते नगरमां" आजीविका चलाववाने नहि इच्छती. ४. **जीवियाइओ** (जीविकायित:) जीवन चलावता हता. ५. **ओल-ग्गाए** (अवलगया) सेवावडे, 'बीजानी सेवा चाकरी करवाथी'. ६. **खाइं** (दे०) वाक्य–शोभार्थक अव्वय. ७. **जोक्कारो** (जयकार:) जय जय ए प्रमाणे बोलवुं ते. ८. **छंदाणुवत्तिणा** (छन्दानुवर्तिना) अनुकूल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तवा वडे. **अंतरा** (अन्तरा) वचमां. ९. **निलुक्का** (निलीनाः) संतायेलां "हरणोने पकडवा माटे गुप्त रहेला." १० **वड्डेण** (दे०) (बृहता)=मोटा शब्दवडे. ११. **पलाया** (पलायिताः) पलायन करी गया. १२. **सब्भावो** (सद्भावः) सत्यार्थ, १३. **भंडं** (भाण्डम्) वासण वगेरे. १४. **मडयं नीणिज्जंतं** (मृतकं नीयमानम्) लइ जवाता मडदाने. १५. **नियलवद्धं दंडियं** (निगडबद्धं दण्डिकम्) वेडीमां बंधायेला गामना ठाकोरने. १६. **संघाडयं** (सङ्घाटकम्) सङ्घटन. १७. **अल्लीणो** (आलीनः) समीपे गयो—आश्रय कर्यो. १८. **अंबखल्लिया** (अम्ल—यवागूः) राब—'छास वगेरेथी बनेली खाटी वस्तु.' १९. **अंबाडियो** (तिरस्कृतः) तिरस्कार करायो. २०. **झामियं** (ध्मातम्—प्रदीप्तम्) बळायुं २१. **धूविंतस्स** (धूपयतः) धूप करता.

१२

पज्जंक—१. **सुसाए** (स्वस्रः) व्हेन, **चउब्भुओ** (चतुर्भुजः) चार हाथवालो, **कलहपत्तट्ठो** (कलहप्राप्तार्थः) कलहमां आसक्त ५. **पयइत्थं** (प्रकृतिस्थम्) स्वाभाविक. ६—**उत्तमंगं** (उत्तमाङ्गम्) मस्तक.

१३

१. **बारवईए** (द्वारवत्याम्) द्वारिका नगरीमां. २. **संबाईणं** (शाम्बादीनाम्) शाम्ब वगेरे कुमारोने. ३. **०नत्तुस्स** (नप्तुः) पौत्र. ४. **फलए** (फलके) चित्रपटमां. ५. **अद्दन्ना** (दे०) खेद पाम्या, व्याकुळ थया. ६. **पच्छओ** (पश्चात्तः) पाछळथी. ७. **अब्भुवगच्छाविओ** (अभ्युपगमितः) स्वीकार कराव्युं. ८. **आलो** (आलः) आळ, दोषारोपण. ९. **पडिरूवं** (प्रतिरूपम्) समान. "विद्या वडे कमला—मेला जेवुं रूप बनावीने". १०. **दसाराइणो** (दशार्हराजानः) समुद्रविजय आदि दश राजाओ. ११. **अंबाडियो** (तिरस्कृतः) तिरस्कार करायो. १२. **तंबियाओ** (ताम्रिकाः) तांबानी सोयो. १३. **अक्खोडियाओ** (आक्षोदिताः) खोसाई. १४. **तंबकुट्टग०** (ताम्रकुट्टक०) तांबाने कूटनार.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४

१. **पण्हिपहारं** (पार्ष्णिप्रहारम्) पगनी पानीनो प्रहार–लात मारवी. २. **सुहुयहुयासणे** (सुहुतहुताशने) सारी रीते होमायेल अग्निमां ३. **छुब्भइ** (क्षिप्यते) नखाय. ४. **आसंघयप्पहाणा** (दे० स्नेह-प्रधाना) विश्वासपात्र–अति स्नेहवाळी. ५. **ससीसपायं** (सशीर्षपादम्) मस्तक अने पग सहित. ६. **सीलदरिद्दं** (शीलदरिद्रम्) शील–'उत्तम आचरण रहितने.

१५

१. **गाहावई** (दे० गृहपतिः) गृहस्थ. २. **पयइभद्दओ** (प्रकृति-भद्रकः) स्वभावथी सरल. ३. **ओलग्गिउं** (अवलगितुम्) सेवा–भक्ति करवाने. ४. **महंतस्स** (महतः) नगरनो मुख्य 'मन्त्री-श्रेष्ठी वगेरे' ५. **समाइच्छियं** (दे० समागतम्) सन्मान करायेल. ६. **नियच्छंतो** (पश्यन्) जोतां. ७. **०खेडग०** (खेटक) ढाल. ८. **रओहरणमुहपोत्ति-यापाणीहिं** (रजोहरणमुखपोतिकापाणिभिः) रजोहरण अने मुखवस्त्रिका हाथमां राखवा वडे.

१६

श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजनी पासेथी धर्म सांभळया पछी परमार्हत **श्रीकुमारपाल** राजा जीवहिंसा–मांसाहार–शीकार वगेरेना त्यागनी प्रतिज्ञा करे छे.

पज्जंक–२. घडए जुत्तीहिं (घटते युक्तिभिः) युक्तिओ वडे घटी शके छे. ५–**संपयाभंसं** (सम्पदा–भ्रंशम्) संपत्तिनो नाश. ७–**उप्पइ** (उप्यते) ववाय छे. १०–**पारद्धी** (पापर्द्धिः) शीकार. १२–**पीऊस** (पीयूष) अमृत. १५–**दुप्पच्चया** (दुष्प्रत्यजा) दुस्त्यज–दुःखे करीने त्याग करी शकाय.

(१७)

पज्जंक–१० तयभावे (तदभावे) तेना अभावमां, सुपात्रमां विनियोग कर्या विना. १४–**परदारं** (परदारान्, परद्वारम्) परस्त्रीने अथवा परना घरने, **सकलत्तो** (सकलत्रः) स्त्री सहित अथवा सर्वने रक्षण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करनार. १८–**मडप्प०** (दे०) आभूषण. २०–**जीअं** (जीवितम्) जीवतर २१–**उदग्गं** (उदग्रम्) मनोहर. ३४–**उलूओ** (उलूकः) घुवड पक्षी. ३५–**सउणया** (शकुनाः) शुभाशुभ सूचक चिह्न, पक्षीओ. ४३–**सहजागराण** (सह जागरतोः, सह स्वपतोः, सह हर्षशोकवतोः) साथे जागता, साथे शयन करता, साथे हर्ष अने शोकवाळाओने. ४६–**अप्पाणं कलिज्जइ** (आत्मा कल्यते) आत्मा जणाय छे, आत्माने कलावाळो कराय छे. ४७–**सत्थं** (शस्त्रम्–शास्त्रम्) शस्त्र पक्षे शास्त्र. ५०–**मंडलो** (मण्डलः) कूतरो. ५२–**अहिमुहि** (अहिमुखे) सर्पना मुखमां, **सिप्पउडे** (शुक्तिपुटे) छीपनी अन्दर, **मुत्तियं** (मौक्तिकम्) मोती. ५६–**तत्तं** (तत्त्वम्) तत्त्वज्ञान. ५७–**एउ** (एतद्) आ. ५९–**चट्टु०** (दे० चट्ठ) उदर, पेट. "पेट पूरतो खोराक नहि पामनारा" ६२–**दहिअं** (दधि) दहीं, **महिज्जंतं** (मथ्यमानम्) मथन करातुं, **छंडइ** (मुञ्चति) त्याग करे छे. ६४–**गंथत्थं** (ग्रन्थत्थं–ग्रन्थार्थम्) गांठमां रहेल दोलत, श्लोकार्थने, **अत्थं** (अर्थम्) धन–दोलत, परमार्थने–तत्त्वज्ञानने, **मुक्खं** (मोक्षम्) छुटापणाने पामे छे. "धनने ग्रहण करीने तेनो त्याग करे छे" मोक्षने पामे छे. "तत्त्वज्ञानने प्राप्त करीने परमपदने पामे छे." **परलोए** (परलोके) बीजाओनी ऊपर, परलोकमां, **०सारिच्छया** (सदृक्षाः) समान. ६५–**पंथेहिं** (पथिभ्याम्) बे मार्ग वडे, **दोमुहसूई** (द्विमुखीसूची) बे मुखवाळी सोय, **सीवए कंथं** (सीव्यति कन्थाम्) कंथाने सीवे छे. ६७–**अणुवट्ठिअस्स** (अनुपस्थितस्य) धर्म सांभळवाने तैयार नही थयेलाने, **विच्छायं** (विच्छायम्) कान्तिरहित–मलिन, **धमंतस्स** (धमतः) धमताने-फूंकताने. ६८ **अभिसारियाओ** (अभिसारिकाः) नायकने मलवाने माटे संकेतस्थाने जनारी स्त्रीओ. ७४–**०महण्णवस्स** (महार्णवस्य) 'लोभरूपी' मोटा समुद्रनी. ७५–**कुंदिंदु०** (कुन्देन्दु०) कुन्द=एक श्वेत सुन्दर पुष्प, इन्दु=चन्द्र, तेओनी जेम अत्यन्त निर्मल, **उद्धूलियं** (उद्धूलितम्) धूलथी व्याप्त–'अकीर्तिरूप धूलना विस्तार वडे चारे बाजुथी त्रैलोक्य भरी दीधुं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पसत्थी

पणमिअ थंभणपासं, जिणीसरं भत्तचित्तवंछिययं ।
जगगुरुनेमिसुरिंदं, जास पसाया इमा रइआ ॥१॥
सगुरुं विन्नाणसूरिं, संतप्पं भविअबोहयं बंदे ।
भवकूवाउ असरणो, जेण जडो हं समुद्धरिओ ।२॥
पन्नासकत्थुरविजय-गणिणा रइया य पाढमालेयं ।
बाणनिहिनंदचंदे, वासे महुमाससुहपक्खे ॥३॥
जाव जिणसासणमिणं, जाव य धम्मो जयम्मि विप्फुरई ।
पाइअविज्जत्थीहिं, ताव सुहं भणिज्जउ एसा ॥४॥

अवि य-

अट्ठारस-दुसहस्से, विक्कमवरिसे तइज्जसक्करणं !
कत्थूरायरिएणं, सुपाढमालाइ संरइअं ॥५॥

इति श्रीशासनसम्राट्-तपोगच्छाधिपति-सूरिचक्रचक्रवर्ति-जगद्गुरु-कदम्बगिरिप्रमुखानेकतीर्थोद्धाक-भट्टारकाचार्य श्रीमद् **विजयनेमिसूरीश्वर**-पट्टालङ्कार-पूज्यपाद-भट्टारकाचार्यदेव श्रीमद्**विजयविज्ञानसूरीश** पट्टधर-**विजयकस्तूरसूरिणा** विरचिता

श्री प्राकृतविज्ञान-पाठमाला

परिपूर्णतामगात् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"शुद्धिपत्रकम्"

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	२०	पुरत	पुरतः
३	३	ठ ,,	ट ,,
,,	१९	एकना	एक्नो
५	२१	प्रद्देस	पद्देस
६	१०	ष्प=फ	ष्प=प्फ
,,	११	ल=ल्ह	ह्ल=ल्ह
८	४	अष्ट्म	अट्ठम
९	७	अत्थग्ध	अत्यग्घ
१०	७	कहेवु	कहेवुं
,,	२०	होतु	होतुं
,,	,,	छे	छे.
११	१२	बोम्लेम	बोल्लेम
१२	५	(अमे)	(अमे)
,,	७	बोघ	बोध
,,	९	हु भणु	हुं भणुं
१३	२	वुच्झ्	वुज्झ्
,,	७	कहवुं	करवुं
,,	८	पाडवा	पाडवो
१३	१३	सज्झाओ	सज्झाओ
,,	२१	अजिता.	अजित
,,	२४	दीर्ध	दीर्घ
१४	२५	ह्रस्वं	ह्रस्व
,,	२७	हस+हत्था	हस+इत्था

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१५	१२	मुज्झसे	मुज्झसे
,,	१३	(तु)	(तुं)
,,	,,	भणोछो.	भणो छो.
,,	२१	(तमे)	(तमे)
१७	१५	निलुप्पलं	नीलुप्पलं
१८	२	पाक्त	प्राकृत
,,	७	थुणह	थुणइ
,,	१२	थुणेमि	थुणेमो
,,	१३	जिणेमि	जिणेमो
१९	७	तुष्मे	तुष्मे
,,	८	तेओ	तेओ
,,	२३	जाणेरे	जाणेइरे
२०	११	चट्	चिट्ठ्
,,	१७	(सिव्य्)	(सीव्य्)
२१	८	वंहुवचन.	बहुवचन.
,,	१४	तुम्हे दु	तुम्हे दुवे
,,	१८	त पिबिरे	त पिबिरे
,,	२१	करी०	करी नीचे प्रमाणे
२२	२	तं उज्झसे	तं उज्झसे
२३	११	ध्यै	ध्यै
,,	२४	ध	घर्
२४	४	(सृ)	(सू)
२६	७	थाअ	थाओ
,,	८	तमे	तमे
,,	२२	हो+इ	हो + ज्ज + इ
२७	५	होज्जमि	होज्जामि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२७	१६	होच्जइरे	होज्जइरे
३०	१७	छे.	छो.
,,	१९	छे.	छो.
३१	५	झति	झंति
,,	१९	अधि,	अधिक,
३२	१३	उचे,	ऊंचे
३३	४	उगच्छइ	उग्गच्छइ
३४	१	जिण	जिण्
,,	४	दुखे	दुःखे
,,	५	दु:खे सहन	दुःखे करी सहन
,,	७	दुःखे देखाय	दु.खे करी देखाय तेवुं.
,,	१७	स्सहो	निस्सहो
,,	१९	दुर्+उत्त	दुर्+उत्तरं
,,	२०	दुक्खिओ,	दुक्खिओ, दूहिओ
३५	२	आहर	आहर्
,,	१९	अईयरेह	अइयरेह
३६	१०	प्रात	प्राप्त
३७	२	विभक्ति	विभत्ति
३८	१८	'प' आवे तो	'प' आवे तो 'प' नो
,,	२२	विओगो	विओओ
,,	२४	(लोक)	(लोकः)
३९	१५	प्रतमा	प्रतिमा
,,	१८	रयणिरो	रयणिअरो
,,	,,	(रजनिचरः)	(रजनीचरः)
३९	१८	यावई	पयावई
,,	२०	कविईस	कविईसरो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३९	२४	(दानम)	(दानम्)
४०	२	रुपुं	रूपुं
„	१३	रुप	रूप
„	१४	हुवचन	बहुवचन
„	१७	उ०	उदा०
४१	१८	०	लह (लभ्) मेळववुं.
४२	७	चारो	चोरो
„	१२	पवयण	पवयणं
„	१७	जाइ	जाइं
४३	४	मूर्खाओ	मूर्खाओ
„	६	साधु	साधुओ
„	७	खेचे	खेंचे
„	१०	डके	अडके
४४	३	विभक्ति	विभत्ति
„	२१	मुकाय	मूकाय
„	२२	मुकाय	मूकाय
४४	२३	मुकाय	मूकाय
„	२४	चतुथी	चतुर्थी
४५	९	अदर	अंदर
४६	६	(धर्मं)	(धर्म)
४७	२५	विहप्फइ (बृहस्पति)	विहप्फई (बृहस्पतिः)
४८	७	(रुष)	(परुष)
„	१२	(कया)	(कदा)
„	२०	दिनो	आदिनो
„	२२	(कमपि)	(किमपि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
४९	८	(अर्घ)	(अर्घ्)
,,	१२	(छिन्द्)	(छिद्)
५०	१३	सावगा	सावगो
,,	१४	लोगमलागं	लोगमलोगं
,,	१७	सासेहिं	सीसेहिं
५१	१५	मेळवता	मेळवता
५४	७	नह	नहिं
,,	१७	विहळो	विहलो
,,	१९	(सक्षयः)	(संक्षयः)
५४	२०	व्यंजनने	व्यंजनने
,,	२४	–वार	–वारं
५५	२	(संस्पश) स्पश,	(संस्पर्श) स्पर्श,
,,	६	–नग	- नग्गो
,,	१२	पूवनो	पूर्वनो
,,	२२	–वस्सयं	–आवस्सयं
,,	२४	विस्समो	विस्सामो
५६	१०	सम्यक्दर्शन	सम्यग्दर्शन
,,	१२	वृतांत	वृत्तांत
,,	२३	विपरित,	विपरीत,
५७	१	०	अव्यय
,,	१०	(सुष्ट्)	(सुष्ठु)
,,	१७	(अज्)	(अर्ज्)
,,	,,	मेळववु	मेळववुं
५८	१३	अत्थि	अत्थि
,,	१५	फलमिच्छति	फलमिच्छंति
,,	१६	नेच्छति	नेच्छंति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
५८	२०	सफासेण	संफासेण
६०	३	विभक्ति	विभत्ति
,,	८	नपुसक	नपुंसक
,,	९	पूवना	पूर्वना
,,	१२	जेवु	जेवुं
६१	१२	देवेसुन्ता	देवेसुन्तो
,,	२४	सव्वेहिन्ता	सव्वेहिन्तो
६२	१८	तेर्सि	तेसिं
,,	१९	तर्स्सि	तस्सिं
,,	२०	तर्हिं	तहिं
,,	२१	नपुंसकर्लिग	नपुंसकलिंग
,,	२३	कीनां	बाकीनां
,,	२४	संवोधनां	संबोधननां
६३	२	एसा	एसो
,,	५	एएसु	एएसुं
,,	६	एअसि	एअंसि
,,	२०	प्र णे	प्रमाणे
,,	२३	इम	इमं
,,	२६	इमेसु	इमेसुं
६४	५	इदियचोर	इंदियचोर
,,	१५	पडिअ	पंडिअ
,,	१६	दर	अंदर
६५	१२	जिनमूर्ति	जिनमूर्तिं
,,	१९	रिजू	रिज्जू
,,	२३	ऊसहो	उसहो
६६	२४	पच्छ	पच्छं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१२	जवु	जवुं
,,	१३	०	जोय् (द्योत्) प्रकाशवुं.
७०	३	विभक्ति	विभत्ति
,,	९	ग्रत्ययो	प्रत्ययो
७१	४	मुणि	मुणिं
७२	१३	सवण्णु	सव्वण्णु
,,	२२	(ज्)	(ज् + ञ्)
७३	२	आन्तरे	आंतरे
,,	२३	(प्राज्ञ)	(प्राज्ञः)
७४	२४	(पक्ष्	(पक्ष्म)
७६	१६	नपुंसकर्लिग	नपुंसकलिंग
७८	२	अगार	अंगार
८०	१२	जंतुण	जंतूण
८४	१३	अंसु	अंसुं
८६	१६	सत्तसु	सत्तूसु
८९	१८	नेअह्रो	नेअह्री
९०	७	अव्षव्री	अब्बवी
,,	१६	आष	आर्ष
९१	८	होत्था.	होत्था (ब० व०)
९२	४	दशानु	दिशानुं
,,	२६	पुर्लिगमां	पुंलिंगमां
९५	५	तीर्थकर	तीर्थंकर
,,	१३	जन	जैन
,,	१५	गया	गयो
,,	१९	कर्युं	कर्युं
९६	७	(० लुक्).	० (लुक्).

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुभ	शुद्ध
९६	११	(० लुक्)	० (लुक्)
९७	११	हसेज्जिहि	हसेज्जहि
९८	९	दिज्जाह	देज्जाह
१००	१७	पठे	पढे
१०२	१९	सुघी	सुधी
,,	२१	आमंत्राणार्थे	आमंत्रणार्थे
१०३	२	(प्र × वृत्)	(प्र + वृत्)
,,	६	(आ + दिश)	(आ + दिश्)
,,	१४	बोलिज्जा	बोल्लिज्जा
,,	२०	निञ्च	निच्चं
,,	२२	संयुवत	संयुक्त
,,	२३	(गहा)	(गर्हा)
,,	२५	(संवतितम्)	(संवर्तितम्)
१०४	४	सत्त्थस्स	सत्थस्स
,,	१२	एव	एवं
१०५	१४	वाणक	बाळक
१०६	१४	ने	अने
,,	१७	विभिन्वित	विभक्ति
१०८	८	बुद्धीआ	बुद्धीओ
११०	१६	छ्द्वीना	छद्वीना
११०	१६	रुपो	रूपो
११३	२	इमोहि	इमीहिं
११४	१९	(कुडमलम्)	(कुड्मलम्)
,,	२४	विकल्प	विकल्पे
११५	४	सास्	सासू
,,	२६	अन्त्य क्षरनी	अन्त्याक्षरनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
११५	२८	कासिणो	कसिणो
११७	२	गठ्	गंठ्
,,	२४	अन्नतो	अन्नत्तो
११८	५	ण्हूसाए	ण्हुसाए
,,	२०	अइक्रमेइ	अइक्कमेइ
१२३	२२	०	दाहिमो–मु–म आ रूपो जोइओ.
१२४	१७	पापोना	पापोनो
,,	२३	(पाटशाला)	(पाठशाला)
१२५	२५	त्गागी	त्यागी
१२७	२०	सहवो	साहवो
,,	३१	अह	अहं
१२९	१३	क्रोध	क्रोध
१३०	११	तनां	तेनां
,,	१३	ने.	छे.
१३७	६	–सुन्ता,	–सुन्तो,
१३९	१०	मानो	मानी
१४१	७	०	माऊओ, माऊउ, माऊ. आ रूपो जोइओ.
१४३	२४	मेळवेलु	मेळवेलुं
,,	२७	(स्वसू)	(स्वसृ)
१४४	१८	रोकवु	रोकवुं
१४७	१६	निमित्तिअए	निमित्तिआए
१५०	८	पढीअईअ	आवां बे वार रूपो छे तेमांथी एक ज वार जोइओ.
,,	९	पढीज्जईअ	
१५१	१७	पढोएज्ज	पढीएज्ज
१५७	१	–न्त	–न्तं
,,	५	नेइज्जसो	नेइज्जसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१५८	५	गणवुं.	गळवुं.
,,	२४	स्मशा०	श्मशा०
१५९	३	विविहचरित	विविहचरित्त
१६१	१६	सधाय	श्रद्धा कराय
१६४	१९	झाअ + झाउं	झाअ + उ
१८०	१८	बम्हाणे–	बम्हाणेहिं–
१८६	१९	(कायस्थ)	(कायस्य)
१९३	२४	(जलपूरीकृत)	(जलपूरीकृतः)
१९६	२	जीवांतणँ	जीवंताणं
२०४	१६	न पु	नपु.
२०८	९	हसावन्तो	हसावेन्तो
,,	२०	नेअन्तो नेएन्तो	नेएन्तो नेअन्तो
२१५	२०	हासेज्जा–ज्जा	हासेज्ज–ज्जा
२१८	१०	वावयरचनामां	वाक्यरचनामां
,,	२६	पक्रियाओ	प्रक्रियाओ
२१९	१५	चङ्क्रम्यते	चङ्क्रम्यते
,,	१८	च्वंकमाण	चंकममाण
२२०	२५	(भव्य)	(भव्यः)
२२३	१३	×सिइ	×सिद्
२२४	२५	धणहणे	धणहरणे
२२५	१३	भूळो	भूलो
२२७	१	२१	२३
२३१	१९	सिरिसरिस	सिरिसरिसं
२३५	१५	सशिप्य	सशिष्य
२३९	१५	(वि+सीद्) शाप देवो.	(वि+सीद्) खेद करवो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२३९	१६	(शप्) खेद करवो.	(शप्) श्राप देवो.
,,	१७	(–विद्वय)	(–विर्ध्य)
२४५	२	' सिं '	' सिं '
,,	११	सव्वाहित्तो.	सव्वाहिन्तो.
२५८	२२	(स)	(सम)
,,	२३	अंत	(अंते)
२५९	२६	(आ + श्वास)	(आ + श्वस्)
२६७	१२	(चतुर्विंशंति)	(चतुर्विंशति)
,,	२०	छतीस,	छत्तीस,
,,	२५	(वसुदेहिंडी	(वसुदेवहिंडी
२६८	८	(त्रिशत्)	(त्रिंशत्)
,,	११	(त्रिंचत्वा–	(त्रिचत्वा–
२६९	१	(षष्ठि)	(षष्टि)
२७३	१७	पञ्चविंश	पञ्चविंश
,,	१९	षड्विंश	षड्विंश
२७४	३	(अप्टच०)	(अष्टच०)
२७४	१५	(पञ्चपच्चाश)	(पञ्चपञ्चाश)
,,	२३	(द्वषष्ठ)	(द्वाषष्ठ)
,,	२५	(०रिंश–मत्त)	(०रिंशत्तम
,,	२७	(०त्वारिंश)	(०त्वारिंश)
२७५	५	(–तिम)	(–तितम)
,,	१८	(अष्ठनवत)	(अष्टनवत)
,,	२४	०पूर्कोनुं	०पूरक शब्दोनु
२७९	२२	आपवी	आपवो
२८०	६	एगासोई	एगासीई
२८१	१४	पच	पंच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२८१	१५	षच	पंच
२८३	३	व्रतो	व्रतो
२८४	१३	अयोघ्या	अयोध्या
२८६	२७	(० + ध)	(० + धृ)
२८७	५	(अपघ्यान)	(अपध्यान)
,,	२०	(अप + इक्ष)	(अप + ईक्ष्)
२८८	४	पहेलुं	पहेलुं
२९०	१८	ऊज्झाय	उज्झाय
२९२	७	अतन्द्रिय	अतीन्द्रिय
२९४	१	(क्रोग्र) क्रोध.	(क्रोध) क्रोध.
२९५	२५	वरवुं	करवुं.
,,	२६	(गरिष्ट)	(गरिष्ठ)
२९७	९	चिन्ह (+ तिष्ठ)	चिह्न् (+ तिष्ठ्)
,,	१७	चोर	चोर्
२९८	२२	जँउणा	जउँणा
,,	२१	(यात्र)	(यात्रा)
२९३	२५	(ह्वा)	(जिह्वा)
,,	२६	(जीवू)	(जीव्)
३०१	६	णूण	णूणं
३०३	१३	स्री	स्त्री
३०४	२७	आंपवुं.	आपवुं.
३०९	१०	(प्रका + श्)	(प्र + काश्)
,,	१९	प्रमा कवो,	प्रमाद करवो,
३१२	९	पजा	पूजा
,,	११	पजवा	पूजवा
३१४	१८	पोपक	पोषक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

પાનું	લીટી	અશુદ્ધ	શુદ્ધ
૩૧૫	૧	(मंन्त्रय्)	(मन्त्रय्)
૩૧૭	૩	०मावु.	०मावुं.
,,	७	अज्ञानी	अज्ञानी.
૩૧૯	૪	(लिख)	(लिख्)
૩૨૦	૧	वछ्	वंछ्
,,	૪	(प्याख्यनय्)	(व्याख्यानय्)
૩૨૧	૧	वरसद,	वरसाद,
,,	૬	त्रिखं वीश.	त्रिखंडाधीश.
,,	૧૩	करवु.	करवुं.
,,	૧૪	विकुववु.	विकूर्ववुं.
,,	૨૨	वेच	वेचवुं,
૩૨૨	૪	वध्	विंध्
,,	૨૬	(वि + सीद्)	(वि + सद्)
૩૨૩	૧૩	शुश्रषा	शुश्रूषा
,,	૨૯	उलंघन	उल्लंघन
,,	૩૦	उलंघवु	उल्लंघवुं.
૩૨૪	૨	(० + मृज)	(० + मृज्)
,,	૧૮	कीध	क्रोध
૩૨૬	૨૧	सइ	सइं
૩૨૭	૨૩	(सिंह)	(सिंह)
૩૩૦	૧૩	०चन्द	०चन्द्र
૩૩૩	૨૭	(वैश्रवण)	(वैश्रमण)
૩૩૫	૧૫	जिनबिब	जिनबिंब
૩૩૮	૧૮	क्षन	न.
૩૪૧	૧૫	पुन.	पु. न.
૩૪૨	૧	(विरहिय)	(विरहित)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३४२	८	(नृपर्ा)	(नृपति)
,,	१६	(रुविमणि)	(रुक्मिणी)
३४४	४	शत्र	शत्रु
३४७	१७	(पृथिवीन)	(पृथिवीनः)
,,	१९	(भानूदय)	(भानूदयः)
३४८	१४	(द्वतीयः)	(द्वितीयः)
,,	२४	जँउणयडं, जँउणायडं	जउँणयडं, जउँणायडं
३४९	१	(नदीश्रोत)	(नदीश्रोतः)
,,	११	(आलक्षयामह)	(आलक्षयामहे)
३५२	१	(लाछन्नम्)	(लाञ्छनम्)
,,	१३	अदर	अंदर
३५३	१४	पूर्व	पूर्वं
३५४	४	(स्रसा)	(विस्रसा)
,,	२५	(पिण्डम)	(पिण्डम्)
३५५	२२	'कृप'	'कृपा'
३५६	९	(पृहा)	(स्पृहा)
,,	१४	(पृष्टः)	(स्पृष्टः)
,,	१७	(पात्रृष्)	(प्रात्रृष्)
,,	१८	माउओ	माऊओ
३५८	१८	दइअवं	दइवअं
,,	२३	'पोर'	'पौर'
३५९	१६	संरकृत	संस्कृत
३६०	२	दले	बदले
,,	५	थाथ	थाय
,,	२२	(यति)	(यतिः)
३६१	२३	(शब)	(शबलः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३६३	१७	‘ ’	‘ट्’
,,	१८	(ड्गः)	(खड्गः)
३६६	१	(रमरः)	(स्मरः)
३६६	२२	जुइ (द्युति)	जुई (द्युतिः)
३६७	७	गुज्झ गुह्य	गुज्झं गुह्यं
३६७	९	(विन्ध्या)	(विन्ध्यः)
३६८	१२	अदर	अंदर
,,	२२	‘ ड् ’	‘ ड्म ’
३६९	९	आदिर्मा	आदिमां
३७१	२०	मूकाय	मूकाय
३७३	४	सरआ	सरओ
३७४	५	(महात्म्यम्)	(माहात्म्यम्)
,,	२५	पिट्ठ	पिट्ठं
३७६	१८	पञ्चम्यारतृतीया	पञ्चम्यास्तृतीया
३७७	११	(षड्भाषा०	(षड्भाषा०
३७८	१७	हैमव्यकरण	हैमव्याकरण
,,	२३	नो	ना
,,	२४	जणइ	जाणइ
३७९	१५	–काराव–	–कराव–
३८३	३	पूर्व	पूर्वं
,,	९	केटला एकना	केटलाएकना
३९२	१७	०वण्णण	०वण्णणं
,,	१९	दरिसणिया	दरिसणीया
,,	२१	पांडरीया	पोंडरीया
३९३	१	दरिसणिया	दरिसणीया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३९३	१८	जित्तु	भुंजित्तु
३९५	१८	०मब्भदऐ	०मब्भुदए
३९६	२	नमा	नमी
४००	१९	पोसहजा०	पोसहजो०
४०२	२	छेत्तण	छेत्तूण
,,	२१	महेसरदत्ता	महेसरदत्तो
४०३	२	अह	अहं
,,	१९	कायव्व	कायव्वं
४०६	१८	भुयाजुगल	भुयाजुगलं
४०७	१०	पुत्ता	पुत्तो
,,	१४	इ	इओ
४०८	३	गंतु	गंतुं
४१२	५	धम्मा	धम्मो
४१६	१३	जाहत्थ	जहित्थ
४१९	१०	द्दोइ	होइ
,,	१३	सुआणाणं	सुअणाणं
४२१	१८	विच्छाय	विच्छायं
४२३	१५	पसतस्स	पसत्तस्स
,,	१९	पहुस्सा	पहुस्स
४२५	१४	मरणक्रिया	मरणक्रिया
४२६	११	(त्यवत्या)	(त्यक्त्वा)
४२८	१७	एकान्त	एकान्त
,,	२३	अव्वय	अव्यय
४२९	१०	धूर्वितस्स	धूर्वितस्स
,,	१४	आसकत	आसक्त
४३१	२१	कन्ति०	कान्ति०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व
लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे
प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi